KUL BHUMI VOL.20 1998

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

LIBRARY
G. K. V.
Hardwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110227

SARASWATI SUPPLY AGENCY
Specialist
Wedding Cards & Screen Printing
All Type of BINDING with golden printing

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-1589.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक पत्र

कुलभूमि

EXCHANGE COPY 110277

110277

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARDWAR

"जय हिन्द" का नारा देकर "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा" का उद्घोष देने वाले वीर क्रान्तिकारी, आजाद हिन्द सेना का निर्माण कर अंग्रेजों का आक्रमण करने वाले नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिवस २३ जनवरी को सारा देश उत्साह से मनायेगा हमारा उनको शत्-शत् नमन् ।

वह क्रान्ति दूत भारत सपूत, वह पत्थर था वह पानी भी ।
वह परम् वीर पौरुष सुधीर, वह मानी था, बलिदानी भी ॥

संसार नमन करता जिसको, ऐसा कर्मठ युग चेता था ।
अपना सुभाष जग का सुभाष, भारत का सच्चा नेता था ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितेन्द्रिय के लक्षण

श्रुत्वा स्पृष्ट्वा च दृष्ट्वा च भुक्त्वा घ्रात्वा च यो नरः ।
न हृष्यति, ग्लायति वा स विज्ञेयो जितेन्द्रियः ॥

जो मनुष्य, सुनकर, छूकर, देखकर, खाकर, सूंघकर हर्ष शोक को प्राप्त नहीं होता, उसे जितेन्द्रिय जानना चाहिये। जिस पर इन्द्रिया अपना प्रभाव नहीं डाल सकती, सचमुच वह वीर है।

बुद्धिमान मनुष्य इन्द्रियों को वश में रखे

इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियम् ।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्रादिवोदकम् ॥

जिस मनुष्य की इन्द्रियां वश में नहीं होती है वह उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जिस प्रकार चमड़े के पात्र से जल। इस लिये बुद्धिमान मनुष्य को चाहिये कि मर्यादाओं की रक्षा के लिये इन्द्रियों को वश में रखे।

दीर्घ जीवन का उपाय –

ओं। जीवतां ज्योतिरभ्येह्यवीङ त्वां हरामि शतशारदाय।
अवमुञ्चन्मृत्युपाशानशस्तिं द्राघाय आयुः प्रतरं ते दधामि ॥

भावार्थ – भगवान मनुष्य को कहता है कि हे मनुष्य ! मैंने इस संसार में तुझे सौ वर्षों तक शान्ति पूर्वक जीने के लिये भेजा है। जिस प्रकार एक जलते हुए दीपक से दूसरे हजारों दीपक जलाये जा सकते हैं, इसी प्रकार जीते जागतों से ही जीवन ज्योति मिल सकती है। इसलिये जीते जागते हुओं से जीवन प्रकाश ले अर्थात् दीर्घजीवी लोगों के पास उठ, बैठ उनकी दिनचर्या का निरीक्षण कर कि उन्हें दीर्घ जीवन कैसे मिला तथा जो दीर्घजीवन के बाधक हैं उन बाधकों को हटा। वे बाधक ये हैं। अवमुञ्चन मृत्युपाशानशस्तिम् अशस्ति गन्दगी, निन्दित आचार, यथा व्यभिचारादि तथा आहार विहार का अभाव ये जीवन को घटाने वाले हैं। इसलिये इन अशस्तियों को दूर हटाकर सौ वर्ष तक दीर्घ जीवन जीने की अभिलाषा करें।

कुलभूमि के सम्बन्ध में कुछ...

इस अंक के साथ ही आपकी लघु पत्रिका कुलभूमि १९ वर्ष पूरे कर आगामी अंक से बीसवें वर्ष में प्रवेश करेगी। आपके स्नेह सहयोग से हमने इसे नयी साज सज्जा से प्रकाशित करना शुरू किया है और यत्न है अधिक से अधिक उपयोगी सामग्री इसके माध्यम से आपको दें। इस अंक के सम्बन्ध में अपने विचार एवं सुझाव पोस्ट-कार्ड में भेजकर हमें उत्साहित करेंगे ऐसी आशा है। साथ में एक और निवेदन है मंहगाई अत्यंत बढ़ जाने से नाम मात्र मूल्य बढ़ा रहे हैं। अगले वर्ष बीस के स्थान पर पच्चीस २५/- किया जा रहा है। अपने सभी सहयोगी श्रद्धालु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि यदि अब तक अपना शुल्क न भेजा हों तो अपना शुल्क तो भेजें ही एक-एक नया ग्राहक बनाकर भी कुलभूमि के विस्तार में सहयोगी बनने की कृपा करें।

– व्रतानन्द सरस्वती

गुरुकुल का वार्षिक महोत्सव

आपके प्रिय गुरुकुल आश्रम आमसेना का ३० वां वार्षिक महोत्सव दि. १४, १५, १६ फरवरी ९८ को अत्यंत समारोह के साथ मनाये जाने का निश्चित हुआ है। आर्य जगत् के अनेक साधु, संन्यासी, विद्वान भजनों उपदेशक इसमें पधार रहे हैं। प्रतिवर्षों की भांति विविध सम्मेलनों का भी आयोजन किया जायेगा। कृपया अपना आने का प्रोग्राम अभी से ही तैयार कर लें।

आचार्य
गुरुकुल आश्रम आमसेना

महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने स्वराज्य की प्रथम घोषणा करते हुए आधुनिक भारत का निर्माण किया। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्य समाज का बहुत बड़ा योगदान है।

– नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुखपत्र

वर्ष - २०
अंक - १
माह - जनवरी १९९८
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,०९८
विक्रमी संवत् - २०५४
दयानन्दाब्द - १७३

प्रतिष्ठाता :
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक :
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक :
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक :
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता :
गुरूकुल आश्रम आमसेना
व्हाया - खरियार रोड
जिला - नवापारा (उड़ीसा)
पिन - ७६६ १०९
फोन : (०६६७८) २३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-
आजीवन - २५०/-
एक प्रति - २.५०/-

सम्पादकीय...

आर्य (हिन्दू) जनता सावधान

गत कुछ वर्षों से देश की जनता में राष्ट्रीय भावना जागृत होने से विदेशी मतों के प्रचारक खुलकर ईसाई एवं मुसलमान मत का प्रचार करने में संकोच करने लगे थे, वे छिप-छिप कर ही धर्मान्तरण करते थे। परन्तु जबसे कांग्रेस एवं संयुक्त मोर्चे का शासन हुआ है इसमें सभी ढ़ंग के साम्प्रदायिक लोग धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अधिकारी बनें तभी से इन विदेशी प्रचारकों ने धर्मान्तरण को गति दे दी है अब इनके प्रचारक खुलकर अपने मतों का प्रचार तो कर ही रहे हैं इन्होंने लोभ लालच और भय की नीति का प्रयोग करके धर्मान्तरण की आंधी चला दी है। अच्छे-अच्छे शिक्षित लोगों को भी पैसे से खरीद करके ईसाई मुसलमान बना रहे हैं, खुलकर पैसा बांट रहे हैं। अभी पिछले दिनों आर.एस.एस. के एक प्रचारक को जो शिक्षक भी हैं लोभ देकर ईसाई बना लिया फिर साधारण जनता का कहना ही क्या।

दूसरी ओर बसपा जैसी क्षुद्र मनोवृत्ति पार्टी या विदेशों से प्रेरणा लेकर इन्हीं मतों को आगे बढ़ा रही है इस देश के मूल निवासियों को दीन-हीन तथा जलील कर रही है, देश की जनता फूट डालने वाले कांशीराम जैसे स्वार्थी व्यक्तियों को भी राजनेता मानकर महत्व दे रही है। प्रबुद्ध लेखक एवं संपादक लोग भी उनको नहीं समझ पा रहे और अपने समाचार पत्रों में स्थान दे रहे हैं, यह कितने आश्चर्य एवं दु:ख की बात है। हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए, कि जब तक इस देश में आर्य (हिन्दुत्व) का बहुमत है तभी तक इस देश में सुख शान्ति है। जिस दिन हम अल्प मत में आ जायेंगे उस दिन ये विदेशी मत हमें समाप्त करने में संकोच नहीं करेंगे। अत: यदि इस देश की स्वतंत्रता को बचाना है तो ईसाई, मुसलमानों के प्रचार और धर्मान्तरण को रोकना पड़ेगा और ऐसे लोगों को मत देकर आगे भेजना होगा जो इन विदेशी सम्प्रदायों से टक्कर लें सकें तथा इस देश की प्राचीन संस्कृति के प्रति आस्थावान् हो।

भारतीय जनता पार्टी के कर्णधारों से

यद्यपि भाजपा अन्य राजनैतिक पार्टियों की अपेक्षा इस देश की अस्मिता एवं संस्कृति के प्रति आस्थावान् हैं, परन्तु इसके मुखिया भी पुराणों पर आश्रित हिन्दुत्व के गलत रूप को लेकर एक प्रकार के सम्प्रदायवादी बन गये हैं यदि वे वैदिक धर्म के शुद्ध रूप को लेकर आगे चलते, मनु जी के धर्म के दश लक्षण धृति क्षमा आदि को धर्म का वास्तविक स्वरूप मानकर चलते, इस मूर्तिपूजा आदि रूढ़िवाद को तथा जातिपाति एवं छूआछूत को छोड़कर ऊपर उठते तो उन्हें जल्दी सफलता मिलती। धर्म के सच्चे रूप को मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती चाहे वह ईसाई हो या मुसलमान, उदाहरण के लिये वे अयोध्या में राम का मन्दिर या राम की मूर्ति का पूजा स्थल बनाने के स्थान पर यदि वहां भगवान् राम का स्मारक बनाते तो उन्हें जल्दी सफलता मिलती। अत: भाजपा को भी इधर सोचना चाहिए और इस मूर्तिपूजा आदि संकीर्णवाद से ऊपर उठना चाहिए तभी यह पार्टी देश का वास्तविक हित कर सकेगी और सबके मत पा सकेगी। देश की प्रबुद्ध जनता से निवेदन है कि उसे अपने मतरूपी शस्त्रों का प्रयोग कर इन स्वार्थी राजनेताओं को शिक्षा देनी चाहिये। जो अपने स्वार्थ दम्भ अहंकार के लिये चुनाव के नाम पर को जो अरबों रूपये का बोझ देश पर डाल रहे हैं। तथा विदेशी मतों को संतुष्ट करना ही अपना लक्ष्य बना रहे हैं।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हताश न हों आगे बढ़ें

कहते हैं मनुष्य भगवान् की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसलिए वेदों में मनुष्य को ईश्वर का प्रियतम पुत्र कहकर सम्बोधित किया है। यही मनुष्य योनि ही एक ऐसी योनि है जिसके लिए उन्नति का द्वार खुला है परन्तु यह भोला मानव दयालु प्रभु द्वारा प्रद्त्त अपनी असीम शक्ति और सामर्थ्य को नहीं पहचानता। इस अमूल्य योनि को यूं ही खो देता है। कुछ तो भ्रम अज्ञानवश थोड़ी-थोड़ी बातों से दु:खी होकर आत्महत्या तक कर बैठते हैं। इसी महीने की घटना है एक उन्नीस वर्ष के नवयुवक ने धमतरी (म.प्र.) में अपने मामा के घर फांसी लेकर आत्महत्या कर ली। वह बी.ए. में पढ़ रहा था। मरने से पहले वह एक पत्र लिखकर छोड़ गया उसमें लिखा था कि मेरी इच्छा है कि मैं वैभवपूर्ण जीवन जीऊं। मेरे पास कोठी हो, कार आदि सुविधा के सब साधन हों परन्तु मुझ में इतना सामर्थ्य नहीं लगता, न मुझ में ऐसी बुद्धि है कि मैं यह सब साधन इकट्ठे कर सकूंगा और इन साधनों के बिना जीवन बेकार है अत: मैं आत्महत्या कर रहा हूँ। इस जैसे कितने ही नवयुवक अपने को दीन-हीन बनाकर आत्महत्या कर लेते हैं या छटपटाते हुए जीवन को चलाते हैं। जबकि ऋग्वेद में भगवान् कहता है -

ज्यैष्ठव्यय वृद्धो अजायथा:

अर्थात् मनुष्य जीवन श्रेष्ठ बने और ऊँचा उठने के लिए है यह अमूल्य जीवन छोटी-छोटी बातों में ईर्ष्या द्वेष या काम क्रोधादि में यूं ही नष्ट करने के लिये नहीं है वह कुछ महान् कार्य करने के लिये है। अत: मनुष्य को चाहिये कि सदा उन्नति तथा प्रगति करता रहे अपने कुसंस्कारों को दबा कर ऊँचा उठता रहे।

उच्च तिष्ठ महते सौभगाय (अथर्व. २/६/२)

ऊँचा उठने, महान् बनने के लिये मनुष्य को सदा लगे रहना चाहिये। यह मनुष्य जीवन हीनता के लिये नहीं मिला है। यदि हमें दीन रहना होता तो हम कीट पतंग बनते आप्नुह श्रेयांसमति समंक्राम। (अथर्व २/११/१)

हे मनुष्यों। जो तुम्हारे बराबर वाले हैं, उनसे आगे बढ़ो श्रेष्ठों तक पहुंचा। अपनी तुलना मूर्खों से मत करो। श्रेष्ठों का आदर्श ग्रहण करो।

रूहो रूरोह रोहित: (अथर्व १३/३/२६)

जो सदा प्रयत्न शील रहता है कर्म में जुटा रहता है वही उन्नति करता है भाग्य को सहारा लेकर सदा आलस्य में पड़े रहने वाले दीन-हीन बने रहते हैं। संसार में अनेक ऐसे महापुरूष हुए हैं जो कठिन परिस्थितियों में से निकल संसार के मार्ग दर्शक बने हैं। अत: वेद कहता है निरन्तर आगे बढ़ते जाओ ऊपर उठते जाओ करडिनल नामक विदेशी विद्वान **लिखता है प्रत्येक मनुष्य के हाथ में जीवन में कभी न कभी किसी न किसी रूप में उन्नति करने, भाग्य खुलने का अवसर आता है**। जो उस अवसर को पहचान लेता है उसका फ़ायदा उठा लेता है उसका भाग्य सदा के लिये खुल जाता है।

अत: अपनी आत्मा पर विश्वास करें, और आगे बढ़ते जायें। आत्म विश्वास, उत्साह, धैर्य बहुत बड़ी शक्तियाँ हैं जिसके सहारे मानव देवता बन जाते हैं। जब हम संसार में आये हैं तो संसार के सुखों के साथ विपत्तियाँ, बाधायें भी आयेगी ही। गुलाब कांटों में ही खिलता है तथा कमल के चारों ओर कीचड़ भरा होता है। अत: बाधाओं परेशानियों से घबरा कर पीछे नहीं हटना चाहिये।

रामायण में महर्षि बाल्मीकि लिखते हैं -

न विषादेमन: कार्य: विषादो दोषवत्तर: ।
विषादो हन्ति पुरूषं बालं क्रुध इवोरग: ॥

(बा.कि.का. ६४/९)

सांसारिक परेशानियों से मन को दु:खी नहीं करना चाहिए। इस प्रकार के दु:ख मानकर हताश होने से बहुत हानि होती है यह हताशा मनुष्य की सारी शक्ति क्षमता को वैसे ही नष्ट कर देती है, जैसे क्रोधित सांप बच्चे को नष्ट कर देता है। अत: मुसीबतों में भी सदा प्रसन्न रहकर उत्साह पूर्वक आगे बढ़ते रहना चाहिये। जैसे रात के पीछे दिन आता है वैसे ही आपत्ति के पीछे आनन्द एवं समृद्धि भी आती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यायाम

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
आचार्य - गुरूकुल आमसेना

व्यायाम के बिना स्वास्थ्य रक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। स्वास्थ्य का मूल आधार ब्रह्मचर्य हैं और ब्रह्मचर्य का मुख्य साधन व्यायाम है। ज्यों-ज्यों इस देश के नागरिक व्यायाम से दूर हटते गये त्यों-त्यों आनन्द और सुख सौभाग्य से दूर होकर दुःखों के सागर में डूबते जा रहे हैं क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य ही सब सुखों का आधार है लोकोक्ति है- **''प्रथम सुख निरोगी काया''** जबकि आज के प्रत्येक युवक युवतियों को रोगों ने घेर रखा है। एड्स, कैन्सर जैसे भयंकर रोग होनहार नवयुवकों को असमय में मृत्यु का दास बना रहे हैं। अत: प्रत्येक सुख, शान्ति के इच्छुक व्यक्ति को विशेषकर नवयुवक-युवतियों को भोजन से भी व्यायाम को अधिक महत्व देना चाहिये। जितने भी दीर्घायु व्यक्ति हुए हैं उन सभी ने यह स्वीकार किया है कि व्यायाम, भ्रमण तथा अन्य शारीरिक श्रम करने तथा चिन्ता छोड़ने से ही उन्हें दीर्घ जीवन मिला है। महर्षि पतञ्जलि ने चरक संहिता में लिखा है -

लाघवं कर्म सामर्थ्यं स्थैर्यं क्लेशसहिष्णुता।
दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते॥

(चरक सं.अ. ७ श्लोक ३१)

व्यायाम से शरीर में लघुता (स्फूर्ति, हलकापन, फुर्तीलापन) कार्य करने की शक्ति, स्थिरता, क्लेश तथा दु:खों का सहना, दोषों (कुपित-वात् पित्त, कफ) का नाश और जठराग्नि की वृद्धि होती है। इसी प्रकार महर्षि धन्वतरि सुश्रुत में लिखते हैं -

न चास्ति सदृशं तेन किञ्चित्स्थौल्यापकर्षणम्।
न च व्यायाममिनं मर्त्य मर्दयन्त्यरयो भयात्॥

(अ. २४ श्लोक ४१)

अर्थात् अधिक स्थूलता को दूर करने के लिए व्यायाम से बढ़कर और कोई औषधि नही है। व्यायामी से उसके शत्रु सर्वदा डरते रहते हैं और उसे दु:ख नही देते।

यद्यपि इस प्रकार के सैकड़ों प्रमाण दिये जा सकते हैं परन्तु मैं लेख को लम्बा न करता हुआ सभी स्वास्थ्य प्रेमियों से यह आग्रह करूंगा कि वे व्यायाम की महत्ता को समझें, और यदि जीवन में सुख, शांति प्राप्त करना चाहते हैं तो श्रद्धापूर्वक व्यायाम को अपनायें, जैसे अच्छी से अच्छी मशीन भी पड़ी पड़ी जंग खाकर खराब हो जाती है उसी प्रकार बिना व्यायाम के अच्छे से अच्छा स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है रोगों का घर बन जाता है। शरीर के जिन भागों में हलचल नहीं होती जिन्हें नया खून नहीं मिलता वे रोगी हो जाते हैं और जब रोग का क्रम एक बार शुरु हो जाता है तो फिर अच्छा स्वास्थ्य बनाना बहुत कठिन होता है। अतः अच्छे स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए भी व्यायाम आवश्यक है। व्यायाम अनेक प्रकार से किये जाते हैं परन्तु मुख्यतः दो भेद है, एक हमारे प्राचीन भारतीय व्यायाम दूसरा पाश्चात्य व्यायाम। भारतीय व्यायाम हमारे पूर्वज ऋषि महर्षियों की देन है जो पूर्णतः वैज्ञानिक तथा अनुभव सिद्ध है इनमें न किसी प्रकार का खर्च होता है न लम्बे चौड़े स्थान की आवश्यकता है और न किसी साथी सहयोगी की जरुरत है, जहां चाहे जब चाहे अकेला व्यक्ति कर सकता है। इनसे लाभ भी बहुत अधिक है। भारतीय व्यायाम के भी कई भेद हैं जैसे योगासन, दंड, बैठक, दौड़, मुद्गर चालन, भ्रमण आदि। इनमें से योगासन स्वास्थ्य के लिए सबसे उपयोगी है तथा इन्हें अभ्यास से बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष, सभी कर सकते हैं।

शरीर की ऐसी अनेक ग्रन्थियां तथा नस नाड़ियां हैं जिन पर अन्य व्यायामों का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु आसनों से उनमें भी चेतनता आती है वे अपना काम अच्छी प्रकार करने लगती हैं। परन्तु ये योगासन आदि हल्के व्यायाम प्रातः काल शौच जाने के पीछे करने अधिक उपयोगी है परन्तु यदि दुर्भाग्यवश जैसा आजकल प्रायः कब्ज की शिकायत होने से पेट ठीक साफ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होता तो उन्हें चाहिए पानी पीकर दो चार हल्के आसन पश्चिमोत्तानासन, सर्पासन, धनुरासन तथा सूर्य नमस्कार के एक दो भेद शनैः-शनैः कर लें। इन आसनों के करने से जब शौच खुल जाये या पेट साफ हो जाये तो शेष व्यायाम करें।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि व्यायाम से पहले शरीर में तेल लगाकर हल्की मालिश कर ली जाये तो इससे शरीर के सारे अवयव जल्दी खुल जाते हैं जैसे इन्जन में तेल, ग्रीस आदि दिया जाता है इसी प्रकार शरीर में मालिश करना आवश्यक है। सप्ताह में एक दो बार तेल लगाकर अवश्य मालिश कर लेनी चाहिए। आयुर्वेद में लिखा है **''घृताद्दशगुणं तैलं मर्दनेन तु भक्षणे''** अर्थात् तैल मालिश करने से घी से दश गुना लाभ देता है। अतः तेल की मालिश करनी चाहिए तेल को खाना नहीं चाहिए। तेल खाने से अम्ल पित्त आदि रोग हो जाते हैं। घी के स्थान पर तेल खाने की परम्परा हमारे देशवासियों के स्वास्थ्य को खराब करने के लिए विदेशी लोगों ने धूर्त्ततापूर्ण की है। अतः खाने के लिए केवल घी का ही प्रयोग करना चाहिए।

क्रमशः

शीतऋतु में स्वास्थ्य के लिए गाजर खायें

गाजर और मूली ये दो ऐसी सुलभ सब्जियाँ हैं जो प्रायः देश के सभी भागों में अल्प मूल्य पर सरलता से मिल जाती है। दोनों ही को सलाद के रूप में एवं पकाकर सब्जी के रूप में खाया जा सकता है। मूली के सम्बन्ध में पिछले अंक में लिख चुके हैं। इस अंक में गाजर के सम्बंध में कुछ विवरण प्रस्तुत है।

गाजर खून को शुद्ध करने वाली नया रक्त बनाने वाली, पौष्टिक पाचक तथा वीर्य वर्धक है। यदि निरन्तर इसका रस लिया जाये तो कैन्सर जैसे कठिन रोग को नष्ट कर देता है। यह सात्विक एवं सर्वसुलभ पौष्टिक सादा आहार है। अतः जैसे बने प्रतिदिन कुछ मात्रा में इसका प्रयोग अवश्य करने का यत्न करना चाहिये। वैसे गाजर का आचार एवं मुरब्बा भी बनता है। गाजर में लौहतत्व अच्छी मात्रा में है जिससे रक्त की शुद्धि एवं स्वास्थ्य प्रेमियों को इसका लाभ उठाना चाहिये।

आईये पीछे की ओर लौटें

पाठक वृन्द ! मैंने पिछले अंक में निवेदन किया था कि आओ पीछे की ओर लौटें। हमारे पूर्वजों ने जो वैज्ञानिक एवं आदर्श दिनचर्या दी थी, जिसके सहारे हमारे पूर्वजों ने दीर्घायु, एवं अतुल बल प्राप्त किया था, महाभारत में लिखा है कि महाबली भीम में अस्सी हाथियों का बल था। वह बड़े-बड़े पेड़ों को उसी प्रकार उखाड़ लिया करता जैसे हम शाखा तोड़ लेते हैं। सामने आये हाथी को उसकी सूंड पकड़कर फेंक दिया करता। इस युग में भी शुद्ध शाकाहारी और भारतीय व्यायाम के प्रचारक प्रो. राममूर्ति हुए हैं जो छाती पर हाथी को चढ़ा लिया करते। अतः यदि हमें भी यही स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करनी है तो अपनी प्राचीन पद्धति को अपनानी चाहिये। अब शनैः शनैः इन बातों को पाश्चात्य विद्वान् भी स्वीकार करने लग गये हैं। जैसे सायंकाल जल्दी सोना और प्रातः जल्दी उठना क्योंकि सूर्योदय के पीछे सोने से जहां अम्लपित्त बढ़ता है वहां पेट में पड़े हुए मैल से वायु बनती है, जबकि प्रातःकाल चार बजे उठकर शौच होकर यदि व्यायाम किया जाये या भ्रमण किया जाये तो उस समय वायु में चार गुणी जीवनी शक्ति रहती है, जो शरीर में अनायास ही मिलकर नया जीवन प्रदान करती हैं। इसी प्रकार उस समय बैठकर पूर्व दिशा में मुंह करके यदि प्राणायाम किया जाता है तो भी शरीर को नया जीवन एवं स्फूर्ति प्राप्त होती है। इसी प्रकार के लाभ सारी दिनचर्या के गिनाये जा सकते हैं जैसे पांव धोकर गिले पांव से भूमि पर सुखासन से बैठकर या आलथी-पालथी मारकर भोजन किया जाये तो भोजन जल्दी पचता है परन्तु यदि खड़े-खड़े भोजन किया जाये, तो हृदय पर दबाव पड़ता है। इसी प्रकार खड़े खड़े पेशाब करने से भी हृदय पर दबाव पड़ता है। अतः ऐसी शास्त्र विरूद्ध बातों से बचना चाहिये। तथा अपनी प्राचीन शास्त्रीय परम्पराओं को अपनाने का यत्न करना चाहिये।

– व्रतानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख-दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण नहीं

- स्वामी सत्यपति परिव्राजक

सुख दुःख को जीवात्मा के स्वाभाविक गुण मानने वाले लोग इस मान्यता में आये दोषों का वेदादि शास्त्रों के प्रमाणों से उचित समाधान करें -

सुख दुःख को जीवात्मा के स्वाभाविक गुण मानने वाले लोग अबतक अपने लेखों में वेदादि शास्त्रों के प्रमाणों से न तो ठीक प्रकार से यह सिद्ध कर सके हैं कि सुख दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं, और न ही इस मान्यता में आये दोषों का उचित समाधान कर सके ।

अब इस विषय में विचार किया जाता है, कि सुख दुःख को जीवात्मा के स्वाभाविक गुण व धर्म मानने में क्या-क्या दोष आते हैं ?

प्रथम दोष- सुख दुःख को जीवात्मा के स्वाभाविक गुण मानने वालों ने अब तक वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों का एक भी ऐसा प्रमाण नहीं दिया है, जिससे यह सिद्ध होता हो, कि सुख दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण है। वे हम से पूछ सकते हैं कि सुख दुःख को जीवात्मा के स्वाभाविक गुण न मानने में क्या प्रमाण है ? इसका उत्तर यह है कि सांख्यादर्शनकार ने कहा है, कि यदि जीवात्मा स्वभाव से बद्ध है, अर्थात् सुख दुःख उसका स्वाभाविक गुण है, तो मोक्ष शास्त्रों में दुःख से नितान्त छूटने का उपदेश नहीं हो सकता, क्योंकि किसी भी पदार्थ के स्वाभाविक गुण को उससे पृथक नहीं किया जा सकता । जैसे अग्नि का स्वाभाविक गुण उष्णता है, उस उष्णता को अग्नि से पृथक नहीं किया जा सकता । इसी प्रकार दुःख को जीवात्मा का स्वाभाविक गुण मानने पर उसे दूर करने का उपदेश नहीं किया जा सकता। सांख्यकार कपिलाचार्य ने तीन प्रकार के दुखों से नितान्त छूटने के लिए ही सांख्यदर्शन की रचना की है. सांख्यदर्शन के किसी भी सूत्र में यह नहीं लिखा कि दुःख गुण जीवात्मा का स्वाभाविक है ।

दुःख को स्वाभाविक गुण मानने वाले इसका उचितं समाधान करें । इस विषय में सांख्यदर्शन के प्रमाण पूर्व लेखों में हमारी ओर से दिये जा चुके हैं, यहां पर उन्हें पुनः लिखने की आवश्यकता नहीं है। सांख्यकार ने सम्पूर्ण दर्शन तीन प्रकार के दुःखों की अत्यन्त निवृत्ति के लिए ही लिखा है। यदि सांख्यकार कपिल सुख दुःख को जीवात्मा का स्वाभाविक गुण मानते, तो तीन प्रकार के दुखों की अत्यन्त निवृत्ति न लिखते। सुख दुःख को आत्मा के स्वाभाविक गुण मानने वाले इसका उचित और सप्रमाण उत्तर देवें ।

दूसरा दोष- न्यायदर्शनकार गौतम ऋषि ने प्रथम दुःख का लक्षण बताया कि बाधा पीड़ा जिसका स्वरुप है, वह दुःख है। उस बाधा रुप दुःख से अत्यन्त छूट जाना मोक्ष है। यदि गौतम ऋषि दुःख को जीवात्मा का स्वाभाविक गुण मानते, तो वे यह न लिखते कि दुःख से अत्यन्त छूट जाने का नाम मोक्ष है । सुख दुःख को जीवात्मा के स्वाभाविक गुण मानने वाले न्यायदर्शन के आधार पर इसका उचित उत्तर देवें ।

तीसरा दोष - यह है कि अपने पक्ष की सिद्धि करने के लिए अत्यन्त शब्द का अर्थ जो स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने किया है, उसके नितान्त विपरीत अर्थ करते हैं । स्वामी जी ने अत्यन्त शब्द का अर्थ यह किया है- जीवात्मा को जो मोक्ष की प्राप्ति होती है वह अनन्तकाल के लिए नहीं होती। उस मोक्ष की सीमा है। जीव के कर्म सीमित है, तो उनका फल मोक्ष भी सीमित होना चाहिए। स्वामी जी ने 'अत्यन्त' शब्द का अर्थ यह नहीं किया कि मोक्ष अवस्था में दुःख शेष रहता है। अतः 'अत्यन्त' शब्द के अर्थ को लेकर अपने पक्ष की पुष्टि करने वाले यह बतलावें, कि स्वामी जी ने कहां लिखा है, कि मोक्ष अवस्था में दुःख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शेष रहता है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा दोष- यह है कि योगदर्शनकार ने कहा है कि जो अनागत दुःख है, वह छोड़ने योग्य है । यदि दुःख गुण अभी अनागत है, आया नहीं है, भविष्य में आयेगा । यदि दुःख गुण जीवात्मा का स्वाभाविक है, तो वह अनागत नहीं हो सकता । और यदि 'अनागत' है तो स्वाभाविक नहीं हो सकता । योगदर्शन के आधार पर इसका उचित उत्तर देवें ।

पांचवां दोष- यह है कि छान्दोग्य उपनिषद् प्रपा ८, ख. १२, प्रवाक १ में कहा है कि मोक्ष अवस्था में जीवात्मा को सांसारिक सुख दुःख स्पर्श नहीं करते। यदि सुख दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण है तो वे जीवात्मा से कभी भी दूर नहीं हो सकते और यदि दूर होते हैं तो स्वाभाविक गुण नहीं हो सकते । सुख दुःख को जीव का स्वाभाविक गुण मानने वाले यह कहते हैं कि मोक्ष अवस्था में सुख दुःख मोक्षानन्द के नीचे दब जाते हैं, अतः दिखाई नहीं देते । यह उनकी मान्यता शब्द प्रमाण के विरुद्ध है, क्योंकि शब्द प्रमाण में यहमाना है कि मोक्ष अवस्था में सुख दुःख का अत्यन्त अभाव होता है। अतः उनका समाधान उचित नहीं है । यह केवल उनकी अपनी मान्यता है ।

छठा दोष- यह है कि वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रंथों में यह उपदेश मिलता है कि दुःख छोड़ने योग्य है । यदि दुख जीवात्मा का अपना स्वाभाविक गुण माना जाये तो जीवात्मा का अपना ही स्वरुप छोड़ने योग्य हुआ जो आर्ष सिद्धांतों के सर्वथा विरुद्ध है। इस दोष का प्रमाण से उचित समाधान करें ।

सातवां दोष- यह है कि जो ''सुख'', दुःख मिश्रित है, उसको ऋषियों ने छोड़ने का उपदेश किया है। यदि सुख गुण जीवात्मा का स्वाभाविक माना जाये तो जीवात्मा का स्वरुप ही छोड़ने योग्य हुआ । यह भी ऋषि ग्रंथों के विरुद्ध है। इसका समाधान भी प्रमाणों से करें ।

आठवां दोष- यह है कि ऋषियों ने जीवात्मा को अपने स्वरुप का भोक्ता नहीं माना, अन्य पदार्थों के स्वरुप का भोक्ता माना है । मोक्ष अवस्था में ईश्वर के नित्यसुख का भोक्ता माना है और संसार में सांसारिक सुख दुःख का भोक्ता माना है। ''जीवात्मा अपने स्वरुप का भोक्ता है'' यह किसी वैदिक प्रमाण से सिद्ध होता हो तो वह प्रमाण बतलावें ।

नवमां दोष- यह है कि सुख दुःख को जीवात्मा के स्वाभाविक गुण सिद्ध करने के लिये यह हेतु दिया जाता हैकि जब जीवात्मा मन, इंद्रियों और प्राकृतिक पदार्थों से सम्बद्ध होता है, तब उसके स्वाभाविक सुख दुःख गुण अभिव्यक्त हो जाते हैं, वे सांसारिक पदार्थों से उत्पन्न नहीं होते । यह उनकी मान्यता ऋषियों के विरुद्ध है। क्योंकि ऋषि मानते हैं कि आत्मा मन के साथ, मन इंद्रियों के साथ और इंद्रियां बाह्यविषयों= पदार्थों के साथ सम्बद्ध होती है, तबआत्मा को सुख दुःख की प्राप्ति होती है अभिव्यक्ति नहीं । अर्थात सांसारिक पदार्थों से ही सुख दुःख उत्पन्न होते हैं। ''सुख दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण है और वे अभिव्यक्त होते हैं'' इस विषय में कोई प्रमाण देवें ।

दसवां दोष- यह है कि वैदिक सिद्धांत के अनुसार धर्म का फल सुख और अधर्म का फल दुःख जीव को ईश्वर देता है । यदि ये सुख दुःख जीव के स्वाभाविक गुण हैं, तो धर्म का फल सुख और अधर्म का फल दुःख ईश्वर क्यों देता है, क्योंकि वे दोनों गुण जीव के पास पहले ही स्वाभाविक रुप से है । अतः उनका ईश्वर के द्वारा देना नहीं बनता ।

ग्यारहवां दोष- यह है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने स.प्र. के ८. वें समुल्लास में लिखा है कि इस अनादि प्रकृति का भोग अनादि जीव करता हुआ फंसता है और उसमें परमात्मा न फंसता, न उसका भोग करता है । जो लोग सुख दुःख को प्रकृति के स्वाभाविक गुण नहीं मानते वे यह बतलावें, कि जीवात्मा प्रकृति के किस गुण व धर्म का भोग करता है ।

बारहवां दोष- यह है, कि स्वामीजी ने स.प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के ८ वें समुल्लास में ही "द्वा सुपर्णा. ..." ऋग्वेद के इस मंत्र के व्याख्या खण्ड में लिखा है, "तयोरन्य: ..." इन जीव और ब्रह्म में से एक जो जीव है, वह इस वृक्षरूप संसार में पाप पुण्य रूप फलों को (स्वाद्वत्ति ...) अच्छे प्रकार भोगता है, और दूसरा परमात्मा कर्मों के फलों को (अनश्नन्) न भोगता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर बाहर सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है।

यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है, कि पाप और पुण्य कर्मों का फल क्या है, जिसे जीवात्मा भोगता है। इसका अभिप्राय यह है कि, पाप-पुण्य कर्मों का फल दु:ख और सुख है, जिसको ईश्वर जीव को देता है। यदि सुख दु:ख को जीव का स्वाभाविक गुण माना जाता है, तो ईश्वर जीव को सुख दु:ख क्यों देता है। इसका कारण बतलावें।

तेरहवां दोष- यह है कि, सुख दु:ख को जीव के स्वाभाविक गुण सिद्ध करने के लिए लोग अन्वय व्यतिरेक का आश्रय लेते हैं जो कि प्रसङ्गत: असङ्गत हैं। उनका यह मानना है कि शरीर में जीव के रहने से सुख दु:ख होते हैं और न रहने से नहीं होते हैं। इस अन्वय व्यतिरेक न्याय से सुख दु:ख गुण जीव के स्वाभाविक गुण सिद्ध होते हैं।

यह अन्वय व्यतिरेक तो ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों पर भी घटता है, क्योंकि ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ भी जीव के शरीर में रहने पर ही रहती है, न रहने पर नहीं रहती है तो क्या ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ जीव की स्वाभाविक मानी जा सकती है?

सुख दु:ख की प्राप्ति में आत्मा मन के साथ, मन इन्द्रियों के साथ, इन्द्रियाँ प्राकृतिक पदार्थों के साथ सम्बद्ध होने पर जीव को सुख दु:ख की प्राप्ति होती है, नहीं होने पर नहीं होती।

इस अन्वय व्यतिरेक से यही क्यों माना जाता है कि सुख दु:ख जीव के स्वाभाविक गुण है। इससे यह क्यों न माना जाये कि सुख दु:ख प्राकृतिक पदार्थों के स्वाभाविक गुण है। क्योंकि ऋषियों के ग्रन्थों में मन इन्द्रियों का बाह्य पदार्थों के साथ संयोग होने पर जीव को सुख दु:ख की प्राप्ति होती है। जीव के सुख दु:ख गुणों की अभिव्यक्ति नहीं मानी जाती।

जीव के स्वाभाविक सुख दु:ख गुणों की अभिव्यक्ति होती है इसे किसी वैदिक शब्द प्रमाण सें सिद्ध करें।

अन्वय व्यतिरेक में अन्य दोष- जीव के शरीर में रहने पर अविद्या=मिथ्याज्ञान रहता, न रहने पर नहीं रहता। इस अन्वय व्यतिरेक से तो जीव का अविद्या अर्थात् मिथ्याज्ञान स्वाभाविक गुण माना जायेगा, जो सर्वथा अनुचित है। अविद्या को जीव का स्वाभाविक गुण मानने पर तो जीवात्मा का मोक्ष ही संभव न हो सकेगा।

जहाँ पर अग्नि होती है, वहाँ धूम्र होता है और जहां पर अग्नि नहीं होती वहाँ धूम भी नहीं होता। इस अन्वय व्यतिरेक से धूम अग्नि का स्वाभाविक गुण सिद्ध नहीं होता। यह केवल अग्नि की विद्यमानता बताने में लक्षण मात्र है। इसी प्रकार जहाँ-जहाँ शास्त्रों में जीव के लक्षण किये गये हैं वहाँ-वहाँ जीव की विद्यमानता को बतलाने के लिए सुख दु:ख को लक्षण के रूप में रखा गया है स्वाभाविक गुण बतलाने के लिए नहीं। यही सुख दु:ख को जीव के स्वाभाविक गुणों को बताने के लिए रखा गया है तो इसमें कोई शास्त्रीय प्रमाण देवें। जब जीवात्मा समाधि अवस्था में रहता है, तब वहाँ आनन्द भी रहता है जब यह अवस्था नहीं रहती तब आनन्द भी नहीं रहता। इस अन्वय व्यतिरेक से आनन्द गुण जीव का स्वाभाविक गुण सिद्ध नहीं होता। क्योंकि आनन्द ईश्वर का स्वाभाविक गुण है, जीव का नहीं। अन्वय व्यतिरेक के आधार पर जीव के सुख दु:ख गुण स्वाभाविक मानने से ऋषियों नें जीव के लक्षणों में सुख दु:ख को स्वीकार किया है। मोक्ष अवस्था में सांसारिक सुख दु:ख का अत्यन्त अभाव माना है। इसका सप्रमाण समाधान करें।

क्रमश:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यज्ञ स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आजकल अंग्रेजी पढ़े लिखे भौतिकवादी लोग प्रत्येक अच्छी परम्परा का खण्डन करने में अपनी वीरता मानते हैं। ऐसे लोग न तो विचारक हैं न उनमें किसी प्रकार की सूझबूझ है जैसे वे ईश्वर, जीव आदि सूक्ष्म वस्तुओं का खण्डन करते हैं उसी प्रकार यज्ञ जैसी श्रेष्ठ सर्वोपयोगी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभदायक कार्य की भी महत्ता नहीं मानते। उनका प्रथम हेतु है कि अग्नि में डालकर घी आदि मूल्यवान् वस्तुयें नष्ट कर दी जाती है। जबकि अग्नि में डाला हुआ पदार्थ नष्ट नहीं होता। अग्नि का काम स्थूल पदार्थ को सूक्ष्म रूप में कर देना है। अत: यज्ञ में डाले हुए घी को अंग्नि सूक्ष्म परमाणुओं में बदल देता है। इसी प्रकार सामग्री में गुग्गल, जायफल आदि जो कुछ डाला जाता है। वह परमाणुओं में टूट-टूटकर सारे वायुमण्डल में छा जाता है। चारों ओर फैली सुगन्ध से इसका पता चलता है परन्तु किसी बात का पता चलता है किसी का नहीं। जैसे हम दो-चार मिर्च जेब में डाल लें तो कुछ पता नहीं चलेगा। परन्तु उसी मिर्च को कूट दें तो उसकी धमक से आस-पास बैठे लोगों को छींक आने लगेगी, और यदि उसी को अग्नि में डाल दिया जाये तो दूर-दूर तक भी कोई नहीं ठहर सकेगा क्योंकि अग्नि चारों ओर फैलती है।

जब किसी वस्तु को अग्नि में डाला जाता है तो वह फैलती तो है ही कई गुनी बढ़ती भी है क्योंकि अग्नि का काम स्थूल वस्तु को सूक्ष्म बनाकर ''परिमाणात्मक'' (auantifafive) परिवर्तन कर देना ही नहीं है, ''गुणात्मक'' (Quelifctive) परिवर्तन कर देना भी है। तभी आग में पड़ी मिर्च सिर्फ घर में ही नहीं फैल जाती साथ ही उसकी तेजी भी कई गुणा बढ़ जाती है।

स्थूल पदार्थों के अग्नि द्वारा सूक्ष्म होने पर उसका स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ता है। इन्दौर में डॉ. कुन्दनलाल अग्निहोत्री ने क्षय (T.V.) के रोगियों पर यज्ञ के द्वारा अनेक चमत्कारिक परिणाम निकाले। इसका शरीर पर प्रभाव इस प्रकार पड़ता है। इसे सभी जानते हैं कि हमारे शरीर में खून जितना शुद्ध होगा स्वास्थ्य उतना ही अच्छा रहेगा। शुद्ध रक्त पर ही स्वास्थ्य निर्भर है। इस रक्त की शुद्धि फेफड़े बाहर की शुद्ध वायु को लेकर करते हैं। अत: अगर फेफड़ों में शुद्ध तथा पौष्टिक वायु पहुँचेगी तो शरीर अधिक स्वस्थ, सुन्दर और सुडौल होगा, परन्तु यदि फेफड़ों में अशुद्ध रोग के कीटाणु मिली हवा पहुँचेगी तो शरीर रोगी हो जायेगा। वैज्ञानिक बताते हैं कि एक जवान व्यक्ति के फेफड़ों में २३० वर्ग इंच वायु होती है। यदि मनुष्य साधारण श्वांस लेता है तो २० से ३० वर्ग इंच वायु श्वांस छोड़ने में बाहर जाती है। शेष फेफड़ों में जमा रहती है। परन्तु यदि गहरे श्वांस लिये जायें तो १३० वर्ग इंच तक वायु बाहर निकाली जा सकती है। जिससे इसके स्थान पर शुद्ध वायु फेफड़ों में जाकर नया जीवन प्रदान करता है। अत: जब हम यज्ञ में ऊंचे स्वर से लय पूर्वक मंत्र बोलते हैं तो अन्दर की गन्दी वायु निकलती रहती है और उसके स्थान पर यज्ञ से शुद्ध परिपुष्ट हवा हमारे फेफड़ों में जाकर शरीर को निरोग बनाती है। अग्निहोत्र का यह इतना प्रत्यक्ष लाभ है जिससे कोई इंकार नहीं कर सकता।

ये चीजें भाग्यशाली को मिलती हैं

सूनुः सच्चरितः सती प्रियतमा स्वामी प्रसादोन्मुखः
स्निग्धं मित्रमवञ्चकः परिजनो निःक्लेशलेशं मनः।
आकारो रुचिरः स्थिरश्च विभवों विद्यावदातं
मुखम् तुष्टे विष्टपकष्टहारिणी हरौ सम्प्राप्यते देहिना॥

अर्थ – इस विश्व के दु:ख को निवारण करने वाले दयालु भगवान् के प्रसन्न होने पर ही मनुष्य को सदाचारी पुत्र, पतिव्रता पत्नी, प्रसन्न स्वामी स्नेहीमित्र, धोखा न देने वाले सेवक, निरन्तर निश्चित मन, सुन्दर स्वरूप, स्थायी सम्पत्ति, विद्या से निर्मल सुख – ये सब मिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ अथ भगवान् शब्द प्रकरणम् ॥

सोहनलाल शारदा
शाहपुर (राज.)

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्त देवेतरो जनाः ।
स यत्प्रमाणाम् कुरुते लोकस्तदनु वर्त्तते ॥

अ-३ श्लोक २१

अर्थात् श्रेष्ठ, ज्ञानी, विद्वान् जन जैसा भी आचरण करते हैं वैसा ही साधारण जन भी तदनुसारः ही वर्त्तते हैं। क्योंकि व्यवहारभानु अनुसार कि सभी जनों का विद्वान होना संभव नहीं है। लेकिन जो वह धार्मिक होना चाहे तो अवश्य ही हो सकता है।

इसी विचारधारानुसार ही श्रद्धेय आर्यमुनि जी ने भगवान् शब्द की व्याख्या करते हुये अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ गीता प्रदीपार्यमुनि भाष्य में लिखते हैं कि जिस किसी महान् पुरुषात्मा में ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, वैराग्य, मोक्ष, यह छः गुण सम्पन्न हो उनको ही भगवान् शब्द से पुकारते हैं।

ऐसा ही मत श्रद्धेय स्वामी इन्द्रदेव जी पुरोहित आचार्य गुरुकुल शाही पीलीभीत का भी विचार यही है कि जिस महापुरुष में तेज, वीर्य, बल, ओज, मन्यु व सहन शक्ति के गुण विद्यमान् हों ऐसे जनों को ही भगवान् शब्द उच्चारण करते चले आ रहे हैं। यह शुद्ध सनातन आदर सूचक शब्द है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज में उपरोक्त सर्वगुण विद्यमान् थे। ऐसा हम सभी आर्यजन मानते-मनाते चले आ रहे हैं। तदनुसार ही बाबू देवेन्द्रनाथ जी मुखोपाध्याय ने महर्षि जन्म स्थान निर्णय स्थान का निर्णय देते हुए अपनी पुस्तिका में जन्म स्थान निर्णय में ३५ बार इसी आदर सूचक शब्द का प्रयोग किया है।

पूज्यपाद स्वामी सत्यानन्द जी महाराज ने तो श्रीमद्दयानन्द प्रकाश में १३६ बार इसी शब्द का प्रयोग किया है। यही नहीं हमारी शिरोमणि सभा के तत्कालीन वेद शास्त्र प्रचार शोध संस्थान के प्रधान व सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के धर्माधिकारी जी ने स्वर्गीय स्वामी तुलसी राम जी कृत सामवेद भाष्य में सन् १९७२ में इसी ग्रन्थ को प्रकाशित करते हुए भूमिका पृष्ठ ८ पर निम्न वर्णन किया है कि :- ''भगवान् दयानन्द जी महाराज के ऋण से नेर्ऋण्य प्राप्त हों इसी दृष्टि कोण से यह सामवेद भाष्य प्रकाशन का कार्य किया है।''

पूज्य पं. वीरसेन जी वेदश्रमी इन्दौर भी भगवान् शब्द का प्रयोग बराबर करते ही रहे हैं।

अतः हमें भी इसी आदर सूचक भगवान् शब्द का प्रयोग करना है। मैं समझता हूँ कि इसमें शंका की कोई गुंजाइश ही नहीं है। फिर भी आर्य विद्वज्जन इस पर अपने-अपने विचार देने की कृपा करें। ताकि शुद्ध वेदोक्त निर्णय किया जा सके।

(भज सेवायाम्) इस धातु से 'भग' इससे मतुप् होने से 'भगवान्' शब्द सिद्ध होता है। ''भग सकलैश्वर्य सेवनम् वा विद्यते यस्य स भगवान्।'' याने जो समग्र ऐश्वर्य से युक्त वा भजने के योग्य हैं। इसलिये उस ईश्वर का नाम भगवान् है। (सत्यार्थ प्रकाश प्रथम समु.)

इसी प्रकारणान्तर्गत आगे पाठ है कि : ''आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि आदि नाम प्रसङ्गानुसार भगावन् निराकार, परब्रह्म, परमपिता परमात्मा के समान ही भौतिक पदार्थों में भी ग्रहण किया जाता है। इसी विधानानुसार ही भ्रांति निवारण में महर्षि ने पण्डित महेश्चन्द्र जी न्यायरत्न के प्रश्न पक्ष समूह के प्रत्युत्तर में अनेकानेक शास्त्रीय प्रमाणों से अग्नि शब्द का निरूपण करते हुये 'अग्नि मीले. (तदेवाग्नि.) इत्यादि वेद मन्त्रों से परमेश्वर का ही बोधन प्रसङ्गानुसार किया है।

लेकिन पुनः यह भी निर्देश देते हैं कि उत्पत्ति, स्थिति, अल्पज्ञ, जड़, दृश्य इत्यादि विशेषण युक्त शब्द आवे वहां-वहां परमेश्वर का ग्रहण नहीं करके भौतिक पदार्थों का ग्रहण करना ही उपयुक्त है। इन्हीं शास्त्रोक्त व्याकरणानुसार ही महर्षि ने स्वयं ही पूना में प्रवचन करते हुए वहां वर्णन करते हैं प्रथम प्रवचन में कि :-

''ईश्वर एक ही है। दूसरा नहीं है। ऐसा भगवान् कपिल जी मानते हैं।''

इसी प्रकार पांचवें प्रवचन में भी वर्णन करते हैं कि :-

''सुलभ शब्दों से जो भगवान् वात्स्यायन जी ने प्रतिपादन किया है उसे देखो।'' ऐसा ही आगे भी इसी प्रवचन में वर्णन है कि :-

योग शास्त्र की व्यवस्था लगाने में भगवान् पतञ्जलि जी की सारी उम्र बीती। इससे आगे भी आठवें प्रवचन में वर्णन करते हैं कि :-

''ये वस्तुतः भगवान् मनु के नहीं है।''

इस प्रकार से इन ब्रह्मा जी से लेकर जैमिनी जी पर्यन्त के सभी महर्षियों को भगवान् दयानन्द जी महाराज ने इसी आदर सूचक शब्द का प्रयोग किया है। अतः हम भी इसी महान् आत्मा जो विद्या का अपूर्व भंडार था। एवम् जिसने पूर्व महर्षियों सम ही वेद, वेदाङ्ग, उपाङ्ग, व्याकरण सभी प्राचीन शास्त्रों के साथ ही साथ नवीन पुराणियों किराणियों के ग्रन्थों का भी पूर्णतया अनुशीलन कर समीक्षा लिखी है। जो पूर्व ऋषियों के समय में तो बने ही नहीं थे। अतः गीता में जो वर्णन है कि :-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गो सेवा ने जीवन दान दिया

बात जनवरी १९४० की है, तब मेरी आयु लगभग ५-६ वर्ष की होगी। पिताजी उत्तरप्रदेश में पुलिस-विभाग से सेवानिवृत्त हो गये थे। अंग्रेजी शासन था। पूरी बातें तो याद नहीं हैं, किन्तु माताजी बताया करती थीं कि पिताजी सेवानिवृत्ति से पहले कई वर्षों से बीमार थे। डाक्टरों ने सारे दाँत उखाड़ दिये थे, दाँतों की वजह से पेट खराब रहता था। पेट का ही रोग था या अन्य कुछ, पता नहीं चल पाया था। कभी डाक्टर कहते कि अंतड़ियों में तपोदिक हो गयी हैं, कभी कुछ रोग बताते, कभी कुछ, सेवानिवृत्ति से पहले पिताजी पर्याप्त समय तक मुरादाबाद में सरकारी अस्पताल में रहे और कई डाक्टरों की बोर्ड ने मिलकर यह घोषित कर दिया कि ये अब सरकारी नौकरी करने के योग्य नही रह गये हैं।'' उस निर्णय के आधार पर पिताजी अपने ग्राम बुलंदशहर आ गये।

मुझे इतना स्मरण है कि जिस समय पिताजी घर आये थे, उनकी दशा बहुत ही खराब थी, बिलकुल अस्थिपंजर रह गये थे। जमीन पर पड़े रहते थे। माता जी बताती थी कि मुरादाबाद के डाक्टरों ने जवाब दे दिया था कि अब ये कुछ समय ही रह सकेंगे।

पिताजी की ऐसी दशा देखकर गाँव के लोग आते और यह कहते कि मुँह में गंगाजल डालते रहो। सभी चिन्तित थे। अचानक एक घटना घटी। हमारे पूर्वजों में पुरोहिती का कार्य होता चला आया था। दूर गाँव के कोई यजमान एक गऊ लेकर आये और पिताजी से कहने लगे - ''पंडित जी यह गऊ मैंने गुरूजी (मेरे बाबा जी) को दान के निमित्त-संकल्पित की थी। गोदान के संकल्प से मेरा कार्य हो गया, अत: मैं यह गऊ बछड़े सहित आपके यहाँ पहुँचाने आया हूँ।'' मेरे बाबा जी, जब मैं एक वर्ष का था, स्वर्गवासी हो चुके थे। वे यजमान गऊ को पहुँचाकर अपने घर चले गये। उधर माताजी ने उस नयी ब्यायी गऊ के पैरोंपर जल डालकर पारम्परिक रीति से उसकी पूजा की तथा उसके बाँधने, चारा आदि का प्रबंध किया, दूध निकाला, थोड़ा दूध चम्मच से पिताजी को भी पिलाया। यह क्रम दो-चार दिन चलता रहा। फिर तो पिताजी को, जिन्हें न रात को नींद आती थी न दिन को, रात दिन तड़पते रहते थे, उन्हें दूध के प्रभाव से थोड़ी-थोड़ी नींद आने लगी।

यह देखकर मुझे कुछ समझ में नहीं आया, किन्तु माताजी तथा अन्य लोग इसे गोदुग्ध का चमत्कार ही बतलाते थे। फिर तो रात-दिन गऊ का दूध, कुछ छाछ, दही आदि माँग-माँगकर पिया करते। शनै: शनै: वे वैसे ही ठीक होते चले गये, जैसे किसी सुखी मृतपाय बेल को पानी से खींच दिया गया हो और उसमें जीवन आ हो गया हो। मुझे याद है, पिताजी स्वस्थ से होते चले गये। उठने-बैठने, चलने-फिरने लगे। गऊ के लिये खेतों से घास काटकर, चारा काटकर लाते, मुझे भी साथ ले जाते। वे घास काटते और मैं उसे इकट्ठी करता जाता। उस समय लगभग ६-७ साल का रहा हूँगा। पिताजी ही अपने सिर पर गठरी लाते। फिर उन्होंने पास के एक गाँव में स्कूल खोल दिया और फिर तो गाय की सेवा करना और बच्चों को शिक्षित करना, यही उनके जीवन का ध्येय बन गया। उसी गो सेवा के फलस्वरूप वे बीमारी से ठीक होकर पूरे चौबीस वर्ष १९६४ अक्टूबर तक जीवित रहे और उसी गऊ माता के आशीर्वाद से आज हमारा परिवार सब प्रकार से सुख शान्ति की ओर बढ़ रहा है। (कल्याण से साभार)

(**टिप्पणी** - इस घटना से ज्ञात होता है गाय का दूध किस प्रकार जीवन देने वाला है गाय का घी औरं गो मूत्र भी अनेक रोगों में लाभप्रद है। इसीलिये गौ को माता का सार्थक पद दिया गया है। सभी स्वास्थ्य प्रेमियों को विशेष श्रद्धा पूर्वक गोपालन में रूचि लेनी चाहिये।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वर सर्वरक्षक

- स्वामी सत्यपति परिव्राजक

ईश्वर आह्वान और रक्षा :- वेद मन्त्रों में बातें संकेत रूप में कही गई है। जो संकेत की विद्या को जानता है वह उसे बढ़ाते-बढ़ाते उसके तल तक पहुंच जाता है। वाक्य का सीधा अर्थ लगाने से अनर्थ हो जाये। जो भाषा विज्ञान (शैली) को नहीं जानते थे ''ईश्वर-आह्वान'' का अर्थ ऐसा करते हैं जैसे लोक में दूर के व्यक्ति को बुलाते हैं। यहाँ आह्वान का अर्थ है जो ईश्वर हमारे निकट पहले से उपस्थित हैं उसके गुण (आनन्द-ज्ञान आदि) की प्राप्ति के लिये उससे आबद्ध हो जाना।

ईश्वर कैसे रक्षा करता है ? :- लोग समझते हैं जैसा एक यात्री जाता है, चोर उसे लूटता है। पर एक सांप निकल कर चोर को डसता है, वह यात्री बच गया। कुंए में तीन पड़े दो मरे एक बच गया। दुर्घटना में कुछ मर गये, कुछ बच गये, यह ईश्वर के रक्षा का परिणाम नहीं। ये दृष्टान्त गलत हैं। यह सब क्रिया-भेद से परिणाम-भेद है। एक बच्चा कुंए में दीवार से टकराया वह मर गया, दूसरा सीधा पानी में पड़ा वह बच गया। किसी को दुर्घटना में मर्म स्थान पर चोट लगने पर वह मर गया, अन्य को कठोर स्थान पर चोट लगने से वह नहीं मरा, बच गया। ईश्वर की रक्षा का क्षेत्र वहां तक रहता है जहां तक, जब तक जीवात्मा की स्वतंत्रता का अवरोध नहीं होता, हनन नहीं होता, यदि ज़ीवात्मा अल्पज्ञता से, भूल से, स्वभाव से द्वेष के कारण दूसरे को कष्ट देता है, तो ईश्वर हाथ पकड़ कर उसकी स्वतंत्रता का हनन नहीं करेगा तथा पीड़ित होने वाले की उस समय रक्षा भी नहीं करेगा। हां, इसका दण्ड व क्षतिपूर्ति बाद में न्याय के रूप में अवश्य करता है।

''ईश्वर हमारी रक्षा अनेक प्रकार से करता है''

(१) भगवान् की रक्षा का एक भाग यह है कि उसकी रक्षा के बिना शरीरधारी जीवन धारण नहीं कर सकता। रक्षित अर्थात् जीवित नहीं रह सकता। माँ के पेट में बच्चा किस प्रकार जीवित रहता है। ईश्वर ने मां की नाड़ी से बच्चे की नाड़ी का सम्बन्ध कर पोषण देकर रक्षा की है। हम श्वांस लेते, खाते, पचाते हैं। शरीर में सात धातु इस रक्त मांस आदि बनते हैं, यह व्यवस्था ईश्वर ने की है।

(२) बुरे काम करने में भय, शंका, लज्जा, संकोच उत्पन्न करता है तथा अच्छा काम करने की योजना में निर्भिकता, आनंद और उत्साह पैदा करके, पितृवत्-मातृवत् हमारी रक्षा करता है।

(३) ईश्वर के माध्यम से सब क्रियायें हो रही हैं। वह जीवन देता है, सब व्यवस्था करता है। ईश्वर प्रदत्त साधनों के बिना व्यक्ति क्षण भर भी नहीं जी सकता।

(४) आप्त (विद्वान्) लोग ईश्वर का सामर्थ्य प्राप्त करके हमारी रक्षा करते हैं। भिन्न-भिन्न विद्या क्षेत्र में अच्छे धार्मिक विद्वान् जैसे आयुर्वेद के क्षेत्र में धार्मिक वैद्य प्राणों का देने वाला होता है। मूर्ख अधार्मिक वैद्य प्राण हरता है। विद्वान् के क्षेत्र में भी धार्मिक वैज्ञानिक खोज करके अनेकों का भला करता है। अधार्मिक वैज्ञानिक विनाश के साधन जुटाकर हानि भी करते हैं। धन उपार्जन के क्षेत्र में भी धार्मिक विद्वान् कृषि अनुसंधान करके अधिक उपज का मार्ग खोजकर भलाई करता है। इसी प्रकार आध्यात्मिक क्षेत्र में काम, क्रोध, लोभ, मोह निवारण करता है। ज़ो व्यक्ति विद्वान व धार्मिक बन जाता है तो उस विद्या से जो सुख मिलता है उसके आगे सांसारिक सुख हजारवां अंश भी नहीं होता। जब धार्मिकता नहीं जुड़ती तो धन-बल-विद्या अभिमान को पैदा करते हैं। जो शास्त्र पढ़ा हो पर यम-नियम का पालन नहीं करता तो वह घमण्डी हो अपना व समाज का अनिष्ट करता है।

(५) मानव ही क्या, हर प्राणी को सुरक्षित व सुखी रखने के लिये सृजनहार ने अनुपम भेंट प्रदान की है। ईश्वर प्रदत्त हवा, पानी, प्रकाश, खुराक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(वृक्ष वनस्पति फल फूल) आदि जीवन में आनन्द, उमंग, उत्साह, हर्ष आदि प्रदान करते हैं।

(६) अच्छे-बुरे कर्म-फल रूप अच्छी-बुरी योनि द्वारा सुधार के लिये, कल्याण की भावना से दुःख-सुख देकर रक्षा करता है। राजा न्यायकारी हो तो पाप अत्याचार बन्द हो जाते हैं। सुख-शांति की स्थापना में राजा रक्षक है। इसी प्रकार ईश्वर बुरे कर्मों का फल गधे घोड़े बनाकर सजा देकर हमारी रक्षा करता है।

(७) सूर्य-पृथ्वी की उचित दूरी रख बुद्धिमत्ता से हमारे प्राणों की रक्षा करता है। वर्षा, अग्नि, जल, वायु आदि से शरीर और जगत् की रक्षा करता है। सब प्राणियों को अपने प्राणों की रक्षा के लिये सतर्कता का स्वाभाविक ज्ञान व मनुष्य को विविध कार्य क्षेत्र में संलग्न रहते हुए स्वरक्षण हेतु बुद्धि आदि साधन दिये हैं।

(८) वेद ज्ञान देकर रक्षा-ईश्वर ने सब पदार्थ बनाकर दिये हैं। इनका उपयोग कैसे करें इसके लिये वेद ज्ञान भी दिया है। आज भी यदि हम ईश्वराज्ञा का पालन व उपासना करते हैं तो ईश्वर ज्ञान देता है, रक्षा करता है। **''स एष पूर्वोषामपि गुरूः कालेनानवच्छेदात्''**। ईश्वर पूर्व हुए गुरूओं का भी गुरू है, आगे भी रहेगा। जैसे गुरू विद्या देकर रक्षा करता है इसी प्रकार ईश्वर भी विद्या द्वारा रक्षा करता है।

इस प्रकार ईश्वर की विविध रक्षाओं को जाने व समझे। जब व्यक्ति धनवान्, बलवान्, विद्वान्, बुद्धिमान् होकर यह समझे कि वह सब ईश्वर प्रदत्त है मेरा नहीं, तो वह निष्काम भाव से तन, मन, धन से सेवा रक्षा करता है, बदले की भावना नहीं करता। ईश्वर जिस प्रकार की रक्षा करता है उसको वैसा जानता है, तो ईश्वर से सम्बन्ध जुड़ता है उलटा जानने से नहीं, ईश्वर को गलत मानने, गलत ढ़ंग से पूजा करने से ईश्वर से सम्बन्ध नहीं जुड़ता। शुद्ध उपासना द्वारा ईश्वर से सम्बन्ध जुड़ने पर बुराई से हटकर दुःख से छूट जाता है।

जागते रहना

– गिरिधर गोपाल

पहरूए जागते रहना !
वतन पर आज काली आंधियों की रात छाई है,
घटाएं जो बमों को, गोलियों को साथ लाई है,
कि जिसकी हर नजर विष से बुझी है हर हंसी धोखा,
मरण के देवता के संग हुई जिसकी सगाई है।

पहरूए जागते रहना !
पड़ा है शरहदों पर दुश्मनों का आज डेरा है,
तुम्हारी भूमि को फिर अजगरों ने आज घेरा है,
तुम्हारे स्वप्न तक इसका न खूनी हाथ बढ़ जाए,
अंधेरे में छिपा देखो खड़ा बर्बर लुटेरा है।

पहरूए जागते रहना !
कलों पर, कारखानों पर, फसल के मुख सलोने पर,
तुम्हारी माँ बहन पर, प्यार पर, शिशु के खिलौने पर,
तुम्हारे मन्दिरों पर, मस्जिदों पर, धर्मग्रन्थों पर,
नजर इनकी महावर पर, नजर इनकी दिठौने पर।

पहरूए जागते रहना !
तुम्हारे ही भरोसे हमने यह कुटिया बनाई है,
तुम्हारे ही भरोसे हमने यह बगिया उगाई है,
तुम्हारे ही भरोसे से शत्रु को ललकारते हैं हम,
तुम्हीं पर आस पूरी कौम ने प्यारे लगाई है।
पहरूए जागते रहना !

सत्ता तुम्हारी भगवन् जग में समा रही है।
तेरी दया सुगन्धि हर गुल से आ रही है ॥१॥

रवि चन्द्र और तारे तूने बनाये सारे।
इन सब में ज्योति तेरी इक जगमगा रही है ॥२॥

विस्तृत वसुन्धरा पर सागर बहाये तूने।
तह जिनकी मोतियों से अब चमचमा रही है ॥३॥

दिन, रात, प्रातः, संध्या, मंध्याह्न भी बनाया।
हर ऋतु, पलट-पलटकर करतब दिखा रही है ॥४॥

सुन्दर सुगन्धि वाले पुष्पों में रंग है तेरा।
यह ध्यान फूल-पत्ती तेरा दिला रही है ॥५॥

हे ब्रह्म विश्वकर्त्ता वर्णन हो तेरा कैसे।
जल-थल में तेरी महिमा हे ईश ! छा रही ही ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दूध का दूध, पानी का पानी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्यमेव जयते"

स्वामी विवेकानन्द जी ने देश की स्वतंत्रता के लिए न ही कुछ किया और न ही कुछ कहा ? आखिर क्यों ?

मेरा भाषण तैयार करते समय ऐसे मुद्दो पर विशेष ध्यान दिया जाए जिससे महारानी विक्टोरिया के प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट हो। मेरे प्रवचनों में भारत की आजादी की कोई चर्चा नहीं होनी चाहिए मुझे वहाँ की राजनीति से कुछ लेना-देना नहीं है।

- पृ. ३०० म.द. - स्वामी विवेकानन्द

यदि भारत के लोग चाहते हैं कि मैं हिन्दू धर्म में निषिद्ध गोमांस भोजन न करूँ तो आप मुझे यहाँ एक रसोईया भेज दें व उसके वेतन की भी व्यवस्था करें।

- पृ. १२० स्वामी विवेकानन्द जीवन द्वारा निखिलानन्द

गोमांस खाने की अपनी बात को पुष्ट करने के लिए बिना कोई प्रमाण दिये विवेकानन्द लिखते हैं- वैदिक काल में ब्राह्मण गोमांस खाते थे। मांस न खाने वाला ब्राह्मण नहीं माना जाता था।

- पृ. २०० विवेकानन्द बायोग्राफी

स्वामी विवेकानन्द की विचारधारा के अनुसार अंग्रेजों के साथ भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई हेतु जब उन के आश्रम के लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने से इंकार किया तो इस बात की सर्वत्र भर्त्सना हुई।

- व.१. ३८, स्वामी विवेकानन्द के उपदेश

इसके साथ ही जैसे ही किसी व्यक्ति ने विवेकानन्द जी को भारत की राष्ट्रीय चेतना का अग्रदूत एवं स्वाधीनता संग्राम को दक्षिणेश्वर से प्रारंभ हुआ बताया। *- अ. पृष्ठ २३१*

तो तुरन्त ही उन्होंने उत्तर दिया- कि यह सब कहना बकवास है भारत की स्वतंत्रता की राजनीति की बातों से मेरा कोई सम्बंध नहीं है। *- पृष्ठ २३२*

मेरे ऊपर किसी देश विशेष का अधिकार नहीं है। क्या मैं भारत का गुलाम हूँ ?

- स्वामी विवेकानन्द पृष्ठ ३१

स्वामी विवेकानन्द जी के जीवनी के लेखक पृष्ठ १९२ में अपने विचारों को बताते हुए लिखते हैं - "यह एक सच्चाई है कि मैक्समूलर भारत का कट्टर दुश्मन था! जिनका उद्देश्य भारत के प्राचीन (सत्य सनातन वैदिक) धर्म, संस्कृति, इतिहास और प्रथाओं को समाप्त करना था और अपने राज्य को स्थापित करके अपने मज़हब को चलाना था ! ठीक वैसे ही मेक्समूलर को बार-बार भारत में बुलाने का अभिप्राय था कि उस के माध्यम से अंग्रेजों का भारत पर शासन को और हर व्यक्ति को ईसाई बना दिया जाये। क्योंकि विवेकानन्द जी ने पहले ही घोषणा की थी कि ईसा मसीह भगवान् का दूसरा रूप है ! और उसकी शिक्षायें बहुत उत्तम हैं।

लगता है कि विदेश में स्वामी विवेकानन्द ईसाइयत के रंग में रंग गये थे। गाय का मांस खाना, कोट-पेंट-टाई बांधना, अंग्रेजी बोलना और अंग्रेजों के गीत गाना तथा भारत एवं भारतवासियों को हेय समझना आदि विचार उनके जीवन के अंग बन गये थे। इसलिये उन्होंने भारत की आजादी के लिये न कुछ किया और न ही कुछ कहा।

नोट : विशेष जानकारी हेतु स्वामी विद्यानन्द जी कृत पुस्तक **"द-गोस्पल ऑफ स्वामी विवेकानन्द"** पढ़े। फोन : ७९२७२२८

प्रकाशक : आचार्य आर्य नरेश, वैदिक प्रवक्ता (भूतपूर्व सैक्शन, आफिसर, भारत सरकार)

- जो जितना संसार का उपकार करता है ईश्वर की व्यवस्था से उसको उतना ही सुख-शान्ति और आनन्द की प्राप्ति होती है।
- जो हिंसा से प्राप्त मांस, मछली, अण्डादि खाता है या तामसिक वस्तु शराब आदि का प्रयोग करता है उसको ईश्वर की कृपा एवं आशीर्वाद कभी नहीं मिलते।
- दहेज प्रथा समाज के लिये अभिशाप है दहेज लेकर विवाह करना लड़की का क्रीतदास बनना है।
- मृतक का श्राद्ध करना धन का अपव्यय है, इससे मृतकों कोई लाभ नहीं होता। तथा मृतक श्राद्ध का भोजन करने वाले भी अत्यंत पाप के भागी होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मानव जीवन का लक्ष्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
वैदिक प्रवक्ता
आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी, नईदिल्ली

मानव जीवन बड़े पुण्यकर्मों से मिलता है। इसे यूं ही नहीं गंवा देना चाहिए। इसे सुन्दर बना के लिये सत्कर्म और स्वाध्याय का आश्रय लेना परम आवश्यक है। स्वाध्याय का तात्पर्य अच्छे अच्छे ग्रंथों का अध्ययन करना तो है ही, अपना (स्व) अध्ययन करना भी है। इसे आत्म निरीक्षण की घड़ी भी कह सकते हैं। जब तक मनुष्य आत्मनिरीक्षण या आत्म विश्लेषण नहीं करता, तब तक वह प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता। ईश्वर प्राप्ति के लिए ईर्ष्या द्वेष आदि कुटिल भावनाओं का त्याग नितान्त आवश्यक है।

ईर्ष्या एक प्रकार की आग है, लेकिन यह ऐसी आग है जो दिखाई नहीं देती, जिसका धुंआ भी दिखाई नहीं देता। जो आग दिखाई देती है, उसको बुझाना सरल है, लेकिन जो दिखाई नहीं देती, उस ईर्ष्या रुपी आग को किस प्रकार बुझाया जाए, यह बहुत विकट प्रश्न है। इसके लिए प्राणीमात्र के प्रति सौहार्द, प्रेम, जनकल्याण की भावना पैदा करनी होगी।

दुःख का सबसे बड़ा कारण यह है कि मनुष्य अपने घर को देखकर उतना प्रसन्न नहीं होता, जितना दूसरों के घर को जलते देख प्रसन्न होता है। यही ईर्ष्या है। जहां ईर्ष्या का निवास है वहां ईश्वर भक्ति नहीं पनप सकती।

जीवन का क्या लक्ष्य है ?

''जीवन का उद्देश्य नहीं है, केवल खाना-पीना।
जीवन का उद्देश्य है जग में, जगना और जगाना॥''

जगने और जगाने का मतलब है संसार के लोगों को ईश्वरोन्मुख करना। यह कार्य वही कर सकता है जिसे ब्रम्ह की अनुभूति हो और साथ ही जिसमें सेवा समर्पण और परोपकार का भाव हो।

उक्ति है -

खुद कमाओ, खुद खाओ- यह मानव की प्रकृति है।
कमाओ नहीं, छीनकर खाओ- यह मानव की विकृति है।
खुद कमाओ, दूसरों को खिलाओ- यही हमारी संस्कृति है।

दान भी परोपकार का ही एकअंग है। दान देने से घटता नहीं है, बल्कि वह और बढ़ता जाता है। कहा भी है -

चिड़ी चोंच भरले गई, नदी न घट्यौ नीर।
दान दिये धन ना घटै, कह गये दास कबीर॥

दान तो दें, लेकिन अहंकार न करें। जीवन का लक्ष्य तो प्रभु प्राप्ति है, इस प्रभु प्राप्ति के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा अहंकार है। पद, पैसा, प्रतिष्ठा आदि का अहंकार जहां होता है वहां प्रभु का साक्षात्कार नहीं हो सकता।

जैसे अंग्रेजी में बड़ी आई (I) पर बिन्दी लगने से वह छोटी आई (i) कहलाने लगती है, उसी प्रकार ''महान आत्मा'' में अहंकार रुपी बिन्दी लग जाने के कारण वही तुच्छ ''जीव'' कहलाने लगता है।

अतः हम राग द्वेषादि दुर्गुणों का त्याग करते हुए (तत्सवितुर्वरेण्यं) उस परमात्मा का वरण करें जो निराकार, निर्विकार और सच्चिदानंद है।

ऋषि ने गहरी निद्रा में सोये हुए भारत को जागृत किया। वे स्वराज्य के संदेश वाहक तथा मानवता के उपासक थे। **- लोकमान्य तिलक**

यदि हम महर्षि दयानन्द की नीतियों पर चलते तो देश कभी न बटता। **- सरदार पटेल**

महर्षि दयानन्द महान् नायक तथा क्रांतिकारी पुरूष थे। उन्होंने स्वराज्य एवं स्वदेशी की ऐसी लहर चलायी कि जिससे इंडियन नेशनल कांग्रेस के निर्माण की पृष्ठ भूमि तैयार हो गई। **- लालबहादुर शास्त्री**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चर्मरोग का सबब बन सकते हैं सौंदर्य प्रसाधन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरा देखिये ! सौंदर्य और सुगंध के लिए आप जिन वस्तुओं का इस्तेमाल कर रहे हैं, कहीं वे आपकी त्वचा में रोग तो पैदा नहीं कर रही । तरह-तरह के सुगंधित साबुन तथा शैम्पू, दाढ़ी बनाने बाद के लोशन, बालं की डाई, ब्रिल क्रीम, काजल, नेल पालिश, सुरमा, सिंदूर और परफ्यूम् आदि वस्तुएं बेशक आपकी सुंदरता में चार चांद लगाती हैं, लेकिन अफसोस की बात यह कि ये आपको त्वचा की बीमारियां भी देती हैं। ज्यादा सुगंधित साबुन का अंधाधुंध इस्तेमाल बच्चों में एक्जिमा और बड़ों में खराश पैदा करता है तो शैम्पू से बाल सूखे, कमजोर तथा जल्दी टूटने लगते हैं। इसी तरह की स्थिति अन्य प्रसाधनों के बारे में भी है। वे भी शरीर में एलर्जी की समस्या पैदा कर सकते हैं। प्रमुख चर्म रोग विशेषज्ञ डा. आर.के. जोशी बताते हैं कि हेयर डाई से त्वचा पर अति संवेदनशीलता (एक तरह की खराश) पैदा हो जाती है। फिर यह समस्या किसी एक़ स्थान तक सीमित नहीं रहती और लगातार परेशान करती रहती है ।

यही कारण है कि शायद आप एक भी ऐसा परिवार नहीं बता सकें, जिसमें कोई न कोई सदस्य चर्म रोग से पीड़ित हो । पेट और त्वचा के रोग शायद मानव सभ्यता के सबसे पुराने रोग हैं। वैसे चर्म रोगों की आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में भी विस्तृत चर्चा है। उनमें चर्म रोग, उनकेलक्षण और चिकित्सा पर आयुर्वेद के चिकित्सकों का सूक्ष्म ज्ञान और विशद अनुभव मिलता है। आयुर्वेद चर्मरोगों का कारण रक्त का दूषित होना ही मानता है। ठीक इसी तरह होम्योपैथी भी चर्म रोगों को किसी भीतर रोग का लक्षण मात्र ही मानती है न कि स्वतंत्र रोग । अभी तक एलोपैथी चर्मरोगों का एक मात्र कारण कुछ विषाणुओं को मानती रही है। लेकिन अब एलोपैथी का नजरिया भी बदल रहा है। अब वह भी खानपान, रहनसहन और वातावरण को चर्म रोगों के लिए काफी हद तक जिम्मेदार मानने लगी है। फिर भी यह हकीकत अपनी जगह है कि चर्म रोग एक बार हो जाए तो फिर बड़ी ही मुश्किल से ठीक हो पाता है ।

डॉ. जोशी की राय है कि साबुन जैसी वस्तुओं जो बहुतायत से इस्तेमाल में आती है, उनके बारे में सजग रहना चाहिए। जिन लोगों की खाल में सूखापन ज्यादा है, उन्हें ऐसे साबुन का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए जिनका पी.एच. ज्यादा अर्थात् जिनमें तेजाबीपन अधिक हो जबकि तेलीय त्वचा वाले लोगों को अधिक पी.एच. वाले साबुन का इस्तेमाल करना चाहिए । अधिक तेज खुशबू वाले साबुन भी नुकसान करने वाले होते हैं। इसी तरह जो लोग परफ्यूम् का इस्तेमाल करते हैं, उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि वह द्रव कपड़ों पर ही लगे, शरीर पर नहीं । शरीर पर परफ्यूम लगने से धूप में जाने पर आपकी त्वचा रंग हमेशा के लिए काला पड़ सकता है। साथ ही खराश भी पैदा हो सकती है । इसी तरह सस्ते और तेज खुशबू वाले शेव लोशन भी नुकसान करते हैं ।

डॉ. जोशी बताते हैं कि प्रदूषण के स्तर में हो रही वृद्धि भी फेफड़ों के माध्यम से दाद और अन्य चर्म रोगों को बढ़ा रही है। धुएं भरे वातावरण में सांस लेने से दूषित हवा फेफड़ों के माध्यम से खून में भी विकृति पैदा करती है । दूषित हवा से शरीर के रोम (छिद्र) भी रुक जाते हैं और गर्मी तथा उमस के मौसम में संधि स्थलों (जोड़) की चमड़ी पर फफूंदी जनित रोग होने की शिकायतें बढ़ जातीहैं । डॉ जोशी के अनुसार दूषित पेयजल और पानी को बैक्टीरिया रहित करने के लिए उसमें मिलाई गयी क्लोरीन की अधिक मात्रा के कारण भी इन बीमारियों में बढ़ोतरी हो रही है। यही बात खेती के दौरान इस्तेमाल किये जाने वाले कीटनाशकों के बारे में है। इन व्यवसाय जनित कारणों से त्वचा पर खुजली, पित्ती, जुल पित्ती, संक्रामक खुजलीआदि कई रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इसलिए जरूरी है इन नि मामलों में सावधानी बरती जाए। हालांकि व्यौरे बार आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं

....

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पर यह निश्चित है कि आज व्यवसाय जनित चर्म रोगों की संख्या सर्वाधिक है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आधुनिक युग की प्रमुख देन तनाव और दबाव है तथा चर्म रोगों को बढ़ाने में ये भी कुछ प्रमुख कारणों में से हैं। इनके रहते खुजली, बालों का गिरना, खास मौसम में होने वाला दाद, मुंहासे, त्वचा पर गुलाबी दाने, तलवों में जलन, पित्ती जैसी अनेक बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ. जोशी बताते हैं कि खानपान की बदली हुई आदतों ने भी व्यक्ति की त्वचा पर प्रभाव डाला है। ज्यादा चर्बी वाले फास्ट फूड की नई संस्कृति से बालं में रुसी (डेन्ड्रफ) मुंहासे, चमड़े की ऊपरी सतह का पीलापन तथा त्वचा की अन्य बीमारियां सामने आ रही हैं। इसी तरह बालों में डाई तथा शैम्पू आदि के रुप में रसायनों का बढ़ता प्रयोग भी कई तरह के त्वचा रोगों को जन्म दे रहा है। अच्छा हो कि डाई आदि का इस्तेमाल करने वाले त्वचा की उपयुक्त जांच के बाद ही उसका प्रयोग करें।

डॉ. जोशी बताते हैं कि चिकित्सा शास्त्र में अनेक प्रकार के चर्म रोगों का वर्णन है। लेकिन लोग सबसे ज्यादा शिकार खाज-खुजली और दाद (एक्जिमा) जैसे रोगोंके ही होते हैं। दाद या छाजन नामक बीमारी कई बार बचपन में भी प्रकट होती है लेकिन बालिग उम्र में वह अपने पूरे रुप में सामने आती है। इसका ताल्लुक अपने या परिवारके इतिहास, हे-फीवर और दमा से भी है। तेज खुजली, चमड़ी का मोटा हो जाना, त्वचा पर सूजन और जलन, परिवार में दाद होने का इतिहास और बार-बार खुजली का प्रकट होने इस रोग के सामान्य लक्षण हैं। त्वचा का सूखापन, पसीना नहीं आना या बहुत ज्यादा पसीना आना, चमड़ी पर फुंसियां या उसका रंग बदल जाना, त्वचा में जलन आदि अनेक रुपों में ये बीमारियां प्रकट होती हैं। इन रोगों से पीड़ित व्यक्ति और उसकी चिकित्सा करने वाले के लिए जरुरी है कि इलाज के साथ-साथ खान पान और रहन-सहन पर भी ध्यान दिया जाए। इसके बिना मरीज के इलाज और ठीक होने में रुकावट आएगी।

(नवभारत टाइम्स से साभार)

ऋषि उवाच

हे मनुष्य ! जो कुछ इस संसार में जगत् है उस सब में व्याप्त होकर नियन्ता है वह ईश्वर कहता है। उससे डर कर तू अन्याय से किसी के धन की आकांक्षा मत कर। उस अन्याय के त्याग और न्यायचरण रूप धर्म से अपने आत्मा में आनन्द को भोग।

ईश्वर सबको उपदेश करता है कि हे मनुष्यों। मैं ईश्वर सबके पूर्व विद्यमान सब जगत् का पति हूँ। मैं सनातन जगत्कारण और सब धनों का विजय करने वाला और दाता हूँ। मुझे ही को सब जीव जैसे पिता को सन्तान पुकारते हैं वैसे पुकारें। मैं सबको सुख देने हारे जगत् के लिए नाना प्रकार के भोजनों का विभाग पालन के लिए करता हूँ।

मैं परमैश्वर्यवान् सूर्य के सदृश सब जगत् का प्रकाशक हूँ। कभी पराजय को प्राप्त नहीं होता और न कभी मृत्यु को प्राप्त होता हूँ। मैं ही जगत् रूप धन का निर्माता हूँ। सब जगत् की उत्पत्ति करने वाले मुझ ही को जानों। हे जीवों ! ऐश्वर्य प्राप्ति के यत्न करते हुए तुम लोग विज्ञानादि धन को मुझसे मांगो और तुम लोग मेरी मित्रता से अलग मत होओ।

हे मनुष्यों ! मैं सत्यभाषण रूप स्तुति करने वाले मनुष्य को सनातन ज्ञानादि धन को देता हूँ। मैं ब्रह्म अर्थात् वेद का प्रकाश करने हारा और मुझको वह वेद यथावत् कहता उससे सबके ज्ञान को मैं बढ़ाता मैं सत्पुरूष का प्रेरक यज्ञ कराने हारे को फलप्रदाता और इस विश्व में जो कुछ है उस सब कार्य का बनाने और धारण करने वाला हूँ। इसलिये तुम लोग मुझको छोड़ किसी दूसरे को मेरे स्थान में मत पूजो, मत मानों और मत जानों।

ओ३म् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता उसी की उपासना करनी योग्य है अन्य को नहीं।

सब वेदादि शास्त्रों में परमेश्वर का प्रधान और निज नाम (ओ३म्) को कहा है, अन्य सब गौणिक नाम है।

क्योंकि सब वेद सब धर्मानुष्ठान रूप तपश्चरण जिसका कथन और मान्य करते और जिसकी प्राप्ति की इच्छा करके ब्रह्मचर्याश्रम करते हैं उसका नाम ओ३म् है।

जो सबको शिक्षा देने हारा, सूक्ष्म से सूक्ष्म, स्वप्रकाश स्वरूप, समाधिस्थ बुद्धि से जानने योग्य है उसको परम पुरूष जानना चाहिए। – **सत्यार्थप्रकाश**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आस्तिक कौन है ?

– महात्मा प्रभु आश्रित

स्व. श्री सिय्याराम जी बड़े योगी थे। गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ाते थे। सरल स्वभाव और एकान्त सेवी थे। प्रोफेसरों को सन्देह हुआ कि यह नास्तिक हैं। आचार्य रामदेव जी को इस बात की खोज के लिए लगाया गया। सैर पर साथ आने-जाने लगे। जब कुछ अनुराग अधिक हो गया तो रामदेव जी ने पूछा आप आस्तिक हो कि नास्तिक ? तो श्री सिय्याराम जी ने प्रत्युत्तर में पूछा कि आप आस्तिक अथवा नास्तिक हैं ? तो श्री रामदेव जी ने कहा मैं आस्तिक हूँ। श्री सिय्याराम जी ने पूछा तो बताओ परमेश्वर कैसा है ?

श्रीरामदेव जी ने कहा परमेश्वर सर्वव्यापक और कर्म फलदाता हैं। श्री सिय्याराम जी कहा अच्छा जंगल में सिंह आ जाए तो क्या करोगे ? श्री रामदेव जी ने कहा शोर मचाऊँगा साथी को बुलाऊँगा। डंडा लूंगा। इस पर श्री स्वामी जी बोले तुम्हें तो परमेश्वर पर विश्वास ही नहीं कि वह कर्मफल दाता है और न्यायकारी यदि सिंह इसलिए आया कि मेरे कर्म फल मुझे अन्त करने को है। मेरा भोग समाप्त हो चुका है। तो सिंह मुझे फाड़ देगा नहीं तो परमात्मा स्वयं भी तो रक्षा करता है। आचार्य जी मन-मन ही लज्जित हो गये। हम यज्ञ का पुण्य कार्य जो करते हैं इनका तात्पर्य केवल यही है कि हम आस्तिक बनें। आस्तिक वही जिसका अन्त:करण शुद्ध हो जो आदमी किसी प्रकार का कार्य दूसरे की भलाई के लिए करता है। जैसे कीर्तन, हवन, उपासना आदि-आदि वह है आस्तिक और जो इन कार्यों से परे हैं वह पक्का नास्तिक हैं। हम तो साधना की रक्षा में दाखिल हैं।

कुलभूमि समाचार...

आर्य समाज मलाजखंड में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस संपन्न

आर्य समाज मलाजखंड में दि. ३०.१०.९७ को महर्षि दयानंद निर्वाण दिवस सोल्लास संपन्न हुआ। इस वसर पर मलाजखंड ताम्र परियोजना के अधिशासी निदेशक श्री बलवीरसिंह जी, समाज के मंत्री नरेंद्र विश्वकर्मा जी एंव उपप्रधान श्री एस.के. गुलाटी जी का सारगर्भित प्रवचन हुआ जिसका जनता पर अच्छा प्रभाव हुआ।

बीकानेर राजस्थान में तीन वान्य प्रस्थी नक्षत्रों का उदय

बीकान्नेर आर्यसमाज के तत्वावधान में वेदप्रचार सप्ताह सोल्लास संपन्न हुआ। इस अवसर पर तीन सज्जनों ने श्रीस्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (मंत्री, सा.आ.प्र.सभा) से वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर समाज के लिये अपना जीवन अर्पित किया।

स्वामीजी महाराज ने इन महानुभावों का नाम निम्नानुसार रखा -

पुणीराम आर्य - **पुर्णानन्द वान्प्रस्थी**
छगनलाल आर्य - **आनन्द मुनि वान्प्रस्थी**
सोहनलाल आर्य - **सोममुनि वानप्रस्थी**

दयानंद मठ चम्बा में विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर संपन्न

दयानंद मठ चम्पा में दि. १४.१०.९७ से १८.१०.९७ तक एक पंचदिवसीय विशाल निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली व धनबाद के कई डाक्टरों ने अपनी सेवाएं दी। शिविर में ४०८९ लोगों ने उपचार कराया।

आर्य समाज मुजफ्फरपुर में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस संपन्न।

आर्य समाज मुजफ्फरपुर के प्रधान आर्यरत्न श्री पन्नालाल आर्य के अध्यक्षता में दिपावली की पावन पर्व व महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया। अनेक विद्वानों ने महर्षि को श्रद्धांजंजलि अर्पित करते हुए अपना विचार रखे।

आर्य समाज दुर्ग में वेद प्रचार

आर्य समाज आर्यनगर दुर्ग की ओर से दिनांक १५.११.९७ के ग्राम नेवरा में प्रचार कार्य रखा गया जिसमें अबेक ग्रामों से नरनारी उपस्थित थे सभी ने यज्ञ व प्रवचन का लाभ उठाया। इसी प्रकार दिनांक २३, २४ नवम्बर को श्री आशुतोष जी का प्रवचन आर्य समाज दुर्ग में हुए।

आर्य समाज हिलसा का चुनाव संपन्न

प्रधान - **श्री देवेन्द्र शशिकर**
मंत्री - **राजेश्वर प्रसाद**
कोषाध्यक्ष - **हरिदेव प्रसाद**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरूकुल आश्रम आमसेना द्वारा निर्मित शीतकाल में सेवनीय आशु लाभकारी औषधियाँ

च्यवनप्राश (स्पेशल)

आजकल का दूषित वातावरण एवं दूषित खानपान से मनुष्यों के शरीर कमजोर एवं रोगग्रस्त हो रहे हैं, फलस्वरूप असमय में ही बुढ़ापा आ जाता है। ज्यादातर लोग दवाई के सहारे ही शरीर चला रहे हैं। इसका कारण है पौष्टिक भोजन का अभाव एवं निरोग रखने वाली दवाईयों का सेवन न करना। हमारे महर्षियों ने ऐसे अनेक दवाईयों का अविष्कार किया है, जिन्हें निरन्तर सेवन किया जाये तो मनुष्य निरोग रहकर लम्बी आयु प्राप्त कर सकता है। इन्हें रसायन कहते हैं। इनमें मुख्य रूप से च्यवनप्राश का नाम लिया जा सकता है। इसका प्रमुख घटक आंवला है जो विटामिन ''सी'' से भरपुर है अकेले इसे ही सेवन किया जाये तो यह शरीर के विषाणुओं को नष्टकर शरीर को स्वस्थ रखता है। च्यवनप्राश में इसके साथ-साथ शुद्ध घी, शहद, अष्टवर्ग, दशमूलादि ४० दवाइयों के काढे व इलायची, दालचीनी, तेजपत्ता, नागकेशर, वंशलोचन, पीपल आदि का चूर्ण एवं केशर, अभ्रक प्रवाल, शंख आदि भस्में मिलाये जाने से यह च्यवनप्राश अनेक गुणों से भरपुर हो जाता हैं।

वैसे तो बाजार में अनेक कम्पनियों के च्यवनप्राश मिलते हैं परन्तु गुरुकुल का च्यवनप्राश शास्त्रीय विधि से संपूर्ण औषधियाँ डालकर योग्य वैद्यों के देखरेख में जनता जनार्दन सेवा की भावना से बनाया जाता है। अत: मूल्य भी कम रखा गया है।

प्लेजफोर्ट

विशेष विधि से निर्मित यह आयुर्वेदिक कैफ्सुल शरीर की सुस्ती, कमजोरी, नसों में शिथिलता, अनुत्साह, काम करने की अनिच्छा खून की कमी आदि में तुरन्त काम करता है। एक बार सेवनकर अवश्य लाभ उठायें।

सभी प्रकार की कमजोरियों के लिये -

वीर्यवद्धनीवटी एवं धातु पौष्टिक चूर्ण

आजकल वीर्य का पतलापन कमजोरी, स्वप्नदोष जैसे रोग आम हो गये हैं। इससे युवा अवस्था में जोश एवं उत्साह भी समाप्त हो जाते हैं। अत: इन रोगों को दूरकर शक्ति प्राप्त करने के लिये गुरूकुल द्वारा निर्मित वीर्यवद्धनी वटी एवं धातु पौष्टिक चूर्ण का सेवन कर लाभ उठावें। जो धनीमानी लोग हैं उन्हें शीतकाल में च्यवनप्राश और इन दवाओं के साथ **वसन्त कुसमाकर रस** का भी सेवन करना चाहिए। इससे खुलकर भूख लगती है। कमजोरी शीघ्र दूर होकर शरीर सब प्रकार रोगों से रहित ... तेज से भर जाता है।

बलदा

अंगूर के रस तैयार यह टॉनिक अत्यंत सुमधुर पुष्टिकारक, हृदय को बल देने वाला है। मस्तिष्क का कार्य रखे बालों के लिये यह अत्यंत उपयोगी है। भूख खूलकर लगती है, शरीर की निर्बलता दूर कर अतीव बल देने वाली है।

सेवा में,
श्री सम्पादक जी
"गुरुकुल पत्रिका" गुरुकुल
कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ०प्र०)

ग्राहक संख्या 3049

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

EXCHANGE COPY
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक पत्र

Feb 98

कुलभूमि

6/3/98
LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

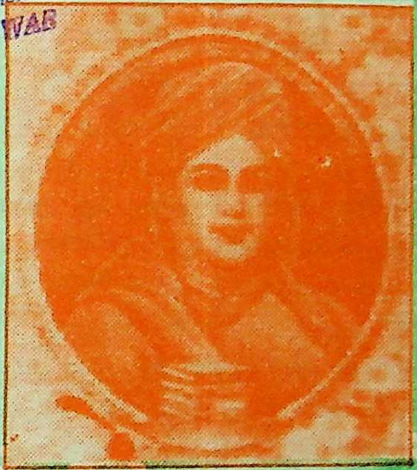

जिसकी पवित्र वेद विद्या मंगला के आगे,
पापिनी अविद्या दुःखद का मुख बन्द है ।
लुक्कड़ लताड़े, मतवाले दर्पहीन किये,
जानता जिसे न ऐसा कौन मति-मन्द है ?
धर्म धारणा से सारे देशों का सुधार किया,
जिसका अमोघ उपदेश सुखकन्द है ।
सूझी शिवरात्रि को महेश की महत्ता जिसे,
सत्य मूल शंकर वही तो दयानन्द है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन में सहयोग दें

साहित्य के द्वारा ही स्थायी प्रचार हो सकता है, इसी उद्देश्य को लेकर गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से उड़ीया भाषा में पांच दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, इनमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। परन्तु अब कुछ समय से सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका समाप्त हो चुके हैं, जबकि इनकी मांग निरन्तर बनी हुई है। अकेले सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन पर ही लगभग डेढ़ लाख रूपये खर्च होगा। गुरुकुल का समर्थ्य एक बार इतनी राशि लगाने का नहीं है, अतः वैदिक धर्म प्रेमी सज्जन इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग दे सकें तो महर्षि की यह अमर ग्रन्थ प्रकाशित होकर, अल्पमूल्य में स्वाध्यायशील जनता को उपलब्ध हो सकेंगे। आशा है ऋषिभक्त सज्जन इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें।

निवेदक

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आर्य जनता उत्साहपूर्वक आगे बढ़े !

मुझे इस वर्ष आर्य समाज के कई प्रमुख कार्यक्रमों में जाने का अवसर मिला। उन कार्यक्रमों में आर्य जनता की श्रद्धा एवं उत्साह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। वैसे भी देश के कोने-कोने में अधिक श्रद्धालु ऋषिभक्त सज्जन उत्साहपूर्वक वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपने-अपने ढंग से लगे हुए हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत प्रयासों से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार निरंतर आगे बढ़ रहा है। इसे देखकर उत्साह एवं प्रसन्नता अनुभव होती है। परन्तु कुछ पद्लोलुप स्वार्थी व्यक्तियों ने संगठन में फूट डालकर निराशा फैला दी है। उससे कुछ शान्तिप्रिय आर्यजन निराशा अनुभव कर रहे हैं। ऐसे सभी आर्य बन्धुओं से मेरा नम्र निवेदन है कि निराश एवं हताश न हों, वैदिक धर्म के पवित्र प्रचार-प्रसार कार्य में भगवान् हमारे साथ हैं। अतः निराशा को छोड़कर उत्साह पूर्वक वेदप्रचार कार्य में लगें। यह एक ईश्वरीय कार्य है। इसी से ईश्वर का सच्चा आशीर्वाद एवं कृपा प्राप्त हो सकती है। इसके लिये लोगों को वैदिक धर्म में दीक्षित करें। उन्हें संध्या यज्ञ और स्वाध्याय करने की प्रेरणा दें। अधिक से अधिक मात्रा में साहित्य बांटें। और एक उत्साह का वातावरण बनायें। समय आने पर ऊपर के झगड़े भी स्वतः समाप्त हो जायेंगे।

– धर्मानन्द सरस्वती

शाकाहारी दीर्घायु एवं स्वस्थ्य होते हैं ....!

नई दिल्ली : वा. शाकाहारी व्यक्ति मांसाहारी व्यक्तियों की तुलना में अधिक दीर्घायु तथा स्वस्थ होते हैं। साथ ही रोगों का प्रतिरोध करने की शाकाहारियों की क्षमता भी अधिक होती है।

यह मत दिल्ली में स्वास्थ्य से संबद्ध एक संस्था हार्ट केयर फाउंडेशन आफ इंडिया के चेयरमेन डॉ. कर्नल चौपड़ा के शाकाहार तथा स्वास्थ्य पर आधारित पुस्तक युअर लाइव इज इन युवर हैन्ड में यह बात लिखी है। पुस्तक के केन्द्रीय विषय बिन्दु पर आधारित बात पर आज यहां प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई है। विज्ञप्ति के अनुसार शाकाहार न केवल पांचन-तंत्र और पाचन प्रक्रिया अपितु हृदय मस्तिष्क तथा चेतना को भी लाभ पहुंचाता है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि अनेक शक्तिशाली जानवर जैसे हाथी, घोड़ा, बैल आदि जिसमें लगातार काम करते रहने की शक्ति है शाकाहारी ही है। शाकाहारी भोजन प्रोटीन के साथ-साथ पौष्टिक तत्वों की पूर्ति शरीर को करता है जबकि मांसाहार में प्रोटीन ही प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। दालें सोयाबीन तथा मूंगफली में भी प्रोटीन अधिक मात्रा में पाया जाता है। हरी सब्जियों, दालों, गेहूँ आदि के सेवन से शरीर के लिये आवश्यक सभी पौष्टिक तत्व जैसे प्रोटीन विटामिन वसा कार्बोहाईड्रेट खनिज लवणों आदि शरीर को भरपूर मात्रा में मिलते हैं। इससे शरीर स्वस्थ रहता है तथा लंबी आयु प्राप्त होता है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि निम्न वसा और नगण्य कालेस्ट्रोल शाकाहारी भोजन की विशेषता है। इस कारण शाकाहारी व्यक्तियों को हृदयघात, मोटापा, उच्च रक्तचाप और कैंसर जैसे रोग नहीं दबोच पाते।

नवभारत से साभार

१९ जनवरी १९९८

मेरा वास्तविक उद्देश्य : देश सुधार व धर्म प्रचार

..... और इस प्रकार उनके मोह में पड़कर सबके सुधार का वह उत्तम कार्य, जिसके लिये मैंने अपने जीवन को अर्पण किया है और जो मेरा वास्तविक मिशन (उद्देश्य) है, जिसके बदले मैंने अपना जीवन बलिदान करने की कुछ चिन्ता नहीं की और अपनी आयु को भी तुच्छ जाना और जिसके लिये मैंने अपना सब कुछ बलिदान कर देना अपना मन्तव्य समझा है अर्थात् देश का सुधार और धर्म का प्रचार, वह देश यथापूर्ण अन्धकार में पड़ा रह जाता।

(आत्मकथा से महर्षि दयानन्द सरस्वती)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुखपत्र

वर्ष - २०
अंक - २
माह - फरवरी १९९८
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,०९८
विक्रमी संवत् - २०५४
दयानन्दाब्द - १७३

प्रतिष्ठाता :
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक :
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक :
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक :
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता :
गुरूकुल आश्रम आमसेना
व्हाया - खरियार रोड
जिला - नवापारा (उड़ीसा)
पिन - ७६६ १०९
फोन : (०६६७८) २३४९

वार्षिक शुल्क	- २५/-
आजीवन	- २५०/-
एक प्रति	- २.५०/-

वेदोपदेश

मा गृधः

मनुष्य को सुखपूर्वक रहने के लिए जितना अन्न वस्त्रादि अपेक्षित है उतना तो उसे मिलना ही चाहिए। उतना लेने में किंचित भी दोष नहीं है। दोष है उससे अधिक या अत्यधिक लेने में भागवत् में कहा है कि जितने से मनुष्य का पेट भरे उतने पर उसका अधिकार है। उससे अधिक लेने या संग्रह करने वाला चोर है और उसे इसका दण्ड मिलना चाहिये।

विषयों का सौन्दर्य हमें अपनी ओर आकृष्ट करता है और हम उन विषयों का शरीर धारण करने के लिए नहीं वासना की तृप्ति के लिए उपभोग करने लगते हैं। तब उन विषयों की प्राप्ति के साधनभूत धन को जुटाना ही हमारे जीवन का लक्ष्य बन जाता है। फिर एक दिन यही धन हमारे निधन (मृत्यु) का कारण बन जाता है। मक्खी जब तक शहद से भरे कटोरे के किनारे पर बैठकर रसास्वादन करती है तब तक सुखी है, किन्तु ज्यों ही मुग्ध होकर उसमें डुबकी लगाती है त्यों ही शहद में लिप्त होकर प्राण गंवा बैठती है खाना जीने के लिए है, किन्तु जब हम खाने के लिए जीने लगते हैं तो सुख और शक्ति हमसे कोसों दूर भाग जाते हैं। आवश्यकता से अधिक जुटाना ही लालच कहलाता है। **मा गृधः** में इसी का निषेध है। परिग्रहवृत्ति अर्थात् आवश्यकता से अधिक संग्रह की प्रवृत्ति दोषावह है। यह वैयक्तिक दु:खों और सामाजिक विषमताओं का मूल है। आवश्यकताओं की मर्यादा तो निर्धारित की जा सकती है। किन्तु तृष्णा या आवश्यकता से ''अधिक'' की कोई सीमा निश्चित नहीं की जा सकती। जीवन भर जुटाते रहने पर भी उसका अन्त नहीं मिलता। तब मनुष्य विवश हो भर्तृहरि के स्वर में स्वर मिलाकर कहता है कि **तृष्णा तो न मरी, हम ही मर गये**। इसलिए महात्मा बुद्ध ने दु:खों का निदान करते हुए तृष्णा को ही सब दु:खों का मूल बताया। जीवन के निर्वाहार्थ अत्यावश्यक वस्तुओं को उपलब्ध करने में सचेष्ट व्यक्ति के लिए **''मा गृधः''** नहीं कहा गया है। आवश्यकताओं की पूर्त्यर्थ अपेक्षित पदार्थों की प्राप्ति तो परिश्रम, सच्चाई और ईमानदारी से सम्भव है परन्तु आवश्यकता से अधिक अपरिमित संपत्ति का संग्रह ''सुपथ'' से कठिन ही नहीं, नितान्त असम्भव है।

ईसा मसीह ने सम्भवत: ऐसे ही लोगों के लिए कहा होगा कि सुई के नक्के में से ऊँट का निकल जाना संभव है, किन्तु किसी धनी पुरूष के लिए स्वर्ग में जाना सम्भव नहीं है। इतना तो निर्विवाद है कि सम्पत्ति का बोझ लादे कोई भी मनुष्य अध्यात्म में प्रवेश नहीं कर सकता। भोग के पश्चात् सब कुछ त्यागकर संन्यासी बन जाने वाला ही उस मार्ग पर चल सकता है। अथवा, अपवाद रूप में कोई जनक जैसा विदेह जिसे सारी मिथिला के जल जाने पर भी तनिक शोक नहीं पहुंचता।

स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय...

सावधान ! स्वाधीनता के प्रेमी चेते ।

पाठकगण ! कई वस्तुएं सामने दिखने में सुन्दर एवं आकर्षक होती हुई भी हानिकारक होती है । बच्चा सांप और अग्नि को सुन्दर देखकर ही पकड़ना चाहता है । यही स्थिति आज की राजनीति की है । अधिकतर राजनैतिक लोगों ने मोहक किन्तु मिथ्या नारे देकर देश की एकता की नींव में बारूद भर दी है । देश की जनता भी इन नारों में बुरी तरह बहक गई हैं । हम फूट को एकता मान बैठे हैं, जाति-पाति के भेदभाव को उन्नति का मार्ग मान लिया । बिना परिश्रम किये प्राप्त सुविधाओं को प्राप्त करने में सभी एक दूसरे को पछाड़ना चाहते हैं । सम्प्रदायवाद की सन्तुष्टि को समानता कहा जा रहा है । बहुसंख्यकों को तिरस्कृत करना अधिकतर राजनेताओं ने अपना जन्मसिद्ध अधिकार मान लिया है । चिन्ता की बात यही है कि अपने को तथाकथित बुद्धिवादी मानने वाले लेखक मन्य का दम भरने वाले लोग भी इन्हीं मिथ्या बातों को बढ़ावा दे रहे हैं । फलस्वरूप यह देवताओं का देश स्वार्थ पूर्ति एवं अराजकता का केन्द्र बन गया है । इन सारी दुरावस्था का सुधार जनता जनार्दन ही कर सकती है । इस जनता जर्नादन के पास वोट रूपी ऐसा अहिंसक हथियार हैं, जिसके द्वारा अपने को सर्वशक्तिमान् मानने वाले राजनेताओं को थोड़ी सी सावधानी से भूमिसात् किया जा सकता है । परन्तु देश के दुर्भाग्यवश इस वोट रूपी हथियार का भी दुरूपयोग हो रहा है, लोग चन्द रुपयों के लोभ में इसे कहीं भी फेंक देते हैं । इस प्रकार थोड़े से लोभ लालच के द्वारा यह अमोघ-हथियार भी देश के पतन का कारण बनता जा रहा है । कभी संसार का गुरू माना जाने वाला देश पहले ही अपने अनेक अंग कटवा चुका है । स्वार्थी और निर्दयी राजनेता इसके शेष अंगों को भी काटकर फेंकना चाहते हैं । इसीलिये तो विदेशी देशद्रोही शक्तियों के हाथों खेल रहे हैं, फूट एवं जातिवाद को बढ़ावा दे रहे हैं । देश के टुकड़े करने के इच्छुक पृथक्ता की मांग करने वाले विदेशी मतों को अरबों-खरबों का अनुदान दे रहे हैं, उनके द्वारा फैलाई जा रही देशद्रोही भावना को देखकर खुश हो रहे हैं ।

ऐसे आपत्ति काल में देशभक्त जनता से हमारा आग्रह है कि अपने वोट रूपी हथियार को सोच-समझ कर प्रयोग करें । जो दल जातिवाद को बढ़ा रहे हैं, घृणा फैला रहे हैं, विदेशी सम्प्रदायों को महत्व दे रहे हैं, ऐसे दलों और लोगों को अपना वोट न दें, और इस आवाज को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचायें । यह एक पवित्रतम कार्य है । आशा है विचारशील सज्जन मेरे लेख की भावना को समझेगें ।

आर्य (हिन्दू) जनता सावधान

मैंने पिछले अंक में वर्तमान राजनीति के सम्बन्ध में कुछ निवेदन किया था । साधरण जनता झूठे प्रचार एवं मिथ्या नारों से शीघ्र प्रभावित होती है । यहाँ तक अच्छे-अच्छे लोग भी बहक जाते हैं । जिन राजनेताओं की कोई भावना नहीं होगी, न जिन्हें देश धर्म की चिन्ता है, न कुछ करने की सूझबूझ है वे लोग धर्म-निरपेक्षता, छोटों का विकास, समानता जैसे मिथ्या नारे देते हैं । ईसाई, मुसलमान तो इस धर्मनिरपेक्षता का इसलिए समर्थन करते हैं कि वे इसके सहारे खुलकर अपने मतों का प्रचार साम, दाम आदि से कर सकते हैं । हमारे शासन से ही वे अरबों रुपया लेकर विदेशीकरण कर रहे हैं । इसका स्पष्ट प्रमाण है कि १९४७ में देश का बंटवारा धर्म के आधार पर हुआ था । अत: हमारे देश के मुसलमानों को पाकिस्तान में चले जाना चाहिये था और पाकिस्तान मुस्लिम जनसंख्या का सबसे बड़ा देश होना चाहिए था । हुआ उल्टा आज भी किसी भी मुस्लिम देश से अधिक मुसलमानों की संख्या भारत में है यहां लगभग २० करोड़ मुसलमान हो गये हैं । इस प्रकार कुछ लाख ईसाईयों के स्थान पर कई करोड़ हो गये हैं । उनकी जनसंख्या वृद्धि हमसे कई गुणा है । वर्तमान धर्म निरपेक्षता के नाम पर ये दोनों सम्प्रदाय ही फल-फूल रहे हैं । सरकार को घुड़की देकर अपनी उल्टी-सीधी मांगे मनवाते रहते हैं । अभी पिछले दिनों की बात है मध्यप्रदेश सरकार द्वारा विद्यालयों को दिये जा रहे अनुदान की जांच कराई गई तो ज्ञात हुआ कि कई ईसाई संस्थायें दो-दो विभागों से ग्रान्ट ले रही हैं । परन्तु जब इनकी ग्रान्ट बन्द कर दी गई तो कुनकुरी (रायगढ़) के विशप किन्डो ने सरकार को धमकी दे दी कि हम बसपा में शामिल हो जायेगें । फलस्वरूप सरकार के अफसर मनाने के लिए चक्कर काट रहे हैं । जबकि हमारी संस्थाओं को बिना अनुदान के भी मान्यता देने में आनाकानी की जाती है । इस प्रकार स्पष्ट है कि धर्म-निरपेक्षता का मतलब विदेशीकरण । इस साझा सरकार के कार्यकाल में ईसाई, मुसलमान खुलकर खेल रहे हैं । गोहत्या पर प्रतिबन्ध होने पर भी इस बार उड़ीसा, मध्यप्रदेश में क्रिसमस के अवसर पर ईसाईयों ने खुलकर गोहत्या की और ऐसा ऊपर के निर्देश से हुआ । यह है धर्म-निरपेक्षता । अत: इस निर्वाचन के अवसर पर देशवासिओं को गंभीरता से विचारना चाहिये कि देश की स्वाधीनता की रक्षा करनी है या नहीं । यदि स्वाधीनता की रक्षा करनी है तो इस धर्म-निरपेक्षता का ढ़ोंग करने वाले नेताओं को दूर फेंकना होगा और पूर्ण ध्यान देकर देश को विदेशीकरण से बचाना होगा । इसके लिए सभी मिलकर पुन: धर्म-रक्षा महा-अभियान को गति दें । ईसाईयों के झूठे प्रचार से देशवासियों को बचायें ।

– व्रतानंद सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य का आधार - पाँच

व्यायाम (योगासन) २

गतांक से आगे

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
गुरुकुल आश्रम आमसेना

मैंने पिछले अंक में व्यायाम के प्रसंग में आसनों की चर्चा की थी। आसन शरीर के लिये सर्वश्रेष्ठ तथा निरापद हैं। जहां पाश्चात्य व्यायाम खर्च एवं साथियों की अपेक्षा वाले हैं। उनसे शरीर का व्यायाम कभी कम होता है, कभी ज्यादा। इसी प्रकार किसी अंग का कम किसी का ज्यादा व्यायाम होता है। परन्तु आसनों में ऐसी कोई समस्या नहीं। अधिक दण्ड, बैठक दौड़ से भी आगे जाके कभी-कभी शरीर में कोई-कोई परेशानी किसी-किसी को हो जाती है। शरीर को लाभ प्रतीत नहीं होता, शरीर थका हुआ सा भी नहीं लगता इसलिये कुछ लोग आसनों को कम महत्व देते हैं। यद्यपि आसनों का लाभ देर में प्रतीत होता है परन्तु वह स्थायी होता है। परन्तु कभी-कभी ये आसन रोगों को दूर करने में चमत्कार सा करते हैं। जिन रोगियों को चिकित्सक भी असाध्य घोषित कर देते हैं। वे भी आसनों से स्वस्थ होते देखे गये हैं। इन आसनों में शीर्षासन - इसे विपरीत करनी मुद्रा भी कहते हैं। इसका स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। इसका प्रभाव शरीर पर तुरन्त पड़ता है। परन्तु अनुभवी व्यक्ति से परामर्श करके ही इसका अभ्यास करना चाहिये क्योंकि किसी-किसी को यह अनुकूल नहीं पड़ता, विशेषकर पित्त प्रकृति वालों को। क्योंकि शीर्षसन के करने से गर्मी बढ़ती है। वैसे तीन से पांच मिनिट तक सामान्य रूप से कोई भी कर सकते हैं। वह शरीर के सारे अंगों को लाभ पहुंचाता है। शरीर के सभी हिस्सों में नये खून के आने से बुद्धि बढ़ती है, ताजगी तथा उत्साह आता है। पाचन शक्ति बढ़कर भूख खुलती है। गैस बनना, पेट का साफ न होना, पेट के किसी हिस्से में वायु का रूक जाना आदि रोगों में कई बार तुरन्त काम देता है। गुरूकुल कांगडी के प्रसिद्ध स्नातक तथा वेदों के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य अभयदेव जी बचपन में कब्जी से परेशान थे, पांच-पांच, छ:-छ: 'दिन तक उनका शौच नहीं खुलता था। डॉ. सब दवाई देकर थक गये। अन्त में गुरूकुल कांगड़ी से घर वापिस भेजने का सोचा जाने लगा। इसी बीच इन्होंने कहीं शीर्षासन के लाभ पढ़े। उससे उत्साहित होकर इन्होंने शीर्षासन करना शुरू किया। दो-चार दिन शीर्षासन करने के पीछे ही इनको शीर्षासन के पीछे शौच की इच्छा होकर पेट साफ होने लगा। अब जब भी इनका पेट साफ नहीं होता शीर्षासन करके पेट साफ कर लेते और निरन्तर शीर्षासन करने से इनका ये कष्ट सदा के लिये समाप्त हो गया।

अभी कुछ दिन पहले की घटना है दिल्ली के किसी परिवार में उनके नौकर को असह्य पेट दर्द हुआ, कई दवाई देने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ। चिन्तित होकर आपरेशन कराने तक की बात आ गई। तभी वहां किसी आसन प्रेमी ने उसका ६ मिनिट तक शीर्षासन करवाया उसी से दर्द तुरन्त समाप्त हो गया परन्तु यह लाभ श्रद्धापूर्वक लम्बे समय तक करने से ही प्राप्त होते हैं।

यदि अनुकूल पड़े और १५-२० मिनिट तक शीर्षासन करने का अभ्यास हो जाय तथा यह निरन्तर किया जाय तो शरीर में जीवनीय शक्ति तो बढ़ती ही है बुद्धि तथा नेत्र ज्योति भी बढ़ती है। बढ़ा हुआ (तिल्ली) और यकृत् (लीवर) ठीक हो जाते हैं। बवासीर, गुल्म, अजीर्ण, अपचन आदि उदर रोगों के साथ धातु संबंधी सभी रोगों में भी बहुत लाभ होता है। शीर्षासन करके कुछ देर सीधे खड़े रहना चाहिए। जिससे सिर में आया हुआ रक्त सामान्य गति से शरीर में वापिस चला जाय। उसके पीछे दूसरे आसन करने चाहिये। पूर्ण लाभ के लिये आसन आदि व्यायाम करते समय मन भी इन्हीं के साथ लगाना चाहिये।

इसी प्रकार दूसरे उपयोगी आसन हलासन, सवर्ङ्गासन, सर्पासन, धनुरासन, पश्चिमोत्तनासन, अर्द्धमत्स्येन्द्रियासन, पवनमुक्तासन, चक्रासन, वृश्चिकासन आदि हैं। इन आसनों का विधिवत् निरन्तर श्रद्धापूर्वक अभ्यास किया जाये तो अनेक रोगों से बचकर दीर्घायु प्राप्त की जा सकती है। याद रखें स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा निवास करती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख-दुःख जीवात्मा के स्वाभाविक गुण नहीं

गतांक से आगे

- स्वामी सत्यपति परिव्राजक

चौदहवां दोष- यह है, कि कुछ लोग प्रशस्तपाद भाष्य के आधार पर सुख दुःख को जीव के स्वाभाविक गुण सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। प्रशस्तपादभाष्य में तो अधर्म को भी जीव का गुण स्वीकार किया है। यदि अधर्म को जीव का स्वाभाविक गुण मान लिया जाये तो स्वामी दयानन्द सरस्वती के मन्तव्य से विरोध आता है। उन्होंने लिखा है, कि दोनों चेतन स्वरूप है, स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। (सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास)

यदि जीव का स्वभाव (स्वरूप) पवित्र और धार्मिक है तो अधर्म उसका स्वाभाविक गुण नहीं हो सकता, और यदि अधर्म उसका स्वाभाविक गुण है तो वह स्वभाव से पवित्र नहीं हो सकता। इस प्रकार अधर्म को ज़ीव का स्वाभाविक गुण मानने पर परस्पर दोष आता है। इसका समाधान करें।

वैशेषिकदर्शन के आरम्भ में ही धर्म से अभ्युदय और मोक्ष की प्राप्ति मानी गई है। यदि जीवात्मा का अधर्म गुण स्वाभाविक मान लिया जाता है, तो अभ्युदय और मोक्ष की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। इसका उचित समाधान करें।

पन्द्रहवां दोष- यह है कि स्वर्ग की कामना वाले सांसारिक व्यक्ति के लिए कर्मकाण्ड के ग्रन्थों में ऋषियों ने यज्ञ करने का विधान किया है, कि स्वर्ग की कामना वाला व्यक्ति यज्ञ अग्निहोत्र करे। इसका अभिप्राय यह है कि सांसारिक सुख चाहने वाला व्यक्ति यज्ञ करे। यदि सांसारिक सुख जीव का स्वाभाविक गुण है तो उसकी प्राप्ति के लिए यज्ञ का विधान व्यर्थ है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखा है कि **''जो विशेष सुख और दुःख की सामग्री को जीव का प्राप्त होना है, वह स्वर्ग कहलाता है।''** (अंक १४ आ. रत्नमाला)। यदि सुख गुण जीव का स्वाभाविक है तो उसकी प्राप्ति नहीं हो सकती, क्योंकि वह सांसारिक सुख तो जीव में विद्यमान ही है। इसी प्रकार सांसारिक सुख की प्राप्ति के लिए ऋषियों ने आर्षग्रन्थों में यज्ञ आदि शुभ कर्मों का जो विधान किया है, वह सब निरर्थक सिद्ध हो जाता है।

सोलहवां दोष- यह है कि यदि दुःख जीव का स्वाभाविक गुण है, तो उसके विनाश के लिए प्रयत्न क्यों करता है, क्योंकि दुःख जीव का स्वाभाविक धर्म होने से उसके प्रतिकूल नहीं हो सकता है। जैसे ज्ञान गुण जीव का स्वाभाविक है, वह उसके प्रतिकूल नहीं होता, वैसे ही दुःख भी प्रतिकूल नहीं होना चाहिए।

सत्रहवां दोष- यह है कि दुःख को जीव का स्वाभाविक गुण मानने वाले लोग दुःख निवृत्ति का उपाय भी बतलाते हैं और उसको स्वाभाविक भी मानते है। यदि दुःख गुण जीव का स्वाभाविक है, तो उसकी निवृत्ति बतलाना व्यर्थ है, क्योंकि वह किसी भी उपाय से दूर (पृथक) नहीं हो सकता। दुःख गुण को स्वाभाविक बतलाना और उसकी निवृत्ति के उपायों का वर्णन भी करना यह परस्पर विरूद्ध है।

अठारहवां दोष- यह है कि वे यह कहते हैं कि जीवात्मा नित्यद्रव्य है, और नित्यद्रव्य के गुण नित्य होते हैं, इसलिए दुःख जीवात्मा का स्वाभाविक गुण है। यदि दुःख गुण जीव का स्वाभाविक है, तो, ऋषियों ने उसको दूर करने के उपाय क्यों लिखे हैं?

उन्नीसवां दोष- यह है, कि कुछ लोग सुख को जीव का स्वाभाविक गुण सिद्ध करने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दृष्टान्त देते हैं, कि एक व्यक्ति को जब लड्डू खाते-खाते पेट भर लेता है, तत्पश्चात् उसे लड्डू खाने में सुख नहीं मिलता। यदि सुख गुण लड्डू का हो तो उसका पेट भरने पर भी लड्डू का सुख मिलते रहना चाहिए। इसका उत्तर यह है कि लड्डू खाते-खाते जब पेट भर जाता है, तब लड्डू खाने वाले व्यक्ति के मन इन्द्रिय और शरीर की लड्डू से मिलने वाले सुख ग्रहण की शक्ति समाप्त हो जाती है, इसलिए लड्डू से मिलने वाले सुख की प्राप्ति भी नहीं होती। यदि उन्हीं लड्डूओं को किसी भूखे व्यक्ति को खिलाया जाये तो निश्चित्‌रूपेण सुख की प्राप्ति होगी। यदि सुख गुण जीव का स्वाभाविक है तो लड्डू खाने वाले व्यक्ति का पेट भर जाने पर भी जीवात्मा को अपने नित्यसुख की प्राप्ति क्यों नहीं होती इसका उचित समाधान करें।

बीसवां दोष- यह है, कि सुख दुःख को जीव के स्वाभाविक गुण मानने वाले लोगों ने न्यायदर्शन के आधार पर प्रतिज्ञा आदि पञ्च अवयवों के द्वारा अभी तक अपने पक्ष की सिद्धि और विपक्ष का खण्डन नहीं किया। जबकि मैंने अपने पांचवे लेख प्रतिज्ञा आदि अवयवों के द्वारा साधर्म्य और वैधर्म्य से अपने पक्ष की सिद्धि और विपक्ष का खण्डन किया है।

इक्कीसवां दोष- यह है, कि कुछ लेखक **''सुख दुःख गुण जीव के स्वाभाविक है''** इस मुख्य विषय को छोड़कर अन्य विषय में लिखते रहते हैं, और कुछ लेखक अपने विषय की उचित स्थापना और विपक्ष के प्रश्नों का उचित उत्तर नहीं देते, तथा कुछ अपने पक्ष की स्थापना तो कर देते हैं, यह विपक्ष की ओर से उठाये गये आक्षेपों का उत्तर नहीं देते हैं। इस प्रकार के लेख लिखने से सत्यासत्य का निर्णय करने में कोई सहायता नहीं मिलती। अतः प्रमाण और तर्क से अपने पक्ष की स्थापना और विपक्ष के आक्षेपों का उत्तर देना मुख्य कार्य है।

बाइसवां दोष- यह है, कि कुछ लोग न तो वेदों का स्वाध्याय करते, न ऋषिकृत ग्रन्थों को पढ़ते, न ही हमारे लेखों को पढ़ते और अपने लेखों में व वार्तालापों में उन्हीं बातों को बार-बार उठाते हैं, जिनका इस लेख में उत्तर दे चुके हैं, जैसे कि- सुख दुःख को प्रकृति का गुण मानने में क्या प्रमाण है, और जीव के स्वाभाविक गुण कौन-कौन से हैं? इसका उत्तर यह है, कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने स.प्र. के ९ वें समुल्लास में पञ्चकोशों का वर्णन करते हुए कारण प्रकृति को आनन्द का आधार बतलाया है।

वह आनन्द गुण न तो जीवात्मा का है और न ईश्वर का वह सांसारिक सुख है, जो कि प्रकृति का धर्म है। क्योंकि स्वामी जी ने जीव को पञ्चकोशों से भिन्न स्वीकार किया है, और सत्यार्थ प्रकाश के आठवें समुल्लास में जीव को प्रकृति का भोक्ता लिखा है, इससे सिद्ध होता है, कि सुख दुःख प्रकृति के गुण है, और जीवात्मा उनका भोक्ता है, जीव के स्वाभाविक गुणों के विषय में दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश नवम् समुल्लास में जीव के २४ स्वाभाविक गुणों को स्वीकार किया है, जो कि मुक्ति में भी विद्यामान रहते हैं। इन २४ स्वाभाविक गुणों में सुख दुःख को स्वीकार नहीं किया है।

कुछ लोग इस प्रसङ्ग में आये जीव के २४ गुणों में प्रेम शब्द का अर्थ सुख और द्वेष का अर्थ दुःख बतलाते हैं और उन्हें जीव के स्वाभाविक गुण बतलांते हैं जो कि नितान्त असङ्गत है। क्योंकि ऋषिकृत ग्रन्थों में मोक्ष अवस्था में सांसारिक सुख दुःख का अत्यंत अभाव माना है और न्याय दर्शन में जीव के लक्षण **''इच्छाद्वेष ...''** सूत्र में द्वेष और दुःख शब्द को अलग-अलग पढ़ा है, यदि द्वेष शब्द का अर्थ दुःख होता तो लक्षणसूत्र में दुःख और द्वेष का अलग-अलग पढ़ना व्यर्थ है।

इस लेख में सुख दुःख को जीव के स्वाभाविक गुण मानते हैं वे वेद और वेदानुकूल ऋषिकृत ग्रन्थों के प्रमाणों से उचित समाधान करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्लाम का वैदिक रंग

प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु
''वेद सदन'', अबोहर

जमायते इस्लामी का पत्र **इस्लाम मुस्लिम** जगत् में व्याप्त कुरीतियों, सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक रोगों व अंध विश्वासों को दूर करने के लिये न तो आवाज उठाता है, न प्रयास करता है उल्टा इस्लाम में व्याप्त दोषों को वेदों के मत्थे-मढ़ने का ही घृणित कार्य करता है। वेद के सिद्धान्तों व उपदेशों पर किसी को भी शंका करने का अधिकार है परन्तु मानसिक व्यायाम करते हुए निरर्थक बातें लिखने से समय तो नष्ट होगा किसी का भी हित न होगा। वेद में नारी को जो स्थान व सम्मान प्राप्त है, उसे जानते हुए भी जमायते इस्लामी का पत्र वेद और नारी विषय के अंनर्गल लेख देकर इस्लाम की कोई सेवा नहीं कर रहा है। परन्तु इन्हें रोके कौन ? यदि कोई काक को श्वेत लिख दे तो कौनसा निब घिसता है ?

हमारी तो यही चाहत है कि हिन्दू, मुसलमान सब अंध विश्वासों से मुक्त हों। सत्य को ग्रहण करके एक दूसरे के निकट आयें। मुसलमान भाई एकेश्वरवाद की बहुत दुहाई देते हैं। यह अच्छी बात है। ईश्वर एक है और एक ही है। वेद तो बहुत बल देकर कहता है कि वह दो नहीं, तीन नहीं, चार नहीं, पांच नहीं, छह नहीं, सात नहीं, आठ नहीं और नौ नहीं। वह प्रभु अभिमिश्रत है और उसके अंश भी नहीं हैं। कहिये ! इससे बढ़कर एकेश्वरवाद का घोष क्या होगा ? इस्लाम जब यह कहता है कि- 'ईश्वर एक है' तो यह उसका वैदिक रंग है।

अपनी जिस मान्यता पर इस्लाम को इतना अभिमान है उसी को आधार बनाकर आओ ! मुसलमान मित्रों इस्लाम को वैदिक धर्म के और निकट लायें। पूर्वाग्रह मुक्त होकर कुछ विचार विमर्श करें। ईश्वर एक है और वह आदिल (न्यायकारी) तथा रहीम (दयालु) है। वह अल्लाह ख़ालिक (स्रष्टा), राज़िक (अन्न धन का दाता), मालिक (स्वामी) व पालक रक्षक है। ऐसा कुरान कहता है। वेद भी यही बताता है। सो यह क़ुरान का वैदिक रंग हुआ। अब कुछ आगे विचार करें। अल्लाह कब से पालक है ? वह प्रभु कब से न्यायकारी है ? वह परमात्मा कब से दयालु व स्रष्टा है ? परमात्मा को इस्लाम कदीम (अनादि) मानता है। यह क़ुरान का वैदिक रंग है। हमारा निवेदन है कि क्या ये सब गुण व शक्तियाँ परमात्मा में पहले से ही थीं या एकदम बाद में प्रस्फुटित हो गईं? मुसलमान भाई यह तो मानते ही हैं कि अल्लाह के गुण, कर्म व स्वभाव भी अनादि है।

जब अल्लाह न्यायकारी व दयालु है तो वह सदा से न्याय व दया करता आया है ? वह प्रभु सदा से किस पर दया करता आया है ? वह किसे न्याय देता आया है ? वह किसका पालक रहा है और किसका सृजन करता रहा है ? हमारे मुसलमान बंधुओं को भी यह मानने में आपत्ति नहीं होनी चाहिये कि अल्लाह ताला रूहों (जीवों) को न्याय देता आया है। जीवों पर दया करता आया है और प्रकृति से सृष्टि का सृजन व प्रलय करता आया है।

अब मुसलमान भाई यह सोचें कि जब वे प्रकृति व जीवों को उत्पन्न हुआ मानते या कहते हैं तो फिर जीवों की उत्पत्ति से पूर्व ईश्वर किस पर दया करता था ? वह किसे न्याय देता था ? प्रकृति थी ही नहीं तो खलकत (सृजन) किस से करता था ? आओ ! इस अंध विश्वास को छोड़ने का साहस करें। इसी में सब क़ा हित है। यह क़ुरान की मूल मान्यता के विरूद्ध है। तभी तो मौलाना हैरत दैहलवी ने लगभग एक शताब्दी पूर्व अपने कुरान भाष्य के आरम्भ में जीवों को अनादि मान लिया था। यह इस्लाम की भारी सेवा है कि उसे अंध विश्वासों की जकड़ पकड़ से मुक्त किया जाए।

एक और बात पर विचार करके हिन्दू, मुसलमान एक दूसरे के और निकट आयें। अंध विश्वास से न हिन्दू का हित है और न मुसलमान का। सृष्टि नियम विरूद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमत्कार वेद-विरूद्ध है अत: त्याज्य हैं। न हिन्दू की पौराणिक गप्पे-सत्य व कल्याणप्रद हैं और न ही हदीसों में वर्णित चमत्कार (हम उन्हें गप्पे नहीं कहते। मुसलमान स्वयं अपने हृदय से पूछें कि वे सत्य हैं पर असत्य) मनुष्यों को कोई हितकार सीख दे सकते हैं। सर सैय्यद अहमद ने तो स्पष्ट ही स्वीकार कर लिया था कि कुरान में हज़रत मुहम्मद के किसी चमत्कार का कोई उल्लेख नहीं है। यह भी माना है कि चमत्कार किसी धर्म की सत्यता का कोई प्रमाण नहीं है। यह भी माना है कि ईश्वर के गुण, कर्म व स्वभाव के विरूद्ध कही गई बातें अमान्य हैं। यह इस्लाम का वैदिक रंग है।

मैं बाल्यकाल में अपने मुसलमान मित्रों से हज़रत मुहम्मद की ऊंगली के संकेत से चाँद के दो टुकड़े होने का एक गीत सुना करता था। इस चमत्कार पर मुसलमान बहुत इतराते थे। सर सैय्यद अहमद ने इस पर भी लकीर फेर दी। इसे झुठला कर इस्लाम को वैदिक रंग में रंग दिया। इसी चमत्कार को झुठलाने पर स्वदेशी नबी नें पं. लेखराम जी की हत्या के षड्यंत्रों का सूत्रपात् किया था। परन्तु मौलाना हाली सरीखे कितने ही मुसलमान विचारक इस अंध विश्वास से मुक्त हो गए।

मुसलमान कभी मानते थे (कुछ आज भी कहते है) कि हज़रत मुहम्मद बुराक नाम के जन्तु पर सवार होकर आसमान पर अल्लाह के पास गए। वार्तालाप किया और फिर धरती पर आ गए। पर सैय्यद आदि कई विचारकों ने इस चमत्कार (मेराज) को झुठला दिया। यह इस्लाम का वैदिक रंग है परन्तु आश्चर्य इस बात पर है कि हज़रत मुहम्मद तो अकेले ऊपर गए और एक ही बार अल्लाह से वार्तालाप हुआ परन्तु कादियानी नबी एक साथी को भी साथ ले गया, बिना सवारी के सम्भवत: गया और अल्लाह से बातें तो नित्य करता था। पाकिस्तान बनने से पूर्व महाशय राजपाल जी का हत्यारा भी कारागार की काल कोठरी से ऊपर अल्लाह के पास, नबियों के दरबार में गया और पुन: लौट आया। उसकी सवारी क्या थी ? यह उसके जीवनी लेखक ने नहीं बताया। मुसलमान मित्रों! इन गप्पों को इस्लाम से निकाल दो फिर जो कुछ बचेगा वह वैदिक धर्म या शुद्ध इस्लाम होगा। क्रमश:....

ऋषि-उवाच

- जो कोई विद्वान सार्वजनिक हित लक्ष्य में धर प्रवृत्त होता है उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं, परन्तु सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयान; अर्थात् सर्वदा सत्य की विजय और असत्य की पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के आलम्बन से आप्तलोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हठते।

- यह बड़ा दृढ़ निश्चय है कि ''यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्'' यह गीता का वचन है। इसका अभिप्राय यह है कि जो-जो विद्या और धर्म प्राप्ति के कर्म है वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं। ऐसी बातों को चित्त में धर के मैंने सत्यार्थ प्रकाश को रचा है। श्रोता व पाठकगण भी प्रथम प्रेम से देख के इस ग्रन्थ का सत्य-सत्य तात्पर्य जानकर यथेष्ट करें।

माता शत्रुः पिता बैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

- यह किसी कवि का वचन है। वे माता और पिता अपने सन्तानों के पूर्ण बैरी हैं जिन्होंने उनको विद्या की प्राप्ति न कराई, वे विद्वानों की सभा में वैसे तिरस्कृत और कुशोभित होते हैं जैसे हंसों के बीच में बगुला। यही माता पिता का कर्त्तव्य कर्म परमधर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या धर्मसभ्यता और उत्तम शिक्षायुक्त करना।

- कहने, सुनने, पढ़ने-पढ़ाने का फल यही है कि जो वेद और वेदानुकूल स्मृतियों में प्रतिपादित धर्म का आचरण करना इसलिए धर्माचार में सदायुक्त रहें। क्योंकि जो धर्माचारण से रहित हैं वह वेदप्रतिपादित धर्मजन्य सुखरूप फल को प्राप्त नहीं हो सकता और जो विद्या पढ़ के धर्माचरण करता है वही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त होता है।

- ऋषि प्रणीत ग्रन्थों को इसलिए पढ़ना चाहिये कि वे बड़े विद्वान् सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे और अनृषि अर्थात् जो अल्प शास्त्र पढ़े हैं और जिनका आत्मा पक्षपात सहित हैं, उनके बनाए हुए ग्रन्थ भी वैसे ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवरात्रि का सन्देश

ले. कुञ्जदेव मनीषी
गुरुकुल आश्रम आमसेना

शिवरात्रि लौकिक शब्द में शिव की रात्रि ! यह 'शिव' कौन है जिसकी रात्रि यह शिवरात्रि कही जाती है। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में परमेश्वर के सौ प्रसिद्ध नामों में 'शंकर' और 'शिव' दोनों का वर्णन किया है। दोनों का एक ही अर्थ किया है। 'शम्पूर्वक डुकृञ् करणे धातु से शंकर शब्द सिद्ध हुआ है। शङ्कल्याणं सुखं करोति सः शङ्करः' जो कल्याण अर्थात् सुख का करने हारा है इससे उस ईश्वर का नाम शङ्कर है। दूसरा 'शिवु कल्याणे' इस धातु से शिव शब्द सिद्ध होता है, जो कल्याणस्वरूप और कल्याण का करने हारा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम शिव है, जिस रात्रि की एकान्त शान्त-गोद में बैठकर भक्त स्वयं शिव, शम्भु या शंकर बनने की साधना किया करते हैं, वह कल्याणकारिणी रात्रि ही शिवरात्रि है। परन्तु कवि की वह पंक्ति हमें याद दिला रही है -

कियत्यो नो जाता जगति शिवरात्र्यौ ननु पुरा
कियद् भिर्नाकारि प्रथितशिवरात्रि व्रतविधिः
परं सा काप्यासीद् व्रतिवरः जगन्मङ्गलकरी
सावित्री ज्ञानानाममृतफलदात्री तव यते ।

हे व्रतिवर सन्यासिन् : क्या आपको बोध होने से पूर्व संसार में कितनी ही शिवरात्रियां नहीं बीत चुकी है ? और क्या असंख्य शैवों ने इस प्रसिद्ध शिवरात्रि का व्रत नहीं रखा ? परन्तु वह विचित्र ही लोक कल्याणकारिणी शिवरात्रि सिद्ध हुई, जो आपके लिए विविध ज्ञानों को उत्पन्न करने वाली, अमृतफल देने वाली थी ।

इस रात्रि के प्रभाव से एक बार पुनः ज्वलन्त देवी प्रकाश हुआ जो न केवल भारत के ही अपितु सारे संसार के अन्धकार और दुःख के विनाश का कारण बना ।

मुर्दों, बूढ़ों और दीन दुःखियों को लोग प्रायः देखते और उन्हे अनदेखा करते रहते हैं परन्तु संसार की क्षणभंगुरता की अनुभूति सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध) को ही हुई। लोग प्रतिदिन वृक्षों से फलों को जमीन पर गिरते देखते हैं परन्तु न्यूटन को ही इनके भूमि पर गिरने और आकाश की ओर न जाने का मूल कारण गुरूत्वाकर्षण शक्ति के रूप में ज्ञात हुआ, कोयला तो मनुष्य सैकड़ों सालों से जलाता है, पतीली से निकलती भाप को किसने नहीं देखा ? पर जेम्सवाट नामक युवक ने भाप से चलने वाला रेल इंजन बनाया। लोग प्रतिदिन पत्थर की शिव मूर्ति पर चढ़ावा चढ़ाते और चूहों आदि द्वारा इनका भक्षण किया जाना देखते हैं परन्तु इसके सच्चे शिव न होने का भान बालक मूल शंकर को हुआ, ये घटनाएं इस बात की द्योतक हैं कि ये महानुभाव संस्कारी प्राणी थे और अज्ञान अभाव एवं अन्याय के निवारणार्थ व प्रकाश के प्रसारणार्थ प्रभु ने अपनी विशेष अनुकम्पा से इन्हें भूतल पर अवतरित किया था ।

इस बोध रात्रि ने भारत तथा विश्व में महर्षि दयानन्द द्वारा जो जागृति उत्पन्न की वह किसी से छुपी नहीं है। यह जागृति सत्य की जागृति थी। इस रात्रि ने सबसे बड़ा पाठ यह पढ़ाया कि अंधविश्वासों को छोड़कर अपनी **बुद्धि और सत्यज्ञान** से प्रत्येक नर नारी को कार्य करना चाहिए। यदि समस्त देशवासी तथा संसार के लोग यह निश्चय कर लेवें कि जो बात सत्य है उसी को हम मानेंगे और जो बात बुद्धि ज्ञान और सृष्टि नियमों के विपरीत है उसको नहीं मानेंगे तो संसार का दुःख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और वैमनस्य बहुत कम हो जाये।

महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक समझा कि सबके धार्मिक विचार एक से होवें और वे विचार सृष्टि नियम, बुद्धि और वेदज्ञान के अनुकूल होवें, उन्होंने यह भी अनुभव किया कि किसी जाति की राजनीतिक व्यवस्था उसके धार्मिक विचार एवं पारस्परिक व्यवहार के गठन पर निर्भर रहती है, जिस जाति के धार्मिक विचार ऊंचे हों जिसका आचार विचार उत्तम हों और जिसके पारस्परिक व्यवहार में सच्चाई व प्रेम हो उसकी राजनीतिक व्यवस्था भी श्रेष्ठ होगी और किसी अन्य जाति वा वर्ग को उस पर शासन करने का साहस न होगा, जिन व्यक्तियों का अपने भीतर पर शासन होता है उन पर बाहरी शासन की आवश्यकता प्राय: नहीं होती।

भारत को तथा विश्व को उच्च बनाने का उन्होंने आर्य समाज को साधन बनाया और उच्च बनाने के सभी साधनों व आदर्शों का प्रचार भी किया, स्वराज्य मिल जाने पर आर्य समाज को मुख्यत: देश की राजनीतिक व्यवस्था को दृढ़ एवं उत्तम रखने के लिए लोगों के आचार विचार और पारस्परिक व्यवहार को सही दिशा में बनाये रखने का विशेष काम करना था, वह यह कार्य करता आ रहा है।

भारतीय पद्धति आदेशों और मर्यादाओं का अतिक्रमण करने वाली जीवन और प्रशासन की गलत पद्धतियों के अपनाए जाने से, जिनके कारण विविध अभिशापों के साथ चारित्रिक, सामाजिक और प्रशासकीय अराजकता व्याप्त हो रही है और देश की आत्मा लुप्त हो रही है, इसका अचूक समाधान महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रदर्शित वेदमार्ग ही एक मात्र मार्ग है। जो मानव मात्र को एक जगह एकत्र कर सकती है। ऐसे महान् आचार्य की शिक्षा को कभी न भूलना चाहिए। जिन लोगों के हृदय में सत्य को जानने एवं परोपकार करने की लगन है उनको तो अवश्य स्वामी जी के जीवन और साहित्य का अध्ययन करना चाहिए।

शिवरात्रि की रात को हिन्दु लोग तो पवित्र मानते ही हैं परन्तु महर्षि अनुयायी जो हमारे आदर्श हैं जरा विचार करें कि किस प्रकार सत्य और ईश्वर में आस्था रखते हुए आत्मा को बलवान बनाएं और अंधविश्वास एवं असत्य के प्रवाह से बचें और दूसरों को बचाएं, उन लोगों को क्रियात्मक सांत्वना भी दें, जो देश की तथा विश्व की दुर्दशा एवं अशान्ति को दूर करने तथा मानव जाति संस्कृति और सभ्यता की रक्षा के लिए (जो विनाश के कगार पर खड़ी है) तत्पर हो।

अत: शिवरात्रि के पावन अवसर पर प्रत्येक भद्र व्यक्ति को शान्त भाव से आत्म निरीक्षण करके अपनी त्रुटियों को दूर करने और परिवार समाज और राष्ट्र की उन्नति में योगदान देने का व्रत लेना चाहिए, तभी सच्ची शिवरात्रि का व्रत होगा, और तमसो मा ज्योतिर्गमय के सिद्धांत को चरितार्थ कर सकेगें।

प्रण करते हैं, शिवरात्रि में अब और न सोते जायें,
दयानन्द सा इसी रात्रि में हम भी प्रकाश पायें।
जब-तक तन में प्राण, गरम लहू है अपने रग में,
भारत की संस्कृति, सभ्यता आजादी रहेगी जग में।

हि.प्र. विश्व विद्यालय में महर्षि दयानन्द शोधपीठ की स्थापना

हि.प्र. विश्व विद्यालय में महर्षि दयानन्द शोधपीठ की स्थापना की गई है। हि.प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी सुमेधानन्द जी ने शिमला में आयोजित एक बैठक में शोधपीठ की स्थापना पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए राज्य के महामहिम राज्यपाल, मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री एवं विश्वविद्यालय के कुलपति का हार्दिक धन्यवाद किया। उन्होंने एक विज्ञप्ति में बताया कि इस दयानन्द पीठ की स्थापना पर समस्त आर्य जगत् ने प्रसन्नता व्यक्त की है तथा यह विश्वास जताया है कि इस पीठ के माध्यम से वेद, वैदिक साहित्य तथा महर्षि दयानन्द की वैज्ञानिक विचार धारा से विश्व भ्रातृत्व तथा नैतिक और सामाजिक समानता एवं राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार संभव हो सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक रहस्य की बात"

श्री रामचरण महेन्द्र

संसार के कुटिल प्रहारों से जब आप उद्विग्न, अशान्त और व्याकुल हो उठें, कर्म-मार्ग पर अग्रसर होते हुए जब आपके पग-थरथरा रहे हों हृदय नैराश्य की लपटों से झुलसकर-मुरझा रहा हो तथा नेत्र घबराहट के धुएँ से धुँधले हो उठे हों तो शांति और तृप्ति के लिये अपने से नीचे वालों की ओर देखिये और उनसे अपनी बेहतर दशा का मिलान कर अपने अच्छे भाग्य पर संतोष कीजिये।

सच मानिये, संसार में आप अनेकों से अच्छे हैं। हमारे समाज में कितने ही ऐसे दुःखी, बीमार, अभाव ग्रस्त और गरीब व्यक्ति हैं, जो आपसे भी गयी-बीती घृणित दशा में पड़े-पड़े दिनों को धक्के दे रहे हैं।

आपके मुहल्ले में, आपके शहर में, आपके प्रान्त और आपके देश में अनेक ऐसे आदमी हैं, जो निकृष्ट और गिरी हुई अवस्था में पड़े हुए हैं, आपसे भी अधिक दुःखी और कातर हैं, भाग्य की कुटिलता के प्रहार सह रहे हैं। प्रतिकूलता उन्हें उठने नहीं देती, पर आप उनकी अपेक्षा श्रेष्ठतर स्थिति मे हैं।

न जाने कितने फुटपाथ या झोपड़ियों में रहकर जीवन काट देते हैं। उन्हें छत के नीचे सोने का सुख नहीं मिलता। आपके पास मकान तथा जीवन की अनेक सुविधाएं हैं, साधन हैं। ऐसी वस्तुएं हैं जो आपसे नीचे वालों के पास नहीं है। फिर आप निराश क्यों होते हैं ? व्यर्थ ही हिम्मत क्यों तोड़ रहे हैं ?

हमारे यहां कहा गया है -

प्राञ्चो अगाम नृतये हसाय।

(अर्थववेद १२.२.२२)

अर्थात् यह जिंदगी हँसते-खेलते हुए जीने के लिये हैं। चिन्ता भय, शोक, क्रोध, निराशा, ईर्ष्या, तृष्णा एवं वासना में बिलखते रहना मूर्खता है।

मनुष्य इसलिये नहीं जन्मा कि इस आनंदमय जीवन को भार स्वरूप समझकर व्यर्थ की काल्पनिक चिन्ताओं के बोझ में दबा रहे। प्रारंभ से ही आपको यह विश्वास कर लेना चाहिये कि भाग्य आपके अधीन है और पुरूषार्थ से आप श्रेष्ठ जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

आपको कोई रोग हो गया है। हाथ कट गया, पाँव में लँगड़ाहट आ गयी, कोई चर्म रोग हो गया, मोटापा या ब्लड-प्रेशर सता रहा है, पीड़ा से आप कतरा रहें हैं। कोई घर वाला पति-पत्नी, भाई, पुत्र या संबंधी रोगी हो रहा है।

हम थोड़ी देर के लिये यह मान लेते हैं कि आप या आपका परिवार रोगी ही सही, पर क्या आप जानते हैं कि संसार में सैकड़ों हजारों व्यक्ति प्रतिदिन अस्पतालों और देशी चिकित्सालयों में घूमते रहते हैं। आप से भी बदतर रोगी जीवन बिताते हैं। आपके पास इन शारीरिक कष्टों के होते हुए भी बहुत कुछ हैं। आप हजारों से श्रेष्ठ हैं, अब भी आनंद की अनेक वस्तुएं आप के पास हैं। आपसे भी अधिक अनेक दुःखी और रोगी हैं। फिर मन को छोटा क्यों करते हैं।

यदि आपके पास धन नहीं है, तो कोई हर्ज नहीं। उस दीन-हीन, गरीब-भिखारी या मजदूर को देखिये, जो रूखा-सूखा खाकर केवल स्वास्थ्य का आनंद भोगता है। अनेक ऐसे हैं, जो एक ही समय भोजन कर अपनी निरोगता का सुख भोगते हैं। कहा भी है -

नास्त्यरोगसमं सुखम्।

(शि.पु.उ.सं. ११/२३)

निरोगता के तुल्य दूसरा सुख नहीं है।

मनुष्य की कामनाएँ और इच्छाएँ आग की तरह बढ़ती ही जाती है। एक आवश्यकता पूर्ण होते ही, चार नयी आवश्यकताएँ सामने आ खड़ी होती है।

सब कुछ होने पर भी हमारे मन में किसी नयी चीज की इच्छा पैदा होती है। यह इच्छा काँटे के समान खटक-कर हमें परेशान करती है। यदि विश्व का समस्त सुख, ऐश्वर्य, आनंद और कुबेर की समस्त सम्पत्ति भी मिल जाय तो भी असंतोषी को सैकड़ों नयी और अपूर्ण आवश्यकताएँ सदैव दुःखी बनाये रखेंगी।

अतृप्ति की भावना हमारे दुःखों का मूल कारण है।

संतोषं परमास्थाय सुखार्थी संयतो भवेत्।
संतोषं मूलं हिं सुखं दुःखं मूलविपर्यय: ॥

जो परम सुख का चाहने वाला हो उसे अत्यंत संतोषी होना चाहिये, क्योंकि संतोष ही समस्त सुखों का मूल है।

(जीवन में नया प्रकाश से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकल का दिवालिया ब्रह्माकुमारी मत

सातवीं किश्त

स्वामी परमानंद सरस्वती

प्रिय पाठकों,

साप्ताहिक पाठ्यक्रम पुस्तक के पृष्ठ ९० पर लिखा कि परमपिता परमात्मा शिव ने भी समझाया है कि आदि देवी-देवता धर्म के क्षीण होने पर जब इब्राहिम द्वारा इस्लाम धर्म स्थापित हुआ और तब से अब कलियुग के अंत तक २५०० वर्ष व्यतीत हुए हैं और ये २५०० वर्ष दुःख के थे। इससे पहले २५०० वर्ष सुख के थे। इस प्रकार यह सुख-दुःख का खेल ५००० वर्ष का है। यह मनुष्य सृष्टि तो अनादि है परन्तु इसमें यह खेल ५००० वर्ष में एक बार पूरा होकर फिर पुनरावृत्त होता है।

समीक्षा- दादा लेखराज कृपलानी जिन्हें ये लोग परमपिता परमात्मा शिव कहते हैं तो विद्या से हीन थे ही, उन्हें न तो इतिहास का ज्ञान था और ना ही धर्म का। महिलाओं की अज्ञानता का लाभ उठाते हुए जो मन में आया बक दिया। देवी-देवता नाम का कोई धर्म सृष्टि में न हुआ है और न है। यह अनर्गल कल्पना है। इन्होंने लिखा कि इब्राहिम ने इस्लाम धर्म की स्थापना की। यह इनके बुद्धि के दिवालिये पन का जीता जागता सबूत है। दुनिया जानती है कि इस्लाम धर्म के संस्थापक मोहम्मद साहब थे जो ईसवीं की छठी सदी में हुए थे। इन्होंने लिखा कि इब्राहिम को इस्लाम धर्म की स्थापना किये आज से २५०० वर्ष हुए। मुझे तो आश्चर्य यह है कि इनकी इस प्रकार की कोरी गप्पों को इस संस्था के अनुयायी आँख मूंद कर कैसे स्वीकार कर लेते हैं। ईसा से पूर्व दाऊद नाम के नबी थे जो गौतम बुद्ध के समकालीन थे। दाऊद से करीब छः सौ वर्ष पूर्व मूसा थे और मूसा से पूर्व अब्राहम जो बाद में इब्राहिम कहलाये जिन्हें हुए करीब ४००० वर्ष हुए।

इन्होंने लिखा कि दुनिया में २५०० वर्ष तक दुःख रहता है और २५०० वर्ष तक सुख रहता है। इस तरह से असम्भव बुद्धि के विपरीत बातें तो कोई पढ़ा लिखा व्यक्ति नहीं कह सकता। ऐसी बातें तो केवल स्वार्थी ही कह सकते हैं। क्योंकि **स्वार्थी दोषं न पश्यति**। स्वार्थी को दोष नहीं दिखते उसे तो केवल अपना ही स्वार्थ दिखता है। आगे लिखा कि यह सृष्टि तो अनादि है। इस संस्था के लोगों को सामान्य ज्ञान भी नहीं है। जो वस्तु बनती है वह एक न एक दिन बिगड़ती है। बनी हुई वस्तु अनादि नहीं होती इस सृष्टि को बने हुए अभी तक १९८६७७३०९८ वर्ष हुए यह सृष्टि अभी २३३३२२६९०२ वर्ष तक रहेगी इसके बाद प्रलय होगा। इन्होंने लिखा कि यह खेल और ५००० वर्ष में एक बार पूरा होकर फिर पुनरावृत्ति होगा। इन्होंने ५००० वर्ष के बाद पुनरावृत्ति इसलिए लिखी की श्री कृष्ण को हुए ५२०० वर्ष हो गये हैं। दादा लेखराज यह सिद्ध करना चाहते हैं कि ५००० वर्ष पूर्व का कृष्ण मैं ही हूँ जिस तरह से कृष्ण रास लीला करते थे वैसी ही मैं कर रहा हूँ।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ९४ में लिखा कि कल्प की आयु तथा स्थापना विनाश और पालन का रहस्य तो उस कर्त्तव्यों को करने वाला तथा जन्म मरण से न्यारा परमात्मा स्वयं ही बता सकता है। कोई मनुष्य इसका सत्यज्ञान तो दे नहीं सकता। अतः हम तो परमपिता परमात्मा से प्राप्त ज्ञान ही आप को स्पष्ट कर रहे हैं कि कल्प की आयु ५००० वर्ष है।

समीक्षा- यह सत्य है कि सृष्टि का रचना काल और विनाश काल केवल परमात्मा ही जानता था। इसलिए उसने अपने इस ज्ञान की जानकारी को मानव सृष्टि के आदि में यह ज्ञानचार ऋषियों को दिया। जो वेद के नाम से जाना जाता है। अग्नि ऋषि को ऋग वेद, वायु ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य ऋषि को सामवेद और अंगिरा ऋषि को अथर्वद का ज्ञान दिया इस ज्ञान को दिये हुए १९६०८५३०९८ वर्ष व्यतीत हो गये हैं सृष्टि की आयु एक कल्प की होती है एक हजार चतुर्युग का एक कल्प होता है जिसकी आयु चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष की होती है यह गणित निमेष, पल, घड़ी, प्रहर, दिन, पक्ष, मास, अयन, वर्ष, युग, चतुर युग, मनन्वत और कल्प फिर प्रलय इसे ही ब्राह्म दिन कहते है। जब से मानव सृष्टि हुई है तभी से एक-एक दिन बढ़ाते हुए चले आ रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे तो आश्चर्य यह है कि जिसे साधारण सा भी ज्ञान न हो ऐसे व्यक्ति लेखराज को परमात्मा कहना और उसकी कही हुई वे सिर-पैर की गप्पों को मानना इससे भी ज्यादा विद्या की अवमानना और क्या हो सकती है ।

इसी पुस्तक के पृष्ठ १०१ में लिखा कि आज से लगभग २५०० वर्ष पहले इब्राहिम ने इस्लाम धर्म स्थापित किया। लगभग २००० वर्ष पूर्व ईसा ने ईसाई धर्म स्थापित किया १५०० वर्ष पूर्व शंकराचार्य ने कई सन्यास सम्प्रदाय स्थापित किया और कोई १४०० वर्ष पूर्व मुहम्मद ने मुसलमान धर्म स्थापित किया ।

समीक्षा- इब्राहिम को हुए करीब ४००० वर्ष हुए इन्होंने २५०० वर्ष लिखा ईसा को हुए १९९७ वर्ष हुए इन्होंने २००० वर्ष से पूर्व लिखा शंकराचार्य को हुए करीब २४०० वर्ष हुए इन्होंने १५०० वर्ष लिखा हैं । मुसलमान जाति का नाम है । मुसलमानों का धर्म इस्लाम है इन्होंने मुसलमान और इस्लाम को अलग-अलग धर्म लिखा। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस संस्था के लोगों ने सत्य न बोलने की कसम खा रखी है। तुलसी दास जी ने लिखा है- **नहिं असत्य सम पातक पुञ्जा** । असत्य के समान और कोई पाप नहीं हैं । असत्य बोलने वाला दुनिया में ऐसा कौन सा पाप है जो वह न कर सकता है।

इसी पुस्तक के पृष्ठ १०२ में लिखा कि इस्लाम धर्म बौद्ध धर्म ईसाई धर्म आदि जो भी हुए हैं वह द्वापर युग में हुए हैं ।

समीक्षा- ''**एकां लज्जां परि त्यज्य विजयी सर्वत्र भवेत्**'' की कहावत को चरितार्थ करते हुए यह लिख दिया कि इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, द्वापर युग में हुए हैं । पुरातत्व विभाग की खुदाई में बौद्ध कालीन जो शिला लेख प्राप्त हुए हैं उनमें कलि संवत् और युधिष्टरी संवत अंकित मिलते है इससे सिद्ध है की बुद्ध के समय कलियुगी संवत् चलता था फिर यह कहना कि बुद्ध ईसा-इस्लाम द्वापर युग के हैं ऐसी बात तो पागल ही कह सकता है बुद्धि वाला नहीं। श्री कृष्ण के मृत्यु के १० वर्ष बाद से कलियुग लगा है जिसके ५०९८ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और ४२६९०२ वर्ष अभी बाकी हैं ।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ११२ में लिखा की शास्त्रवादी लोग तो १० चतुर्युग का एक कल्प मानते हैं परन्तु परमपिता परमात्मा शिव ने समझाया कि एक चतुर्युग और संगम युग मिलाकर कल्प होता है।

समीक्षा- मुझे तो आश्चर्य यह है कि इन लोगों को झूठ बोलने में लज्जा क्यों नहीं आती इन्होंने शास्त्रों को तो स्वप्न में भी देखा नहीं और लिख दिया कि शास्त्र वादी १० चतुर्युग का कल्प मानते हैं । यदि इनमें जरा भी मनुष्यता है तो बतायें कि कौन से शास्त्र और कौन शास्त्रवादी ऐसा कहता है । तुम जिस लेखराज कृपलानी को परमात्मा शिव कहती हो वे तो वेद शास्त्रों और संस्कृत साहित्य से सर्वथा अनभिज्ञ थे और न कभी विद्वानों का संग किया उन्हें क्या पता कि कल्प क्या होता है जो मन में आया कह दिया । संगम का अर्थ है जहां दो धारायें आपस में मिलती हैं । यदि तुम यह कहो कि कलियुग के अन्त और सतयुग के प्रारम्भ को हम लोग संगम युग कहते हैं । ऐसा कहना तुम्हारी विवेक हीनता को ही सिद्ध करता है । दो युगों के मिलन के समय को संधि काल कहते हैं युग नहीं और ये संधि काल एक नहीं चार होते हैं । सतयुग त्रेता संधि एक, त्रेता द्वापर संधि दो, द्वापर कलियुग संधि तीन और कलियुग सतयुग संधि चार हर चतुर्युग में चार संधि काल होते हैं । परन्तु ये संधि या औपचारिक मात्र ही होती है जैसे दिन-रात की संधियों को अलग नहीं गिना जाता है । उसी तरह युग की संधियों को अलग युग के नाम से नहीं गिना जा सकता ।

इसी पुस्तक के पृष्ठ ११० में लिखा कि आत्मा तो क्या स्वयं परमात्मा भी धर्म ग्लानि के समय इस सृष्टि में आकर जन्म लेते हैं ।

समीक्षा- तुलसी दास जी ने राम चरित मानस में लिखा है ।

बातुल भूत निवश मतवारे ।
ये नहीं बोलहिं वचन विचारे ॥

बातुल (जो ज्यादा बकवास करता हो) भूत (जो उन्माद रोग से ग्रसित हो) विवश (जो किसी के दबाव में हो) मतवारे (जो मादक द्रव्य का सेवन किये हो) ये चार प्रकार के लोग विचार पूर्वक बात नहीं कहते मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि इस संस्था के लोग इन गुणों से परिपूर्ण हैं । पृष्ठ ९१ में लिखा कि परमात्मा जन्म मरण से न्यारा है । और यहां लिखते हैं कि परमात्मा इस सृष्टि में आकर जन्म लेते हैं । इस प्रकार की परस्पर विरोधी बातें तो उन्मादी, मतवारे या पागल ही करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गण्डे ताबीज : कैसे-कैसे मुराद !

– स्व. वेदप्रकाश सुमन

गण्डा-ताबीज बेचने वालों ने लोगों के अंधविश्वास की नाज पकड़ ली है। निर्धनता निक्षरता जहां ग्रामीण जनता के अन्धविश्वास का मूल है वहां शहरवासियों के अन्धविश्वास के जड़ है, आलस्य और आत्म-दुर्वलता। गण्डे-ताबीज से फायदा होता है। गण्डे-ताबीज बेचने वालों का। आईये, आपकी मुलाकात करायें गण्डा-ताजी बंधवाने वालों से !

मेरे एक परिचित विद्यार्थी आई.ए.एस. परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। एक दिन मुझे मिले तो देखा कि उनकी बांहों पर काले धागे में बंधा ताबीज है। बात हैरानी की थी। आई.ए.एस. जैसी महत्वपूर्ण परीक्षा में विद्यार्थी ताबीज के बलबुते पर पास करता है या कड़ी मेहनत से ? मेरे पूछने पर उसने अत्यंत आत्मविश्वास से उत्तर दिया, ताबीज से आत्मिक बल बढ़ता है।

हमारे देश के कई खिलाड़ी गण्डा-ताबीज बांधे दिखाई देंगे। एक सुविख्यात महिला धावक ने एक बात बतायी कि वह ताबीज चुमकर स्पर्धा में उतरती है, तो अवश्य जीतती है। शारीरिक चुस्ती या स्वस्थ शरीर से भी जरूरी आत्मबल है, जिसे बढ़ाने के लिए मैं ताबीज का सहारा लेती हूं, उसने बताया।

ज्येष्ठ-श्रेष्ठ नेतागण भी गण्डों की चमत्कारी शक्ति से परे नहीं, किसी की बांहों पर 'जगन्नाथ प्रसन्न' की ताम्बे की संकरी पट्टी दिखेगी या किसी के गले में हनुमान की प्रतिमा होगी। इन महानुभावों की कर्मशीलता में पर्याप्त आकर्षण हो चाहे न हो, पर काले डोर में बन्धी यह मंत्रिक प्रतिमा इन्हें उन्नति के शिखर पर अवश्य ले जायेगी, ऐसा पक्का भरोसा इन्हें रहता है।

प्रश्न उठता है कि क्या सचमुच ही गण्डे-ताबीज इच्छित साध्य की प्राप्ति में सहायक होते हैं ? या वास्तव में जिस कामना से ये बांधे जाते हैं वे उसकी सिद्धि प्राप्ति में मदद करते हैं ? आईये ! इसका भी जायजा लें।

आई.ए.एस. का परीक्षा फल निकला और हमारा गण्डाधारी मित्र उसमें असफल रहा। वह सुविख्यात महिला धावक भी हर प्रतियोगिता नहीं जीत पाई और राजनीति के उतार, चढ़ाव का तो कहना ही क्या उनसे तो सभी परिचित है।

चिन्ता क्यों ? परीक्षा में यश लेना हो, विवाह सूत्र में बन्धन हो, इन्टरव्यू में चयन होना हो, तो हमारी नवरत्न अंगूठी पहनिये। इस तरह के विज्ञापन आपने पढ़े होंगे। भला अंगूठियां पहनकर इन्टरव्यू में चयन होता हो तो सभी अंगूठियां पहने इन्टरव्यू देने जायें। सभी परीक्षा में उत्तीर्ण हों, दुनिया में दुःख दर्द का नामों निशान न रहे और सुख समृद्धि की नयी दुनिया अस्तित्व में आ जाये।

जहां कहीं गण्डे-ताबिजों से काम हुआ भी हो, तो यह समझ लेना चाहिए कि वह उस इन्सान की मेहनत का मीठा फल है। गण्डे-ताबीज का असर नहीं है या यदा-कदा केवल संयोगवश ही अपूर्ण प्रयासों के बावजूद काम बन जाता है। याद रहे ऐसी घटनाएं ज्यादा से ज्यादा २ प्रतिशत होगी। गण्डे-ताबिजों का प्रयोग बेशक खूब होता हो, पढ़े-लिखे लोग इन्हें अपनाते हों, लेकिन ये उपाय कितने उपयोगी है, कितने नहीं यह तो इतना सब पढ़ने के बाद काफी स्पष्ट हो गया होगा। प्रश्न उठता है :- फिर गण्डे क्यों खरीदे जाते हैं ?

मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य के पास जो वस्तु न हो उसे पाने की उत्कट इच्छा स्वाभाविक है। जिसके पास धन की कमी है, वह अमीरी के सपने देखता है या बेकार युवक स्वयं को बड़े अधिकारी के रूप में देखना चाहता है। निर्बुद्धि विद्यार्थी की कामना रहती है कि वह सबसे अधिक अंक प्राप्त करे। ये लोग इसके लिये मार्ग ढूंढ़ने के बजाय अपनी इच्छा झटपट कैसे पूर्ण हो इसका हल ढूंढते है। यशो शिखर का मार्ग बहुत कठिन है, उसके लिये साधना की जरूरत होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसे में बिना कोई कष्ट उठाये परिश्रम किये गण्डे-ताबिज द्वारा अभिलाषा पूर्ति हो रही है, इससे बढ़कर और क्या होगा ? बांध लिया गण्डा और हो गया काम। यानी मनुष्य कष्ट की राह छोड़ आसान तरीका अपनाते हैं। जो व्यक्ति कठिन श्रम करने वाला हो वह शायद ही इस तरफ भटकता दिखेगा।

गण्डों का लाभ कैसे होता है –

गण्डों से लाभ होता है, गण्डे बेचने वालों का। मनुष्य की मानसिक और शारीरिक कमजोरियों का लाभ उठाकर ये अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। गण्डे को शक्ति से भरा बतला कर ये लोग इसके पांच से लेकर पचास हजार तक वसूल कर लेते हैं। दर असल गण्डा होता है, महज एक धागा या किसी देवी-देवता का चित्र पच्चीस-तीस पैसे के एक गण्डे के पीछे इनके कम से कम साढ़े चार रूपये बन गये। गण्डा बेचने वाला गेरुए वस्त्र पहने हो तो सोने में सोहागा। ये लोगों के सामने श्लोकादि पढ़कर धूप-दीप दिखाकर गण्डा या ताबीज बांध देते हैं। स्पष्ट है कि इस पूजा-अर्चना का खर्चा भी जोरदार बैठेगा।

चूंकि गण्डा-ताबीज बेचने वालों ने लोगों के अंधविश्वास की नब्ज पकड़ ली है। इसलिए ये अपने गण्डों का खूब प्रचार करते हैं। बड़े से बड़े अखबार या पत्रिका में तरह-तरह के रत्न और ताबिज शान से चमकते हैं। लोग खरीदते भी हैं इन्हें अनगण्य विश्वास से है। नकली साधु, अबीर शक्ति के झुठ-मुठ के उपासक इन सबका मतलब पैसे ऐंठने से है। भक्ति से ज्यादा उनका मन लगता है, दक्षिणा प्राप्ति में।

इस प्रवृत्ति की जड़ –

हमारे अधिकांश देशवासी अनपढ़ हैं लिखना-पढ़ना छोड़िये कई एक तो अपना हस्ताक्षर तक नहीं कर सकते। छूत की बीमारी जैसे महामारी चेचक के टीके लगवाने से ये लोग हिचकिचाते हैं। बड़ी माता को नारियल प्रसाद चढ़ाने से चेचक की बीमारी नहीं होती। उनकी यह धारणा अभी तक बनी हुई है। मां-बच्चे को उचित आहार, दवाईयाँ देना भी नहीं जानती कोई दुविधा आती हो तो झाड़ फूंक का सहारा लेकर गण्डे ताबीज बांध दिये जाते हैं।

हमारा देश गरीबों का देश है। छोटे गांवों में जाने के लिये डाक्टर इंकार करते हैं जिससे हमारे दुर्गम गांवों में बसने वाले इनकी सेवाओं से वंचित रहते हैं। अत: हमारे भोले-भाले देशवासी गण्डे-ताबीजों से जो सस्ते में मिल जाते हैं, मोहित हो जाते हैं। देहातों में सुनी-सुनाई बातों पर अधिक भरोसा किया जाता है। जहां एक ने किसी गण्डे की महत्ता व धारनी शुरू भी नहीं की सभी ने अपने बुरे समय में वैसा ही गण्डा खरीद लिया। ऐसे गण्डे खासकर बच्चों के गले या बांहों पर दिखेंगे। गांवों में बालमृत्यु का अनुपात बहुत ज्यादा है वहां शीतला का गण्डा बड़ा आम है।

निर्धनता व निरक्षरता जहां गांवों वालों के अन्धविश्वास का मूल है, वहां शहरियों के अन्धविश्वास की जड़ है, आलस्य व आत्म दुर्बलता। गति शून्य, क्रिया शून्य, आलसी मनुष्य भगवान् का नाम लेकर बैठ जाता है वह नहीं जानता कि भगवान् उसकी मदद करते हैं, जो स्वयं अपनी मदद करता हो।

कुचक्र से कैसे बचें ? –

हमारे शत्रु बाहर नहीं, बल्कि हमारे अन्दर है। हम यदि अपना व्यक्तित्व सुधारने का यत्न करें, तो इनके चंगुल से बचेंगे। यदि हम जान लें कि हमारे प्रयत्न ही हमें सफल बनायेंगे तो बेहतर है कि हम अधिकाधिक परिश्रम करें। स्वयं कृतत्व एवं विवेक को बढ़ावा देना उचित होगा।

ध्यान देने योग्य एक और बात यह है कि कोई भी मनुष्य हमेशा एक ही स्थिति में कभी नहीं रहता जीवन की ओर परिपक्व प्रगल्भ दृष्टिकोण से देखना मानव के लिये हितकारी होगा। जिसके पास जितनी संपत्ति है, उससे संतोष करना नितान्त आवश्यक है। इसका मतलब यह नहीं, कि लोगों में महत्वांकांक्षा न हो। महत्वाकांक्षा ही नहीं होगी, तो प्रगति असंभव है। लेकिन यश कितनी मात्रा में मिलेगा यह आपके प्रयत्नों तथा अन्य परिस्थितियों पर निर्भर रहेगा। हो सकता है, कि आप यथा संभव प्रयत्न करें पर फल न मिले ऐसी स्थिति में सतत् प्रयत्नशील रहने के साथ ही संतोष समाधान जीवन को सन्तुलन बनाये रखने के लिये आवश्यक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाशिवरात्रि अर्थात् बोध और शोध रात्रि

शिवरात्रि ही बोध रात्रि हैं, या यों कहिये कि शोध रात्रि हैं। शोध का विषय था ''शिव ये है, या वो है। एक है या दो हैं। शोधकर्त्ता था मूलशंकर, विषय सामग्री थी, पत्थर और कंकर। न कोई सहायक था न कोई नायक था। रूकावटें थी, अड़चने थी बन्धन थे। मां की ममता थी, आहें थी क्रन्दन थे। सांसारिक बन्धनों ने तोड़कर घर, वैभव को छोड़कर भाग गया था, क्योंकि उसका विवेक जाग गया था, जो कह रहा था जो तेरा चित्तचोर है, वह शिव तो कोई और है। उसको पाना है, तो खुद को खोना होगा और सच्चे मार्गदर्शक ज्ञानी गुरू को टोहना होगा, जो बताये -

मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? कहाँ जाना है ? क्या लाया था ? क्या ले जाना है ? क्या करना था ? क्या कर रहा हूँ ?

मैं जी रहा हूँ अथवा मर रहा हूँ ?
कब जाना है ? क्या रस्में हैं ?

आना-जाना क्या मेरे वश में है ? यदि नहीं तो लाने-ले-जाने वाला कौन हैं ? वह मुख्य हैं अथवा गौण है। उसका क्या स्वरूप है, रूप वाला है या बेरूप है। साकार है या निराकार है, विकार से युक्त या निर्विकार है।

जन्मा है, या अजन्मा है, दयालु है, या पक्षपाती है। वह अकेला ही है, या कोई उसका साथी है ?

इस प्रकार सवाल से सवाल निकल रहा था। वह शंकाओं से मोम की तरह पिघल रहा था। चाह को राह मिल जाती है। परिश्रम से पर्वत भी हिल जाता है। वह थककर पथरा गया था। भटकता-भटकता मथुरा आ गया था। एक कुटी थी, नेत्र रहित भृकुटी थी किन्तु उसमें सूर्य से कम नहीं था प्रकाश गटकटे थे। जितने मठे थे उनसे नहीं थी, कुछ भी आस।

अत: कुटी को खटखटाया कौन है ? अन्दर से स्वर आया। मैं कौन हूँ, ये ही तो नहीं जान पाया हूँ - जानने को ही यहाँ आया हूँ। विरक्त थे, जो रज और तम से, रूका नहीं गया, उस विरजानन्द से। उसकी आंखे डबडबा गयी थी। मानों उन जीर्ण-शीर्ण बुढ़ी आंखों में ज्योति आ गई थी। वह प्रज्ञा चक्षु सूर्य के समान चमक उठा। उसकी मृत आशाओं का पुलिन्दा जी उठा। जिस प्रतिभा सम्पन्न शिष्य को चाह था, वही चिल्ला रहा था। मैं कौन हूं ? भक्त को भक्ति के, निर्बल को शक्ति के मिलने से जो आनन्द होता है वही आनन्द विरजानन्द पा रहा था। पाये भी क्यों ना ? इच्छापूर्ति का साधन था, वह सदियों से जिसे ढूंढ रहा था, वह धन था वो। झोली में उलट दिया उसकी सारे ज्ञान को, भूखा-रखता है, भला कोई मेहमान को सब ही शंकाओं का समाधान हुआ। सच्चे शिव के दर्शन से दूर अज्ञान हुआ। तब से ही देव दयानन्द महान् हुआ। उसने कहा कि वह शिव, अजर, अमर, अविनाशी है, एक है, और घट-घट वासी हैं। अजन्मा है, निर्विकार हैं। निराकार हैं, वहीं सार है, करतार हैं, सब जग का पालन हार है। आत्मा अमर है, यें शरीर ही मरता है। शुभ-अशुभ कर्म जो करता है, उन्हें अवश्य भरता है। इनको ही लेकर आता है, इनको ही लेकर जाता है। वहीं लाने और ले जाने वाला है - शुभ कर्म ही जीवन की मोती माला है।

इस बोध और शोध की जनक शिवरात्रि है। महान् है और ज्ञानदात्री है। इस शोध करने वाले आनन्द कन्द की, प्रेम से जय बोलों देव दयानन्द की।

आरोग्यधाम से साभार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा रक्षक ईश्वर है

संवत् १९१४ की बात है एक कौपीन धारी साधु हाथ में छोटा सा दण्ड लिये नर्मदा स्रोत की ओर जा रहा है। उत्तरोत्तर बिहड़ जंगल होते जा रहे हैं। इसी बीच एक छोटा सा गांव पड़ा। जब साधु गांव से निकलने लगे, तो ग्रामवासियों ने उन्हें रोका पूछा स्वामी जी कहां जा रहे हैं ? किधर से आये हैं ? स्वामी जी ने कहा मैं नर्मदा स्रोत जा रहा हूँ। इस पर ग्रामवासी भयभीत हुए और कहने लगे, महाराज ! यह जंगल बहुत भयानक हैं। आगे अनेक हिंसक पशु कदम-कदम पर मिलते हैं। अत: आपका आगे जाना उचित नहीं। कहीं भी आपत्ति आ जा सकती है। स्वामी जी ने कहा -

ओ३म् सख्ये ते इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते।
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम् ॥

ईश्वर सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान् है। वह सबका शासक, किसी से पराजित न होने वाला अजेय है। उसके उपासकों को किसी का भय नहीं होता।

ओ३म् अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिमग्निं भ्रातरं समित्।
त्सखायं अग्नेरमिकं बृहत: सपर्यं दिविशुक्रंयव्रतं सूर्यस्य ॥

ऋग् १०/७/३

वह परमेश्वर ही हमारा माता-पिता, बन्धु सखा रक्षक और राजा है। वह पूज्य तथा आत्मशक्ति को देने वाला है। उसकी छत्रछाया में ही मैं सदा अपने आपको मानकर चल रहा हूँ। अत: मुझे किसी प्रकार का भय नहीं प्रतीत होता मैं यात्रा अवश्य करूंगा। यह कहकर चल पड़े। जब ग्रामवासी किसी प्रकार से भी न रोक सके तो स्वामी जी को एक भारी दण्ड देते हुए कहा- महाराज कम से कम इसे साथ लेते जाइये। वहां तो उनका आग्रह देखते हुए दण्ड ले लिया। परन्तु कुछ आगे जाकर अपने अटूट् ईश्वर विश्वास पर उसे फेंक दिया। अब थोड़ी सी ही दूर गये थे कि सामने से एक भयंकर भालु (रीछ) गर्जता हुआ आया और जोर से दहाड़ कर दोनों पैर उठाकर आक्रमण करने के लिये खड़ा हो गया। परन्तु साधु की आंखों का तेज पड़ते थे उलटे पांव दौड़ गया। भालु की आवाज सुनकर ग्रामवासी दौड़ते हुए आये तब तक रीछ भाग गया था। उन्होंने स्वामी जी फिर वापिस लौटने का आग्रह किया। परन्तु स्वामीजी अपने रास्ते पर बढ़ते ही गये। ये साधु योगीराज वेदों के पुनरूद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। उन दिनों योगियों की खोज में घुम रहे थे। ईश्वर के अटूट विश्वास पर केवल दुग्धाहार तथा बिना मार्ग पूछे भ्रमण कर रहे थे।

- साभार खिलते फूल

वरदान प्रभु इतना दे दो

- प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन, अबोहर-१५२११६

वरदान प्रभु इतना दे दो,
यह गौरव मान लुटाऊँ न।
पग धरूँ धरा पर दृढ़ता से,
जो पाऊँ व्यर्थ गंवाऊँ न ॥

इस ऊबड़-खाबड़ जगती में,
जीवन का लक्ष्य सुनिश्चित हो।
जो लक्ष्य चुना है जीवन का,
उसमें संशय किञ्चित न हो ॥

सङ्कट आयें तो चीरूँ मैं,
बाधाओं से घबराऊँ न...
हो सदा तरङ्गित मन मेरा,
जीवन में ऐसी मस्ती दो ॥

सुविचार जहाँ उछलें कूदें,
दिल मेरा ऐसी बस्ती हो ॥
मैं देख किसी के वैभव को,
कर्तार राल टपकाऊँ न...

मन हीन भावना के कारण,
किञ्चित न प्रीतम कम्पित हो।
निज दुर्बलताओं के कारण,
न ऐसे वैसे शङ्कित हो ॥

इस सदा बदलती सृष्टि में,
कुछ पाकर मैं इतराऊँ न...
यह कुन्दन काया परमेश्वर,
विषयों की भेंट न हो जाए ॥

यह अटक-भटक कर भक्त प्रभु,
मग में जग में न खो जाए ॥
मैं, करूँणासागर बलधारी,
बातों से बात बनाऊँ न...

श्री सेवा में है यही विनय,
मैं कर्मवीर गुणवान् बनूँ।
बस खाना सोना जीवन हो,
ऐसा न मैं भगवान् बनूँ ॥

जो उल्टा मुझ पर वार करें,
मैं तीखे बाण चलाऊँ न।
वरदान प्रभु इतना दे दो,
यश गौरव मान लुटाऊँ न ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलभूमि समाचार...

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न

आर्य समाज हीराकुद के विशाल प्रांगण में २८ दिसम्बर ९७ को उत्साहमय वातावरण में उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन पू. स्वामी धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में निर्वाचन अधिकारी श्री धनुर्धर महापात्र की देखरेख में सम्पन्न हुआ। इसमें १३५ आर्य समाजों के लगभग १५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतिनिधि पूर्व प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती एवं मन्त्री श्री विशीकेशन शास्त्री के स्थान पर दूसरों को अधिकारी बनाने के लिये तैयार नहीं हो रहे थे। बहुत समझाने-बुझाने पर ही परिवर्तन के लिये तैयार हुए। प्रतिनिधियों में से भी कोई भी अधिकारी बनने को तैयार नहीं हो रहा था। ऐसा दृश्य पहली बार देखने को मिला कि सभी पद को ठुकरा रहे हैं और एक दूसरे को अधिकारी बनाना चाहते हैं। अन्त में पू. स्वामी धर्मानन्द जी के समझाने पर नये अधिकारियों ने पदग्रहण करना स्वीकार किया। निर्वाचन सर्वसम्मति से जयघोष एवं तालियों की गड़गड़ाहट के बीच में सम्पन्न हुआ। इसमें निम्न अधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान	- स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
उपप्रधान	- श्री लक्ष्मण पटेल
-,,-	- श्री चतुर्भुज साहा
-,,-	- श्री धनेश्वर बलियार सिंह
मंत्री	- श्री ब्रजबन्धु पण्डा
उपमंत्री	- श्री सुरेशचन्द्र नायक
-,,-	- श्री बसन्त कुमार दास
-,,-	- एडवोकेट सोमनाथ नायक
कोषाध्यक्ष	- श्री गोपालदास रावल
निर्वाचन अधिकारी	- श्री धनुर्धर महापात्र

इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिये आठ प्रतिनिधि तथा ११ अन्तरङ्ग सदस्य भी निर्वाचित हुए। इस प्रकार सारा कार्यक्रम उत्साहमय वातावरण में सम्पन्न हुआ। अन्त में श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने श्रद्धापूर्वक वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार एवं शुद्धि कार्य में जुटने का आह्वान करते हुए कहा कि हमें दुनिया से कुछ लेकर जाना है और साथ जाने वाली चीज सेवा एवं वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार है। अत: इन कार्यों के लिये सबको उत्साहपूर्वक जुटना चाहिये। अन्त में शान्तिपाठ एवं जयघोष के साथ सभा विसर्जित हुई।

निर्वाचन सम्पन्न स्त्री आर्य समाज सक्ती

प्रधान	- श्रीमती स्वरूपणी साहु
मन्त्री	- श्रीमती विद्या थवाइत
कोषाध्यक्ष	- श्रीमती विमला आर्य

आर्य कुमार सभा गुरुकुल येडशी

प्रधान	- प्रवीण कुमार शास्त्री
मन्त्री	- गोविन्द आर्य
कोषाध्यक्ष	- रमेशचन्द्र आर्य

गुरुकुल भूमि में आर्य वीर एवं वीराङ्गना शिविर सम्पन्न

श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा एवं निर्देशन पर कन्या गुरुकुल आश्रम आमसेना में आर्य वीराङ्गना शिविर २५ से ३१ दिसम्बर ९७ तक सम्पन्न हुआ। इस शिविर में लगभग २५ कन्याओं ने श्रद्धापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त कर इस क्रम को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

इसी प्रकार गुरुकुल आश्रम आमसेना में आर्य वीरों को शाखा नायक की शिक्षा देने के लिये इन तिथियों में शिविर का आयोजन हुआ। इसमें प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी शिक्षा प्राप्त ३० आर्य वीरों ने शिक्षा प्राप्त कर इस क्रम को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। दोनों शिविरों की व्यवस्था गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से की गई। उनका संचालन उत्कल प्रान्तीय आर्य वीर दल के संचालक श्री कुंजदेव जी मनीषी ने किया तथा शिक्षण सार्वदेशिक आर्य वीर दल के शिक्षक श्री कपिल देव जी एवं श्री कृपासिन्धु जी ने उत्साह एवं श्रद्धा पूर्वक दिया।

गुरुकुल भूमि में द्वितीय प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

प्रचारकों के अभाव को दूर करने के लिये इस कार्यक्रम को प्रारंभ किया गया है। पिछले शिविर के उत्साहयुक्त परिणाम से प्रेरित होकर योग्य विद्वानों की देखरेख में अगला प्रचारक प्रशिक्षण शिविर एक से पन्द्रह मार्च तक गुरुगुल भूमि में आयोजित किया जा रहा है। इसमें शिक्षार्थियों को आदर्श दिनचर्या में चलाकर क्रियात्मक साधना की शिक्षा के साथ वेदमंत्रों का उच्चारण, सिद्धांत ज्ञान, बोलने का अभ्यास तथा संस्कारों का ज्ञान कराया जाता है। इस बार दक्षिण पूर्व भारत के सभी प्रान्तों से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में रूचि रखने वाले नवयुवकों को बुलाया जा रहा है। इसकी शिक्षण एवं भोजन आदि की सारी व्यवस्था गुरुकुल की ओर से नि:शुल्क होगी। इस शिक्षण में रूचि रखने वाले सज्जनों से निवेदन है कि अपना आवेदन पत्र भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करवा लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ निर्मित विशुद्ध औषधियाँ

१.	च्यवनप्राश स्पे. १ कि.	१००.००
२.	च्यवनप्राश ,,	८०.००
३.	ब्राह्मी आंवला तेल	२०.००
४.	ब्राह्मी आंवला तेल स्पे.	४३.००
५.	वातराज तेल ५० मि.	२५.००
६.	महानारायण तेल ,,	२३.००
७.	विषगर्भ तेल ,,	१५.००
८.	संजीवनी तेल ,,	१५.००
९.	आयुर्वेदिक चाय	८.००
१०.	बलदापाक	४०.००
११.	सुपारीपाक २०० ग्राम	४०.००
१२.	आश्रम बाम	८.००
१३.	आश्रम दन्तमुक्ता १०० ग्राम	१५.००
१४.	गैसान्तक रस १०० ग्राम	२४.००
१५.	त्रिफला चूर्ण १ पाव	१५.००
१६.	लवणभाष्कर चूर्ण	१२.००
१७.	पौष्टिक चूर्ण	१०.००
१८.	सर्पविषहरी चूर्ण	१०.००
१९.	एक्जिमा मल्हम	२०.००
२०.	सितोपलादि चूर्ण	२०.००
२१.	नेत्रामृत विशेष	८.००
२२.	शक्तिदा ५०० मि.लि.	३०.००
२३.	बलदामृत ,,	४०.००
२४.	कुमार्यासव ,,	२८.००
२५.	लोहासव ,,	२५.००
२६.	अरविन्दासव ५०० मि.ली.	३५.००
२७.	अशोकारिष्ट ,,	२५.००
२८.	अश्वगन्धारिष्ट ,,	३२.००
२९.	दशमूलारिष्ट ,,	३५.००
३०.	अभयारिष्ट ,,	३०.००
३१.	खदिरारिष्ट ,,	३०.००
३२.	अर्जुनारिष्ट ,,	२८.००
३३.	चन्द्रप्रभावटी १० ग्राम	१२.००
३४.	इन्द्रयण वटी ,,	१८.००
३५.	महाशंख बटी ,,	१०.००
३६.	आरोग्यवर्धनी वटी ,,	१५.००
३७.	संजीवनी वटी ,,	१२.००
३८.	कुष्ठकुठार रस ,,	१५.००
३९.	कृमिमुदगर रस ,,	१५.००
४०.	लक्ष्मी विलास रस ,,	१८.००
४१.	आन्दभैरव ,,	१५.००
४२.	धात्रीलौह	१५.००
४३.	सुतशेखर रस	२५.००
४४.	शशि शेखर रस	३५.००
४५.	महायोगराज गुगुल	१६.००
४६.	अर्श रोगामृत	१०.००
४७.	चन्दनादि वटी	२१.००
४८.	लंवगादि वटी	१५.००
४९.	मृत्युञ्जय रस	१२.००
५०.	अष्ठिलारिपु	१५.००

हमारे हिन्दी के प्रकाशन

१.	सत्यार्थ प्रकाश	२०/-
२.	खिलते फूल	४/-
३.	छात्र जीवन योग और स्वास्थ्य	५/-
४.	योगासन	८/-
५.	आश्रम गीताजंली	२/-
६.	फिटकरी	५/-
७.	त्रिफला भाग -१	५/-
८.	त्रिफला भाग -२	६/-
९.	तुलसी	५/-
१०.	शांतिकामार्ग ईश्वर भक्ति	३/-
११.	वैदिक लोरियां	१६/-
१२.	दैनिक उपासना	२/-
१३.	युवा और राष्ट्र	२/-
१४.	प्यारा ऋषि	८/-
१५.	मैं ईसाई क्यों नहीं?	१/-
१६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	४०/-
१७.	पौराणिक गप्प दीपका	७/-
१८.	विचित्र ब्रह्मचारी	३/-
१९.	गप्प शिरोमणि श्री राम शर्मा आचार्य	५/-
२०.	ईश्वर कहां है ?	४/-

सेवा में,

श्री सम्पादक जी
"गुरुकुल पत्रिका"
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (उ०प्र०)

ग्राहक संख्या 3049.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

[illegible] आश्रम [illegible] के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक पत्र

110277 March 98

कुलभूमि

अमर शहीद रक्तसाक्षी आर्य पथिक पं. लेखराम ओजस्वी वक्ता तथा निर्भीक कार्यकर्ता थे। जो निधर्मियों के छक्के छुड़ा देते थे। उन्होंने अन्याय और अत्याचार को कहीं भी, कभी भी, सहन नहीं किया। ऐसे धुन के धनी से हमें भी प्रेरणा लेना चाहिये। फाल्गुन शुक्ल तृतीया को उनका बलिदान हुआ था, जो इस वर्ष १ मार्च को पड़ रहा है। अतः आइये उनके बलिदान से प्रेरणा लेकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में जुटें।

LIBRARY Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARIDWAR

ओ३म्

नये वर्ष तथा आर्य समाज स्थापना दिवस पर हार्दिक अभिनन्दन

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा २९ मार्च १९९८ रविवार को नया सृष्टि वर्ष तथा विक्रम संवत् प्रारंभ होने जा रहा है। हिन्दू जाति के रक्षक आर्य समाज का स्थापना दिवस भी इसी दिन मनाया जाता है, इस शुभ अवसर पर गुरुकुलवासियों की ओर से समस्त देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शत्-शत् अभिनन्दन।

दयालु प्रभु से प्रार्थना है कि आपको सर्वविध उन्नति एवं सुख शान्ति प्रदान करें।

धर्मानन्द सरस्वती
आचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन में सहयोग दें

साहित्य के द्वारा ही स्थायी प्रचार हो सकता है इसी उद्देश्य को लेकर गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से उड़ीया भाषा में पांच दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। इनमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भव्य भूमिका, संस्कार विधि जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, परन्तु अब कुछ समय से सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भव्य भूमिका समाप्त हो चुके हैं, जबकि इनकी मांग निरन्तर बनी हुई है। अकेले सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन पर ही लगभग डेढ लाख रुपये खर्च होगा। गुरुकुल का सामर्थ्य एक बार इतनी राशि लगाने का नहीं है, अत: वैदिक धर्म प्रेमी सज्जन इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग दे सकें तो महर्षि की यह अमर ग्रन्थ प्रकाशित होकर अल्प मूल्य में स्वाध्यायशील जनता को उपलब्ध हो सकेगे। आशा है ऋषि भक्त सज्जन इस महत्व पूर्ण कार्य में सहयोग देकर पुण्य के भागी बने।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

साहित्य वितरण में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सहयोग करें

छोटे-छोटे ट्रेक्ट एवं विज्ञापनों के माध्यम से अच्छा प्रचार हो सकता है। साहित्य प्रचार का सबसे अच्छा माध्यम है, इसलिये सार्वदेशिक सभा ने यह प्रचार अभियान प्रारंभ किया है, इसमें अच्छी सफलता भी मिल रही है। हमारे निवेदन पर अनेक आर्य समाज व व्यक्तिगत रुप से अनेक सज्जनों ने इन्हें मंगाकर बाटा है। अभी निम्न विज्ञापन व पुस्तके उपलब्ध हैं।

१. मद्यनिषेध	**४०) सैकड़ा**
२. अण्डों से मौत	**४०) -,,-**
३. वैदिक धर्म संक्षिप्त परिचय	**४०) -,,-**
४. ईश्वर भक्ति क्यों और कैसे ?	**४०) -,,-**
५. अण्डे मांस से हानियां (हानियां)	**४०) -,,-**

रु. सैकड़ा भेजा जा रहा है। इसी प्रकार निम्न पुस्तकें भी उपलब्ध है। आशा है आप इन विज्ञापनों व पुस्तकों को मंगाकर अधिक से अधिक बांटकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहयोग देंगें।

१. ईश्वर कहां है	**४.०० रु.**
२. शान्ति का मार्ग ईश्वर भक्ति	**३.०० रु.**
३. सच्चाधर्म	**३.०० रु.**
४. वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी	**८.०० रु.**

प्रचारार्थ ये सभी पुस्तकें भारी रियायत में दी जा रही है। २५ या इससे अधिक मंगाने पर आधी मूल्य में प्राप्त करें।

पुस्तक व विज्ञापन प्राप्ति स्थान
गुरुकुल आश्रम आमसेना
जि.- नवापारा (उड़ीसा) ७६६१०९

लेखराम वीर तृतीया

- श्री सूर्यदेव शर्मा

वेद विद्या के विनोदी, बुद्धि बुद्ध विहार थे।
मातृ-भू के मान मोदी, धैर्य धर्माधार थे॥
तर्क के तिग्मांशु, तारन, सत्य सागर सार थे।
पूज्य प्रभु-परमेश, पावन प्रेम पारावार थे॥
यवन घन रावण निशाचर, हेतु सूर्य समान थे।
धर्मवीर महान् थे शर, लेखराम समान थे॥१॥

ले दयानन्दर्षि गुरु की, ज्ञान पूंजी पाथ में।
कल्प तरुवत्, धर्म तरु की, शाख श्रद्धा साथ में॥
तर्क की तलवार लेकर, ओ३म् का झण्डा हाथ में।
घोषणा की घोर घर-घर, नित्यवृत्ति नाथ में॥
वेद धर्म प्रचार व्रत कर, पालते, प्राण थे।
धर्म महान् थे शर, लेखराम समान थे॥२॥

लेच्छ तम को मारना ही मुख्य मुनि का काम था।
शास्त्र शाखा सुधारना ही, श्रेय था, संग्राम था॥
पाप पुञ्ज पछारना ही, 'पथिक' का प्रोग्राम था।
धर्म धीरज धारना ही, राम को अभिराम था॥
''आंवे, अंडे, अनुआ इधर'' यह आर्य के आह्वान थे।
धर्मवीर महान् थे शर, लेखराम समान थे॥३॥

शास्त्रार्थ के संग्राम में, रिपु हार कर रोने लगे।
अभियोग आदि अकाम में, खंडित, 'खुदी' खोने लगे॥
''वस कत्ल काफिर को करों,'' निस, निन्धहिय होने लगे।
अजमते मजहब भरो, ''विष बल्लरी बोने लगे॥
शुद्धि हित आ दुष्ट छल कर, बस गया, वह त्राण थे।
धर्मवीर महान् थे शर, लेखराम समान थे॥४॥

विश्वास से बन कर सगा, वैरी वहीं रहने लगा।
पर पाप-पंकधि में पगा, दुश्मन बना देकर दगा॥
खूंख्वार खन्जर मार डरकर, भीरुता भय से भगा।
बोध-बेलि बिगार कर, हर ज्योति-जीवन जगमगा॥
मरते समय तक धैर्य धर, करते रहे श्रुति गान थे।
धर्मवीर महान् थे शर, लेखराम समान थे॥५॥

धर्मवीर ! सदा तुम्हारा धर्म पर ही ध्यान था।
वेदहित सर्वस्व वारा, वेद पर बलिदान था॥
आर्य कुल आदर्श प्यारा, मोद था अभिमान था।
''सत्य का सब लें सहारा'' लक्ष्य मुख्य महान् था॥
''वेद पर बलिदान का कर लें'' विशेष विधान थे।
धर्मवीर महान् थे शर, लेखराम समान थे॥६॥

आर्य मिल सब आपके गुण ज्ञान गौरव गायेगें।
ऋषि मिशन पुरा करें मुनि, आपके पद पायेगें॥
''वीर के बलिदान का दिन, मोद मान मनायेगे।
आज यदि व्रत लें मनस्विन् ! विश्व आर्य बनायेंगे॥
धैर्यधर थे वीरवर नर, आप आर्य महान् थे।
धर्मवीर महान थे शर, लेखराम समान थे॥७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा
का मासिक मुखपत्र

वर्ष - २०
अंक - ३
माह - मार्च १९९८
सृष्टि संवत् -
१,९६,०८,५३,०९९
विक्रमी संवत् - २०५५
दयानन्दाब्द - १७४

प्रतिष्ठाता :
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक :
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक :
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक :
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता :
गुरुकुल आश्रम आमसेना
व्हाया - खरियार रोड
जिला - नवापारा (उड़ीसा)
पिन - ७६६ १०९
फोन : (०६६७८) २३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-
आजीवन - ३००/-
एक प्रति - २.५०/-

110277

सम्पादकीय...

आईये अपनी प्राचीन परम्परा को अपनाऐं

पाठकवृन्द ! पिछले कुछ अंकों में मैंने अपनी प्राचीन परम्पराओं की महत्ता के सम्बन्ध में कुछ उल्लेख किया था। हम टी.वी. आदि प्रसार साधनों के माध्यमों से प्रभावित होकर अपनी प्राचीन परम्पराओं को तीव्र गति से भूलते जा रहे हैं। कुछ वर्ष पहले तक दिल्ली जैसे नगरों को छोड़कर एक जनवरी को प्रारंभ होने वाले नये ईस्वीय वर्ष को कहीं महत्व नहीं दिया जाता था परन्तु अब छोटे-छोटे कस्बों तक इसके मनाने में होड़ लगी हुई है। जब कि यह किसी दृष्टि से भी हमारी संस्कृति में नये वर्ष के रूप में मान्य नहीं होता और न ही इसका कोई वैज्ञानिक आधार है। इधर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जो विक्रमी संवत् और नया सृष्टि वर्ष प्रारंभ होता है वह सृष्टिक्रम और वैज्ञानिक आधार पर है। इसी दिन पहली बार भगवान् भुवन भास्कर का प्रकाश श्रीलंका की भूमि पर पड़ा था ऐसा ज्योतिष के ग्रन्थों में स्पष्ट उल्लेख है। पहले आमावस्या, पूर्णिमा और अष्टमी को अवकाश होता था क्योंकि इन पर्वों का शरीर पर सीधा प्रभाव पड़ता है। इसका उदाहरण समुद्र का ज्वारभाटा है। इसी प्रकार का प्रभाव अमावस्या, पूर्णिमा आदि के दिन मनुष्यों के शरीर पर भी पड़ता है। इन सब बातों का विस्तार से वर्णन कर्मकाण्ड के ग्रन्थों में किया हुआ है। इन दिनों पढ़ने से बुद्धि पर कुछ कुप्रभाव पड़ता है। अत: इन दिनों यज्ञ तो विशेष करना चाहिए परन्तु पढ़ना नहीं चाहिये। इसलिए पहले इन दिनों अवकाश किया जाता था। उत्तर भारत के अनेक स्थानों पर अब भी अमावस्या के दिन बैलों को हल में नहीं चलाया जाता। इन सबका कुछ विशेष कारण है। जबकि रविवार के दिन छुट्टी करने का कोई तुक नहीं न तो वैज्ञानिक आधार है।

इसी प्रकार सूयोदय और सूर्यास्त के समय न सोना चाहिये न ही पढ़ना चाहिये। यह समय केवल ईश्वरीपासना के लिए ही लाभदायक माना गया है। उस समय संध्या करने से शीघ्र एकाग्रता होती है तथा शान्ति मिलती है। प्रात:काल सूर्योदय होने से तत्काल पश्चात् एवं सायंकाल सूर्यास्त होने से कुछ पहले यज्ञ करने से पर्यावरण की शुद्धि विशेष होती है। उस समय की सूर्य किरणें यज्ञ में डाली वस्तुओं को तीव्रगति से और दूर तक फैलाती हैं। इसी प्रकार की अनेक बाते हैं जो ऋषियों में सोच समझकर चलायी थी, जिन्हें हम झूलकर कष्ट पा रहे हैं। उदाहरण के लिए पहले कांसा, तांबा, पीतल के बर्तन भोजन बनाने एवं खाने में प्रयोग किये जाते थे। उन सबका शरीर पर अच्छा प्रभाव पड़ता था। इनके स्थान पर आजकल स्टील, प्लास्टिक आदि का प्रयोग हो रहा है। ये दोनों ही स्वास्थ के लिए अत्यंत हानिकारक हैं। अस्तु ! ये दो चार बातें उदाहरण के लिए मैंने रखी। आशा है विचार शीलजन इन्हें गम्भीरता से लेगें। तथा अपनी प्राचीन परम्पराओं को अपनाने तथा उन्हें बचाने का यत्न करेगें।

- व्रतानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेनत्यक्तेन भुञ्जिथा

मानव समाज में सदा से दो विचार धाराएं चलती रहती हैं। एक विचारधारा के अनुसार ''खाओ-पियो-मौज करो'' **भुङ्क्स्व भोगान् यथा कामं पिब भीरु रम स्व च** ही मनुष्य जीवन का आदर्श है। चारवाकों के समान भौतिक अथवा भोगवादी दृष्टिकोण रखने वाले यूनान में ऐपीक्यूरियन कहाते थे। वे खाने के लिये जीते थे, जीने के लिए नहीं खाते थे। वर्तमान में जीने की प्रवृत्ति वाले इन लोगों के मत में जीवन का सम्पूर्ण आनन्द जितना हो सके जल्दी से जल्दी लूट लेना चाहिये आगे क्या होगा-कौन जानता है। न लेने वाला फिर कभी यहां आयेगा और न देने वाला। आधुनिक सन्दर्भ में यही बात ज्यों की त्यों अंग्रेजी में कहीं गई हैं, IT DRINK AND BE MARRY. आज से लगभग पांच सौ वर्ष पूर्व बाबर ने इस विचार को इन शब्दों में व्यक्त किया था- इस जिन्दगी में ऐश करो, दुनियां में दुबारा आने का अवसर नहीं मिलेगा। और आज से हजारों लाखों वर्ष पूर्व यही बात वाल्मिकी रामायण में रावण ने सीता से कही थी।

दूसरी विचार धारा के अनुसार संसार दुःखों का घर है। यहां जन्म में दुःख, बुढ़ापा दुःखरूप है, व्याधियां दुःख का कारण है, मृत्यु का दुःख तो सबसे बड़ा दुःख है ही। बार-बार जन्म लेना और बार-बार मरना सब दुःखों का मूल है। योगदर्शन में कहा है- 'मनुष्य जीवन के अन्तिम भाग में बुढ़ापा और मृत्यु का दुःख, मध्यम भाग में अनेक प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक दुःख और जो दुःख अतीत में पड़ चुके हैं, उनकी स्मृति का दुःख- इस प्रकार विवेकी पुरूष के लिए जीवन दुःखों से भरा हुआ है। उसके साथ जब गुणों और वृत्तियों का विरोध मिल जाता है तो मनुष्य के जीवन का प्याला दुःखों से भर जाता है। बौद्धमत में विश्व के आधारभूत पांच स्कंध स्वीकार्य है- संज्ञा, रूप, विज्ञान, वेदना और संस्कार। ये पांचों स्कंध दुःखात्मक है। बौद्धो की भांति अन्य अनेक सम्प्रदाय और उनके प्रवर्तक संसार को दुःख रूप मानकर इससे पलायन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देते हैं। **''नानक दुखिया सब संसार''** दुःख हेय है। जहां दुःख है वहां से हट जाने में ही कल्याण है। संसार दुःख रूप है। इसलिए संसार को त्याग देना चाहिए। महात्मा बुद्ध ने आध्यात्मिकता के शिखर पर खड़े होकर आवाज दी तो शंकर ने **''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या''** का उद्घोष किया। परिणामतः सैकड़ों हजारों ने घरबार परित्याग कर जंगल की राह ली। जे.एच. होम्स (ष.द. दीह) ने कहा- **''संसार मात्र धोखा है। उसमें कुछ भी सार नहीं है। किसी भी बुरी वस्तु की तरह उसे त्याग देना चाहिये। जीवन का रस आत्मा के भीतर ही मिलेगा।**

इस प्रकार की निराशा केवल वैज्ञानिक जगत् तक सीमित नहीं है। ऐसे सभी लोग उसमें ग्रस्त हैं जिन्हें जीवन में दुःख ही दुःख दीख पड़ता है। मार्क ट्वेन जैसे विनोदी स्वभाव के लेखक ने भी कहा **''हजारों लोग पैदा होते हैं। वे रोटी के लिए घोर परिश्रम करते हैं, छोटी-छोटी बातों पर एक दूसरे से झगड़ते हैं, बुढ़ापा आता है और उसके साथ अनेक रोग चले आते हैं। आये दिन उनके कष्ट बढ़ते जाते हैं, उसके अहं को आघात पहुंचता है। अन्ततः उनकी सभी इच्छाएं मर जाती हैं और वे संसार से विदा ले जाते हैं।** उनका स्थान दूसरे लोग ले लेते हैं और उसी प्रकार वे भी संसार से कुछ कर जाते हैं। यह क्रम अनादिकाल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक इसी प्रकार चलता रहेगा।

यक्ष ने युधिष्ठिर से पूछा- ''**किमाश्चर्यम्**'' अर्थात् ''संसार में आश्चर्य क्या है ?'' युधिष्ठिर ने उत्तर दिया- **आये दिन लोगों को मृत्यु के मुख में जाता देखकर भी बचे हुए समझते हैं कि वे सदा यहीं बने रहेगें- इससे बड़ा आश्चर्य और कौन सा हो सकता है ?** इतिहास तो सभी पढ़ते हैं। जो नहीं पढ़ते वे अपनी आंखों के सामने इतिहास को बनता देखते हैं। फिर भी, यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि मनुष्य ने इतिहास से एक ही बात सीखी है और वह यह कि उसने इतिहास से कुछ नहीं सीखा। इस विचार धारा के लोग भविष्य की चिन्ता करते हुए वर्तमान में रहते हैं और तपस्वियों का सा जीवन व्यतीत करते हैं।

संसार के इतिहास में मनुष्य समाज इन्हीं दो विचारधाराओं में बंटकर अपने अपने मार्ग पर चलता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आया है । इनमें एक **भोगमार्ग** और दूसरा **त्यागमार्ग**। भोग में मनुष्य की प्राणी मात्र की- स्वाभाविक प्रवृत्ति है इसलिए जहां शंकर और बुद्ध की बात को सिद्धान्त रूप में स्वीकार करते हुए भी उनके पीछे चलने वाले बहुत नहीं निकले, वहां भोगवादी प्रवृत्ति ने प्रायः सभी को फंसाये रखा है ।

संसार दुःख रूप नहीं- संसार में दुःख को नकारा नहीं जा सकता, किन्तु आनन्द स्वरूप परमेश्वर की रची सृष्टि में दुःख हो, आनन्द कहीं है ही नहीं- यह कैसे संभव है ? प्रत्येक प्राणी सुख जानकर ही उसमें प्रवृत्त होता है और दुःख जानकर उससे निवृत्त होता है । संसार में जीवों की प्रवृत्ति प्रत्यक्ष दिख पड़ती है । यदि संसार में दुःख ही दुःख होता तो उसमें किसी की प्रवृत्ति नहीं होती, किन्तु हम देखते हैं कि मनुष्य अधिक से अधिक काल तक संसार के पदार्थों का उपभोग करने के उद्धेश्य से अपने आयु को बढाने, शरीर को स्वस्थ रखने तथा सुखोपभोग की सामग्री के लिए आवश्यक साधनोपायों के चिन्तन में प्रवृत्त रहता है । मरणासन्न अवस्था को प्राप्त होने पर भी जैसे-तैसे कुछ काल और यहां बना रहने के लिए हाथ पैर मारता है । ''जीवेम जी **शरदःशतम्**'' से सन्तुष्ट न होकर ''**भूयश्च शरदः शतात्**- सौ वर्ष से भी अधिक जीते रहने की कामना करता है। दुःख को सहते हुए भी मनुष्य मौत को भगाकर यहां जीना चाहता है। ऐसा क्यों है?

वस्तुतः संसार में सुख-दुःख दोनों है, किन्तु दुःख की तुलना में सुख कहीं अधिक है। **'अकामः न कुतश्चनोन**- पूर्णकाम परमेश्वर ने अपने लिए नहीं, जीव के कल्याण के लिए उसके भोगापवर्ग के लिए सृष्टि की रचना की है । सुख भोग में भी है और अपवर्ग में भी है। भोगरूप सुख में दुःख का मिश्रण रहता है। जबकि अपवर्ग का सुख विशुद्ध आनन्दमय है। अतः अपवर्ग- मोक्ष की अपेक्षा से भोग हेय है और भोग की अपेक्षा से अपवर्ग श्रेयस्कर है। ऐसा जानकर और ''**स्वल्पाद् भूरिरक्षणम्**'' के सिद्धान्त को मानकर भोग को अपवर्ग के साधन मात्र के रूप में अपनाकर संसार में रहने वाले के लिए संसार दुःखरूप नहीं रह जाता। दुःख की अत्यंत निवृत्ति ''हान'' है जो मोक्ष.का अपर नाम है। इसका उपाय है विवेक ख्याति प्रकृति पुरूष के भेद का साक्षात्कार ज्ञान। इस प्रकार दुःख का कारण संसार नहीं अपितु उसके यथार्थ स्वरूप को न समझना है ।

- पू. स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

प्रभु की कृपा

श्रीमती प्रेमलता चतुर्वेदी प्रभाकर

जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जब हम चारों ओर से निराश हो परमपिता परमात्मा को आर्त्त होकर पुकार उठते हैं और प्रभु तत्क्षण हमें अपनी मंगलमयी कृपा के द्वारा विपत्तियों से उबार लेते हैं ।

ऐसी ही एक सत्य घटना है जो अभी-अभी कुछ समय पूर्व मेरे जीवन में घटित हुई ।

मेरे पति रेलवे में एक उच्च पदस्थ कर्मचारी हैं। जब उन्हें इस जगह का नियुक्ति पत्र मिला तब उसकी एक धारा के अनुसार एक बड़ी लम्बी धनराशि जमा करनी थी। नियुक्ति की समस्त धारायें स्वीकार करने पर ही उस पद पर नियुक्त हुई। अथक परिश्रम और प्रयत्न करने के पश्चात् बड़ी कठिनता से उस धन राशि का आधा भाग ही जमा करवाया जा सका, शेष आधे के लिये उच्चाधिकारी ने एक मास का समय दिया और यह सूचना दी कि यदि शेष धन का प्रबंध नहीं हुआ तो आप इस पद से हटा दिये जायेंगे । पर लाख प्रयत्न करने पर भी उस धन राशि का प्रबंध नहीं हो सका। हमारा दोनों का बुरा हाल था। कहीं से भी आशा को एक भी किरण नहीं दिखाई दी। दीवाली का दिन था और हमारा मन बड़ा खिन्न था । हम निराश होकर रो-रोकर अपने प्रभु को पुकार रहे थे। जीवन में इतनी निराशा और फीकी दीवाली कभी नहीं आयी थी। वापस जाना अच्छा नहीं लग रहा था और यदि दो दिन में रुपयों का प्रबंध न हो सका तो पदच्युत होना निश्चित ही था।

मन अत्यंत उदास था पर भगवान् के ऊपर हमारा दृढ़ विश्वास था कि कोई न कोई दैवी शक्ति हमें इस संकट से उबार लेगी। ठीक इसी समय, जब हम दोनों की मनोदशा दयनीय थी, तभी एक सज्जन हमारे घर पर आये उन्होंने हमारे विश्वास को बल दिया और यह आश्वासन दिया कि चिन्ता त्यागकर ईश्वर से प्रार्थना करे। प्रभु जो करेंगे वह मंगलमय ही होगा। हम आर्त्त होकर प्रभु से प्रार्थना करते रहे और उन्होंने हमारी पुकार सुनी ही नहीं, हमें आश्चर्य में डालकर सभी कष्टों को मिटाकर परम् आनन्द प्रदान किया। ठीक दीवाली के दो दिन बाद एक सूचना द्वारा यह समाचार मिला कि जिस धनराशि का जमा कराना नियुक्ति पत्र की धारा के अनुसार आवश्यक था, वह धन राशि आधी कर दी गयी। इस समाचार से हमारे आनन्द की सीमा न रही। उस परम् प्रभु की कृपा से साक्षात् दर्शन करके हम धन्य हो गये। मेरा यह अटल विश्वास है कि प्रभु से यदि सच्चे मन से प्रार्थना की जाये और आर्त्त होकर प्रभु को पुकारा जाय तो अवश्य ही सुनेगें। चाहिए प्रार्थना में सच्ची आर्त्तता और प्रभु में अटल विश्वास ।

(साभार- भगवान् के सामने सच्चा सो सच्चा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वास्थ्य का आधार - छः

व्यायाम - ३

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

जैसी गत अंकों में चर्चा की थी व्यायाम के अनेक भेद हैं। गत लेख में आसनों के विषय में संक्षेप में बताने का यत्न किया था। परन्तु चढ़ती आयु के बालको और नवयुवकों के व्यायाम की पूर्ति केवल आसनों से नहीं होती। उनके शारीरिक क्षमता को देखते हुए कुछ कठोर व्यायाम भी आवश्यक हैं। जिसकी पूर्ति दण्ड, बैठक, मुगदर चालन, दौड़ और कुश्ती आदि के द्वारा होती है। अत: नवयुवकों को शक्ति के अनुसार दण्ड (बैठक) अल्पमात्रा में तथा दौड़ आदि व्यायाम भी करनी चाहिये। अनुभवी व्यक्ति कहते हैं कि जितने व्यायाम से कण्ठ सूख जाये, नाक से श्वास लेने में कुछ कठिनाई पड़े उतनी देर तक व्यायाम करना चाहिये। युवाओं के शरीर में इतनी थकावट लाने के लिए दण्ड आदि कठोर व्यायाम करना आवश्यक है। इससे शरीर का विकास शीघ्र होता है। शरीर के पुट्ठे बलवान् एवं दृढ़ होते हैं। अत: इन व्यायामों का करना आवश्यक है। इन कठोर व्यायामों को करते हुए श्वास का भी ध्यान रखना चाहिये। जैसे दण्ड के शुरू में श्वास भरकर दण्ड पूर्ण कर छोड़ा जाये। दण्ड की अपेक्षा बैठक आधे किये जायें। उनमें भी श्वास का ध्यान रखा जाये।

इस प्रकार दौड़ करते समय श्वास गहरा लगा और नाक से लेना चाहिये। तभी दौड़ का पूर्ण ला मिलता है। १६ से २६ वर्ष आयु तक का दश वर्ष समय जीवन में सबसे महत्वपूर्ण समय है। इस समय शरीर के अन्दर शक्ति का प्रवाह बहता है अत: इस समय व्यायाम कर संयम पूर्वक चला जाये तो सारी आयु आनन्दमय बीतेगी जिसके लिए सुश्रुत में लिखा है -

न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधि रोहति।
स्थिरी भवति मांसं च व्यायामाभिरतस्य च।

अर्थात् व्यायामी मनुष्य पर बुढ़ापा सहसा आक्रमण नहीं करता। व्यायामी पुरूष का शरीर धड़ मांस सब स्थिर होते हैं। दुबले, पतले रामप्रसाद ने जब ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए व्यायाम करना प्रारंभ किया तो उसके शरीर में इस आयु में जो परिवर्तन हुआ वह उन्हीं के शब्दों में -

''व्यायाम आदि करने के कारण मेरा शरीर सुगठित हो गया था और रंग निखर आया था। मेरा स्वास्थ्य दर्शनीय हो गया। सब लोग मेरे स्वास्थ्य को आश्चर्य की दृष्टि से देखा करते।''

अन्य एक स्थान पर रामप्रसाद जी के विषय में लिखा है- ''उनमें असाधारण शारीरिक बल था। तैरने आदि में वे पुरे पण्डित थे। थकान किसे कहते हैं वे जानते ही नहीं थे। ६०-६१ मील निरन्तर चलकर वह आगे चलने का साहास करते थे। व्यायाम और प्राणायाम वह इतना करते थे कि देखने वाले आश्चर्यान्वित होते थे।''

उपरोक्त लाभ दण्ड आदि कठोर व्यायामों से ही प्राप्त हो सकेगा। अत: ऐसे व्यायाम श्रद्धा पूर्वक निरन्तर करना चाहिये। जैसे भोजन आवश्यक है वैसे व्यायाम भी आवश्यक है।

जहां तक वृद्धों की बात है वे यदि आसन कर सकें तो सर्वोत्तम है। अन्यथा सूर्य नमस्कार भी आसनों की पूर्ति कर देता है। परन्तु जो सूर्य नमस्कार भी न कर सकें। वे कम से कम भ्रमण अवश्य करें। भ्रमण करते समय बात-चीत करते हुए अत्यंत धीमी गति से चलने पर कोई लाभ नहीं होगा। अपने सामर्थ्य के अनुसार गति तीव्र अथवा मध्यम रखें तथा श्वास गहरे लें। ध्यान रहे दीर्घायु के लिए किसी भी प्रकार का व्यायाम अत्यंत आवश्यक है। अत: प्रत्येक सुख के इच्छुक स्वास्थ्य प्रेमी व्यक्ति को व्यायाम अवश्य करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज के विद्वानों से नम्र निवेदन

वर्तमान अवस्था में आर्य समाज के प्रचार की गति बड़ी ढीली है, जो है भी उसे भी कुछ विद्वानों ने १०-१५ वर्ष से, नई समस्या खड़ी करके उसे और ढीला कर दिया है। जैसे मन्त्रों के आगे 'ओ३म्' न बोलना, वेदों के पारायण का विरोध, गायत्री यज्ञ का विरोध, बहु कुण्डीय यज्ञ का विरोध ! मेरा भी कुछ कहने को मन करता है - क्रमश:

''ओ३म् के बिना सिर कटा मन्त्र समझना चाहिये''

ओ३म् शब्द में रस है, ओ३म् शब्द से श्रद्धामय वातावरण बनता है, तथा शरीर, मन और वाणी पर सीधा प्रभाव होता है। समझ में नहीं आता महर्षि जी की परोकारिणी सभा के परोपकारी अंक में जो मई १९९० को निकला था, उसके प्रथम पृष्ठ पर महर्षि के पत्र में, सब मंत्रों के आगे ओ३म् बोलना चाहिये, स्पष्ट लिखा था, महर्षि जी अष्टाध्यायी को मानते थे, उसमें भी 'ओ३म् अभ्यादाने' लिखा हुआ है। मनुस्मृति २-७३-७४ में मन्त्र के आदि और अन्त में भी 'ओं' लगाना लिखा हुआ है। बिना 'ओं' के तो यह भी पता नहीं चलता कि दूसरा मंत्र कब प्रारम्भ हुआ है। आर्य जगत् के विद्वान् आदरणीय पं. हरिशरण जी सिद्धान्तालंकार जिनका वेद भाष्य परमहंस स्वामी जगदीश्वरानन्द जी महाराज ने छापा है, उन्होंने अथर्वेद के १०-८-१० के मन्त्र का अर्थ लिखा है, जिसमें मन्त्र के आगे और अन्त में 'ओं' लगाना चाहिये ऐसा अर्थ लिखा हुआ है। पूज्य युधिष्ठिर जी मीमांसक भी संस्कार विधि में सब मन्त्रों के आगे 'ओं' बोलना चाहिये ऐसा लिखते हैं। फिर मेरे पास ८६ वर्ष पुरानी उर्दू की संस्कार विधि, सम्पादक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की पड़ी है उसमें ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपसना के आठों मन्त्रों के आगे उर्दू में 'ओं' छपा हुआ है। वेदों में 'ओं' क्रतो स्मर यजु ४०-१५ और यजु २-१३ में 'मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ' मुक्ति और मस्ती के लिये 'ओं' में डूब जाओ। महर्षि दयानन्द जी महाराज ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के उपासना विषय में 'ओं' के जप का आदेश करते हैं फिर पहले सभी विद्वान् मन्त्रों के आगे 'ओं' बोलते थे, क्योंकि 'ओं' सर्वोत्तम शब्द है। कुछ विद्वानों का यह कहना है, जहां 'ओं' लिखा है, वहां ही बोलो, परन्तु पंच महायज्ञ विधि में, उद्वयें तमसस्परि....मंत्र के आगे 'ओं' लिखा है, परन्तु संस्कार विधि में नहीं लिखा, इसका क्या करें? महर्षि जी से भी बढ़कर आर्य लोग वेद का प्रमाण मानते हैं, तो वेद में तो किसी मन्त्र के आगे नहीं लिखा है, अत: जहां महर्षि जी ने लिखा है वह भी काट देना चाहिये। आर्यों ! कोई बात बनती नहीं हैं, अत: विद्वानों से मेरी हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि मन्त्रों के आगे 'ओं' लगाने का विरोध न करें।

वेद पारायण का विरोध क्यों ?

वेद पारायण से आर्य समाज के तीसरे नियम का वेद का पढ़ना-सुनना और सुनाना का लक्ष्य पूरा होता है। फिर महर्षि जी संस्कार विधि में लिखते हैं कि बड़े-बड़े यज्ञ होने चाहिए तथा दो लाख आहुतियां देनी हो तो इतना बड़ा हवन कुण्ड और एक लाख आहुतियां देनी हो तो इतना बड़ा हवन कुण्ड बनाओ, आदि-आदि यह आर्यो का सौभाग्य है कि पारायण से बड़ा यज्ञ भी हो जाता है, और कुछ तीसरे नियम का अनुसरण भी महर्षि दयानन्द जी महाराज के पत्र ''**श्रुति सन्दोह**'' में छपे हुए हैं, पत्रांक ५०२ पृष्ठ संख्या ४६३ के पत्र में दो पहरे हैं, जिसमें अद्भुत कमाल का आदेश है -

आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिये एक वर्ष में दस हजार रु. का घृतादि से जिस रीति से होम हुआ था, उसी रीति से प्रतिवर्ष होम कराईये, परन्तु इनमें से ५००० (पांच हजार) रुपये के सुगन्धित घृत मोहन भोग का होम वर्षा ही में कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे उस दिन से लेकर विजय दशमी तक, चारो वेदों के ब्राह्मणों का वरण करा एक सुपरीचित धार्मिक पुरूष उन पर सख्त कर होम कराईयेगा। सबसे मेरा आशीर्वाद कहियेगा और इस लेख को यथावत् सफल कीजियेगा।

इस देश में वर्षा प्राय: न्यून होती है, इसके लिये यदि मेरे कहे अनुसार एक-एक वर्ष दस हजार रु. का घृतादि का नित्य प्रति वर्षाकाल में चार महीने तक होम करावें यदि ऐसा होता रहे तो संभव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करें।

इन दोनों वाक्यों के कारण वेदों का पारायण प्रारम्भ हुआ, क्योंकि किसी भी विद्वान ने यह तो नहीं बताया कि दो लाख आहुतियां किन मन्त्रों से दें, अत: वेदों का पारायण प्रारम्भ हुआ, जो ठीक भी है। विचारणीय बात यह है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

यदि उस समय का दस हजार रु. का घी आदि, आज १५ लाख रु. का मूल्य बनता है। अत: बड़े-बड़े यज्ञ जहां तक हो सके करने ही चाहिये, महर्षि जी **पंच महायज्ञ विधि** में सामान्य यज्ञ के वाद लिखते हैं कि जितनी आहुतियां और देनी हो गायत्री मन्त्र से दे दें। इन वेद पारायणों के कारण हजारों परिवारों में वेद पहुंच गये हैं। यही आर्य समाज के प्रचार का सही ढंग है। यदि सैकड़ों लोग होम करना चाहते है, तो एक कुण्ड पर नहीं बैठ सकते फिर अधिक कुण्ड रखने में किसी सिद्धान्त का हनन नहीं होता है कुछ लोग कहते हैं कि ऋषि जी ने वेद पारायण करने को नहीं कहा परन्तु यह भी तो नहीं कहा कि न करो। (जैसे मूर्ति पूजा आदि के करे बारे लिखा है) अत: आओ विचार करें। यू.एस.ए. अग्निहोत्री यूनिवर्सिटी में मैं बैठा हुआ था, वहां १४ अंग्रेज काम करते हैं, वहां एक यज्ञ सूर्योदय और सूर्यास्त समय होता है, एक यज्ञ वर्षो से २४ घण्टे होता रहता है, और एक यज्ञ रात्रि को सवा बजे होता है, जब मैंने पूछा रात्रि के यज्ञ के बारे में, तो कहने लगे इस समय हमारी सब ब्रांचे यज्ञ कर रही हैं। जर्मन में रात्रि के ३ बजे हैं पोलेण्ड में दिन के इतना बजा हैं भारत में दिन के ११ बजे हैं इत्यादि-इत्यादि इस प्रकार हम रिसर्च करते हैं। एक बात जो मेरे पूछने पर उन्होंने बताई कि जब वर्षा हो रही हो बादल गर्ज रहे हों हवा तेज चल रही हो, यदि उस समय बड़ा यज्ञ हो रहा हो तो उस समय सबसे अधिक प्रदूषण नष्ट होता है ! यह उत्तर सुनकर मेरा सिर महर्षि के चरणों में झुक गया क्योंकि महर्षि जी ने बड़े-बड़े यज्ञों का विधान इन्ही दिनों में करने का आदेश दिया है।

अत: पुन: सभी आर्य विद्वानों से मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूं कि 'ओं' को मन्त्रों के आगे लगाने का वेदों के पारायण का बहु कुण्डीय यज्ञों का गायत्री महायज्ञ का विरोध न कीजियेगा ! सुधार की दृष्टि से आप लिखे कि ऐसा नहीं, ऐसे करना चाहिये। दो लाख आहुतियां का शिष्टम् यह हो अर्थात् मार्ग दर्शन कीजिये, जहां तक होगा मैं आपके सुझाव पर फूल चढ़ाऊंगा, कृपया मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर लो ! स्वीकार कर लो !! स्वीकार कर लो !!!

बहुत-बहुत धन्यवाद आपका अपना ही प्रेम

महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ

आर्य कुटीर, धुरी - १४८०२४ (पंजाब)

स्वार्थी लोगों के कारण आर्य समाज पतन की ओर अग्रसर : स्वामी सर्वानन्द सरस्वती

आर्य समाज के संगठन में स्वार्थी लोग आ गये हैं जो समाज के लिए नहीं अपितु अपने लिए काम करते हैं। ऐसे लोगों की इच्छा होती है कि वह मंत्री या प्रधान बने और संस्था से फायदा उठाये। ऐसे ही लोगों से आर्य समाज पतन की ओर अग्रसर है। यह विचार आर्य जगत् के शिरोमणि संन्यासी, सार्वदेशिक यति मण्डल और महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारी-परोपकारिणी सभा, अजमेर के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द सरस्वती ने ३१ जनवरी, १९९८ को आर्य वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम, ज्वालापुर में आर्य जगत् के विख्यात् विद्वान् महात्मा आर्य भिक्षु को संन्यास दीक्षा के अवसर पर अपने दीक्षा व्याख्यान में व्यक्त किये। इसी दिन महात्मा आर्य भिक्षु जी का ७६ वां जन्म दिवस भी था। स्वामी सर्वानन्द जी ने संन्यास की वैदिक परम्परा के अनुसार महात्मा आर्य भिक्षु का नया नाम आत्मबोध सरस्वती विलेर हैं एवं आर्य समाज के लिए उपयोगी है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि स्वामी आत्मबोध जी आर्य समाज के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्य करेंगे। इस अवसर पर उन्होंने स्वामी आत्मबोध जी की १०० वर्ष से अधिक आयु की कामना भी की। अपने व्याख्यान को विराम देते हुए उन्होंने कहा कि उनकी ईश्वर से कामना है कि स्वामी आत्मबोध आर्य समाज की उन्नति के लिए समाज के हित में काम करें।

योग धाम, ज्वालापुर के संचालक स्वामी दिव्यानन्द ने अपने उपदेश में कहा कि वैदिक परम्परा का निर्वाह करते हुए ७५ वर्ष की आयु होने पर सबको संन्यास लेना चाहिये। उन्होंने संस्कार विधि के अनुसार लोक, वित्त एवं पुत्र एषणाओं के त्याग की प्रेरणा की। स्वामी आत्मबोध को सम्बोधित कर उन्होंने कहा कि वह सबको अभय दान देकर अपने संन्यास को सार्थक करें और आशा व्यक्त की कि आप एक अच्छे संन्यासी सिद्ध होगें।

- मनमोहन कुमार आर्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौवन को विष नहीं अमृत बनावें

– श्री रामचरण महेन्द्र

यौवन मनुष्य की परिपक्वता का समय है। मनुष्य की सब शक्तियां उभरी रहती है। मन में आशा शक्ति और उत्साह रहता है। मुंह पर मुस्कराहट खेलती रहती है। यौवन में मन-उचित-अनुचित, जिस ओर झुक जाता है, जीवन भर उसी ओर झुका रहता है। जब ये आदतें पक जाती हैं, तब मनुष्य उन्हें बदल नहीं पाता।

यौवन में काम भावना (सैक्स) का उभार आता है। मन वासनाओं से भर जाता है। यदि युवावस्था में इन वासनाओं का नियन्त्रण न किया जाय या कार्य, कला, अध्ययन, संगीत या अन्य किसी मार्ग द्वारा इन्हें निकलने का मार्ग प्रदान न किया जाय, तो वे गंदे घृणित मार्गों से निकलने लगती है। वासना एक शक्ति है, जिसका दुरूपयोग मनुष्य को पशुकोटि में ला पटकता है। पतन की चरम् सीमा में पहुंचने पर उसे ज्ञान होता है कि उसने अपने मनुष्यत्व, पौरूष, वीर्य का कितना नाश किया। पथ भ्रष्ट युवक सबसे दयनीय जीव है वह उस अमीर की तरह है जो जीवन सम्पदा को मिट्टी में मिला रहा है। उसे उन सत-सामर्थ्यों का ज्ञान नहीं जो उसके चरित्र में छिपे हैं।

शक्ति का दुरूपयोग मनुष्य को राक्षस बना सकता है। रावण जाति का ब्राम्हण, बुद्धिमान्, तपस्वी राजा था, किन्तु शक्ति का मिथ्यादम्भ उस पर सवार हो गया। पण्डित रावण, राक्षस रावण बन गया उसकी विवेक बुद्धि क्षय हो गई। वासना उत्तेजित हो गयी। वासना तो एक प्रकार की कभी न बुझने वाली अग्नि है। जितना उसने वासनाओं की पूर्ति करने का प्रयत्न किया, उससे दुगुने वेग से वह उद्दीप्त हुई। शक्ति उसके पास थी। वासना की पूर्ति के लिये रावण ने शक्ति का दुरूपयोग किया। अन्त में अपनी समस्त शक्तियों के बावजूद रावण का क्षय हो गया। दुर्योधन ने शक्ति के दम्भ में अपने सब भाई-बन्धुओं का नाश किया।

मुसलमान शासकों के असंख्य उदाहरण हमारे सामने हैं। संयमी कष्ट-सहिष्णु सतत् जागृत रहने वाले शक्ति सम्पन्न सम्राटों ने बड़े-बड़े राज्यों की नींव रखी। बाबर ने अपनी वीरता से मुगल साम्राज्य की नींव पक्की की, किन्तु उसके पुत्र धीरे-धीरे असंयमी, विलासी लोलुप बने फलतः मुगल साम्राज्य का क्षय हो गया।

शक्ति का सदुपयोग किया जाय, तो वह मानव मात्र के लिये कल्याणकारी संस्थाओं, आश्रमों, नये-नये नियमों का निर्माण करने, समान सेवा तथा नारी जागृति के पुनीत कार्यों में प्रयुक्त हो सकता है। दुष्टों का दमन किया जा सकता है। शक्ति के दुरूपयोग से न्याय का गला घुट जाता है, विवेक दब जाता है, मनुष्य को निज-कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं रहता, वह बुद्धिभ्रष्ट हो जाता है और उसे सत्-असत् का अन्तर प्रतीत नहीं होता।

अंग्रेजी में एक कहावत है ''सिंह की तरह बलवान बनों'', किन्तु उस शक्ति का पशुओं की तरह दुरूपयोग न करों। तुम्हारी शक्ति से निर्धनों को आर्थिक सहायता, निर्बलों को बल, असहायों को सहारा मिलना चाहिये। उसी में शक्ति की उपयोगिता है।

लक्ष्मी जहां सुख की प्राप्ति का साधन है, वह पथभ्रष्ट भी करने वाली है- श्री सुखस्येह संवासः सा चापि परिपन्थिनी अमीर लोगों के पुत्र उच्छृंखला अपव्ययी, विलासी और व्यसनी होते हैं। उनके मन में धन का मद और प्रमाद इतना अधिक छाया रहता है इसके कारण उनकी गुप्त शक्तियां विकसित नहीं हो पाती। वे मन के भीतरी स्तर में सुप्त पड़ी रहती है।

धन आलस्य उत्पन्न कर मनुष्य को निकम्मा, निरूत्साह और निश्चेष्ट बना देता है। उच्च वृत्तियां वासना की अंधी में दब जाती है। जिस धन से हम समाज सेवा, लोकोपकार, दोनों को प्रोत्साहन प्रदान कर सकते हैं, वही हमारी वासना-पूर्ति में स्वाहा होने लगता है। धन की शक्ति से मनुष्य उचित-अनुचित की परवाह न कर अपनी इच्छाओं को पूर्ण करना चाहते हैं। दूसरे व्यक्ति धन का लोभ पाकर पतन के समस्त साधन जुटा देते हैं और भोग-विलास की घातक निद्रा में मनुष्य सो जाता है। धन वह निद्रा है, जिसके धुंधले में ज्ञान की ज्योति भी क्षीण हो जाती है।

अतः उपर्युक्त चारों पदार्थों का उपभोग बहुत सोच-विचार कर करना चाहिये। उचित उपयोग से विष भी अमृत का कार्य करता है, जबकि मूर्ख के हाथ में अमृत विष बन सकता है।

अपने से पूछिये आप इस विष को अमृत बना रहे हैं, अथवा इस अमृत को विष बनाकर मरने की तैयारी कर रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री सत्यनारायण लाहोटी

परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम् ॥

इस परिवर्तनशील संसार में प्रतिदिन लाखों मनुष्य जन्म लेते हैं और मर जाते हैं, उनमें से अधिकांश का नामोनिशान भी नहीं रहता । लेकिन कुछ व्यक्ति अपने त्याग, तपस्यामय जीवन, उत्तम विचार तथा पुण्य कर्मों से जाति, देश, धर्म की विशेष सेवा और उन्नति कर जाते हैं । वास्तव में जन्म लेना तो उनका ही सार्थक है ।

अपने व्यक्तिगत एवं पारिवारिक स्वार्थ को गौण करके जो अपना तन, मन, धन प्राणी मात्र के कल्याण के लिए लगा देते हैं, वे देव पुरूष कहलाते हैं । ऐसे देव पुरूष ही समाज के आदर्श एवं गौरव होते हैं । ऐसे व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं तथा क्रिया कलापों को देख, सुन जानकर अन्य व्यक्तियों को भी उत्तम कार्यों को करने की प्रेरणा मिलती है । ऐसे ही लक्षणों से मिलता-जुलता एक व्यक्तित्व है श्री सत्यनारायण लाहोटी । आपका जन्म ९ जनवरी १९२७ (नौ जनवरी उन्नीस सौ सत्ताइस) राजस्थान राज्य के चुरु जनपद के अन्तर्गत सुजानगढ़ कस्बे में हुआ । आपकी मैट्रिक तक की शिक्षा पी.सी.बी. स्कूल सुजानगढ़ मे ही हुई । मुख्य पता- हरीबगस सत्यनारायण लाहोटी, सुजानगढ़ (राज.) आपके दूरभाष नंबर हैं (01568) 20114, (033) 4551165, (0771) 536412, (0731) 551172) ।

आपने घोर पुरूषार्थ, अदम्य साहस और अतुल आत्म विश्वास के साथ साधारण जीवन से ऊपर उठकर यश और कीर्ति के उच्च शिखर को छुने का प्रयास किया । ढलती हुई आयु के बाद भी वृद्धावस्था का तिरस्कार करते हुए अपनी प्रखर सूझ-बूझ, ऊहा, प्रतिभा तथा कर्मठता से अन्य व्यक्तियों के लिये परोपकार, सेवा, त्याग तथा दान आदि के कार्यों में पथ-प्रदर्शक बने हुए हैं । राजस्थान की मरूभूमि से लेकर, मालवा की माटी, बंगाल की खनक, उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्र तथा मध्यप्रदेश के पिछड़े क्षेत्रों को भी आपने अपने कार्य क्षेत्र में सम्मिलित किया हुआ है ।

सौभाग्य से आपकी धर्मपत्नी तथा तीनों पुत्र आपके द्वारा किये जा रहे शुभ कार्यों में पूर्ण रूप से सहयोग करते हैं । आपका पारिवारिक परिचय निम्न प्रकार से हैं -

पिता का नाम - स्व. सेठ श्री हरीबगस जी लाहोटी । जिनका कार्य क्षेत्र व्यापार सुजानगढ़ जिला चुरू (राज.) । सत्यानारायण जी के श्वसुरजी- स्व. श्री मांगीलालजी नागोरी ग्राम-नीम्बी खुर्द (राज.) है । इनके कार्य क्षेत्र में जो चार चाँद लगाये हैं वह है इनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुलाबीदेवी लाहोटी जो सदा सहयोगिनी बनी रहती है । परमेश्वर की विशेष कृपा से इनके कार्यों में पूर्ण रूप से सहयोग करते हैं वो है इनके पुत्र जिनके नाम है प्रथम श्री प्रेमसुख लाहोटी ४५ वर्ष चार्टर्ड एकाउन्टेंट, कलकत्ता, द्वितीय श्री विजय कुमार लाहोटी ४२ वर्ष बी.ई., रायपुर, तृतीय श्री अशोक कुमार लाहोटी, ३७ वर्ष बी.काम., एल.एल.बी. इन्दौर । इनकी चार पुत्रियां भी हैं । प्रथम श्रीमती गणपति देवी बलदवा हैदराबाद, द्वितीय श्रीमती यशोदा पूगलिया नई दिल्ली, तृतीय श्रीमती विजियालक्ष्मी पेड़ीवाल फाजिलका, चतुर्थ श्रीमती अमिता मून्दड़ा, कलकत्ता ।

आपके जीवन की शुरूआत सुजानगढ़ से हुई । सर्वप्रथम सुजानगढ़ में ही खुदरा अनाज की दुकान से कार्य करना प्रारम्भ किया है । कठिन परिश्रम से बने वर्तमान में निम्न उद्योग एवं प्रतिष्ठान हैं -

(१) हरीबगस सत्यनारायण लाहोटी, गांधी चौक, सुजानगढ़ (राज.)

लाहोटी एण्ड कं., १४ गणेशचन्द्र एवेन्यु केन्ट हाउस, कलकत्ता

(२) लाहोटी हाउस, ५०/२ बेनी नन्दन स्ट्रीट, कलकत्ता-२५

(३) माहेश्वरी एजेन्सीज, ७ नवीन बाजार, फूल चौक, रायपुर (म.प्र.)

प्रीमियर लेमिनेट्स लि. ६५३/बी. उरला इण्डस्ट्रीयल कॉम्पलेक्स, उरला रायपुर (म.प्र.)

लाहोटी वाटिका ११ पार्क स्ट्रीट चौबे कालोनी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रायपुर (म.प्र.)

(४) ए.के.एल. ट्रेडर्स प्रा.लि., ४५, जवाहर मार्ग १०८ बादशाह चेम्बर्स, इन्दौर (म.प्र.)

लाहोटी लेमिनेट्स प्रा.लि. १०० सी १ एवं डी इण्डस्ट्रीयल एरिया नं. ३, देवास (म.प्र.)

लाहोटी पैलेस, ३५९ ए/सी, स्कीम नं. ७४/सी, आगरा बाम्बे राजमार्ग, इन्दौर (म.प्र.)

दानदाताओं, ट्रस्टों एवं व्यक्तियों को प्रेरित कर उनसे एवं अपने स्वयं के ट्रस्ट से सार्वजनिक हित के कार्यों को करवाते रहना आपने अपने जीवन का उद्देश्य बनाया हुआ है।

आपने लगभग २० संस्थानों के भवनों का निमार्ण कराया है -

विद्यालयों एवं गुरूकुलों में २२ कमरे व हाल-दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ में ६, तंवरा में तीन, बाघसरा आथूना में दो, मून्दड़ा में दो, बाकलिया में एक, सुजानगढ़ में एक, सारंगसर में एक, आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय आबू में एक, न्यामा में एक, मुन्दियाऊँ में एक, खीचीवाला में एक, लिखमणसर में एक, कानूता में एक के निर्माण करवा दिये गये हैं। असहाय निर्धन व्यक्तियों के लिये ७३ कमरों का निर्माण एवं दो सम्पूर्ण मकान बनवाये जा चुके हैं। आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय आबू में विरजानन्द, दयानन्द, श्रद्धानन्द नाम की गुफाएँ बना दी गई है। सुजानगढ़ गोशाला में दो, तेलाप में एक, सारोठिया में एक इस प्रकार चार सांडघरों का निर्माण करवाया जा चुका है। दो चूंगी नाका व प्याऊ सुजानगढ़ में बनवाई गई है। १९ कबूतरखाने, ४१ वृक्षों के गट्टे, दो मंदिरों में सत्संग भवन, कई मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया गया है। पीने के पानी के तीन बोरिंग एक बेड, एक भासीणा, एक गुरूकुल आश्रम आमसेना उड़ीसा में कराये गये हैं। गुरूकुल महाविद्यालय नर्मदापुरम् होशंगाबाद में एक भोजन कक्ष का निर्माण करवाया गया है।

राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल, हरियाणा अभी तक सेवा क्षेत्र रहे हैं। विभिन्न चिकित्सा शिविरों द्वारा १३०७८ व्यक्तियों का बवासीर उपचार, ४७१ की आयुर्वेद चिकित्सा, १६५७ की दन्त चिकित्सा, १८५० नेत्र आपरेशन करवाये जा चुके हैं एवं शिविरों के आयोजन निरन्तर चलते रहता हैं। आर्य समाज सुजानगढ़ चेरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना १९८१ से आप मैनेजिंग ट्रस्टी हैं। जिसके अन्तर्गत ६ (छः) होमियोपैथिक हास्पिटल सुजानगढ़, मगरासर, भासीणा, दुजार, नौसंसार बाकलिया में कार्यरत है जिनमें प्रतिदिन करीब ८०० व्यक्तियों की निःशुल्क चिकित्सा होती है। उड़ीसा आदिवासी क्षेत्रों के १९२७ इसाईयों को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया जा चुका है। महाराष्ट्र भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ एक ट्रक जीवनोपयोगी सामान के साथ स्वयं जाकर वितरण किया गया है।

मुख्यतया ग्रामीण क्षेत्रों में अनाज, कपड़ा, कम्बल, स्वेटर, तिपहिया साइकिलें, छाते, चद्दरें, पाठ्य पुस्तकें वितरण के प्रोग्राम चलते रहते हैं। जरूरतमन्द विद्यार्थियों, ब्रह्मचारियों को छात्रवृत्तियां दी जाती है। समय-समय पर उपयोगी पुस्तकें, स्मारिकाएं, ट्रेक्ट, प्लेटें, कलेण्डरों का वितरण जारी रहता है। तिहरी गुलाम के युग में प्रजा परिषद् सुजानगढ़ के क्रांतिकारी अखबार सुजानगढ़ समाचार के आप सम्पादक थे। विश्व कल्याण निधि नामक ५४४ पेज के ग्रन्थ की १००० प्रतियां प्रकाशित कर निःशुल्क वितरित की गई हैं। राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश सरकारों से अभी तक कुल मिलाकर १५०० विधवाओं, विकलांगों एवं वृद्धों की पेंशन स्वीकृत कराने में सफलता प्राप्त की जा चुकी है एवं पेंशन स्वीकृत कराने का कार्यक्रम अबाध गति से जारी है।

दो वर्ष तक श्री गोपाल गोशाला सुजानगढ़ के मंत्री, सात वर्ष तक माहेश्वरी सभा सुजानगढ़ के मंत्री, आर्य समाज सुजानगढ़ के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं रोटरी क्लब सुजानगढ़ के चार्टर प्रेसीडेन्ट रहे हैं। तीन दफा विदेश यात्राएं जिनमें अमेरिका, इटली, आस्ट्रेलिया, स्वीटजरलेण्ड, फ्रांस, बर्मा, हालैण्ड, इंग्लैण्ड, कनाडा एवं जर्मनी शामिल हैं।

राजस्थान सरकार ने विशिष्ट सेवाओं से प्रभावित होकर प्रशस्ति पत्र प्रदान किया है। इसी प्रकार धार्मिक, सामाजिक, कल्याणकारी कार्यों को देखकर कलकत्ता, इन्दौर, अजमेर, सुजानगढ़, रोजड़, उदयपुर, रायपुर आदि स्थलों में अभिनन्दन हो चुके हैं। आप अनेक धार्मिक ट्रस्टों के चेयरमैन, मैनेजिंग ट्रस्टी एवं ट्रस्टी हैं।

ईश्वर करे कि भारत माता की गोद में ऐसे अनेकों सपूत जन्म लेते रहें, जिससे मानव मात्र के कल्याण के लिए सदा शुभ कर्मों की प्रवृत्ति चलती रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमनाथ का अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन

ओमवीर आर्य
दिल्ली

दिल्ली के रामलीला मैदान में गत २४ से २८ दिसम्बर ९७ को श्री सोमनाथ मरवाहा साहब ने एक सम्मेलन आयोजित किया था। इस सम्मेलन को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा-सम्मेलन के रूप आयोजित किया गया था इस सम्मेलन में श्रीमान् वकील साहब की अच्छी फ़जीहत की। सम्मेलन की शोभा के तीन प्रतीक होते हैं। वे हैं- मंच पर शोभायमान संन्यासी महात्मा, उच्च कोटि के विद्वान् तथा सामने उनको सुनने वाली आर्य जनता। परन्तु इस सम्मेलन में न तो मंच पर कोई संन्यासी ही था और न ही कोई विद्वान् पण्डाल में उपस्थित आर्य जनता की दृष्टि से तो बहुत ही दयनीय दशा थी। अन्तर्राष्ट्रीय कहे जाने वाले इस सम्मेलन की उपस्थिति से तो हरयाणा, उ.प्र. व राजस्थान के किसी ग्राम के आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में अधिक उपस्थिति हो जाती है।

सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिये आमंत्रित थे पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, जिस समय वाजपेयी जी मंच पर आये उस समय पण्डाल में पड़ी खाली खुर्सियां सोमनाथ जी को धिक्कार रही थी। लगभग ५०० (पांच सौ) व्यक्ति ही उस समय पण्डाल में उपस्थित थे। अटल जी के आने से पूर्व माईक पर बार-बार यह घोषणा होती रही कि 'जो भी लोग इधर-उधर खड़े हैं कृपया पण्डाल में आकर बैठ जायें।' परन्तु मंच की यह आवाज सुनने वाले पण्डाल से बाहर कुछ पुस्तक विक्रेता और सफाई कर्मचारी ही थे। उनकी मजबूरी थी अन्यथा वे ही आर्य समाज की लाज बचाने के लिये पण्डाल में पहुंच जाते। पांच दिन के इस सम्मेलन में पण्डाल में पड़ी कुर्सियों को सेवा का अवसर मिला। अन्यथा इन कुर्सियों की रेत झाड़ने वाला भी कोई नहीं था। हाँ इस सम्मेलन में इन नामधारी नेताओं ने कुछ राजनैतिक नेताओं के सामने आर्य समाज की खिल्ली अवश्य उड़वा दी। पाठक गण विचार करें कि खाली पड़े पण्डाल से राजनेता क्या संदेश लेकर गये होंगे।

शोभायात्रा में भी उपस्थिति इसलिए थी कि यह आयोजन प्रतिवर्ष होता है तथा केन्द्रिय सभा की ओर से इसे आयोजित किया जाता है। यह शोभायात्रा तो स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति श्रद्धा का प्रतीक होती है। इस बार भी केन्द्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने पृथक् से अपनी आर्य समाजों से अपील की थी श्री सेमनाथ जी ने पोल तो उसी समय खोल दी थी, जिस समय उसने पाण्डाल में कुर्सियां लगवाई। आर्य समाज के इतिहास का यह पहला अवसर है जब किसी बड़े सम्मेलन में कुर्सियाँ लगवाई गई हों। अन्यथा सभी सम्मेलनों में नीचे बैठने की ही व्यवस्था सदैव रहती थी। मात्र कुछ ही कुर्सियां पत्रकारों व विशिष्ट व्यक्तियों के लिए लगई जाती थी। आयोजकों में से एक ने मुझे बताया कि पांच हजार कुर्सियां लगाई गई थी। श्री मरवाह साहब को शायद पहले से ही आभास हो गया था कि अधिकतम संख्या पांच हजार से अधिक नहीं होगी। परन्तु उनका यह गणित भी बिगड़ गया।

उपस्थिति की बात केवल मैं ही नहीं कह रहा हूँ। युवक सम्मेलन के अवसर पर एक युवक ने बड़े ही दु:खित हृदय से मंच पर उपस्थित दुर्वासा जी (सोमनाथ) व उनके साथियों के सामने अपने पीड़ा को व्यक्त किया था। परन्तु पता नहीं बाबू सोमनाथ ने उनकी पीड़ा सुनी या नहीं क्योंकि प्राय: बाबूजी सुनने वाली मशीन तभी लगाते हैं, जब उनका कोई प्रिय भक्त बोल रहा हो। अन्यथा वे दूसरे की सुनना आवश्यक नहीं समझते। इसी का परिणाम था कि यह सम्मेलन अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन के स्थान पर अन्र्तकलह सम्मेलन होकर रह गया। युवक सम्मेलन की चर्चा मैं पहले ही कर चुका हूँ। इसी तरह बंगाल आर्य प्रति सभा के प्रधान श्री बटकृष्ण जी का आधा भाषण तो बेचारे सच्चिदानन्द शास्त्री को कोसने में लग गया। बाहर से आने वाले लोगों में से अनेक लोग पूछते थे कि इस सम्मेलन में आर्य समाज के संन्यासी व विद्वान् क्यों नहीं आये।

संन्यासियों में मात्र श्री स्वामी दीक्षानन्द जी यज्ञवेदी पर दिखाई देते थे। उसके पश्चात् उनके भी दर्शन नहीं होते थे। इस सम्मेलन में श्रीमान् वन्देमातरम् जी प्राय: मौन ही दिखाई दिये। उनके चेहरे पर उदासीनता व निराशा स्पष्ट झलक रही थी। आर्य संन्यासियों को हिजड़ा कहने वाले श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के तेज को भी खाली पड़े पाण्डाल ने मानो हर लिया हो। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि उन तथा कथित नेताओं को आर्य जनता ने नकार दिया तथा इनका बहिष्कार करते हुए यह भी संकेत दिया कि अब आर्य समाज तेजस्वी नेतृत्व चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्य समाज स्थापना दिवस

२८ मार्च पर विशेष

ले. मनजीत कुमार
गुरुकुल आश्रम आमसेना

लगभग बारह सौ वर्षों की गुलामी को सहकर भारतवर्ष ने १९ वीं शताब्दी में प्रवेश किया तब तक भारत वर्ष अपना सब कुछ लूटा चुका था उसकी दशा एक अनाथ, बेसहारा विधवा जैसी हो चुकी थी वह अपने पूर्वजों के गौरव-गुमान को भुलाकर पहले मुसलमानों व फिर अंग्रेजों (ईसाइयों) का गुलाम रहकर उन्हीं के रंग में ढ़लकर उन्हीं के गीत गाये जा रहा था। जनमानस अपने कर्तव्य से विमुख हो चुका था। अंग्रेजों के आदेश का पालन करने में वह सर्वतोन्मुखी विकास समझता था व अपने पूर्वजो को वृद्ध मूर्ख (Old Full) अपना कह कर हंसता था। परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेदोक्त ज्ञान सैकड़ों युगों के असंख्य समय में प्रवाहित रहकर कपोल कल्पित विभिन्न चारवाक, जैन, बौद्ध आदि नवीन मतों के आडम्बरों में उसी प्रकार कलुषित हो गया जिस प्रकार हिमालय से निकलते समय गंगा का जल परम-पवित्र होता है और वही जल बहते-बहते अनेक मलवाली नदियों में मिलकर बंगाल की खाड़ी तक पहुंचते-पहुंचते प्राय: कीचड़ का रूप धारण कर, लेता है ऐसे ही सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, न्यायकारी परमात्मा की उपासना का स्थान विभिन्न देवी-देवताओं ने ले लिया था। मन्दिरों में भांग, चरश आदि नशीली वस्तुओ का सेवन किये हुये निरक्षर पूजारियों का जमावड़ा हो गया था। भारतीय जनता सच्चे तीर्थों को भूलकर जल-स्थल आदि को ही तीर्थ मान बैठी थी गुण कर्म से सुसम्पन्न वेदोक्त ब्राह्मणादि वर्ण व्यवस्था को भूलकर उसके स्थान में गुण कम से रहित जन्ममात्र के कारण ब्राह्मणादि अभिमानी हो गये। ब्रह्मचारी व संन्यासी का केवल नाम शेष रह गया। उनका वेश धारण कर लाखों व्यक्ति वेद ज्ञान से रहित होकर स्वजिविकोपार्जन हेतु भोली-भाली जनता को लूट-लूटकर नीच से नीच कर्म करते हुए सि पूण्य भूमि पर भार स्वरूप विचरण कर रहे थे, सच्चे योगियो का नाम केवल योगशास्त्रों तक सीमित रह गया था ऐसे समय में इस वसुन्धरा पर एक महापुरूष देवर्षि दयानन्द सरस्वती (बचपन का नाम मूलशंकर) का जन्म गुजरात प्रान्त के टंकारा नामक गांव में हुआ। ज्यों-ज्यों बालक मूलशंकर बड़ा होता गया त्यों-त्यों उसके मन में एक ज्वार भाटा उठने लगा, पूर्व के संस्कार जाग्रत होने लगे, दुनिया एक ढ़ोग लगने लगी। पारम्परिक व्यवस्थानुसार वि.स. १९४८ में मूलशंकर ने शिवरात्रि का व्रत रखा और शिवदर्शन हेतु शिव मंदिर गया जब शिव मंदिर में बालक मूलशंकर को सच्चे शिव के दर्शन नहीं हुए तो उन्होंने सच्चे शिव के दर्शन करने की ठानी और यही शिवरात्रि बाद में उनके गोध रात्रि या वौधरात्रि नाम से विख्यात हुई, यहीं से उनके जीवन का सूत्रपात सच्चे शिव की खोज के लिये हुआ।

लम्बे समय तक (हिमालय की कन्दराओ में योगियों का निवास होता है। ऐसा समझकर हिमालय की बर्फीली पहाड़ियों में घुमता रहा लेकिन अन्त में एक सच्चे गुरू व्याकरण सूर्य स्वामी विरजानन्द का पता चला और उनके पास विद्याअध्ययन हेतु आया, उनसे विधिपूर्वक वेदादि शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को समझा, पढ़ा। जब शिक्षा पूरी हुई तो प्राचीन परम्परानुसार गुरूजी कि आज्ञा हुई कि तुम आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर वर्तमान में सोये पड़े भारत का उद्धार करो। **''आज्ञा गुरूणां न विचारणीयां''**, इस उक्ति को लेकर संसार सागर में दयानन्द कूद पड़े अनेक शास्त्रार्थ पौराणिकों ईसाई, मुसलमान आदि अनेक विधर्मियों के साथ किये ओ३म् पता का हाथ में लेकर **''कृण्वन्तो विश्वमार्यम''** की उक्ति को सार्थक करते हुए वैदिक धर्म के पुनरूद्धारार्थ और संसार के परोपकार्य आर्य समाज की स्थापना चैत्र सुदि १ संवतं १९३२ (७ अप्रैल १९७५) में गिरगांव (मुम्बई) में की। पहले इसके २८ नियम बनाये गये, बाद में इन्हीं २८ नियमों को संक्षिप्त करके १० नियमों का रूप दिया जिसमें पहले नियम में सृष्टि में उत्पन्न सभी पदार्थों का आदिमूल परमेश्वर बताया, दूसरे में ईश्वर को सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ आदि तीसरे में वेदको सब सत्य विद्याओं की पुस्तक बताया जिसका सुनना-सुनाना सब आर्यो का परम धर्म बतलाया है। इस प्रकार आगे सात नियमों में भी एक-एक गूढ़ बात छुपी है जिसका विवरण बहुत विशद है अति संक्षेप में यदि कहें तो संसार की सर्वविघोन्नति आदि-आदि बतलाया है।

आर्य समाज के कार्य –

आर्य समाज ने स्थापना के बाद अनेको समाजोपयोगी कार्य किये हैं चाहे वह स्वतन्त्रता प्राप्त करने में गुरूकुल खुलवाने में, कन्याओं की शिक्षा के लिए विधवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह, सती प्रथा, बलि प्रथा आदि-आदि अनेक कार्य आर्य समाज ने देश हित के लिए किये हैं।

(सज्जनों- यदि आर्य समाज की स्थापना नहीं हुई होती या यूं कहो यदि आज आर्य समाज नहीं होता तो कौन पूछता था इन स्त्रियों को, कौन इन्दिरा गांधी को देश का नेतृत्व सौंपता, कौन उमाभारती को संसद की सीट में पुरूषों के बीच बैठता, कौन कल्पना चावला को अन्तरिक्ष में भेजता, कौन स्त्रियों को बराबर अधिकार दिलाता क्योंकि ऋषि दयानन्द के आने से पहले सब जगह (स्त्री शुद्रानाधीयताम) ढ़ोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी, ये सब ताड़न के अधिकारी'' आदि-आदि उक्तियों देश में सब जगह गुंजायमान थी, लड़की को जन्म होते ही मार दिया जाता था। देश के कर्णधारो - याद करो यदि दयानन्द इस धरा पर नहीं आते तो देश का क्या होता।) जिन मुसलमानों, ईसाइयों में पौराणिक हिन्दु, धर्म का मजाक उड़ाकर उन्हें (हिन्दुओं को) अपने धर्म (इस्लाम ईसाई) में शामिल किया। आर्य समाज ने उन सभी बिछुड़े हुये हिन्दु भाइयों की शुद्धि कर फिर से हिन्दु धर्म (वैदिक धर्म) में दीक्षित कर दिया। सन् १९२१ ई. में मोपला ''मालाबार'' में मुसलमान बनाए गए लगभग २५०० हिन्दु परिवारों को फिर से हिन्दु बनाया। आज भी यह कार्य अनवरत् रूप से चालू है। स्वामी धर्मानन्द जी महाराज उड़ीसा एवं मध्यप्रदेश के हजारों-हजारों ईसाई, मुसलमान भाईयों को फिर से हिन्दु (वैदिक धर्म) में दीक्षित कर रहे हैं।

अत: भारत के हिन्दुओं को जगाकर उन्हें प्रगतिशील करने का श्रेय आर्य समाज को ही है पंडित चमूपति जी ने सत्य ही कहा है ''आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दु कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरूदण्ड की हड्डी थी ही नहीं, चाहे कोई उसे गाली दे, उसकी हंसी उड़ाये, उसके देवताओं की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियों से मानता आ रहा है, फिर इन सारे अपमानों के सामने वह दांत-निपोर कर रह जाता था। लोगों को यह उचित शंका हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नहीं, इसे आवेश भी चढ़ता है या नहीं अथवा यह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी कीं और घूर भी सकता है या नहीं। किन्तु, आर्य समाज के उदय के बाद, अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति सदा के लिए विदा हो गयी। हिन्दुओं का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा है। आज का हिन्दु अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरूरत हुई तो धर्म-रक्षार्थ वह अपने प्राण भी दे सकता है। अन्त में राष्ट्रीय कवि श्री दिनकर जी के अनुसार पुरुष सब शिक्षित और स्वस्थ हो, नारियां शिक्षिता और सबला हो लोक संस्कृत पढ़े और हवन करे, कोई भी हिन्दु मूर्ति पूजा का नाम न ले, न पुरोहितो देवताओं और पंडो के पेर में पड़े।

अत: आइये ! आर्य समाज स्थापना दिवस के शुभावसर पर हम संकल्प लें कि जिस पवित्र भावना से ओत-प्रोत होकर महर्षि जी ने संसार के उपकारार्थ आर्य समाज की स्थापना की उस ऋषि द्वारा पुष्पित इस आर्य समाज रूपी पौधे को हरा-भरा बनावे इसे सुसंगठित करें, इसे वट वृक्ष का रूप धारण करावें, इसकी शाखाएं समस्त संसार में फैले ऐसा उत्तम वातावरण हम बनाए, पहले खुद सुधरे फिर जग को सुधारे, महर्षि के स्वप्नों का भारत बनायें।

ऋषि-उवाच

जिससे मनुष्य विद्या आदि शुभ गुणों की प्राप्ति और अविद्यादि दोषों को छोड़ के सदा आनन्दित हो सके वह शिक्षा कहाती है। जिससे पदार्थ का स्वरूप यथावत् जानकर उससे उपकार ले के अपने और दूसरों के लिए सब सुखों को सिद्ध कर सकें वह विद्या और जिससे पदार्थों के स्वरूप को उलटा जानकर अपना और पराया अनुपकार कर लेवे वह अविद्या कहाती है।

जब सभा में जावे तब दृढ निश्चय कर लेवें कि मैं सत्य को जिताऊं और असत्य को हराऊंगा। अभिमान न रखे। अपने को बड़ा न माने। अपनी बात का कोई खण्डन करे उस पर क्रुद्ध वा अप्रसन्न न हो। जो कोई कहे उसके वचनो को ध्यान देकर सुन के जो उसमें क्रुछ असत्य भान हो, उस अंश का खण्डन अवश्य करें ओर जो सत्य हो तो प्रसन्नता पूर्वक ग्रहण करें। बड़ाई छोटाई न गिने। व्यर्थ बकवाद न करें। कभी मिथ्या का पक्ष न करें और सत्य का कदापि न छोड़े। ऐसी रीति से बैठे व उठें कि जिससे किसी को बुरा विदित न हो। सर्वहित पर दृष्टि रखें। जिससे सत्य की बढ़ती और असंत्य का नाश हो, उसको रहे। सज्जनों का संग करें। और दुष्टों से अलग करें। जो-जो प्रतिज्ञा करें वह-वह सत्य से विरूद्ध न हो और उसको सर्वथा यथावत् पुरी करें। इत्यादि कर्म सब सभा आदि व्यवहारों में करें।

ऐसे धार्मिको को सदा लाभ ही लाभ होता है। और झूठों की दुर्दशा होकर दिवाले ही निकल जाते हैं। इसलिये सब मनुष्यों को अत्यंत उचित है कि सर्वथा झूठ को छोड़कर सत्य ही से सब व्यवहार करें। जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त होकर सदा आनन्द मे रहें।

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीभ काट कर पत्थर की मूर्ति पर चढ़ा दी

विश्वनाथ प्रसाद
कोरबा

विश्व निरन्तर उन्नति प्रगति कर रहा है। नए-नए अनुसंधान हो रहे हैं। तारा मण्डल के अनेक ग्रहों पर खोज जारी है यह जानकारी प्राप्त करने के लिए कि वहां क्या है, वहां की मिट्टी, पानी, हवा कैसी है और क्या वहां जीव, प्राणी जीवित वह रह सकता है ? यह सब इसलिए हो रहा है कि इस पृथ्वी की आबादी दिनों दिन बढ़ती जा रही है और सम्भवतः आगे कुछ वर्षों में इतनी हो जाय कि सब के लिए भोजन, रोजगार, व्यवसाय इस पृथ्वी पर कम पड़ने लगे फिर निवास की समस्या और जटिल हो जायगी। अनुसंधान से यदि ज्ञात हो गया कि अमुक ग्रह में इन सब बातों की पर्याप्त सुविधा है तो वैज्ञानिक वहां पहुंच कर आगे की कार्यवाही आरम्भ कर दें।

संसार के लोगों को शिक्षित करना भी आवश्यक है। इस कारण रोज नए-नए विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग कालेज मेडिकल कालेज और बहुत सी शिक्षा ग्रहण करने की संस्थाएं खोली जा रही है। करोड़ों लोग शिक्षित होकर अच्छे नागरिक बनकर निरन्तर बढ़ती हुई प्रगति में अपना योगदान दे रहे हैं। विश्व को और सुन्दर, सभ्य और सुख शान्ति वाला बनाने में ये सब लगे हैं।

इस चित्र का दूसरा पक्ष, किनारा बिल्कुल इसके विपरीत है। जैसे उल्लू को सूर्य का प्रकाश अच्छा नहीं लगता कष्ट देता है, उसी प्रकार ऐसे भी लोग समाज में है, जिनको ऐसी विद्या, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान की बातें अच्छी नहीं लगती। ऐसी भली, लाभदायक बातें सुनकर उनका सिर चक्कर काटने लगता है, दम घुटने लगता है, नींद आने लगती है और कभी-कभी तो प्राण ही शरीर छोड़ने लगते हैं। वास्तव में वह आज भी कूप मण्डूक ही बने रहना पसन्द करते हैं जिसमें रहकर उन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य भाग अभी तक बिताया है।

स्वार्थी लोगों ने महर्षि मनु द्वारा निर्धारित धर्म का रूप ही बदल डाला है। वेद में कहीं भी मूर्ति पूजा की अनुमति नहीं है किन्तु छली, कपटी, भ्रष्ट लोगों ने भोली भाली जनता को मूर्ति पूजा के अन्धकारमय गड्ढ़े में गिरा कर ही दम लिया। नीति में एक जगह कहा गया है कि यज्ञ, अध्ययन, दान, तप, सत्य, क्षमा, धृति और अलोभ यह आठ प्रकार का धर्म का मार्ग है किन्तु कपटी कब इसको धर्म स्वीकार करेगा ? वह तो ऐसा धर्म चलाना चाहता है जिसमें अन्यों दूसरों के आंखों पर अज्ञानता की पट्टी बंधी हो और वह महाशय सर्वदा लोभ से मुक्त अपनी बड़ाई के गपोड़े मारते रहे कि अभी काली, दुर्गा, शिव, संतोषी को तुम्हारे सामने लाकर सम्भालकर खड़ा कर सकता हूं। गिरगिट की तरह ऊपर से शील, संतोष और साधुता दिखाये किन्तु अन्दर से बगुले की तरह इस चतुराई में रहते हैं कि कब किसका और कितना धन हड़प लें।

इस प्रकार की गिरावट का परिणाम यह हुआ कि लोग भैंसों, बकरों और मुर्गों का गलाकाट कर देवी पर चढ़ाने लगे ताकि उनकी सिद्धि प्राप्त हो जाए किन्तु सिद्धि तो मिली नहीं ऊपर से अनेक पशुओं का मांस शेर, चीतों और कुत्तों की तरह खाने की आदत पड़ गई। इस पर भी जब किसी प्रकार का चमत्कार दिखाने की शक्ति न मिली तो अपनी जीभ काट कर देवी को अपर्ण करने लगे। कुछ मिले न मिले किन्तु मुर्खों पर प्रभाव जरूर हुआ। दूर-दूर तक प्रचार हो गया कि वह पुरुष, वह औरत देवी भक्त है तभी तो जनता के सामने कटी हुई जीभ को देवी ने स्वीकार कर लिया। जीभ काटकर देवी के अपर्ण करने की कुछ घटनाओं का अवलोकन करें :-

(१) अन्ध विश्वास और झूठी श्रद्धा के उन्माद में आकर नेहरू नगर की एक विवाहिता ने रतनपुर स्थित मां महामाया मन्दिर में अपनी जीभ काट कर यज्ञ स्थली में बलि चढ़ा दी। घटना २९.९.९२ सायंकाल लगभग ४ बजे की है। महिला का पति यहां पुलिस विभाग में कार्यरत हैं।

(२) प्राप्त जानकारी के अनुसार बालको नगर, कोरबा, जिला बिलासपुर मध्यप्रदेश, के समीप स्थित ग्राम बेलाकछार में निवास करने वाले सुदर्शन देवांगन की ३५ वर्षीया पत्नी गुरूवाराबाई ने दिनांक १३.१०.९२ के प्रातः ६ बजे राम मंदिर प्रांगण बालको में जाकर अपनी जीभ ब्लेड से काटकर शिव लिंग में भगवान् को खुश करने के उद्देश्य से भेंट चढ़ा दी।

(३) १९.३.९३ देर संध्या नगर कोरबा के फोकटपारा नामक मोहल्ले में विवाह करने वाली एक महिला ने ईश्वरीय भक्ति भावना से ओत-प्रोत होकर वहां बने एक शिव मंदिर में अपनी जीभ काटकर अर्पण कर दी। इस अप्रत्यशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटना के पश्चात् कुछ धर्म प्रेमी सज्जनों ने मन्दिर पहुंचकर ढ़ोल मंजीरे के साथ जोर-जोर से भजन, कीर्तन आरंभ कर दिया। सूचना मिलते ही पुलिस घटना स्थल पर पहुंच गई। महिला की दशा सामान्य बताया जाता है।

(४) डरकान कम्पनी कोरबा, प्रगतिनगर, में वाचमैन के रूप में कार्यरत ५५ वर्षीय रामचरण चौहान नामक एक व्यक्ति ने ८.४.९३ के दोपहर सर्वेश्वर मंदिर स्थित शिव लिंग पर अपनी जीभ ब्लैड से काटकर चढ़ा दी। वह व्यक्ति अभी भी मंदिर के दरवाजे पर मौन धारण किए हुए बैठा है। इस प्रकार अनेक घटनायें अंधविश्वास एवं मूर्खतावश सारे देश में हो रही है।

समीक्षा– अंध श्रद्धा एवं अंध विश्वासी लोग अपने पत्थर के देवता को केवल जीभ ही क्यों भेंट करते हैं ? क्या उनके शरीर में और अंग नाक, कान, आँख, हाथ, पैर नहीं है ? तथ्य की बात यह है कि शरीर के अन्य अंग एक बार कट जाने पर फिर जुड़ नहीं सकते। बढ़ नहीं सकते किन्तु वह कटा भाग सदैव के लिए उनके शरीर से अलग हो जायेगा। जीभ ही एक ऐसा अंग है जो ऐसे पतले-पतले नसों से बना है जो कट जाने के पश्चात् भी धीरे-धीरे पुन: बढ़ जाता है। और पहले की तरह शक्ल, नाप, तौल ग्रहण कर लेता है। लचीलापन के कारण इस चंचल को ही काटकर देवी को प्रसन्न करने की नौटकीं की जाती है। कटने के थोड़ी देर तक रक्त बहता है किन्तु ज्यों ही मुंह के बाहर का आक्सीजन मिलता है, रक्त का बहना बन्द हो जाता है। अपने आपको कष्ट में डालने वाला रोगी नमक, मिर्ची छोड़कर सब कुछ विशेष रूप से दूध का सेवन करता है। जीभ धीरे-धीरे बढ़कर पहले का आकार प्राप्त कर लेती है। जैसे रोकड़ लेकर लोग रक्तदान करते हैं, उसी प्रकार जीभ काटकर देवी पर चढ़ा दी जाती है।

जीभ काटकर मनुष्य द्वारा बनाई गई, तराशी गई पत्थर की मूर्ति के अर्पण करने में कौन सी धार्मिकता है ? यह कर्म तो प्रकाश से अंधकार के गहरे गड्ढ़े में गिराने वाला है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में ''मनुष्य का ज्ञान जड़ की पूजा से नही बढ़ सकता किन्तु कुछ ज्ञान है वह भी नष्ट हो जाता है। इसलिए ज्ञानियों की सेवा, संग से ज्ञान बढ़ता है, पाषाणादि से नहीं। क्या पाषाणादि मूर्ति पूजा से परमेश्वर को ध्यान में कभी ला सकता है ? नहीं-नहीं मूर्ति पूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है, जिसमें गिरकर चकनाचूर हो जाता है। पुन: उस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है ।'' (सत्यार्थ प्रकाश)

ऐसी छल-कपटपूर्ण घटनाओं से सस्ती लोक प्रशंसा अवश्य ही मिल जाती है। इसमें किसी प्रकार का चमत्कार नहीं है और न देवी, शिव लिंग ही प्रसन्न होकर मनोकामना पूर्ण करते हैं। परिश्रम और पुरूषार्थ से जीवन में इच्छानुसार सफलता मिलती है न कि देवी पर जीभ काटकर चढ़ाने से?

५४ वां वार्षिकोत्सव एवं पुरस्कार समारोह सम्पन्न

आर्य समाज सान्ताकुंज, मुम्बई का ५४ वां वार्षिकोत्सव १८ से २६ जनवरी तक मनाया गया। इसी अवसर पर पुरस्कार समारोह का भी आयोजन किया गया।

''वेदांग'' पुरस्कारे वैदिक विद्वान पं. सुधाकर जी चतुर्वेदी को २५,००१/- रु.

आर्य कार्यकर्त्ता पुरस्कार श्री देवीदास जी आर्य को १५,००१/- रु.

एवं आर्य महिला पुरस्कार से श्रीमती शिवराजवती जी आर्या को ११,००१/- रु.

की राशि, रजत ट्राफी, शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया एवं विभिन्न सम्मेलनों द्वारा कार्यक्रम समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

कोटा में पं. रामप्रसाद बिस्मिल शताब्दी सम्पन्न

आर्य समाज रामपुरा कोटा के शताब्दी समारोह के साथ-साथ पं. रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म शताब्दी समारोह पूं. स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में उत्साहपूर्ण वातावरण में मनाया गया। जिसमें स्वामी सुमेधानन्द जी, डॉ. धर्मवीर जी, डॉ. सोमदेव जी, कै. देवरत्न जी आदि विद्वानों के व्याख्यान हुए। इसी के साथ-साथ संस्कृति सम्मेलन, मनुस्मृति भ्रान्ति निवारण सम्मेलन, स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान आदि सम्मेलनों एवं भव्य शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया।

चुनाव समाचार –

आर्य समाज लोहर्सी खरौद

प्रधान - श्री साधराम जी आर्य
मंत्री - श्री दुखुराम जी आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री मोतीलाल जी आर्य

आर्य कुमार सभा लोहर्सी

प्रधान - संजय कुमार जी आर्य
मंत्री - प्रमोद कुमार जी आर्य
कोषाध्यक्ष - रमेश कुमार जी आर्य

आर्य समाज बिहार शरीफ

प्रधान - श्री मथुरा प्रसाद आर्य
मंत्री - श्री बाबूलाल आर्य
कोषाध्यक्ष - लखनलाल आर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यतियों का अपमान, निर्णय एवम् उल्लंघन

डॉ. सोमदेव शास्त्री (मुम्बई)

राजस्थान के जालोर जिले के अन्तर्गत् दुराचार के आरोप में एक जैन साधु को पुलिस ने पकड़ कर पुलिस चौकी में बन्द कर दिया, इसके विरोध में पूरे जैन समाज ने हलचल मचा दी थी कि हमारे साधु का अपमान पुलिस अधिकारियों ने किया। विधान सभा में भी उसकी आवाजें उठी कि हम अपने साधुओं का अपमान सहन नहीं करेंगे। जिसके परिणाम स्वरूप राजस्थान सरकार को पुलिस के सम्बन्धित अधिकारियों का स्थानान्तर करना पड़ा। जबकि पुलिस की कार्यवाही उचित थी। किन्तु दुराचारी साधु का भी अपमान जैन समाज नहीं चाहता था अत: सरकार को उनके समक्ष झुकना पड़ा। यह घटना कुछ दिन पूर्व की है जो समाचार पत्रों में छायी रही।

दूसरी ओर सारे संसार को आर्य बनाने का उद्घोष करने वाली तथाकथित सभा का मंत्री अपने ही पत्र ''सार्वदेशिक'' में अपने ही पूज्य संन्यासियों का अपमान करता हुआ इन्हें ''हीजड़ा'' तक लिखने का दुःसाहस कर डालता है। आर्य समाज में वानप्रस्थियों और संन्यासियों की वैसे ही समुचित व्यवस्था संस्थागत दृष्टि से नहीं है। इसलिये दिन प्रतिदिन वानप्रस्थियों और संन्यासियों की संख्या कम होती जा रही है। क्योंकि सबके सामने व्यवहारिक समस्या यह है कि रूग्णावस्था में कौन सेवा करे। तथा आर्थिक दृष्टि से कौन निश्चिन्त रखे। घर वालों का तो परित्याग कर दिया, समाज सुरक्षा न करे, इस कारण व्यक्ति वानप्रस्थी या संन्यासी होने से बचता है। पुनरपि वैदिक सिद्धान्तों के प्रति पूर्ण निष्ठावान् ईश्वर पर विश्वास कर यत्र-तत्र वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा लेते रहते हैं, तथा निःस्वार्थ भाव से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अहर्निश लगे रहते हैं। आश्रम व्यवस्था को सामाजिक रूप से अनिवार्यत:, आर्यों ने नहीं अपनाया जिसके परिणाम स्वरूप, जिसके कारण अब प्रचार न्यून होता जा रहा है और संन्यासियों की संख्या नगण्य सी होती जा रही है।

भौतिकवादी युग में सांसारिक सुख सुविधाओं के भयानक प्रवाह के प्रचार में लगे हुए ऐसे व्यक्तियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने, उनका सम्मान करने के स्थान पर, अपनी ही पत्रिका में उनके लिये अपमान जनक शब्दों का प्रयोग, उनकी निन्दा करना, उनको आर्य समाज से निकालनादि अनार्यों जैसे कार्य, सत्ता के मद में उन्मत्त होकर एक अपने आपको शिरोमणि संस्था का उच्च अधिकारी मानकर करता है इसकी जितनी निन्दा की जाय उतनी ही कम है। नीतिकार ने ठीक ही कहा है -

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यांनांतु व्यतिक्रमः। त्रीणि तत्र वर्तन्ते दुर्भिक्ष मरण भयम् ॥

अर्थात् जहां पर अयोग्य व्यक्तियों का सम्मान होता है और पूज्य व्यक्तियों का अपमान होता है वहां अकाल, मृत्यु और भय विद्यमान रहता है।

संन्यासियों-विद्वानों का सम्मान न होने के कारण ही आज नयी - साम्प्रदायिक संस्थाओं का विकास हो रहा है आर्य समाज जो विश्व को लोक- परलोक के कर्तव्यों का सन्देश देने का दावा करता है, अपने आपको सबसे श्रेष्ठ मानता है उसका दिन प्रतिदिन ह्रास हो रहा है।

संन्यासियों और आर्य नेताओं के लिये अपमान जनक शब्दों का प्रयोग करने के कारण ही आर्य जगत् के संन्यासियों के संगठन ''यतिमण्ड्ल'' ने निर्णय किया कि श्री मरवाह और श्री सच्चिदानन्द शास्त्री द्वारा आयोजित ''आर्य महासम्मेलन'' में कोई भी यति-- (संन्यासी) भाग नहीं लेगा। इन्होंने पत्रों में अपनी विज्ञप्ति भी प्रकाशित की। किन्तु यतिमण्ड्ल के ही एक प्रतिष्ठित संन्यासी मना करने पर भी यज्ञ कराने के लिये श्री मरवाह के द्वारा आयोजित सम्मेलन में पहुंच ही गये। वैसे तो शतपथ ब्राम्हण से लेकर महर्षि दयानन्द तक सभी ऋषियों ने संन्यासियों के लिये यज्ञ कराने का निषेध किया है, किन्तु स्वार्थ या अर्थ की लोलुपता व्यक्ति को कर्तव्य से विमुख कर देती है। जैसा कि मनु ने लिखा है- अर्थ और काम में आसक्त व्यक्ति को धर्म (कर्तव्य-अकर्तव्य) का बोध नहीं होता है। (अर्थ कामस्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधियते ..... मनु.) गुरूजी ने मना किया तो उनको अनशन (भूख हड़ताल) करने और मरने की धमकी दे डाली। यदि यही मर्यादा का निर्वाह एक संन्यासी करेगा तो हम गृहस्थियों को क्या उपदेश देगा। यहां तो चिकित्सक ही रोगी हो गया है।

यदि आज सभी संन्यासी-वानप्रस्थी-ब्रह्मचारी और गृहस्थ-उपदेशक, विद्वान पुररोहितादि संकल्प कर लें कि असत्य का आचरण करने वाले और संन्यासियों और आर्य नेताओं का अपमान करने वालों का हम साथ न देंगे तो बहुत शीघ्र स्वार्थी और सत्ता के मद में उन्मत्त व्यक्ति अपनी अनार्यो जैसी हरकतों को बन्द कर देंगे। किन्तु यह तब होगा जब अर्थ के लोभ को त्यागने वाले सभी संगठित होवें। अन्यथा आर्य समाज के विनाश के, पाप के भागी वे लोग होंगे जो असत्य-अन्याय का आचरण कर रहे हैं या उन लोगों का साथ दे रहे हैं। ■

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्ल का दिवालिया ब्रह्माकुमारी मत

आठवीं किस्त

– स्वामी परमानन्द सरस्वती

प्रिय पाठको,

साप्ताहिक पाठ्यक्रम पुस्तक के पृष्ठ ६२ पर ब्रह्माकुमारी कहती है कि भारत वर्ष एक ओर तो शिव का दिव्य जन्मोत्सव शिवरात्रि मनाते हैं और दूसरी ओर कहते हैं कि परमात्मा सर्व व्यापक है।

विष्णु कुमार- कुमारी जी भारत का मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी शिवरात्रि को शिव का जन्मदिन नहीं मानता बल्कि विवाहोत्सव जरूर मानता है और न शिव को सर्व व्यापक ही कहते हैं। शिव को तो पत्नी बच्चों वाला कैलास वासी ही मानते हैं। फिर तुम्हें यह दिवा स्वप्न कैसे आ गया कि शिवरात्रि को भारत के लोग शिव का जन्म दिन मानते हैं।

ब्रह्माकुमारी- हम लोग परमपिता शिव का दिव्य जन्म मानते हैं। माता के गर्भ से नहीं। लोक में भी दो प्रकार का जन्म होता है एक लौकिक माता-पिता से दूसरा जन्म जैसे अज्ञान से ज्ञान प्राप्त होना बुरी आदतों को छोड़ कर अच्छी आदत में चलना यह दिव्य जन्म कहलाता है।

विष्णु कुमार- तुमने यह स्वीकारा है कि परमपिता शिव दिव्य जन्म लेता है और दिव्य जन्म की परिभाषा यह की है कि अज्ञान से ज्ञान प्राप्त करना तथा बुरी आदतों को छोड़ना कृपया यह और बतलाइये कि तुम्हारे परमपिता शिव में कौन-कौन सी बुरी आदते थी जिसको उसने छोड़ दिया। उस अज्ञानी शिव ने किससे ज्ञान प्राप्त कर दिव्य जन्म लिया जिसे तुम लोग मरजीवा जन्म कहती हो। अब यह और बतलाइये कि तुम्हारे शिव का मरजीवा जन्म कब हुआ और कहां हुआ। यदि नहीं हुआ तो शिवरात्रि को शिव का जन्म दिन क्यों मानती है।

ब्रह्मकुमारी- शिव लिंग परमात्मा की प्रतिमा है और शंकर की अपनी प्रतिमा शरीर वाली है। पृष्ठ ८२

विष्णु कुमार- प्रतिमा तो शरीर की ही होती है या फिर शरीर के किसी भी अङ्ग की जैसे विष्णु के शरीर के एक अंग पैरों (चरणों) की भी प्रतिमा मंदिरों में पाई जाती है। भक्त लोग दोनों की पूजा करते हैं, कुछ लोग शरीर की प्रतिमा को पूजते हैं और कुछ लोग चरण कमल की प्रतिमा को पूजते हैं। ठीक उसी तरह कुछ लोग शिव के पत्नी सहित शरीर की प्रतिमा को पूजते हैं और कुछ लोग उनकी मूत्र इन्द्रिया (लिंग) की प्रतिमा की पूजा करते हैं। शरीर की पूजा करने वाले शैव कहलाते हैं और लिंग की पूजा करने वाले लिंगामत कहलाते हैं। तुमने स्वयं स्वीकारा है कि शिव लिंग ही हमारे परमात्मा की प्रतिमा है। इससे तो यही सिद्ध है कि तुम लोग लिंग उपासक हो। मन्दिरों में शिव लिंग की प्रतिमा निम्न प्रकार से पाई जाती है कोई छोटी बड़ी कोई मोटी तो कोई पतली इनमें से आप लोग चारों की उपासना करती हो या किसी एक की उत्तर दें।

ब्रह्माकुमारी- सुनो जी जिस मनुष्य के तन में वह प्रवेश करते हैं उसको वह प्रजापिता ब्रह्माकुमारी नाम देते हैं। पृष्ठ ८४

विष्णु कुमार- कुमारी जी यह बतालाइये कि आप का वह लिंग स्वरूप परमात्मा ने किसके अन्दर प्रवेश किया था।

ब्रह्माकुमारी- हमारे वृद्ध दादा लेख राज के अन्दर प्रवेश किया था।

विष्णु कुमार- कृपया यह और बतला दीजिये की आप के उस लिंग स्वरूप परमात्मा ने दादा लेखराज के शरीर में किस मार्ग में प्रवेश किया था। कान से नाक से मुख से गुदा से या फिर शरीर को कहीं से चीर कर घुसा था।

ब्रह्माकुमारी- परमात्मा ने हमारे दादा लेख राज के मुख से प्रवेश किया था।

विष्णु कुमार- तुम्हारे दादा को यह पता कैसे लगा कि परमात्मा मेरे मुख से अन्दर जा रहा है। क्या उसमें कोई स्वाद था खट्टा-मीठा नमकीनादि। फिर मुख से जब उस वस्तु ने अन्दर प्रवेश किया तब दादा अकेले थे या और कोई था। इस घटना का क्या कोई चश्मदीद गवाह है।

ब्रह्माकुमारी- कुमार जी जरा बुद्धि का प्रयोग करो। परमात्मा कोई पदार्थ थोड़े ही कोई है जो उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाद होगा वह तो वायु के समान अन्दर चला गया वायु में क्या स्वाद रहता है। दादा जब प्रवचन करने बैठते थे तब ही परमात्मा उनके अन्दर प्रवेश करता था। रही चश्मदीद गवाह की बात तो दादा स्वयं कहते थे कि जो बाते मैंने बताई है वह परमात्मा की कही हुई है मेरी नहीं।

विष्णु कुमार- कुमारी जी बुद्धि का दुरूपयोग तो आप कर रही हैं। वायु तो निराकार है और आप का परमात्मा तो लिंग स्वरूप साकार है। साकार वस्तु का निराकार में तदाकार होना संभव नहीं है आप का कथन है कि जब दादा प्रवचन करने बैठते थे तभी प्रवेश करता था और फिर चला जाता था। तो क्या आप के दादा किसी से सन्देश भेजते थे कि जब मैं प्रवचन करूंगा तुम मेरे अन्दर प्रवेश हो जाओ क्योंकि आपका परमात्मा तो सर्व व्यापक है नहीं ब्रह्म लोक में रहता है तो उसे यह सूचना कौन देता था और तुम जो यह कहती हो कि परमात्मा जिसके तन में प्रवेश करता है उसका नाम प्रजापिता ब्रह्मा देता है। कृपया यह और बतला दीजिये कि जब से सृष्टि बनी है तब से आज तक तुम्हारे परमात्मा ने कितने लोगों के तन में प्रवेश कर उनका नाम प्रजापिता ब्रह्मा दिया वर्तमान सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न हुए १९६०८५३०९८ वर्ष हो गये हैं इतने वर्ष बीत जाने पर तुम्हारे परमपिता शिव को किसी भी व्यक्ति ने अपने अन्दर घुसने क्यों नहीं दिया क्या कारण बता सकती हो। तुम्हारी इन गप्पों को वही मानेगे जो अक्ल के दिवालिया हो चुके हैं। ब्रह्मा एक पद है और यह पद उन्हें प्राप्त होता है जो चारो वेदो के ज्ञाता होते हैं। वेद विहीन लेखराज को ब्रह्मा कहना गुबरीले को हाथी कहने के समान है।

ब्रह्माकुमारी- सतयुग और त्रेतायुग में जो सत्य धर्म स्थित होता ही है। अत: इन दो युगों में परमात्मा के आने की क्या आवश्यकता है। धर्म की हानि तो द्वापर युग से शुरू होती है। तब तन यदि परमात्मा अवतरित होकर धर्म की स्थापना और अधर्म का विनाश कराये तो द्वापर युग के बात तो सतयुग आना चाहिए परन्तु वास्तव में तो द्वापर युग के बाद तो कलियुग आता है। तो स्पष्ट है कि कलियुग के अन्त में जबकि धर्म की अत्यन्त हानि होती है और मनुष्य मात्र आसुरी सम्प्रदाय के बन जाते हैं तभी परमत्मा शिव अवतरित होते हैं। पृष्ठ ८६

विष्णु कुमार- कुमारी क्या आप लोगों को अक्ल से कोई दुश्मनी है जो उसकी इतनी ज्यादा अवहेलना कर रही हो। अक्ल ही तो मनुष्यता की पहिचान है। यदि आप लोगों ने इस पहिचान को ही नष्ट कर दिया तो फिर तुम्हें क्या कहा जाय मनुष्य या पशु। तुम लोग युगो की आयु १२०० वर्ष मानती हो और यह भी कहती हो कि वर्तमान समय कलियुग का अन्तिम समय है। तुम्हारे कथानुसार तो कलियुग इस्वीं युग विक्रमी की आठवीं सदी से लगा। तब तो मुहम्मद राजा याने ईसा मसीही विक्रमादित्य आदि द्वापर युग के हुए और आदिशंकराचार्य महावीर गौतम बुद्धि त्रेता युग के हुए।

और इब्राहिम जरदुस्तादि सतयुग में हुये। क्या त्रेता और सतयुग में उत्पन्न शंकराचार्य महावीर गौतम बुद्ध इब्राहिम जरदुस्तादि के समय में केवल सत्य धर्म ही था चोरी व्यभिचार मांसाहार छल कपटादि कृत्य नहीं होते थे। कृष्ण कौरव पाण्डव आदि क्या हुये ही नहीं है यदि हुए है तो तुम्हारे हिसाब से किस-किस युग में हुए है स्पष्ट करो और तुम जिस गीता को यदा-कदा उद्धृत करती हो वह कब और किसने कही। तुमने यह स्वीकार है कि धर्म की हानि द्वापर युग से ही शुरू हो गई थी और यह भी कहती हो कि हमारे परमात्मा शिव ने अधर्म को इस लिये नहीं रोका की अधर्म को अभी रोक देने से सतयुग लग जायेगा। कृपया यह और बतलाओ कि सतयुग लग जाने से तुम्हारे परमात्मा का कौन सा नुक्सान हो जाता और अधर्म के रहने से उसे कौन सा लाभ हो रहा है। स्पष्ट करो। तुमने लिखा है कि कलियुग के अन्त में जब कि धर्म की अत्यंत हानि होती है- और मनुष्य मात्र आसुरी सम्प्रदाय के बन जाते हैं तभी परमपिता शिव अवतरित होते हैं। तुम्हारे इस कथन से तो यही सिद्ध होता है कि जब तक लेख राज द्वारा निर्मित ओम मण्डली नहीं बनी थी तब तक धर्म की अत्यंत हानि नहीं हुई जैसे ही ओम मण्डली बनी धर्म की अत्यंत हानि होनी शुरू हुई। क्योंकि ये लोगों को आसुरी सम्प्रदाय में लालच देकर सम्मिलित करने लगे और जिसे बहन कहते हैं उसी से सन्तान भी उत्पन्न करते हैं इस आसुरी क्रिया कलाप को देख कर लोगो ने धर्म की अत्यंत हानि की अनुभूति कर ओम मण्डली के कार्यालय में आग लगा दी और न्यायालय का दरवाजा खटखटाया परिणाम यह हुआ कि मण्डली वालों को हैदराबाद छोड़ कर करांची में शरण लेनी पड़ी। वहां से भी जब भाग कर भारत आये तब तुम्हारे शिव ने लेखराज के तन में प्रवेश कर उसे समझाने का प्रयत्न किया जब वह नहीं सुधरा तब शिव ने उसे इस दुनिया से ही भगा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैदराबाद में राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

सुभाष चन्द्र शास्त्री
गुरुकुल झज्जर (हरयाणा)

भाग्य नगरी हैदराबाद में ९,१०,९१, जनवरी ९७ को राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन उत्साह पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो गया। तीन दिन चला यह सम्मेलन आर्य जगत् के तपोधन मुर्धन्य संन्यासी श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज गुरुकुल झज्जर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। केशव स्मारक विद्यालय हैदराबाद के प्रांगण में ९ जनवरी को प्रातः ११ बजे यज्ञोपरान्त श्री ओमानन्द जी महाराज ने ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के पश्चात् उद्घाटन समारोह प्रारंभ हुआ। मंच पर स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द जी, मंत्री स्वामी सुमेधानन्द जी, उड़ीसा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी, स्वामी वरूणवेश जी, स्वामी चन्द्रदेव जी, आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी ओममुनि जी व अनेक संन्यासी महात्मा शोभायमान थे। मंच पर उपस्थित विद्वानों में डॉ. जयदेव जी गुरूकुल कांगड़ी, आचार्य हरिदेव जी गुरूकुल गौतम नगर दिल्ली, आचार्य धर्मपाल शास्त्री, मेरठ, प्रो. अनूपसिंह जी, श्री जगवीर सिंह एडव्होकेट, डॉ. ओमदत्त मेरठ, पं. वृजपाल 'कर्मठ', पं. सहदेव 'बेधड़क', पं. सत्यपाल 'सरल' पं. आशाराम जी व अनेक सम्मानित व्यक्ति उपस्थित थे।

सम्मेलन का प्रारंभ हैदराबाद की विदुषी बहिन संध्या वन्दन लक्ष्मी जी ने सस्वर वेदपाठ से किया। तत्पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद की ओर से मंच पर उपस्थित आर्य नेताओं व विद्वानों का सम्मान किया गया। सम्मेलन का उद्घाटन स्वामी अग्निवेश जी ने दीप प्रज्वलित करके किया। उद्घाटन समारोह में स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी ने सम्बोधित किया। अध्यक्षता स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने की। हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. टी.वी. नारायण जी ने विद्वानों व आर्य जनता का स्वागत व धन्यवाद किया। मंच संचालन सभा के यशस्वी मंत्री श्री प्रो. विठ्ठल राव जी ने किया।

विभिन्न सम्मेलन :-

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में अनेक सम्मेलन आयोजित किये गये। यथा वेद सम्मेलन, भ्रष्टाचार उन्मूलन सम्मेलन, कवि सम्मेलन, महिला सम्मेलन, संस्कृति रक्षा सम्मेलन व आर्य समाज एकता सम्मेलन। इन सम्मेलनों को सम्बोधित करने वाले विद्वानों में पू. स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी वरूणवेश जी, कै. देवरत्न आर्य, आचार्य हरिदेव जी, डॉ. जयदेव जी, जगवीर सिंह एडव्होकेट, प्रो. अनुप सिंह जी, डॉ. ओमदत्त, डॉ. राम निवास, गोपाल शरण 'विद्यार्थी', श्रीमती प्रभात शोभा 'पंडित' तमिल विद्वानों में श्री पोत्तरू वेंकटेश्वर राव, डॉ. हरगोपाल जी, श्री जयप्रकाश नारायण जी, कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री शशिकान्त जी व अन्य अनेक विद्वान थे। आर्य समाज के भजनोपदेशकों के कार्यक्रमों से सम्मेलन को प्रभावशाली बनाये रखा।

आकर्षक शोभायात्रा :-

१० जनवरी को अपरान्ह २ बजे केशव स्मारक विद्यालय के प्रांगण से विशाल शोभा यात्रा प्रारंभ हुई। स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी अग्निवेश जी व स्वामी सुमेधानन्द जी शोभायात्रा का नेतृत्व कर रहे थे। हजारों की संख्या में आर्यजन वैदिक धर्म की जय-जयकार करते हुए शहर के मुख्य बाजारों से निकले। शोभायात्रा में गुरूकुल झज्जर हरयाणा, गुरूकुल गौतम नगर दिल्ली व गुरूकुल आमसेना उड़ीसा के ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन अत्यंत दर्शनीय था। ब्रह्मचारियों के व्यायाम प्रदर्शन को देखने के लिये बड़ी संख्या में भीड़ उमड़ पड़ती थी। आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश, हरियाणा, उड़ीसा, राजस्थान व अनेक प्रान्तों से आये आर्यजन अपने हाथों बैनर व झण्डे लिये हुए थे। हैदराबाद के आर्य संस्थाओं के विद्यार्थी, बैण्ड पर अपने करतब दिखा रहे थे। छात्रों के हाथों में पट्टियां थी जिन पर शराब व भ्रष्टाचार के विरूद्ध नारे लिखे हुए थे। शोभायात्रा का समापन सम्मेलन स्थल पर ही हुआ।

इस तीन दिवसीय सम्मेलन में प्रतिदिन श्री स्वामी दीक्षानन्द जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ। गुरूकूल गौतम नगर 'दिल्ली' गुरूकूल आश्रम आमसेना (उड़ीसा) तथा कन्या गुरूकुल चोटीपुरा (मुरादाबादा) उ.प्र. की कन्याओं ने वेदपाठ किया।

हैदराबाद के गौरव पं. नरेन्द्र जी की स्मृति में आयोजित यह सम्मेलन अत्यंत प्रभावशाली व उत्साह पूर्वक रहा।

इस सम्मेलन से दक्षिण भारत के आर्यों में एक [illegible] स्फूर्ति पैदा हुई है। सम्मेलन की विशेष उपलब्धि थी। आर्य संन्यासियों आर्य नेताओं व आर्य विद्वानों का एक मंच पर संगठित होकर आर्य समाज के कार्य को गति देने हेतु संकल्पबद्ध होना बड़ी संख्या में आर्य संन्यासियों, आर्य विद्वानों व आर्य नेताओं को देखकर आर्य जनता अत्यंत उत्साहित थी। सर्वत्र यह चर्चा थी कि अब पुनः आर्य समाज का आन्दोलन अपना रंग दिखायेगा तथा सर्वत्र वैदिक धर्म की जय-जयकार होगी।

सम्मेलन में भोजन आवास इत्यादि की व्यवस्था बहुत सुन्दर थी। प्रत्येक व्यक्ति मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करता दिखाई दे रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरूकुल आश्रम आमसेना का 30 वां वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

गुरूकुल आश्रम आमसेना का ३० वां वार्षिक महोत्सव गत १४, १५, १६ फरवरी १९९८ को अत्यंत समारोह के साथ उल्लासमय वातावरण के साथ संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के जाने-माने विद्वान्, भजनोपदेश के एवं संन्यासी थे। जिनमें श्री डा. सोमदेवजी आचार्य, हरिदेवजी, स्वामी सर्वानन्द जी, श्री धर्मपाल जी शास्त्री, श्री बृजपाल शर्मा कर्मठ, श्री विजय सिंह विजय, श्री सियाराम निर्भय आदि प्रमुख थे। कार्यक्रम का प्रारंभ मुम्बई निवासी डॉ. सोमदेव जी के करकमलों से ओ३म् पताका उत्तोलन के साथ हुआ।

भव्य शोभायात्रा

दि. १४.२.९८ मध्यान्होत्तर ३ बजे खरियार रोड नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें हजारों संख्या में नर-नारी व सैकड़ों आर्यवीर सम्मिलित हुए। खरियार रोड नगर वासियों ने शोभायात्रा का जोरदार स्वागत किया और शर्बत, मिठाईयां बांटे। ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन बीच-बीच में बहुत आकर्षक रहा।

दीक्षान्त समारोह

१५ फरवरी को यज्ञोपरान्त प्रात: १० बजे दीक्षान्त समारोह श्री रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ, जिसमें गुरुकुल के चार नव स्नातकों का दीक्षान्त समारोह हुआ। गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली के आचार्य श्री आचार्य हरिदेव जी ने दीक्षान्त संस्कार करवाया। इस अवसर पर गुरुकुल के उपाचार्य श्री स्वामी व्रतानन्दजी सरस्वती, डॉ. सोमदेव जी, श्री धर्मपाल जी शास्त्री ने नवस्नातकों को आशीर्वाद दिया। गुरुकुल के आचार्य श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने महत्वपूर्ण उपदेश देकर नये स्नातकों को राष्ट्र के लिये जीवन अर्पित करने की प्रेरणा दी।

आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन

१५ फरवरी मध्यान्होत्तर ३ बजे गुरूकुल के ब्रह्मचारियों एवं कन्या गुरूकुल की ब्रह्मचारियों का व्यायाम प्रदर्शन श्री ब्र. कुञ्जदेव जी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ। इसके अध्यक्ष थे श्री कैलाश चन्द्र जी नाकड़ा एवं मुख्यातिथि श्री गुलाबचन्द जी बंसल। ब्रह्मचारियों का लाठी चालन, भाला प्रदर्शन, आसन भल्लखंभ में आसन, छाती पर पत्थर तोड़ना, चन्द्रहास व भाले से लोहा छड़ मोड़ना, नाड़ी रोकना, कार रोकना आदि बहुत आकर्षक रह वहां ब्रह्मचारिणियों का रस्सियों पर आसन व तलवार चालन बहुत आकर्षक रहा। लोगों ने मुक्त कंठ से सराहना की।

गुरूकुल सम्मेलन और अभिनन्दन समारोह

सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियो व कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारियों का व्याख्यान वाद-विवाद व अनेक आकर्षक कार्यक्रम हुए, वहां उपदेशक महाविद्यालय लाहौर के पुराने स्नातक ८० वर्षीय समाजसेवी श्री वेदव्रत जी वानप्रस्थी का अभिनन्दन समारोह हुआ। पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने वानप्रस्थी जी का परिचय दिया, उपस्थित विद्वानों गुरूकुल के कार्यकर्त्ताओं ने श्री वानप्रस्थी जी का माल्यार्पण कर स्वागत किया। इस अवसर पर आर्य कुसुम परीक्षा केन्द्र के संचालकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया गया। रात के अधिक समय होने पर भी श्री स्वामी सर्वानन्द जी श्री वृजपाल कर्मठ व कवितोपदेशक श्री सियाराम निर्भय का भजन व कविता सभी को बांधे रखा।

शुद्धि समारोह पूर्णाहुति

१६ फरवरी को यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं. विशिकेशन जी शास्त्री के आचार्यत्व में १० ईसाई परिवारों का शुद्धि समारोह संपन्न हुआ। विद्वानों ने व शुद्धि आन्दोलन के अग्रणी नेता श्री स्वामी धर्मानन्द जी महाराज ने हिन्दूधर्म की विशेषता बताई उपस्थित विद्वानों माण्यगण्य व्यक्तियों ने सभी को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर कुछ सज्जनों ने वानप्रस्थ दीक्षा ली इस प्रकार १२ बजे पूर्णाहुति में कर दी गई। पश्चात् हजारों लोगों ने ऋषिलंगर में प्रेम पूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। भोजन आदि की व्यवस्था गुरुकुल के उपाचार्य श्री स्वामी व्रतानन्दजी से सुन्दर ढंग से की।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का निर्वाचन संपन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ निर्वाचन डट. आर.एस. विश्वकर्मा (एडव्होकेट) की देखरेख में १८ जनवरी ९८ को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये।

अध्यक्ष - प्रो. कैलाशनाथ सिंह
मन्त्री - श्री सच्चिदानन्द गुप्त
कोषाध्यक्ष - श्री देवेन्द्र पाल वर्मा

गुरुकुल पाणिनिधाम तिलोरा का सहयोग करें

आचार्य वेदपाल जी की साधनास्थली तिलोरा अजमेर रहा है। इस समय यहां ५ विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इसका संचालन डॉ. धर्मवीर जी कर रहे हैं। गत दि. १८.१.९८ को दुध गरम करते समय हवा के तेज झोके से झोपड़ियों में आग लग गई, जिससे तख्त विस्तर पुस्तक आदि जलकर नष्ट हो गये। बाद में अग्नि शमन दल पहुंचने पर स्थिति पर काबू पा लिया। इसमें लगभग ३३ हजार की हानि हुई। इसके पुनर्निर्माण के लिए तत्काल ५० हजार रुपयों की आवश्यकता है। अत: विद्याप्रेमी धनीमानी सज्जनों से निवेदन है इस संकट के समय आश्रम को अधिकाधिक सहयोग भेजकर पुण्यलाभ अर्जन करें।

आचार्य वेदपाल सुनीथ स्मृति सभा

दि. ६ फरवरी १९९८ को ऋषि उद्यान अजमेर में आचार्य वेदपाल जी की प्रथम पुण्यतिथि पर स्मृति सभा का आयोजन किया गया। डॉ. सुनीथ ब्राह्मण ग्रन्थों के महान् विद्वान, त्यागी, तपस्वी व कर्मठ पुरूष थे। दुर्भाग्यवश गत वर्ष एक स्टेज से बोलते हुए उनका स्वर्गवास हो गया था। इस अवसर पर अनेक विचारकों ने अपने विचार रखे। पाणिनिधाम तिलोरा के आचार्य डॉ. धर्मवीर जी ने कहा पण्डित जी के ग्रन्थों पर शोध की महती आवश्यकता है उन्होंने आगे कहा आचार्य प्रवर की ग्रन्थों का सम्पादन उनकी साधना स्थली तिलोरा में हो रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आभार प्रदर्शन

जिन सज्जनों ने गुरुकुल के वार्षिक महोत्सव में अपनी सात्वि कमाई से श्रद्धापूर्वक सहयोग दिया, हम उनके अति आभारी हैं। ५१ रु. या इससे अधिक राशि देने वालों की सूची निम्न प्रकार से है-

खरियार रोड से प्राप्त दान -

1.	श्री गुरुनानक राईस मील,	एक बोरा चांवल
2.	श्री महावीर राईस मील,	एक बोरा चांवल
3.	श्री उजागर भाई,	101/-
4.	श्री लखमानिया ब्रदर्स,	201/-
5.	श्री सत्यम् मेडिकल स्टोर्स,	51/-
6.	डॉ. एन.एन. राय,	51/-
7.	श्री विष्णु प्रसाद अग्रवाल,	151/-
8.	श्री सत्यनारायण जी, खरियार रोड	आधा बोरा चांवल
9.	श्री शर्मा ड्रेसेस,	51/-
10.	श्री गोविन्द शर्मा जी,	101/-
11.	श्री पारस जी,	101/-
12.	श्री अनिल सोनी,	101/-
13.	श्री लक्ष्मी क्लाथ सेन्टर,	51/-
14.	श्री कोणार्क टी.वी. सेन्टर,	101/-
15.	श्री शर्मा क्लाथ सेन्टर,	201/-
16.	श्री प्रभुदयाल जी अग्रवाल,	100/-
17.	श्री आशीष मेडिकल स्टोर्स, खरियार रोड	51/-
18.	श्री दिलीप भाई जी,	251/-
19.	श्री सेवई रामजी,	101/-
20.	विचिल साहू जी,	101/-
21.	श्री खुशाल चन्द्र तेजमल जी,	51/-
22.	श्री जीत आटोमोबाईल्स,	101/-
23.	श्री पी.सी. महाराणा जी,	51/-
24.	श्री चरणसिंह अमरजीत सिंह जी,	251/-
25.	श्री जय किसान बीज भंडार,	51/-
26.	श्री इम्दाद अली, पेट्रोल पम्प,	101/-
27.	श्री सोनिया गारमेन्टस,	101/-
28.	श्री के.एल. राईस मील,	2 बोरा धान
29.	श्री छोटू सोनी,	101/-
30.	श्री नरेश अग्रवाल जी,	2 बोरा चुड़ा
31.	श्री संगम इलेक्ट्रिकल्स,	50/-
32.	श्री गौतम चन्द्र मालू जी कुशल फैब्रिक्स,	101/-
33.	श्री एन. कुमार एण्ड कंपनी,	151/-
34.	श्री पैराडाइज गारमेन्टस,	51/-
35.	श्री जगन्नाथ पुस्टि, नवापारा	51/-
36.	श्री सलूजा सायकल स्टोर्स,	101/-
37.	श्री सुशील अरोरा जी,	101/-
38.	श्री सोनी ज्वेलर्स,	101/-
39.	श्री बजरंग रूईया जी,	101/-
40.	श्री महालक्ष्मी राईस मील,	1 बोरा चांवल
41.	श्री संतोष सिंह जी,	101/-
42.	श्री पुरूषोत्तम जी शर्मा,	101/-
43.	श्री पन्नालाल नरेशकुमार,	51/-
44.	श्री जय भगवान जी अग्रवाल,	51/-
45.	श्री रंजीत सायकल स्टोर्स,	1 बोरा चांवल
46.	श्री डा. जयलाल चन्द्राकर जी,	51/-
47.	श्री शर्मा मेडिकल स्टोर,	251/-
48.	स्टेट बैंक (समस्त अधिकारी)	307/-
49.	श्री राजेश गोयल,	51/-
50.	श्री प्रभास जैन जी,	100/-
51.	श्री गांधी लाल जैन,	151/-
52.	श्री पी.के. पात्र, (पुलिस इंस्पेक्टर),	101/-
53.	श्री आर.वी. प्रधान,	201/-
54.	श्री एस.एन. सिंह,	51/-
55.	श्री कुशाल भाई,	50 किलो चांवल
56.	श्री प्रवीण भाई,	50 किलो चांवल
57.	श्री जय प्रिन्टर्स,	51/-
58.	श्री गौरी शंकर व्यास,	51/-
59.	श्री हरीश बतरा,	301/-
60.	श्री गणेश ठुमरे,	50/-
61.	श्री प्रमोद जनरल स्टोर्स,	51/-
62.	अरिहन्त क्लाथ सेन्टर,	101/-
63.	साहू मेडिकल स्टोर्स,	101/-
64.	चतर सिंह,	3 पाकेट आलू
65.	श्री धन श्री,	1 पाकेट आलू
66.	डागा राईस मिल	1 बोरा चावल

बाहर से वार्षिक उत्सव हेतु प्राप्त दान -

1.	श्री नवल किशोर अग्रवाल जी, सिविल लाईन (दिल्ली)	1100/-
2.	श्री मातुराम, तेजराम अग्रवाल, कांटाबाजी	151/-
3.	मातुराम, कमल कुमार, कांटाबाजी	151/-
4.	श्री मातुराम, सत्यवीर लाल अग्रवाल, कांटाबाजी	251/-
5.	श्री मंगतराम, बनवारीराम, कोरबा	5001/-
6.	वेदमुनि, श्री वानप्रस्थी, दमउधारा	501/-
7.	श्री अशोक कुमार शास्त्री, महर्षि दयानंद विद्या पीठ, दमउधारा	501/-
8.	श्री भरत कुमार आर्य, केन्द्रीय विद्यालय सी.सी.आई., अकलतरा	251/-
9.	श्री मंत्री जी, आर्य समाज भीमगंज मंडी कोटा	101/-
10.	श्री जगदीश सिंह आर्य समाज प्रधान आर्य समाज, जोधपुर	100/-
11.	श्री डा. राम प्रसाद मल्होत्रा, मेन बाजार, थानेसर, कुरूक्षेत्र	100/-
12.	श्री आर्य समाज शिवगंज, महर्षि दयानंद मार्ग, शिवगंज	100/-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

13. श्री बी.डी. अग्रवाल, मकुम रोड, [illegible] 100/-
14. श्री चुन्नीलाल रुपरू भाई, गुजरात 151/-
15. श्री सदानन्द साहू, आमसेना, नवापारा 101/-
16. श्री झाऊलाल जी शर्मा, मुम्बई 501/-
17. श्री मंत्री जी, आर्य समाज पोरबन्दर, गुजरात 501/-
18. श्री हिन्दु महासभा, साकेत जनपद, अयोध्या (उ.प्र.) 100/-
19. श्री फकीर चन्द्र आर्य, नगर आर्य समाज, गुलाब सागर, जोधपुर 100/-
20. श्री हरिगोकुल लाहौर वाले, 66/72 खारी बावली, दिल्ली 100/-
21. श्री स्वामी शान्तानंद सरस्वती, योगधाम, आर्यनगर, ज्वालापुर 100/-
22. श्री प्रधान आर्य समाज, भीनमाल जनपद जालोर 100/-
23. श्री डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी, सरस्वती विहार नई दिल्ली 100/-
24. श्री कृष्ण साधक जी, ए/12, तलवन्डी, कोटा 200/-
25. श्री माता सुपर्णामति जी, आर्य समाज कोटली रिहाड़ी 750/-
26. श्री ठाकुर भ्राता 106 लोअर बाजार शिमला 150/-
27. श्री कु. हेमादल बेहरा, बलांगीर 51/-
28. श्री गुप्त दान प्राप्त 51/-
29. श्री खुशहाल चन्द्र जी आर्य, 180 महात्मा गांधी रोड 501/-
30. श्री दीनदयाल जी गुप्त, 13/4 सैय्यद शाली लेन कलकत्ता 1100/-
31. श्री मंत्री जी, आर्य समाज मंदिर दयानंद विहार, नई दिल्ली 501/-
32. श्री मोहिन्दर पाल आर्य, मंत्री आर्य समाज, लड़वा 500/-
33. श्री मंत्री जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, आसफ अली रोड, नई दिल्ली 500/-
34. श्री राम निरंजन आर्य, मंत्री आर्य समाज नारायण अम्बाला 500/-
35. विशम्बर नाथ अरोरा, मंत्री आर्य समाज, कृष्ण नगर, दिल्ली 500/-
36. श्रीमती राजसूरी जी, आर्य समाज सेक्टर-7 वी चण्डीगढ़ 200/-
37. श्री सुरेश चन्द्र जी शर्मा, से.-2, शंकर नगर, रायपुर 100/-
38. श्री ओमप्रकाश जी, आर्य समाज सोहना, गुड़गांव 151/-
39. श्री अमरनाथ जी, गणेश सेवाश्रम संघ, कानपुर 101/-
40. श्री मंत्री जी, भारतीय शिक्षण समिति, जयपुर 100/-
41. श्री रणजीत मुनि जी, योगधाम आर्य नगर, ज्वालापुर 100/-
42. श्री त्रिलोक नाथ जी, सुपेला भिलाई नगर 1200/-
43. श्री त्रिलोक नाथ जी, सुपेला भिलाई 1300/-
44. श्री चड्डा परिवार, भिलाई नगर 250/-
45. श्री श्याम चौधरी, गांधी बाग, नागपुर 1270/-
46. श्री मंत्री जी, आर्य समाज जरीपटका, नागपुर 100/-
47. श्री निखिल नागिया, नागपुर 100/-
48. श्रीमती प्रभावती मुना, बान्द्रा पं. मुम्बई 500/-
49. श्री आर्य समाज सान्ताकुंज, मुम्बई 5000/-
50. श्री हंसराज भाई पटेल, अंधेरी पं. मुम्बई 1101/-
51. एम. शिवाजी, भवानीपटना, उड़ीसा 51/-
52. श्री धर्मपाल जी खण्डूजा, भिलाई नगर 500/-
53. श्री एस.एम. सिंह जी, भिलाई नगर 500/-
54. श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, भिलाई नगर 251/-
55. श्री मोहन लाल गुप्ता जी, भिलाई नगर 201/-
56. श्री महेन्द्रनाथ कामरा, चन्द्रनगर, आलमबाग, लखनऊ 101/-
57. श्री नन्द किशोर शर्मा जी, कोरबा 200/-
58. श्री जयश्री दौलई,, नवापारा 111/-
59. श्री भास्कर जेना,, नवापारा 51/-
60. श्री आर्य समाज, राऊरकेला 421/-
61. श्री लक्ष्मी प्रसाद गुप्ता, कोरबा 500/-
62. श्री कैलाशचन्द्र जी नाकड़ा, आर्य समाज दमोह 101/-
63. श्री आर्य समाज, खण्डवा 501/-
65. श्रीमती विनोदिनी पण्डा, ब्रह्मपुर 60/-
66. रामभज मदाव जी, राजागार्डन, नई दिल्ली 2100/-
67. श्री मुकुन्द मोहन, वानप्रस्थी जी 100/-
68. श्रीमती माता इन्द्रावती जी, गाजियाबाद 400/-
69. श्री राजेश मित्तल, गाजियाबाद 300/-
70. श्रीमती डॉ. यशोधरा कसंल जी, ईस्ट कैलाश, दिल्ली 501/-
71. श्रीमती पप्पुकपूर की माता जी, गाजियाबाद 201/-
72. श्रीमती विमला लिफाफेवाले, गाजियाबाद 200/-
73. श्री वेदप्रकाश कपिल, आर्य समाज सेक्टर-3, दिल्ली 500/-
74. आर्य समाज; मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली 250/-
75. श्री आर्य समाज, बंगा, नवांशहर (पंजाब) 200/-
76. श्री आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार 100/-
77. श्री शंकर लाल पोद्दार 101/-
78. श्री देवीदास आर्य, केन्द्रिय आर्य सभा, कानपुर 250/-
79. श्री आर्य समाज नागौर (राजस्थान) 101/-
80. आर्य समाज छोटी सारड़ी, चित्तौड़गढ़, राजस्थान 51/-
81. श्री खक्कीराम आर्य, आर्य समाज पहाड़ी भरतपुर 200/-
82. श्री जगबन्धु बेहेरा, मु.पो. कटरा, चन्द्रपुर, मयूरगंज 100/-
83. श्री प्रमोद कुमार आर्य, आर्य समाज घरौंडा 250/-
84. श्रीमती उषादेवी जी, मुबीरका विहार, नई दिल्ली 100/-
85. केशव दास आर्य, जगाधारी वर्कशाप, विष्णुनगर 100/-
86. श्री सुनीतिकुमार गुप्त, सुभाष गुप्ता, जनकपुरी दिल्ली 250/-
87. श्री आर्य समाज मन्दिर, मदनगीर, नई दिल्ली 200/-
88. श्री चैन लाल आर्य जी, आर्य समाज कटनी 200/-
89. श्री सत्यनारायण जी गुप्त, आर्य समाज गोरखपुर 151/-
90. श्री पापैया राजू जी, कान्डापाली विजयानगरम् 150/-
91. श्रीमती रतनदेवी बंशीधर, शाहीबाग, अहमदाबाद 101/-
92. श्री आर्य समाज राजी की मंडी, आगरा 100/-
93. श्री कृष्ण गोपाल मेहरोत्रा, पीलीभित 100/-
94. श्री जगदीश सिंह आर्य, आर्य समाज पुंजला, जोधपुर 50/-
95. श्री मंत्री जी आर्य समाज, हीराकुद 202/-
96. श्री गुलाबचन्द जी बंसल, भिलाई नगर 1001/-
97. श्री विद्या सतपथी, तोषगांव 50 किलो चांवल
98. श्री डॉ. महेश्वर सतपथी, 1000/-
99. भाई परमानन्द शिक्षा समिति अयोध्या 100/-
100. श्री सत्यवान सिंह ह्यपुर 50/-
101. आर्य समाज स्टेशन रोड, फतेहनगर 200/-
102. श्री राजाराम जी तिवारी आ.स. छिन्दवाड़ा 200/-
103. श्री वैद्य के.पी. गुप्त जी, देवनगर, नई दिल्ली 200/-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Kulabhoomi March '98– Registration No. 0-59
Gurukul Ashram Amsena, Nuapada Pin - 766 109 Phone : (06678) 234
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरूकुल आश्रम आमसेना द्वारा निर्मित शीतकाल में सेवनीय आशु लाभकारी औषधियाँ

च्यवनप्राश (स्पेशल)

आजकल का दूषित वातावरण एवं दूषित खानपान से मनुष्यों के शरीर कमजोर एवं रोगग्रस्त हो रहे हैं, फलस्वरूप असमय में ही बुढ़ापा आ जाता है। ज्यादातर लोग दवाई के सहारे ही शरीर चला रहे हैं। इसका कारण है पौष्टिक भोजन का अभाव एवं निरोग रखने वाली दवाईयों का सेवन न करना। हमारे महर्षियों ने ऐसे अनेक दवाईयों का अविष्कार किया है, जिन्हें निरन्तर सेवन किया जाये तो मनुष्य निरोग रहकर लम्बी आयु प्राप्त कर सकता है। इन्हें रसायन कहते हैं। इनमें मुख्य रूप से च्यवनप्राश का नाम लिया जा सकता है। इसका प्रमुख घटक आंवला है जो विटामिन ''सी'' से भरपुर है अकेले इसे ही सेवन किया जाये तो यह शरीर के विषाणुओं को नष्टकर शरीर को स्वस्थ रखता है। च्यवनप्राश में इसके साथ-साथ शुद्ध घी, शहद, अष्टवर्ग, दशमूलादि ४० दवाइयों के काढे व इलायची, दालचीनी, तेजपत्ता, नागकेशर, वंशलोचन, पीपल आदि का चूर्ण एवं केशर, अभ्रक प्रवाल, शंख आदि भस्में मिलाये जाने से यह च्यवनप्राश अनेक गुणों से भरपुर हो जाता है।

वैसे तो बाजार में अनेक कम्पनियों के च्यवनप्राश मिलते हैं परन्तु गुरुकुल का च्यवनप्राश शास्त्रीय विधि सें संपूर्ण औषधियाँ डालकर योग्य वैद्यों के देखरेख में जनता जनार्दन सेवा की भावना से बनाया जाता है। अतः मूल्य भी कम रखा गया है।

प्लेनफोर्ट

विशेष विधि से निर्मित यह आयुर्वेदिक कैफ्सुल शरीर की सुस्ती, कमजोरी, नसों में शिथिलता, अनुत्साह, काम करने की अनिच्छा खून की कमी आदि में तुरन्त काम करता है। एक बार सेवनकर अवश्य लाभ उठायें।

सभी प्रकार की कमजोरियों के लिये

वीर्यवद्धनीवटी एवं धातु पौष्टिक चूर्ण

आजकल वीर्य का पतलापन कमजोरी, स्वप्नदोष जैसे रोग आम हो गये हैं। इससे युवा अवस्था में जोश एवं उत्साह भी समाप्त हो जाते हैं। अतः इन रोगों को दूरकर शक्ति प्राप्त करने के लिये गुरुकुल द्वारा निर्मित वीर्यवद्धनी वटी एवं धातु पौष्टिक चूर्ण का सेवन कर लाभ उठावें। जो धनीमानी लोग हैं उन्हें शीतकाल में च्यवनप्राश और इन दवाओं के साथ **वसन्त कुसमाकर रस** का भी सेवन करना चाहिए। इससे खुलकर भूख लगती है। कमजोरी शीघ्र दूर होकर शरीर सब प्रकार रोगों से रहित होकर तेज से भर जाता है।

बलदा

अंगूर के रस तैयार यह टॉनिक अत्यंत सुमधुर पुष्टिकारक, हृदय को बल देने वाला है। मस्तिष्क का कार्य रखे बालों के लिये यह अत्यंत उपयोगी है। भूख खूलकर लगती है, शरीर की निर्बलता दूर कर अतीव बल देने वाली है।

सेवा में,

3012. Sri Paustakalayadhykha Ji.
Gurukul Kandgi, Viswa Vidyalaya
Haridwar (U.P.)

ग्राहक संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक पत्र

कुलभूमि

May 98

Ukshun 3/1.98

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

ओ३म्

महान देशभक्त, स्वाभिमानी, देश, धर्म, जाति के लिये सदैव संघर्षरत श्री महाराणा प्रताप, जिन्होंने राजमहल के सुखों को त्यागकर जंगल-जंगल भटके, घास की रोटियां खाई परन्तु यवनों से कभी समझौता नहीं किया। मरते दम तक वे अपनी प्यारी मातृभूमि की आजादी के लिये बेचैन रहे परन्तु उनका सपना पूरा न हो सका। उनकी जयन्ती ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया २८ मई को मनाई जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन में सहयोग दें

साहित्य के द्वारा ही स्थायी प्रचार हो सकता है इसी उद्देश्य को लेकर गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से उड़ीया भाषा में पांच दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। इनमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भव्य भूमिका, संस्कार विधि जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है, परन्तु अब कुछ समय से सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भव्य भूमिका समाप्त हो चुके हैं, जबकि इनकी मांग निरन्तर बनी हुई है। अकेले सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन पर ही लगभग डेढ लाख रुपये खर्च होगा। गुरुकुल का सामर्थ्य एक बार इतनी राशि लगाने का नहीं है, अत: वैदिक धर्म प्रेमी सज्जन इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग दे सकें तो महर्षि की यह अमर ग्रन्थ प्रकाशित होकर अल्प मूल्य में स्वाध्यायशील जनता को उपलब्ध हो सकेगे। आशा है ऋषि भक्त सज्जन इस महत्व पूर्ण कार्य में सहयोग देकर पुण्य के भागी बने।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

साहित्य वितरण में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सहयोग करें

छोटे-छोटे ट्रेक्ट एवं विज्ञापनों के माध्यम से अच्छा प्रचार हो सकता है। साहित्य प्रचार का सबसे अच्छा माध्यम है, इसलिये सार्वदेशिक सभा ने यह प्रचार अभियान प्रारंभ किया है, इसमें अच्छी सफलता भी मिल रही है। हमारे निवेदन पर अनेक आर्य समाज व व्यक्तिगत रुप से अनेक सज्जनों ने इन्हें मंगाकर बाटा है। अभी निम्न विज्ञापन व पुस्तके उपलब्ध हैं।

१. मद्यनिषेध	४०) सैकड़ा
२. अण्डों से मौत	४०) -,,-
३. वैदिक धर्म संक्षिप्त परिचय	४०) -,,-
४. ईश्वर भक्ति क्यों और कैसे ?	४०) -,,-
५. अण्डे मांस से हानियां (हानियां)	४०) -,,-

रु. सैकड़ा भेजा जा रहा है। इसी प्रकार निम्न पुस्तकें भी उपलब्ध है। आशा है आप इन विज्ञापनों व पुस्तकों को मंगाकर अधिक से अधिक बांटकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहयोग देवें।

१. ईश्वर कहां है	४.०० रु.
२. शान्ति का मार्ग ईश्वर भक्ति	३.०० रु.
३. सच्चाधर्म	३.०० रु.
४. वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी	८.०० रु.

प्रचारार्थ ये सभी पुस्तकें भारी रियायत में दी जा रही है। २५ या इससे अधिक मंगाने पर आधी मूल्य में प्राप्त करें।

पुस्तक व विज्ञापन प्राप्ति स्थान
गुरुकुल आश्रम आमसेना
जि.- नवापारा (उड़ीसा) ७६६१०९

गुरुकुल में अपना जन्म दिवस मनाकर एक पन्थ दो काज को सार्थक करें

शुभ कामनाओं, अच्छे वचनों एवं आशीर्वाद से शान्ति मिलकर आयु बढ़ती है। ऐसा पूर्वजों का कथन है। सात्विक एवं पवित्र लोगों का आशीर्वाद अधिक फलदायी है। अत: गुरुकुल के पवित्र ब्रह्मचारियों का एवं कन्या गुरुकुल की छोटी-छोटी सात्विक कन्याओं का आशीर्वाद लेने के लिये अपना जन्म दिवस गुरुकुल में मनायें। तथा उस दिन का भोजन ब्रह्मचारियों व कन्याओं को खिलाकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें। कन्या गुरुकुल में एक समय मिष्टान्न युक्त भोजन बनाने पर १०००/- रु. तथा गुरुकुल में १५००/- रु. व्यय आता है। परन्तु यदि आप ५००० या १०,००० रुपये की राशि भेजकर उसकी स्थिरनिधि जन्मदिवस के लिये स्थिर कर दे तो प्रतिवर्ष आपके जन्मदिवस पर प्रात:काल यज्ञ एवं मध्यान्ह भोजन आपकी ओर से बनाया जायेगा। आपको आशीर्वाद दिया जायेगा। इस योजना से प्रतिवर्ष आपका जन्मदिवस सात्विकता पूर्वक मनाया जाता रहेगा तथा ब्रह्मचारियों को आपकी ओर से भोजन मिल जायेगा, गुरुकुल की सहायता हो जायेगी। यही है एक पन्थ दो काज।

''सतांमतं नातिक्रामेत'' मनुष्य अल्पज्ञ है अत: सब बातों को नहीं जान सकता। अत: अपने बड़े बूढ़े अनुभवी विद्वानों की बातों को श्रद्धापूर्वक मानकर चलने से कोई कष्ट नहीं होता इसलिये अनुभवी सत्पुरुषों के सिद्धांतों के विरूद्ध आचरण न करें।

अपरीक्ष्यकारिणं श्री परित्यजति

अर्थात् बिना सोच समझकर काम करने वाले व्यक्ति को सफलता त्याग देती है। जो व्यक्ति बिना सोचे समझे केवल लोभ या स्वार्थ के अधीन होकर कार्य करते हैं और उद्योग से लोगों को केवल कार्य तत्परतामात्र दिखाना चाहते हैं वह निश्चय ही लक्ष्मी से वंचित हो जाते हैं, अत: सोच समझकर ही कार्य करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा
का मासिक मुखपत्र

वर्ष - २०
अंक - ५
माह - मई १९९८
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,०९९
विक्रमी संवत् - २०५५
दयानन्दाब्द - १७४

प्रतिष्ठाता :
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक :
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक :
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक :
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता :
गुरुकुल आश्रम आमसेना
व्हाया - खरियार रोड
जिला - नवापारा (उड़ीसा)
पिन - ७६६ १०९
फोन : (०६६७८) २२३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-
आजीवन - ३००/-
एक प्रति - २.५०/-

सम्पादकीय...

प्राचीन पद्धति को अपनायें

प्रिय पाठकगण ! मैंने पिछले कुछ अंकों में अपने विचार रखते हुए लिखा था कि हमें पीछे की ओर लौटना है । हमारी प्राचीन चीजें आत्मा, बुद्धि और शरीर तीनों को ही स्वस्थ एवं बलवान बनाने वाली थी । हमारे पूर्वज किसी भी नई वस्तु के निर्माण से पहले उसका शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है, इतना ही नहीं देखते थे किन्तु उसके मन एवं आत्मा पर पड़े प्रभाव को भी देखते थे । आजकल चाहे खाने-पीने की वस्तु बनाई जा रही हो या पहनने के वस्त्र हो अथवा शरीर को निरोग रखने वाली दवाई बनाई जाती हो, उसकी परीक्षा शरीर पर पड़े प्रभाव तक ही देखते हैं, मन और आत्मा पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है उसकी परीक्षा ये लोग न कर सकते हैं न ही करते हैं । शरीर पर भी उसके पूरे प्रभाव को नहीं जान पाते, उदाहरण के लिये वैज्ञानिक कही जाने वाली अधिकतर ऐलोपैथिक औषधियाँ प्रतिक्रिया (रियेक्शन) करती हैं तामसिक वस्तुओं द्वारा निर्मित होने से ये मन एवं आत्मा को भी दूषित करती है । ईधर ये लोग पारे को स्वास्थ्य के लिये हानिकारक एवं विष मानते हैं । जबकि आयुर्वेद में पारे का अनेक दवाईयों में प्रयोग होता है । जितने भी रस हैं उन सबमें पारा पड़ता है और ये सब लाभ भी करते हैं । विधिपूर्वक बने इन रसों से किसी को नुकसान नहीं होता, उदाहरण के लिये आमवात एवं ज्वर में पीड़ित एक रोगी को डाक्टर ने इंजेक्शन दिया अगले दिन उस रोगी को एलव्युमीनयूरिया हो गया, उसने इंजेक्शन देना बंद कर दिया और उस रोगी को आयुर्वेदिक चिकित्सा शुरू की और उसे स्वर्णभूपति रस दिया गया, इसमें सोना और पारा दोनो ही होते हैं । एक हफ्ते के पीछे एलव्युमीनयूरिया तो चला ही गया, आमवात भी ठीक हो गया । ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जिससे स्पष्ट हो जाता है कि हमारी प्राचीन पद्धति ही वैज्ञानिक एवं सर्वतोलाभप्रद है । गोबर कुड़े आदि से बना हुआ खाद जहां भूमि को स्थायी रूप से उपजाऊ करता है वहां फसल में रोग भी कम पैदा करता है, जबकि विदेशी खाद तत्कालीन लाभ दिखाकर भूमि की ऊर्वरा शक्ति को कम करता है और फसल में नये-नये रोगों को भी पैदा करता है इसे सब जानते हैं । आवश्यकता है इन बातों को ठीक से अनुभव करने की तथा श्रद्धा विश्वास करके अपने वैदिक संस्कृति को अपनाने की । आशा है स्वास्थ्य लाभ लेने के इच्छुक सज्जन इस ओर ध्यान देंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेता कैसा हो ?

त्वं सोम ऋतुभिः सुकृतुभूस्त्व दक्षैः सुदक्षो विश्वेदाः ।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा धुम्नेभि र्धुमन्यभवो नृचक्षः ॥
ऋग्वेद १/९१/२

हे सौम्य गुणयुक्त (नेता) आप कर्मवीरों में उत्तम कर्मवीर, बुद्धि निपुणों में भी श्रेष्ठ बुद्धि के स्वामी, सब विद्याओं से विभूषित हो, तभी आप महत्वपूर्ण होने से वर्षणीय उत्तम सुखों की वर्षा करने वाले और कीर्तिमानों में प्रशंसित कीर्ति वाले मनुष्यो के लिए दर्शनीय होतें हो । इसलिये इन्हीं गुणों का आप अनुसरण करों ।

यह संसार नेताओं के पीछे चलता है, एक सत्तात्मक अथवा प्रजातन्त्रात्मक राज्य क्यों न हो सब में नेता ही जनता को पीछे चलाते हैं । महाभारत में कहा है ''महाजनो येन गतः स पन्था'' । संसार नेताओं के पीछे चलता है चाहे कितनी भी स्वतंत्रता की तान तोड़ी जावे नेता चाहे संसार को डूबो दे और चाहे तो तार दे परन्तु लोग चलेगें नेताओं के पीछे ही । जन समुदाय को बार-बार समझाना व्यर्थ है कि वे व्यक्तियों के पीछे न चलें । उनके विचारों में, मन में यह स्थिर करना कठिन है कि कपटी मक्कार नेता (मार्गदर्शक) उनका डूबो सकता है । जिसे लाठी के बिना चलना नहीं आता उन्हें यह समझाने का प्रयत्न व्यर्थ है कि कमजोर लाठी टूटकर घायल भी करा सकती है । जन-समूह का कर्त्तव्य है कि किसी व्यक्ति विशेष के पीछे न चले क्योंकि उनमें निर्बलताऐं हो सकती हैं । परमात्मा का उपदेश नेताओं के लिए है ।

नेता कौन बन सकता है वेद ने इस पर कुछ गुणों का निर्देश किया है नेता में सौम्यता अवश्य होनी चाहिये, सरल स्वभाव एवं विपत्तियों को प्रसन्नता पूर्वक सहने का गुण होना अत्यावश्यक है । ऐसे व्यक्ति ही को नेता बनने का साहस करना चाहिये ।

लोक संग्रह का कार्य वही कर सकता है जो कर्मवीर हो और कर्महीन व्यक्तियों को कर्मशील बनाने का कर्त्तव्य भी नेता का होता है । अकर्मण्यता के दासों का नेता कुछ भी नहीं कर सकता । नेता का धर्म है कि वह कर्मवीरों में भी उत्तम कर्मवीर होवें, कर्म भी बुद्धि पूर्वक होना चाहिये । कृष्णजी कहते हैं नेता वही है जो कर्म, सकर्म और विकर्म के भेद को जानता हो । जैसे मुक्ति अनेक साधनों के पश्चात् मिलती है इस प्रकार नेता भी आयु के अधिकांश समय को स्वच्छता में लगाने से ही अग्रणी होता है । सभी विद्याओं के सार को जानना व ज्ञाता होना भी आवश्यक है । विद्या और तप के द्वारा आत्मा की शुद्धि होती है आत्मा के शुद्ध होने से मनुष्य परोपकार वृत्ति में मग्न होकर कर्मफल की आकांक्षा से मुक्त हो जाता है । ज्ञान, कर्म का मन्तव्य सत्यज्ञान है । सत्यज्ञान होने से निष्काम भावना उत्पन्न होती है । जब नेता के कर्मफल की आकांक्षा समाप्त हो जाती है तब जनसाधारण पर सुखों की वृष्टि होती है । नेता वही सच्चा है जो परोपकार का काम करके थक न जाय । लौकैष्णा से मुक्त होकर ही नेता जनता को अपने पीछे चला सकता है, कोई निन्दा करे, अथवा कोई स्तुति करे उसका लक्ष्य है कि वह सदा सेवा करता रहे । लौकैष्णा से मुक्त तो रहना चाहिये परन्तु कीर्ति को वह नहीं रोक सकता । नेता को कीर्ति के पीछे नहीं भागना चाहिये । यदि वह कीर्ति की परवाह नहीं करता तो कीर्ति उसके पीछे भागती है । यह प्रशंसित कीर्ति ही नेता के काम में सहायक सिद्ध होती है ।

- *सब दानों में विद्यादान श्रेष्ठ है क्योंकि अज्ञान एवं भ्रम मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं विद्या इन दोनों को दूर करती है ।*
- *सदा ईश्वर और मृत्यु को याद्र रखो । ईश्वर हमारा साथ छोड़ता नहीं, परन्तु संसार की किसी भी वस्तु को मृत्यु साथ नहीं लेने देती है ।*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद अदृष्टवाद अथवा अपूर्ववाद

ले. स्व. स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती

वेद का सच्चा अर्थ जानने में बाधक दूसरा वाद नवीन मीमांसकों का अदृष्टवाद अथवा अपूर्त्ववाद है । वेदवाणी की महिमा गान करते हुए पतञ्जलि महाराज ने कहा है -

एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके कामुधुग्भवति ।

अर्थात् - वेदवाणी का एक शब्द भी ठीक जानकर और उसे भली प्रकार प्रयोग में ले आवें तो वह कामधेनु है । इन मीमांसकों ने इसमें से सुप्रयुक्तः यह कड़ी उड़ा दी है सभ्यग्ज्ञानः का अर्थ ये करते हैं सम्गुचारितः इसीलिए इन्होंने यज्ञों का खुब विध्वंस किया और उसके साथ ही वेद का भी खुब विध्वंस किया । यज्ञ प्रक्रिया का मूल तत्व जानने के लिए हमें दो शब्दों को जानना होगा ।

तेज एव श्रद्धा सत्यमाज्यम् ।
आहुयत्यैव सत्यं श्रद्धायाम् ॥

(शत्. ११.२.४.१)

अब इन मीमांसकों के कहे अनुसार उदात्तानुदात्त स्वरित का ठीक विचार करके सम्यक् मन्त्रोचारण पूर्वक घृत अग्नि में डाल दिया जावे तो बस यज्ञ का पूरा-पूरा फल मिल जाएगा क्योंकि इस कर्म से एक में एक अदृष्ट अथवा अपूर्व पैदा होता है, फिर उस क्रियाकलाप का प्रत्यक्ष फल उस यज्ञ से चाहे बिल्कुल विपरीत क्यों न हो, किन्तु अदृष्ट का जादू सब विघ्नों को पार करके मनुष्य को इष्ट सिद्धि तक पहुँचा देता है । यह अदृष्टवाद ही समस्त अन्धविश्वासों का प्राण है । भारत का सारा अधः पतन इसकी कृपा से हुआ ।

शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अग्नि प्रतीक है । श्रद्धा उसका प्रत्यानीय है, प्रतीक प्रत्यक्ष है, प्रत्यायनीय अदृष्ट है, अर्थात् अग्निहोत्र में जब अग्नि जलाकर उसमें घृत की आहुति करते हैं तो इस स्थुल क्रिया के पीछे श्रद्धा में सत्य की आहुति यह सूक्ष्म भावना करते हैं तो इस स्थूल क्रिया के पीछे श्रद्धा में सत्य की आहुति यह सूक्ष्म भावना छिपी है यह अदृष्ट है इसको जानकर जीवन में आचरण करने से मनुष्य का कल्याण होता है । किन्तु इसके विपरीत यह मध्यकालीन मांसल प्रज्ञ मीमांसक लोग विधि पूर्वक मन्त्रोचारण द्वारा अग्नि में घृत डालते ही यज्ञ पूरा हो गया और उसी समय यजमान के परलोक बैंक में अदृष्ट का चैक जमा हो गया । यहां सम्यग्ज्ञान के पश्चात् सुप्रयुक्तः का कुछ काम नहीं बस सम्यगुचारितः से काम पूरा हो गया । मीमांसकों के अदृष्ट का प्रतीक मात्र से संबंध है । प्रत्यायनीय से कुछ नहीं इसलिए शतपथ ब्राह्मणादि समस्त ग्रन्थों के भाष्य उपहसनीय दिखते हैं ।

वर्तमान युग के एक दृष्टान्त से यह बात स्पष्ट हो जायेगी ।

कम्युनिष्ट झण्डे पर हंसिया और हथौड़े का चित्र बना है । यह हंसिया और हथौड़ा का प्रतीक है । हंसिया का प्रत्यानीय है किसान और हथौड़े का प्रत्यायनीय है मजदूर ।

अब यदि कहा जाय की हंसिया हथौड़े की रक्षा करो । हंसिया हथौड़े के अपमान से राष्ट्र का नाश हो जाता है तो इसका अर्थ हुआ कि राष्ट्र के किसान मजदूरों की रक्षा करो इनके अपमान से राष्ट्र का नाश हो जाता है । तब तो बिल्कुल ठीक है परन्तु यह न समझ कर कोई मनुष्य हथौड़े को नमस्कार करके फूल चढ़ाने लगे, तो उसे तो कुछ भी न मिलेगा और यदि हथौड़े को पैर से लात मारे तो थोड़ा सा पैर के तले में दर्द होकर रह जाएगा, और तो इस अपमान का कुछ फल न होगा ।

इस प्रकार हंसिया हथौड़े का, अदृष्ट किसान और मजदूर है । परन्तु मीमांसकों के विचारानुसार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हसियायै स्वाहा कर घृत की आहुति अग्नि में डालने ही एक अदृष्ट पैदा हो जाती है, बस फिर कल्याण में क्या देर है ।

इस अदृष्ट शब्द के अर्थ को ठीक से न समझने से कितना भयंकर परिणाम हुआ यह कह कर नहीं बताना पड़ेगा हममें अपनी बात को पुष्ट करने के लिए यहां शतपथ ब्राह्मण का एक प्रमाण उपस्थित करते हैं, जो बिल्कुल पर्याप्त होगा ।

तद्वैतज्जनको वैदेहः याज्ञवलक्यकम् ....
ददामीति होवाच ।

सो यह इस प्रकार हुआ कि एक समय वैदेह जनक ने याज्ञवलक्यक से पूछा - हे याज्ञवलक्यक! अग्निहोत्र का तत्व जानते हो ?

याज्ञ. - हाँ सम्राट जानता हूँ ।

जनक. - किस पदार्थ से हवने करते हो ।

याज्ञ. - दूध से ।

जनक. - यदि दूध न मिले तो काहे से हवन करोगे?

याज्ञ. - जौ, चावल से ।

जनक. - यदि जौ चावल न मिले तो किससे हवन करोगे ?

याज्ञ. - तो जो कोई जंगली अनाज मिलेगा उससे।

जनक. - यदि जंगली अनाज न मिले तो किससे हवन करोगे ?

याज्ञ. - तो जंगली फलों से ।

जनक. - यदि जंगली फल न मिले तो किससे हवन करोगे ?

याज्ञ - जल से

जनक - यदि जल न मिले तो किससे हवन करोगे?

तो इस पर याज्ञवलक्य बोले - जब केवल वेद ही था, और यह सब क्रिया कलाप कुछ नहीं था; तब भी हवन होता ही था, वह हवन सत्य का श्रद्धा में होता था । इस पर जनक ने कहा कि हां यज्ञवलक्य तुम यज्ञ को ठीक जानते हो, मैं तुम्हें सौ गाय देता हूँ ।

काम और क्रोध आयु को खाते हैं

काम और क्रोध मनुष्य के दो शत्रु जन्म जन्मान्तर से साथ लगे हुए हैं, जो मनुष्य की आयु और भोग को घटाते हैं और जाति से नीचे गिराते हैं । ये शत्रु है काम और क्रोध । इसलिये उन्नति करने के इच्छुक व्यक्ति को इन शत्रुओं से सदा सावधान रहना चाहिये । संघर्ष से उन्नति होती है । जिसके साथ संघर्ष नहीं होता । वह उन्नति नहीं करता वह आलसी होकर गिर जाता है । अतः इन शत्रुओं से डरे नहीं, अपितु सावधान रहे । मन और इन्द्रियों को काबू में रखने से आयु को बढ़ाया जा सकता है । आयु कैसे घटती बढ़ती है । इसके लिये प्रथम कुछ बातों को समझना पड़ेगा । आयु वर्षों में निश्चित नहीं है। किन्तु श्वासों में निश्चित है अतः श्वासों के कम ज्यादा लेने से आयु घटती बढ़ती है ।

वह कैसे

साधारणतया एक मनुष्य एक मिनिट में पन्द्रह श्वास लेता है । इससे हमारी आयु बढ़ी अब यह मनुष्य के अधिकार में है कि वह एक मिनिट में पन्द्रह श्वास पूरे ले अथवा कम या अधिक खर्च करें । साधारणतया स्वस्थ मनुष्य चौबीस घंटे में २१६०० श्वास लेते हैं, अब कोई उल्टे काम करके इन श्वासों को नौ दस घंटे में समाप्त कर देता है, सावधानी पूर्वक चौबीस की जगह छत्तीस घंटे इन श्वासों को चला सकता है यह श्वास मनुष्य का वास्तविक धन है काम और क्रोध मनुष्य के ऐसे शत्रु है जो मनुष्य के श्वासों को जल्दी खत्म करते हैं। साधारणतया बैठा हुआ मनुष्य एक मिनिट में १५ और एक घंटे में ९०० श्वास लेता है । चलने पर १८ श्वास तो सोते समय ३० श्वास । परन्तु व्यभिचार आदि दुष्कर्म करते समय एक मिनिट में ६० श्वास। इसी प्रकार चार गुणा श्वास अधिक खर्च होता है कामवासना के समय जब मनुष्य के मन में काम की उत्पत्ति होती है तब सारा शरीर गर्म हो जाता है वीर्य आदि धातु बननी बन्द हो जाती है, जितनी देर तक काम का आवेग रहेगा श्वासों की गति बढ़ जाती है, इस प्रकार काम के वेग से आयु घटती है और जीवनीय शक्ति का ह्रास होता है । इसी प्रकार जब क्रोध आता है तो भी शरीर गर्म हो जाता है । खून काला हो जाता है, वीर्य पतला हो जाता है । और श्वास की गति अत्यंत बढ़ जाती है । इस प्रकार काम और क्रोध के रहते हुए जो चीज खाई जायेगी वह भी दूषित हो जायेगी । इस प्रकार ये दोनों मनुष्य के महान शत्रु हैं । जीवनीय शक्ति को नाश करते हैं । सूक्ष्म प्राण का नाम नाम जीवनीय शक्ति है जिसे अंग्रेजी में (Vitality) वायटैलिटी कहते हैं । जब कोई सब्जी आदि बासी हो जाती है। तो उसकी जीवनीय शक्ति समाप्त हो जाती है । इसी प्रकार जब मनुष्य काम और क्रोध में उत्तेजित होता है तो उसकी जीवनीय शक्ति समाप्त हो जाती है । जीवनीय शक्ति समाप्त होने से आयु कम होती है अतः दीर्घायु चाहने वाले मनुष्यों को इन शत्रुओं से बचना चाहिये तथा ऐसे कर्म करने चाहिये जिससे जीवन शान्त हो जीवनीय शक्ति बढ़े । शुभ कर्म करने से श्वासों का व्यय कम होता है और आयु बढ़ती है सत्संग, स्वाध्याय, संध्या, प्राणायाम, व्यायाम, यज्ञ तथा परोपकार आदि कार्य एवं अच्छे चिन्तन से आयु बढ़ती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राणायाम - २

- ले. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

१. **आसन-** साधक यथा सुविधा अपनी अवस्थानुकुल पद्मासन या सिद्धासन का अभ्यास करें, परन्तु आसन सिद्धि के लिए कम से कम एक घंटा लगातार बैठने का अभ्यास करना ही पड़ेगा।

(अ) पद्मासन- इसके द्वारा वीर्य की वृद्धि होती है। गृहस्थियों (बाल-बच्चे वालों के लिए) यह आसन ही उचित और उपयोगी है।

(आ) सिद्धासन- इसके द्वारा वीर्य स्थिर होता है। यह ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों तथा सन्यासियों के लिए अधिक उपयोगी है।

(२) बन्धों का प्रयोग- बिना बन्ध लगाये प्रणायाम करना लाभदायक नहीं -

(अ) मूलबन्ध- गुदा को भींचकर उप़र को संकुचित रखना। यह बन्ध साँस, खींचते, रोकते और छोड़ते समय बराबर लगा ही रहना चाहिये। जितना इसका अभ्यास होता है, उतना ही यह लाभप्रद होता है।

(आ) उड्डियान बन्ध- पेट को अन्दर की ओर खींचना और बाहर निकालना। यह बन्ध साँस के खींचते और छोड़ते समय लगाना चाहिये। साँस खींचते समय छाती फूलती जाय और साँस छोड़ते समय छाती सुकड़ती जाये।

(इ) जालन्धर बन्ध- ढोड़ी को कण्ठ कूप में सटाकर साँस को रोकने और बढाने का प्रयत्न करना चाहिये।

३. श्वास क्रिया-

१. **पूरक-** साँस खींचना।

२. **कुम्भक** - साँस का रोकना।

३. **रेचक** - साँस का छोड़ना।

खींचने में जितना समय लगे छोड़ने में उससे दुगना और रोकने में चौगुना होना चाहिये।

४. **श्वास-** क्रिया और बन्ध का पारस्परिक संबंध प्रत्येक अवस्था में दो-दो बन्ध लगाने चाहिये-

पूरक के समय - मूलबन्ध और उड्डियानबन्ध।

कुम्भक के समय - मूलबन्ध और जालन्धर बन्धा

रेचक के समय - मूलबन्ध और उड्डियान बन्धा

मूलबन्द और उड्डियानबन्ध के लगाते ही, प्राण वायु और अपानवायु मिलकर समानवायु का रूप धारणकर नाभिचक्र की चित्रानाड़ी के द्वारा सुषुम्ना में प्रवेश कर वीर्य की ऊर्ध्वगति बना मूत्रेन्द्रिय की जड़ में जो एक हजार ज्ञान तन्तुओं का सामूहिक रूप है, सींचता है, फिर जालन्धर बन्ध की सहायता से उदान वायु उस वीर्य को सुषुम्ना मार्ग से मस्तिष्क में पहुंचाकर कार्य करने की शक्ति प्रदान करता है।

५. **श्वासक्रम-** श्वास क्रम निम्नलिखित रीति से रखना चाहिये -

(अ) नासिका के जिस छिद्र से पूरक किया हो, अर्थात् साँस खींचा हो, उससे रेचक (साँस) छोड़ने का कार्य न किया जाय। हाँ, नासिका के दोनों छिद्र से पूरक करने पर यथाकथिक एक से व दोनों से रेचक किया जा सकता है।

(आ) मुँह से रेचक कभी नहीं करना चाहिये। हाँ, पूरक किया जा सकता है, वह भी केवल उन प्राणायामों में जहाँ ऐसा करने का आदेश है। प्राणायाम से पहले की तैयारी-

प्राणायाम का अभ्यास करने से पहले निम्न बातों पर ध्यान रखना चाहिये, और इनका अभ्यास किया जाय। मूलबन्ध आदि की विधि भी सीखकर उसका अभ्यास किया जाये। इसके लिए नित्य के साधारण श्वास में परिवर्तन कीजिए -

१. जो श्वास लिया जाये वह लम्बा खींचा जाय, परन्तु श्वास खींचते समय छाती फूल जाय और श्वास छोड़ते समय छाती सिकुड़ जाये।

२. जितना समय श्वास खींचने में लगे उससे दुगना समय छोड़ने में लगना चाहिये।

३. श्वास लेते समय शब्द न किया जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(आ) बैठते, उठते और चलते हुये मूलबन्ध लगाये रखना चाहिये। गुदा (शोच के स्थान) को संकुचित करके ऊपर की ओर खींचे रखना ही मूलबन्ध है। जैसे-

१. यदि किसी को टट्टी लगी हुई हो और टट्टी जाने का स्थान कहीं दूर हो तो उस समय गुदा को जिस प्रकार वह संकुचित करता है, इस विचार से की कहीं टट्टी निकल न जाये, उसी दशा का नाम मूलबन्ध है। इसका टट्टी के समय को छोड़कर चौबीस घंटे अभ्यास करना चाहिये।

घोड़ा लीद (टट्टी) करके जैसे गुदा को खोलता और भींचता है उसी प्रकार मनुष्य को अपनी गुदा ऊपर की ओर संकुचित रखनी चाहिये। प्रात:काल और सायंकाल शौचादि से निवृत्त होकर- स्नान के पश्चात शुद्ध वायु में पद्मासन या सिद्धासन लगाकर और गुदा, रीढ़ की हड्डी और गर्दन तीनों को एक सीध में कर लीजिए।

१. यदि गरमी के दिन हो, तो बांये नथुने से सांस खींचकर दाहिने नथुने से साँस छोड़िये।

२. और यदि सर्दी के दिन हों, तो दाहिने नथुने से साँस खींचकर बांये नथुने से साँस छोड़ दीजिए।

३. फिर इसी प्रकार जिससे साँस छोड़ा उसी से साँस खींचकर दूसरे से छोड़ दीजिये। यह चक्र कम से कम दस मिनट तक दुहराते रहिये, परन्तु इन बातों का ध्यान रखिये -

१. गुदा बन्ध पूरे समय तक लगा रहे।

२. साँस खींचते समय पेट अन्दर की ओर पिचकता जाये और छाती फूलती जाये, परन्तु साँस छोड़ते समय पेट बाहर निकलता आये और छाती सिकुड़ती जाये।

३. साँस लेने में जितना समय लगे साँस छोड़ने में उससे दुगना समझ लगाना चाहिये।

वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज अम्बादोला जि. रायगड़ा (उड़ीसा) का वार्षिकोत्सव दि. २.४.९८ से ५.४.९८ तक उल्लासमय वातावरण में श्री पं. विशिकेसन शास्त्री के आचार्यत्व में संपन्न हुआ। इसमें ब्र. भास्कर नैष्ठिक, श्री ब्र. कृपासिन्धु आर्य श्री पं. निलाम्बर जी आचार्य आदि विद्वानों का सुमधुर प्रभावशाली उपदेश हुआ जिसका खासा प्रभाव उस अंचल में हुआ। इस कार्यक्रम में अनेक सज्जनों ने भाग लेकर अपने जीवन को पवित्र बनाने का संकल्प लिया।

दिव्य कामना

भारत भूमि में एक शासक थे राजा रान्तिदेव। उन्होंने जन-कल्याण एवं आत्म-शुद्धि के लिए ४८ दिन का व्रत किया। वह इस लम्बे व्रत को सफलता पूर्वक पूर्ण करने के बाद, व्रत की समाप्ति के निमित्त अन्न-पूर्ति या पारण करना चाहते थे कि एक भिक्षुक जा पहुंचा- ''मैं भूखा हूँ'' यह आवाज कानों में पड़ने ही रान्तिदेव ने वह भोज्य पदार्थ उस भीखारी को दे दिया। उसे देने के बाद भी पात्र में कुछ खाद्यान्न बच गया था। उसे धोकर जब वह अपना व्रत पूर्ण करने के लिये तैयार हुए तब चार कुत्ते लेकर एक चाण्डाल आ गया। उसने पुकर की- ''मुझे और मेरे कुत्तो के लिए कुछ खाने के लिए है'' ? उन्होंने वह शेष अन्न भी उसे दे डाला। इस पर वह चाण्डाल अपने असली दिव्य वेश में प्रकट हुआ।

उसने कहा- ''महाराज! आपका दान अपूर्व है, आपका त्याग अनुपम है, भगवान् आपको मोक्ष और सब सिद्धियों प्रदान करें।

रान्तिदेव ने हाथ जोड़कर कहा-

न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं न पुनर्भवम्।
कामये दु:खतप्तानां, प्राणिनामर्ति नाशनम्॥

''भगवन्! मैं न तो यह राज्य चाहता हूँ, न मुझे कोई स्वर्ग चाहिए, न मुझे मुक्ति लोक में निवास करना है, मेरी तो एक मात्र इच्छा यही है कि मैं दु:खों से दु:खी-आर्त मानवता के उद्धार के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहूं। समस्त प्राणियों के दु:ख के निवारण के लिए मैं सदा यत्नवान रहूँ।''

आदर्श चरित्र

लंका का राजा रावण भिक्षुक के वेश में आकर सीता जी का हरण कर ले गया। श्रीराम अपने भाई लक्ष्मण के साथ सीता जी की खोज में जटायु के पास गए। वहां से रावण द्वारा सीता जी के हरण का समाचार पाकर पम्पासुर पहुँचे। वहाँ हनुमान के माध्यम से सुग्रीव से मित्रता हुई। सुग्रीव ने समाचार दिया कि एक दिन क्रूरकर्मा राक्षस एक नारी का हरण कर ले जा रहा था। उस समय वह ''हा राम, हा लक्ष्मण' पुकार रही थी। उसने एक पर्वत शिखर पर पांच बानरों को बैठा देखकर आक्रोश से अपनी चादर और अपने आभूषण गिरा दिये थे। सुग्रीव ने सीताजी द्वारा गिराए हुए वस्त्र और आभूषण दिखाए। उस वस्त्र और आभूषणों को देखकर श्रीराम की आंखों में आंसू भर गए। उन्होंने अनुज लक्ष्मण से कहा- ''हरण की जाती हुई सीता अपना उत्तरीय और आभूषण भूमि पर फेंक गई थी, तुम तनिक उन्हें पहचानों तो सही! उन्हें देखकर लक्ष्मण ने अपने अग्रज श्रीराम को उत्तर दिया था -

नाऽहं जानामि केयूरे, नाऽहं जानामि कुण्डले।
नुपूरे त्वभिजानाभि नित्यं पादाभिवन्दनात्॥

भगवन्! न मैं कंकण (बाजुबन्द) को पहचानता हूँ और न मैं कानों के कुण्डल को ही जानता हूँ, परन्तु मैं पैरों में पहने जाने वाले नुपुरों (बिछुओं) को अवश्य ही पहचानता हूँ, ये निश्चय से सीताजी के ही है, क्योंकि मैं प्रतिदिन उनके चरणों में प्रणाम् करते समय इन नुपूरों (बिछुओं) को ही देखा करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्लाम का वैदिक रंग (3)

प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन अबोहर - 152116

इस लेखमाला की तीसरी मणि को आरम्भ करते हुए पहले तो मैं श्री सम्पादक जी कुलभूमि को बधाई देना चाहता हूँ कि वह पत्रिका का स्तर ऊंचा करने के लिए कुछ यत्नशील हैं । और परिश्रम करने की आवश्यकता है। आर्य सामाजिक पत्रों में सैद्धान्तिक लेख न छपने से कोई उन्हे पढ़ता ही नहीं। बस एक ही तोता रटन है- आर्य समाज का स्वराज्य संग्राम में योगदान, रानी झांसी, भगत सिंह, बिस्मिल आर्य समाज की देन थे। ऋषि दयानन्द पितामह थे। उसके गुरू थे, उसके प्रेरणास्त्रोत थे इत्यादि। वीर तुलसीराम, घुन्नासिंह, रामचन्द्र, मेघराज, शिवचन्द्र, श्यामलाल, राजपाल, नाथूराम व फूलसिंह जैसे धर्मवीर जिन्होंने वैदिक धर्म प्रचार के लिए गर्दनें कटा दी उनकी तो चर्चा ही नहीं होती। न कोई उनके कैलण्डर छपवाता है। यही कारण है कि धार्मिक विषयों के अधिकारी विद्वान् लेखक व वक्ता अब समाप्त हो गए हैं। नामधारी आचार्य तो अब बहुत हो गए हैं जिनका संस्कृत भाषा पर भी अधिकार नहीं। वेद, दर्शन, तुलनात्मक धर्म अध्ययन की बात तो बहुत दूर की रही।

मैं कुरान का एक प्रमाणिक भाष्य फतह-उलहमीद लेकर मदीना बुक डिपो देहली द्वारा प्रकाशित कुरान की एकतफ़सीर से उसका कुछ मिलान कर रहा था। 'फतह उलहमीद' के आरंभ में बिहार के मौलाना शाह बदर उद्दीन का कथन पढ़ते हुए एक तथ्य मेरे सामने आया तो मैं गद्गद हो गया। सैय्यद बदर उद्दीन जी ने इस कुरान भाष्य की तुलना पूर्व के कुछ कुरान भाष्यों से करते हुए इसकी श्रेष्ठता दिखाई है। उर्दू के जाने माने साहित्यकार डिप्टी नज़ीर अहमद की तफ़सीर भी मुसलमानों में अत्यंत आदर की दृष्टि से देखी जाती है। मौलाना नज़ीर अहमद ने सू. रहमान की एक आयत का अनुवाद किया है-

''(**जिन्नों और आदमियों पर ख़ुदाय**) रहमान के जहाँ और अनेक उपकार हैं उन्हीं में से एक यह कि उसी ने कुरान पढ़ाया, उसी ने मनुष्य को उत्पन्न किया फिर उसको बोलना सिखाया''।

''**फ़तह उलहमीद**'' भाष्य में यह अनुवाद इस प्रकार से मिलता है- ''खुदा जो अत्यंत कृपालु है उसी ने कुरान की शिक्षा दी। उसी ने मनुष्य को पैदा किया, उसी ने उसको बोलना सिखाया।''

मौलाना नज़ीर अहमद को आयत में मनुष्यों के साथ जिन्न व भूत भी दिखाई दिये। ऋषि दयानन्द की कृपा हुई। पं. लेखराम व स्वामी दर्शनानन्द मैदान में उतरे। इन्होंने शास्त्रार्थों में मौलवियों को वैदिक धर्म का मर्म समझाया। वेद की ठण्डी छाओं में कुरान के भाष्य होने लगे तो फ़तह मुहम्मद खां साहब ने इसी आयत का अनुवाद करते हुए कुरान से जिन्न भूत भगा दिया। मुसलमान बंधुओं के दिल व दिमाग से जिन्न-भूतों का बोझा उतर गया। इस्लाम वेद के निकट आया। इस्लाम के इस वैदिक रंग का आर्य मात्र को स्वागत करना ही चाहिये। विश्व-कल्याण का यही एक मार्ग है।

दुर्भाग्य से कुछ पेट पंथी मुल्ला आज भी पापी पेट के लिए दैनिक पत्रों में जिन्न-भूत निकालने के विज्ञापन देकर भोली-भाली जनता को ठगने का व्यपार चला रहे हैं।

मध्यप्रदेश के आर्यसमाज बिलासपुर ने ऐसे ही एक मियाँ को ललकारा कि सामने आओ या यह ठगी का धंधा छोड़ो। हिन्दुओं को ठगाने व लुटाने की लत लग चुकी है। ये जाग जायें तो छलियों व ठगों का लोप स्वतः ही हो जाए। कुरान के भाष्य में इतना परिवर्तन कोई साधारण सी बात नहीं है। यह एक क्रान्ति है जिसके पीछे पं. लेखराम व महाशय राजपाल जी का बलिदान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम कर रहा है। स्मरण रहे कि श्री स्वामी वेदानन्द जी ने स्थूल अक्षरी सत्यार्थ प्रकाश: की टिप्पणियों में इस तफ़सीर की चर्चा की है। मैंने भी अपनी नवीन मौलिक पुस्तक 'कुरान वेद की ठण्डी छाओं में' इस कुरान भाष्य की विशेष रूप से चर्चा की है। इसकी तो शैली पर भी ऋषि दयानन्द की गहरी छाप है।

अब एक और सैद्धान्तिक विषय को लें। प्राय: सब भाष्यकारों ने इस आयत का अनुवाद करते हुए दो बातें लिखी हैं -

(१) उसी ने (प्रभु ने) मनुष्य को उत्पन्न किया।

(२) फिर उसको बोलना सिखाया।

आर्य समाज का यह कर्त्तव्य बनता था कि इस आयत को लेकर मुसलमानों को यह वैदिक सिद्धांत हृदयाङ्गम करवाया जाता कि भाषा व ज्ञान ये दोनों ईश्वरीय देन हैं। ईश्वर ने बोलना सिखाया। कब? कुरान कह रहा है जब पैदा किया। ईश्वर ने कौन-कौन सी भाषा सिखाई ? विश्व में सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रन्थ तो वेद ही है। सम्प्रदायक उन्माद से ऊपर उठकर उस ईश्वरीय वाणी या भाषा का हिन्दू मुसलमान प्रचार करेगें तो संसार निश्चय ही स्वर्ग बनेगा। कलह, क्लेश, द्वेष, दूह-दाह सब मिटेंगे। कोई कुरान की सुने तो। कुरान तो वेद के साथ सस्वर है।

मदीना बुक डिपू के कुरान भाष्य पृष्ठ दो पर आदम की उत्पत्ति पृथ्वी से मानी गई है। अमैथूनी सृष्टि का सिद्धान्त वेद की एक मौलिक व वैज्ञानिक देन है। कुरान का भाष्यकार भी यही मानता है कि इस अमैथूनी सृष्टि के पश्चात् स्त्री-पुरूष के संसर्ग (वीर्य से) सन्तति का क्रम चला।

इस भाष्य के पृष्ठ पांच पर बाबल के बुर्ज़ की कहानी देकर विद्वान् भाष्यकार ने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि कभी पृथ्वी के मनुष्यों की भाषा एक ही थी। भाषा भेद का दोष ख़ुदा पर आरोपित किया गया है। परमात्मा ने पशु-पक्षियों में बोली भेद पैदा न किया। उस दयालु प्रभु को मानवों में भाषा-भेद पैदा करने की क्या आवश्यकता थी। कुछ भी हो कुरान के भाष्यकार दबीवाणी से यह स्वीकार करने लगे हैं कि कभी मानव-धर्म एक था। कभी इस धरा पर भाषा भी एक ही थी।

मदीना बुक डिपू के भाष्य के तीन पृष्ठ पर संसार में पाप, व्यभिचार व विचारों के प्रदूषण के तीन कारण बताता है -

(१) हज़रत नूह के बाद लोग अपने मृतक पूर्वजों के बुत (मूर्तियाँ) बनाकर पूजने लगे।

(२) मरे हुए पितरों से मुरादें मांगने लगे अर्थात् मृतकों से कामनायें पूरी करवाने की प्रार्थनायें करने लगे।

(३) मरे हुए पितरों का पूजन व सम्मान ईश्वर के समान करने लगे।

मुसलमान भाई एकेश्वरवाद की दुहाई तो दिन-रात देते हैं परन्तु भारत का दूरदर्शन इनके एकेश्वरवाद की पोल नित्य प्रति खोलता है। यहां-वहाँ कबरों की पूजा, कबरों पर चादरें चढ़ाना, चढ़ावे चढ़ाना, दुआयें मांगना। वैसी कव्वालियाँ गाना क्या यह मूर्ति-पूजा व मुर्दा-पूजा नहीं ? हिन्दू भी इसी पाखण्ड-जाल में फंसे है। ऋषि का नाद सुनकर कुरान भाष्यकार ने ऊपर जो तीन बाते लिखी हैं, वे आज भी सत्य है। क्या मौलवी अपने रोग को रोग मानेंगे ? रोग का निदान यही है कि वैदिक पथ अपनाया जाए।

मक्का जाकर काले पत्थर को व रेशमी कपड़े को चूमना, शैतान पर कंकर पत्थर फेंकना यह कहां की ईश्वर पूजा है ? अभी-अभी अबोहर के डाकघर में अजमेर के ख्वाजा को कबर के द्वारा हिन्दुओं के नाम आए सहस्त्रों पत्र मैंने देखे हैं। संभव है मेरे नाम भी ऐसा पत्र आए। मुर्दा पूजा का- (क़बर पूजा का) यह खुला निमंत्रण देश भर के लाखों करोड़ों हिन्दुओं तक पहुंचा होगा। अंध विश्वास के प्रचार व पेट-पूजा के लिये पाप की ऐसी लग्न पर हम बलिहारी। मौलान हाली आज होते तो हमारे साथ मिलकर रक्त रोदन करते और गंगा स्नान के लिए बाबे लहूलुहान हो गए। यह वेद, दर्शन, उपनिषद् व गीता का अपमान है। आओ ! वेद की सुनो। इस्लाम के वैदिक रंग का गूढ़ापन विश्व-कल्याण की एक शुभ सूचना है। क्रमशः.....

शराब पीना पिलाना एक सामाजिक अपराध है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईश्वरोपासना

ले. स्व. पंडित रामचन्द्र देहलवी

ओ३म् भद्रं कर्णेभिः श्रृणयाम देवाः भद्रं
पश्येमाक्षभियत्रार्यजत्रा ।
स्थिरैरंगैस्तुष्टुवां सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

यजु. २५.२१

स्तुति किसकी करनी चाहिए और क्यों करनी चाहिए, यह प्रश्न आज साधारण जनता के मस्तिष्क में उत्पन्न होता है। केवल इतना ही नहीं, इसके साथ अन्य अनेक प्रश्न भी वे करते हैं। किन्तु, प्राचीन काल के पुरूष यह शंका नहीं किया करते थे कि स्तुति, प्रार्थना और उपासना किसे कहते हैं और यह क्यों करनी चाहिए। उनका आचार ऊंचा था। आजकल के मनुष्यों में समझ कम और कुतर्क अधिक है, आचार नहीं।

जो परमात्मा को नहीं मानते, उनसे तो हमें कुछ भी नहीं कहना है, लेकिन मानने वाले भी कई बार कहते हैं कि जब परमात्मा हमें कर्मों का फल देगा ही तो उसकी स्तुति आदि हम क्यों करें ? उसकी स्तुति आदि करना उसकी खुशामद ही तो है ? यह भी देखने में आता है कि उपासना करने वाले झुठे और बेईमान है तथा उपासना न करने वाले अक्सर अच्छे होते हैं। फिर यह भी प्रश्न है कि भगवान् ने नास्तिक क्यों उत्पन्न किये ? इसका भी कारण है। परमात्मा ने इस संसार में जो कुछ भी किया है, ठीक ही किया है। भगवान को किसी काम से कोई हानि या लाभ नहीं। वह पूर्ण है। उसमें किसी भी प्रकार का कोई जोड़ या बाकी नहीं। मनुष्यों को शिक्षा देने के लिए ही उसने यह सब इन्तजाम किया है। नास्तिक लोगों को उत्पन्न करने का काम यह है कि जो मनुष्य अपने को ईश्वर भक्त कहते हैं किन्तु उनके कर्म गिरे हुए हैं और नास्तिक का आचरण ऊँचा है, तो फिर ईश्वर को मानने से और इसकी स्तुति प्रार्थना और उपासना करने से क्या लाभ ? भगवान् के गुणों का कोई प्रदर्शन नहीं होता। जो नाम के उपासक हैं, वे अपने काम से भगवान् को नहीं मानते हैं - लेकिन जो नाम के उपासक नहीं, वे काम से भगवान् को मानते हैं। यह शंका करने वालों ने उन्हें पेश किया।

भगवान् तो सदा भक्तों का साथी होता है। वह भक्त के वश में सदा से होता आया है। भगवान् हमें हमारे कर्मों का फल देगा, उपासना का फल देगा। भगवान् ने हमें बहुत सी चीजें दी हैं, हमें उसको धन्यवाद देना चाहिए। शंका करने वाले कहते हैं कि यह बात तो है, लेकिन इतनी संध्या करने की क्या आवश्यकता है ? नहीं इसका भी फल है ? क्या ? मन की दो वृत्तियाँ होती हैं, अन्तर्मुख और बहिर्मुख। वृत्तियों का केन्द्र नाभि है। वृत्तियाँ जितनी भी दूर जाती है उनको कौन रोकता है ? नाभि। जिस प्रकार कोई गधा या घोड़ा एक खुंटे में बंधी रस्सी से बंधा हुआ है, वह गधा या घोड़ा उस रस्सी से बाहर नहीं जा सकता। जगत् में जहाँ तक लाभ लेना चाहिए वहां तक हमारी प्रवृत्ति जानी चाहिए। सीमा से बाहर नहीं। अति सब जगह बुरी होती है- **''अति सर्वत्र वर्जयेत''** । जिस प्रकार ''आचार'' तो ठीक है, यदि उसके साथ अति लगा दें तो ''अत्याचार'' हो जाता है। इसलिए जगत् में अति किसी काम में नहीं करनी चाहिए और मर्यादा में ही रहना चाहिए।

शंका करने वाले कहते है कि संध्या एक समय ही पर्याप्त है, फिर प्रातः और सायं दो बार संध्या करना क्यों बनाया ? देखिए साफ कुर्ता पहनते हैं, आप यह नहीं चाहते कि यह मैला हो जाए, बहुत सावधानी आप रखते हैं कि आप का कुर्ता साफ ही रहे, किन्तु फिर भी वह मैला हो ही जाता है। इसी प्रकार आप एक बार संध्या करके अपना मन पवित्र बनाते हैं तो फिर उसको पवित्र रखने का प्रयत्न करते रहने से भी उसमें अपवित्रता आ ही जाती है। जब हमारा स्वार्थ दूसरे के स्वार्थ से टकराता है, तब मन में मलिनता का आ जाना भी स्वाभाविक हो जाता है।

प्रातःकाल की संध्या से रात के पाप नष्ट होते हैं और सायं काल की संध्या से दिन में किए हुए पाप नष्ट हो जाते हैं।

मुसलमानों ने भी पांच बार की नमाज को महत्व दिया है। उनका कुरान कहता है कि अपनी नमाजों की हिफाजत करो और बीच की नमाज को भी हिफाजत करो। बीच की नमाज को विशेष रूप से इस लिए कहा कि बीच की नमाज का समय दिन के तीसरे पहर ४ बजे का होता है। उस समय सब मनुष्य अपने काम धन्धे में जुटे रहते हैं। कुरान का अभिप्राय यह है कि जब तुम अपनी सांसारिक कार्यों में उलझे हुए हो, उस समय भी परमात्मा का चिन्तन करते रहो। हम प्रातः सायं भगवान् के गुणों से वंचित न रह जायें, इसलिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दोनों समय संध्या करना आवश्यक है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तुति का अर्थ प्रशंसा करना है। उस परमात्मा का परिचय प्राप्त करना स्तुति कहलाता है। जब परिचय हो गया तब उसके प्रति प्रेम भी उत्पन्न होगा। जहां हमें यह मालूम होगा कि भगवान् ने हमें कैसे अच्छे पदार्थ किये हैं, तभी उसके प्रति हमारा प्रेम उत्पन्न होगा। माता हमें अच्छे पदार्थ देती है हमारे हित की कामना करती है। इसलिए हम उससे प्रेम करते हैं इसी प्रकार हमारे भगवान् का गुणानुवाद करके यदि हम उसका नाम लेगें तभी तो हमें रस का स्वाद मिलेगा और परमात्मा के प्रति हमारा प्रेम बढ़ेगा। स्तुति करने से परमात्मा के प्रति हमारा प्रेम उत्पन्न होता है। आज जनता सुरैयां (तत्कालिन अभिनेत्री) से परिचित है, उसकी स्तुति करती है, इसलिए उसके प्रति जनता का प्रेम है। उसको देखने के लिए अपार जन समूह एकत्र हो जाता है। किन्तु उस भगवान् की स्तुति आज जनता नहीं करती। उसकी प्रशंसा में तो यदि घंटों व्यतीत हो जाये, तब भी कम है, परमात्मा के पास वह कौन सी मशीन लगी है जिससे वह समुद्र के खारे जल का स्वच्छ और मधुर बना देता है। फिर उसे किस सुन्दरता से बरसाता है ? उसे देखने में भी कितना आनन्द आता है। आपके बढ़िया फव्वारे को देखकर भी वह आनन्द नहीं होता।

ईश्वर की स्तुति करते हुए हमें मन में यह धारणा बनानी चाहिए कि मैं किस प्रकार उसके इन अमृतपुत्रों को आनन्द पहुंचा सकता हूँ ? हम परमात्मा के गुणो् को अपने अन्दर धारण करें। परमात्मा के गुणों को चिन्तन करते हुए हमें परमात्मा की सोहबत ये हमें बैठना चाहिये। शैतान की सोहबत में हम न रहे शैतान की सोहबत में हम न रहे, जो कि दुनिया को सन्मार्ग से भटकाने वाला है। पुलिस सुपरिटेण्डेन्ट सदा यही सोचता है कि मैं अपराधी को किस प्रकार जेल भेजू ? हमें भगवान् की सोहबत में रहकर भगवान् के गुणों का धारण करना चाहिए। संध्या करने से हम भगवान् की सोहबत में बैठते हैं। देखिए जब कोई संध्या करने बैठता है, तब उसके आसपास के सब मनुष्यो और बाल बच्चों को भी चुपकर दिया जाता है कि देखों वे संध्या कर रहे हैं। वे भगवान् की सोहबत में बैठे हैं, इस समय चुप रहो। ऐसा न हो कि तुम्हारे शोर मचाने से वे भगवान की सोहबत में न रह सकें। संध्या का तात्पर्य इसके सिवाय कुछ भी नहीं है कि आप परमात्मा जैसा अपने आपको बनाने का प्रयत्न करें। स्तुति से प्रेम उत्पन्न के बाद प्रार्थना की जाती है। उसका प्रकार यह है -

तेजोऽसि तेजो मयिधेहि, वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि।
बलमसि बलमयि धेहि, आजोऽस्योजो मयि धेहि।
मन्युरसि मन्युमयि धेहि, सहोऽसि सहोमयि धेहि॥

(यजु. १९.९)

हे भगवान् ! आप तेजस्वी हैं, मुझे भी तेज प्रदान करो। आप उत्पादक शक्ति से युक्त हैं, मुझे भी उत्पादन शक्ति प्रदान करों। आप बलवान हैं, मुझे भी बल प्रदान करो। आप दुष्टों को दण्ड देने वाले हैं, मुझे भी दुष्टों को दण्ड देने का सामर्थ्य प्रदान करो। आप सबसे बढ़कर सहनशील हैं, मुझे भी सहनशीलता प्रदान करों।

प्रार्थना के बाद उपासना करनी चाहिए। उपासना का अर्थ है कि- निकट बैठना। परमात्मा के गुणों का धारण करके उसके समीप बैठना ही उपासना कहलाता है। जो सच्चा उपासक है, वह पहाड़ जैसा बड़े से बड़ा दु:ख आने पर भी नहीं घबरायेगा और बड़े से बड़ा सुख में भी इतरायेगा नहीं।

स्तुति से प्रेम उत्पन्न होता है, प्रार्थना से अभिमान का नाश होता है, उत्साह में वृद्धि होती है और सहायता मिलती है। उपासना करने वाले को कोई भी भय नहीं रहता।

लोग कहते हैं कि मूर्त्तिपूजा से क्या हानि है ? मैं पूछता हूं कि क्या मूर्त्ति कुछ अनुभव करती हैं ? मैं मूर्त्ति पूजा के विरूद्ध नहीं, किन्तु आप तो उस मूर्त्ति के प्रति चेतनवत, व्यवहार करते हैं। आपके पिताजी की मृत्यु हो गई और उनका शव वहां पर पड़ा है। आप अपने मृत पिता के मुख में दवाई डालें, तो क्या इससे उन्हें कुछ लाभ होता है ? राम की मूर्त्ति आप रखे, फिर राम-राम कहते रहे, तो उससे क्या लाभ होगा ? यदि राम की मूर्त्ति को देख-देखकर उनके चरित्र को याद करें और तद्नुकल व्यवहार करें तो कुछ लाभ हो भी सकता है। किसी के चरित्र को जाने बिना उसके चित्र से कोई लाभ नहीं। हम मूर्त्ति के सामने बैठ जाते हैं। किन्तु अपने चरित्र को नहीं बनाते। गुजरे हुए महांपुरूषों के चित्रों को हम उनके चरित्र के आधार पर ही बनाते हैं। तो फिर उनके चित्र बनाने की कोई आवश्यक्ता ही नहीं। जबकि चरित्रों के आधार पर ही हम उनके चित्र की भी कल्पना कर सक्ते हैं। फिर चित्र बनाने की आवश्यक्ता ही क्या रही ? हमने एक पत्थर को खुद ही काट-छांट कर रख दिया और उसका नाम भगवान् रख दिया। यह बात उचित कैसे हो सक्ती है ? हमें करनी तो कुछ और थी और हम करने लगे कुछ और।

बुत परस्तों का है दस्तुर निराला देखो।
खुद तराशा है मगर नाम खुदा रखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर्यावरण प्रदूषण समस्या कारण और निवारण

आचार्य ज्ञानेश्वरार्य (एम.ए.)
दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़

विषय भोगों को अधिकाधिक मात्रा में भोगने की लालसा ही, आज के संसार में उत्पन्न हुये अनियंत्रित औद्योगिकरण के पीछे मुख्य कारण है। इसी के परिणाम स्वरूप आज सड़कों, नहरों, बांधों, रेलों, कारों, बसों, ट्रकों, संचार साधनों कल-कारखानों, तकनीकी यंत्रों का जाल सा बिछ गया है। खाद्यान्नों, सब्जियों फलो आदि का उत्पादन अधिकाधिक करने के लिये रासायनिक खादों तथा कीटनाशक औषधियों का अंधाधुन्ध प्रयोग किया जा रहा है। इन सब के माध्यम से आज का अधिकांश जनसमुदाय भोग विलास की सामग्री में लिप्त होता चला जा रहा है।

भोग सामग्री बढ़ी, भोग बढ़ा, किन्तु इन कल-कारखानों, वाहनों तथा रासायनिक खादों आदि से उत्पन्न होने वाली महाविनाशकारी गैसों, धुएँ और बीमारियों ने आज तबाही मचा दी है। अनियंत्रित औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप पृथ्वी पर प्रदूषण रूपी महाभयंकर भस्मासुर उत्पन्न हो गया। इस राक्षस के चुंगल मे हवा, पानी, मिट्टी, ध्वनि, प्रकाश, आकाश सभी कुछ आ चुका है। विश्व के सभी बुद्धिजीवियों, विशेषकर वैज्ञानिकों को इस विषय पर संशय हो गया है कि ऐसी पृथ्वी पर मनुष्य नामक प्राणी भविष्य में जीवित भी रह पायेगा या नहीं। अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी अमेरिका द्वारा प्रकाशित (Wholistic Healing) पुस्तक में तो स्पष्ट कह दिया गया है कि ''प्रदूषण से उत्पन्न महाविनाश के खिलाफ सामूहिक तौर पर यदि कोई उपाय न किया गया तो इस युग में मानव जीवित नहीं रह पायेगा''।

सम्पूर्ण मनुष्य जाति जिस खाद्य सामग्री का प्रयोग करती है उसका अधिकांश भाग अन्न, शाक, फल, फूल, वनस्पति, कन्द, मूल, औषधि आदि के रूप में होता है। ये सब खाद्य पदार्थ मिट्टी, पानी, हवा तथा सूर्य के प्रकाश से उत्पन्न होते हैं। शेष भाग पशु, पक्षी, मछली आदि-आदि के माध्यम से प्राप्त होता है, ये भी अन्ततः वनस्पति आदि खाकर ही जीते हैं। आज धरती पानी, वायु आदि के प्रदूषित होने के कारण खाद्य पदार्थ पोषक तत्वों से रहित अशुद्ध और शक्तिहीन बन गए हैं।

नदी, नहरे, तालाब, झीलें, कुएँ जो सिंचाई के महत्वपूर्ण साधन हैं, क्लोराइट्स, पेस्टिसाईड्स व अन्य अनेक प्रकार के जहरीले रसायनों से भयंकर प्रदूषित हो गये हैं। परिणाम स्वरूप इनका पानी उत्तम फसल उत्पन्न करने में असमर्थ हैं।

प्रदूषण के कारण ही प्रकृति का वर्षा चक्र (मानसून) अनिश्चित व असंतुलित हो गया है। साथ ही कहीं-कहीं पर तो वर्षा का पानी इतना अम्लयुक्त (Acidic) होता है कि अच्छी फसलें भी नष्ट हो जाती हैं।

जंगलों की अंधाधुंध कटाई, नदी, नालों, तालाबों, खेतों में फेंकी जाने वाली गंदगी या कूड़े कचरे के कारण पौधों की कार्बन डाईऑक्साइड को ग्रहण करने तथा पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन को छोड़ने की प्राकृतिक प्रक्रिया मन्द होती जा रही है। वैज्ञानिक लोग कहते हैं कि बढ़ते जा रहे वायु प्रदूषण पर यदि नियंत्रण नहीं किया गया तो कुछ वर्षो बाद ऐसी स्थिति बन जायेगी कि मनुष्यों को अपने साथ प्राण वायु का थेला (Oxigen Gas Cylinder) बांधकर रखना होगा जिससे कि शुद्ध वायु ले सकें। जैसे आज अशुद्ध पानी और वायु के कारण खनिज जल की शीशियों (Mineral water Battle) तथा नाक को ढकने के लिये कपड़े की पट्टी (Musk) का प्रचलन हो गया है।

फलों, शाकों, सब्जियों में जहर, खाद्यान्नों की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए खेतों में रासायनिक खादों का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। परिणाम स्वरूप कृषि योग्य उपजाऊ भूमि की उर्वरा तथा जलधारण करने की शक्ति क्षमता एवं चिकनाई समाप्त होती जा रही है तथा खाद्यान्न के उत्पादन में जो उत्कृष्टता थी वह भी नष्ट हो गई।

इन्सटीट्यूट ऑफ साइन्स (बायो कैमिस्ट्री विभाग) के मुम्बई स्थित वैज्ञानिकों ने पिछले वर्षो में स्थानीय फलों व सब्जियों की जांच की तो पाया कि इन सब्जियों व फलों में कीटनाशक जहरीली दवाओं के अंश अधिक मात्रा में विद्यमान है जो विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) द्वारा निश्चित की गयी है।

वैज्ञानिकों के अनुसार- जो वस्तु मनुष्य को स्वस्थ, बलवान, स्फूर्तिमान रखती है उस वस्तु का नाम ओषजन (Oxygen) या प्राण है। इस प्राण-वायु ओषजन में आज धूल, सीसा, पारा व अन्य अनेक जहरीली गैसें मिल गयी हैं। तो ये सब हमारे फेफड़ों के माध्यम से रक्त में मिल जाते हैं पुनः सारे शरीर में फैल कर विभिन्न रोगों को उत्पन्न करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्ल का दिवालिया ब्रह्माकुमारी मत

दसवीं किश्त

– स्वामी परमानंद सरस्वती

प्रिय पाठकों,

आज मेरे समक्ष इनके सम्प्रदाय की महत्वपूर्ण पुस्तक महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार-नामक पुस्तक है। लेखक **जगदीशचन्द** है इसी लेखक की चार पुस्तकें और मेरे पास है जिनके नाम निम्न प्रकार है- अव्यक्तवाणी लेखक **बी.के. जगदीशचन्द्र** सच्ची मन की शान्ति ले. **जगदीश रामानन्द** ज्ञान के अनमोल रत्न ले. **जगदीशचन्द,** साप्ताहिक पाठ्यक्रम लेखक जगदीश चन्द्र। लेखक ने अपनी हर पुस्तक में अपने नाम का परिवर्तन किया है। जैसे- जगदीश, जगदीश चंद्र, जगदीश राम आनंद, बी.के. जगदीश चंद्र। इन चार प्रकार के नामों में से लेखक का मुख्य नाम क्या है और वह इस प्रकार से नामों में परिवर्तन क्यों कर रहा है यह एकं गंभीर प्रश्न है। नाम परिवर्तन तो वे लोग करते हैं जो ठगी, अनैतिककार, तस्करी आदि कार्यों में लिप्त रहते हैं और कानून से बचने के लिये नामों में परिवर्तन करते रहते हैं। मेरे समक्ष जो पुस्तक है वह ५६८ पृष्ठ की है पूरी पुस्तक में कहीं भी सत्य और विद्या का प्रयोग नहीं हुआ, केवल अनर्गल प्रलापों से पुस्तक का कलेवर भरा गया है और पुनरूक्ति दोष से परिपूर्ण है। अब मैं पाठकों के समक्ष इनके लिखे कुछ अनर्गल प्रलापों के नमूने प्रस्तुत कर रहा हूँ अवलोकन करें। यादव लोग मथुरा द्वारका में नहीं रहते थे। अमेरिका में रहते थे। कृष्ण का जन्म राम जन्म से पहिले हुआ उनका न कोई भाई था न लड़का। जब तक उनका विवाह (स्वयम्बर) नहीं हुआ तब तक उनका नाम कृष्ण था। राधा के साथ विवाह होते ही उनका नाम नारायण हो गया और राधा का नाम लक्ष्मी हो गया। कृष्ण ने गीता का ज्ञान अर्जुन कों नहीं दिया ब्रह्माकुमारियों को दिया। महाभारत युद्ध के बाद सतयुग लग गया। महाभारत ग्रन्थ ईसा पूर्व ४०० वर्ष में लिखा गया। व्यास ने लोक गीतों को संग्रह कर महाभारत लिखा। ईसा की ८ वीं सदी से कलियुग लगा और २००० ईसवीं में सृष्टि का प्रलय हो जायेगा। फिर सतयुग लग जायेगा। यह पूरी पुस्तक कूड़े-कचरे से भरी है यद्यपि कुड़े-कचड़े से भी कुछ लोग गुजार कर लेते हैं। उस कचरे में से ही कुछ नमूने मैंने पाठकों के समक्ष रखें हैं। **स्वार्थी किंम् न करोति पापं**। दुनिया का वह कौन सा ऐसा पाप है जिसे स्वार्थी न कर सकता हो। स्वार्थी को अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए झूठ का सहारा लेना ही पड़ता है। जब से यह मानवी सृष्टि हुई है तभी से लोग एक-एक दिन बढ़ाते गिनती करते आ रहे हैं और बीच-बीच में जो प्रतापी राजा नवीं आदि हुये हैं उन्होंने भी अपने-अपने नाम से सम्वत् चलाई हैं जिससे उनके होने के समय का पता चलता है। अब मैं उन प्राचीन और अर्वाचीन सम्वतसरों को प्रस्तुत कर रहा हूँ। सर्वप्रथम सृष्टि की आयु का अवलोकन करें। सृष्टि की आयु एक कल्प की होती है जिसे ब्रह्मा का एक दिन माना जाता है और इतनी ही बड़ी रात्त होती है। एक कल्प में एक हजार चतुर्युगी होती हैं। परमाणुओं के सक्रिय होने से लेकर पृथ्वी के पूर्ण विकास तक ६ चतुर्युगी व्यतीत हो जाती है २५९२०००० वर्षो के बाद मानव सृष्टि होती है जो ९९४ चतुर्युगों तक रहती है इसकी भी संज्ञा कल्प ही रखी गई इस कल्प को सरलीकरण करने के लिये इसे १४ भागों में विभाजित किया गया है भागों का नाम मनवन्तर है एक कल्प में १४ मन्वन्तर होते हैं फिर मन्वन्तर को सरल करने के लिये उसे ७१ भागों में बाटा गया है जिसे चतुर्युगी कहते हैं एक चतुर्युगी ४३२०००० वर्षो की होती है सतयुग १७२८००० वर्षों का होता है त्रेता युग १२९६००० वर्षों का होता है द्वापर युग ८६४००० वर्षों का होता है. कलियुग ४३२००० वर्षों का होता है मानव सृष्टि के उत्पन्न होने से अब तक ६ मन्वन्तर बीत चुके हैं। सातवा वैवश्वत मनुवन्तर चल रहा है। जिसका यह वर्तमान कलियुग अट्ठाइसवा कलियुग है। अब मानवी सम्वतसरो का अवलोकन करें आर्य सम्वत्सर आदि मनुओं से अब तक १,९६,०८,५३,०९८ वर्ष हुए है। चीनी सम्वत् चीन के प्रथम बादशाह से ९६००२४९८ वर्ष हुए आज तक जो की आर्य संवत् से १८६४८४९६,०० वर्षो पीछे शुरू हई। खतई संवत् खता के पहले आवाद करने वाले से ८८८४०३७१ वर्ष आज तक हुए जो की चीनी संवत् से ७१६२१२७ वर्ष पीछे शुरू हुई। पारसी संवत् ईरान के पहले बादशाह से १८९९६८ वर्ष आज तक हुए। खतई संवत् से ८८६५०४०३ वर्ष पीछे शुरू हुई। कालडिया संवत् वहां के पहिले पुरूष उन के से चली १५१९९८ वर्ष आज तक हुए जो कि पारसी संवत् से ३७९७० वर्ष पीछे शुरू हुई। मिसरी संवत् जो मैनस बादशाह से चली २७६५२ वर्ष आज तक हुए जो कि कालदिया संवत् से १२४३४६ वर्ष पीछे शुरू हुई। इंबरानी संवत् आदम और उनकी मानी हुई दुनिया की पैदाइस से ५९०२ वर्ष आज तक हुए जो कि मिसरी संवत्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से २१६५० वर्ष पीछे शुरू हुई । युधिष्ठिरी संवत ५११८ वर्ष हुए जो कि इबरानी संवत् से ७६४ वर्ष पीछे शुरू हुई । कलियुगी संवत् ५०९८ वर्ष आज तक जो युधिष्ठिरी संवत् से ४० वर्ष पीछे शुरू हुई । नूह का संवत् जो कि नूह के समय से शुरू हुआ ५०९८ वर्ष आज तक हुए जो कि कलियुगी संवत् के साथ ही शुरू हुआ । स्पार्ट का संवत् जो कि स्पार्ट की नीव पड़ने के समय से ३७०२ वर्ष अभी तक हुए जो कि शुरू नूह की संवत् से १३९६ वर्ष पीछे शुरू हुई । इब्राहीमी संवत् जो कि इब्राहीम से शुरू हुई ३६१९ वर्ष आज तक हुए जो कि स्पार्ट संवत् से ८३ वर्ष पीछे शुरू हुई । मूसबी संवत् मूसा से शुरू हुई ३५७१ वर्ष हुए जो कि इब्राहीमी संवत् से ४८ वर्ष बाद शुरू हुई । दाऊदी संवत् दाऊद के समय से शुरू हुई ३०३७ वर्ष आज तक हुई जो कि मूसबी संवत् से ५३४ वर्ष पीछे शुरू हुई । यूनानी संवत् ओलम्पिया के अखाड़े से शुरू हुई २७७४ वर्ष हुए जो कि दाऊदी संवत् से २६२ वर्ष पीछे शुरू हुई । रोमी संवत् रोम नगर की नींव पड़ने के समय से २७५१ वर्ष आज तक हुए जो कि यूनानी संवत् से २३ वर्ष पीछे हुई । नाबूमारी संवत् से बाबुल के पहिले बादशाह से शुरू हुई । २७४५ वर्ष आज तक हुए हैं । जो कि रोमी संवत् से ६ वर्ष पिछे शुरू हुई । बौद्ध शाक्य मुनि संवत् बुद्ध के पचासवे वर्ष से २५७२ वर्ष आज तक हुए जो कि नाबूमारी संवत् से १७३ वर्ष पीछे शुरू हुई । सिकन्दरी संवत् सुल्तान सिकन्दर जुलकहन के समय से २३५२ वर्ष आज तक हुए जो कि बौद्ध शाक्य मुनि संवत् से २२० वर्ष पीछे शुरू हुई । विक्रमी संवत् विक्रमादित्य के समय से २०५५ वर्ष आज तक हुए जो कि सिकन्दरी संवत् से २५७ वर्ष पीछे शुरू हुई । ईसवीं सन् ईसा के जन्म से चार वर्ष पीछे से १९९८ वर्ष आज तक हुए जो कि विक्रमी संवत् से ५७ वर्ष पीछे शुरू हुई । शाल वाहन संवत् महाराजा शाल वाहन से १९२० वर्ष आज तक हुए जो कि ईसवीं सन् से ७८ वर्ष पीछे शुरू हुई । मोहम्मदी संवत् महम्मद के मक्का से मदीना चले जाने के समय से १४१६ वर्ष आज तक हुए जो कि शाल वाहन से ५०४ वर्ष पीछे शुरू हुई । विज्ञा पाठकों के समक्ष मैने जब से यह सृष्टि बनी तब से लेकर अभी तक का ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत किया है । अब जरा इन अक्ल के दिवालियों द्वारा लिखा गया सृष्टि क्रम देखिये इनका कथन है कि चारो युगों का समय काल केवल ५००० वर्षो का ही है । बारह-बारह सौ वर्षों के चारों युग होते हैं जब देखा की बारह सौ का योग तो ४८०० वर्ष ही होता है तब फिर लिखा कि १२५० वर्षों के चारों युग होते हैं अब इनके समक्ष एक समस्या यह खड़ी हो गई कि जो हम पाँचवा संगम युग कहते हैं उसके लिये दिन कहां से लाये । इन्होंने आज तक यह नहीं दरसाया कि कलियुग कब से लगा केवल यह ही चिल्लाते रहते हैं कि कलियुग समाप्त हो रहा है । सतयुग लगने वाला है । इनके इस कथन से कि सन् २००० में प्रलय हो कर फिर सतयुग लग जायेगा । यदि हम इनकी बात को दुर्जन्यतोष न्याय से मान लें तो २००० में १२०० घटा देने से ईसवीं सन् ८०० से कलियुग लगा यह सिद्ध हो जाता है। और द्वापर युग ४०० वर्ष ईसा पूर्व लगा । तब मोहम्मद, शाल वाहन, ईसा, विक्रम, सिकन्दर की जो संवते चल रही हैं वह सब द्वापर युग की है और १६०० वर्ष ईसा पूर्व से त्रेतायुग लगा तब गौतम बुद्ध, बाबुल का बादशाह, रूम नगर की नीव पड़ी, यूनानी संवत्, दाऊद, मूसा सब त्रेतायुग में हुए और २८०० वर्ष ईसा पूर्व से सतयुग लगा तब स्पार्ट वसा और इब्राहीम हुआ । इनके हिसाब से नूह, युधिष्टिर, आदम, मैनस बादशाह, कालदिया, पारसी, खता, चीनी आदि ये हुए ही नहीं है जिनकी संवतें चल रही हैं। इनका कथन है कि गीता ज्ञान परमात्मा शिव ने ५००० वर्ष पूर्व कलियुग के अन्त में दादा लेखराज के तन में प्रविष्ट होकर दिया था । अब फिर कलियुग के अन्त में फिर से लेखराज के तन में प्रविष्ट होकर दे रहे हैं। क्योंकि सृष्टि चक्र में ५००० वर्ष के बाद फिर वही क्रम दुहराया जाता है । जैसा कि पहिले हुआ था और पात्रों में भी परिवर्तन नहीं होता । यदि हम इनकी यह बात मान ले कि द्वापर के अन्त में कृष्ण ने गीता ज्ञान नहीं दिया गीता ज्ञान तो कलियुग के अन्त मे लेखराज ने ही दिया था । तब प्रश्न यह है कि क्या उस कलियुग में भी गांधी, जवाहर, सुभाष, जिन्ना आदि थे और हिन्दुस्तान का बटवारा होकर पाकिस्तान बना था हमारे लोगों की निर्मम हत्या की गई थी और दादा लेखराज ने एक साधरण स्कूल मास्टर के घर में जन्म लिया था । फिर गेहूँ का धन्धा करने लगे थोक खरीद कर फुटकर बेचते थे फिर एक तस्कर सट्टेबाज को गुरू बना कर जवाहरातों का धन्धा करने लगे । फिर ओम् मंडली नाम की संस्था खोलकर रास लीला करने लगे तब लोगों ने इनके उस ओम् मंडली (रासमंडल) के कार्यालय को आग लगा कर भस्म कर दिया और वे भागकर करांची चले गये । वहाँ भी लोगों ने इन पर अदालत में अभियोग चलाया । फिर वहां से भागकर भारत आ गये यहां आकर प्रजापिता ब्रह्मा अपना नाम रखा । वे सब उस कलियुग में हुआ था क्या, इसका उत्तर दें सकते हैं । अब जरा इनके योग का भी रहस्य देखों दादा लेखराज अपने चेलियों को योग के माध्यम से ध्यान लगाना सिखाते थे इनकी शिक्षा के आधार पर चेलिया ध्यान में क्या देखती थी इनकी ही एक चेली का ब्यान सुनिये। मैं सत्संग के स्थान पर बैठे-बैठे अचानक ही ध्यानवस्था में चली गई । मेरे आस-पास जो मातायें बैठी थी उन सबने यह सोचा कि शायद यह सो रही है । परन्तु काफी समय से एक ही आसन पर स्थिर बैठे देखकर कुछ का मेरी ओर ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। मैं तो इस संसार से परे दूसरे लोक का अनुभव कर रही थी। मैंने क्या देखा कि एक बहुत बड़ा हाल है जिसकी सजावट ऐसी सुन्दर थी कि इस कलियुगी संसार में वैसी मिलना असंभव है। ऐसे सुन्दर हाल में लगभग १० वर्ष की आयु वाले सजे सजाये मोहिनी मूर्त श्री कृष्ण अपनी अंगुली से मुझे इशारा कर रहे थे कि आओ मेरे साथ रास करो। (**एक अदभुत जीवन कहानी के पृष्ठ ४९ से**) स्वप्न में वहीं सब दृष्टि गोचर होता है व्यक्ति जिस विषय का चिन्तन करता है इन चेलियों को रास लीला का ही प्रशिक्षण दिया जाता रहा होगा इसीलिए इन्हें स्वप्न भी रासलीला के ही आते हैं। रही बात ध्यान की तो ध्यान क्या है इसे लेखराज भी नहीं जानते थे केवल नाम सुन रखा है तो फिर चेलियों को कहां से ज्ञात होगा।

एक अद्‌भुत जीवन कहानी के पृष्ठ ९० में लिखा कि भगवान् की मुरली सुनकर गोपियां मस्त हो जाती थी और वे भाग कर वहां पहुंच जाती थी परन्तु उनके लौकिक संबंधी पुरूष उन्हें रोकते थे। अब हमने अपने प्रक्टीकल अनुभव से जाना कि हम तो ज्ञान मुरली को सुनकर अतिन्द्रिया सुख से फूली नहीं समाती है परन्तु हमारे लौकिक भाई बान्धव आदि हमें मुरली सुनने के लिए जाने से रोकते हैं। अत: हम इनके इस बयान से यह स्पष्ट है कि सभी ब्रह्माकुमारी अपने आप को कृष्ण की गोपियां ही मानती हैं और कृष्ण लेखराज को मग्न कर रास क्रीड़ा में न्निमग्न रहती है। लोक लाज से बचाने के लिये वे अपने आप को ज्ञान गोपियां कहती हैं। जैसे गांजा पीने वाले लोग भी यही कहते है कि हम सत्संग में जा रहे है और गंगा पीकर सत्संग प्राप्त करते हैं उसी तरह वे लोग भी रास क्रीड़ा कर के ज्ञान प्राप्त करती है और उस ज्ञान का नाम मुरली कहती है। एक अद्‌भुत जीवन कहानी के पृष्ठ २५ में एक ब्रह्मा कुमारी कहती है कि गुरू का भाषण चल रहा था परन्तु दादा सभा से उठ गये इससे पहिले कभी भी दादा सभा से उठकर नहीं गये थे। मेरा ध्यान दादा की ओर गया तब मैंने यशोदा जो की दादा की धर्म पत्नी थी को दादा के पास भेजा। यशोदा जी के जाने के बाद मुझे ख्याल आया कि मैं भी जाऊं। मैं दादा के कमरे में गई और दादा के पास बैठ गई और यशोदा जी गुरू की सभा में लौट गई। दादा सभा छोड़ कर शायद इसलिए चले गए हो कि मुरली बजाने की इच्छा बलवती हो गई हो। जब उनकी पत्नी और एक गोपी भी पहुंच गई तब दादा असमझ मे पड़ गये होगें की मुरली तो एक ही है और उसका आनंद लेने वाले दो हो गये तब दादा ने अपनी पत्नी से कहा होगा कि तुम तो मुरली का आनंद लेती ही रहती हो आज इस गोपी को भी ले लेने दो यह सुन कर पत्नी चली गई तब दादा ने एकान्त में मुरली बजानी शुरू की और मुरली से उत्पन्न ज्ञान गोपी के शरीर में प्रविष्ट होकर उसे आनान्दित करने लगा होगा।

"क्या आप अपनी शक्तियों का पूरा लाभ उठाते हैं ?"

एक साधारण लोहार लोहे की एक छड़ लेकर अपनी सामान्य बुद्धि बल पर इसे नाले बना देते है। नाल बन जाने पर लोहे के छड़ के दाम कई गुना बढ़ जाते हैं। अब एक दूसरा कारीगर थोड़ी बुद्धि और थोड़ा ज्यादा मेहनत कर लोहे को तपाता है, इस पर पानी चढ़ाता है, उसे कठोर बनाता है। तथा नालों की अपेक्षा अधिक मूल्यवान चाकू के फल बना लेता है। एक तीसरा कारीगर उसी लोहे की छड़ से कुछ ज्यादा परिश्रम व चतुराई से सुईयां बना लेता है। यह परिवर्तन है ना कुछ आश्चर्यजनक, मगर एक ओर कारीगर जो इन सबमें निपुण है, उसी लोहे के टुकड़ो से घड़ियों की मुख्य कमानियां बना लेता है, जिनका मूल्य नालों, चाकू के फलों, और बारिक सुईयों सभी से अधिक है। परन्तु कच्चे लोहे के छड़ अब भी अपने अधिक से अधिक मूल्य पर नहीं पहुंची, क्योंकि एक ओर कुशल शिल्पकार अपने चातुर्य और परिश्रम से उसी लोहे से और भी मूल्यवान चीजे तैयार कर सकता है जैसे घड़ियों की बाल कमानियां।

अगर एक धातु जिसे केवल थोड़े से स्थूलगुण प्राप्त है, अपने कणों से बुद्धि मिल जाने के कारण अपने मूल्य में इतनी आश्चर्य जनक वृद्धि कर सकती हैं, तो यह कैसे माना जा सकता है कि मनुष्य जो शारीरिक मानसिक नैतिक और आत्मिक शक्तियों का अद्‌भुत भण्डार है, सीमित परिणाम मे ही उन्नति कर सकता है ?

बहुत से लोग दूसरों की तुलना में अपनी प्राकृतिक बुद्धि की छड़ को तुच्छ रद्दी और अपर्याप्त समझते हैं परन्तु यदि वे लोग निरन्तर आत्म सुधार की आदत डाले, उत्तम रीतियों का अवलम्बन कर अध्यवसाय से उस छड़ को हथौड़े से पीटने खीचने और चमकाने को तैयार हो अथवा भीड़े नालों से सूक्ष्म बाल कमानियों तक की अवस्था में अपने को परिष्कृत और सुसंस्कृत करने के परिश्रम एवं कष्ट को सहने के लिये कटिबद्ध हो तो वे भी अपनी मानसिक पूंजी के मूल्य को एक अपूर्व सीमा तक बढ़ा सकते हैं। दुनियां में महान तथा सफल व्यक्तियों की जीवनियों में इस बात के अनेक दृष्टान्त मिलते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरमी की छुट्टियों का सदुपयोग

– कुञ्जदेव मनीषी

छुट्टी कहते ही किसका मन तरंगित नहीं होता? छुट्टी की घंटी बड़ी प्यारी लगती है, छुट्टी से पहले ही छात्र अपना थैला संभाल लेते हैं और घंटी लगते ही एकदम दौड़ पड़ते हैं। आफिसर और श्रमिक भी छुट्टी के समय बार-बार घड़ी देखते रहते हैं। इस तरह छुट्टी के लिए कौन लालायित नहीं रहता ? छुट्टी किसे प्यारी नहीं है ? छुट्टी मनाने के लिए कर्मचारी और छात्र प्राय: झूठे बहाने बनाकर आवेदन पत्र भी लिखते रहते हैं। बात सही भी है एक ही विषय में देर तक लगे रहने से प्राय: मन ऊब जाता है अत: विषय में परिवर्तन आवश्यक है। यह परिवर्तन एक काम से छुट्टी और दूसरे काम को मुट्ठी में लेने से होता है। सोना भी एक छुट्टी है अन्तिम छुट्टी तो मरने पर ही मिलती है।

परन्तु कार्य में रूचि बढ़ने से कोई विषय बोझ नहीं होता अपितु हमेशा सुखकर ही होता है। छुट्टी की उपयोगिता केवल थकान मिटाने में नही है, अन्य विषयों को पूरा भी करना होता है, पर समझदारों की दृष्टि में छुट्टी की कोई उपयोगिता नहीं, क्योंकि ये समय के कीमत को समझते है और क्षणभर भी विश्राम उन्हें पसन्द नहीं होता एक क्षण को भी बेकार गंवाना अच्छा नहीं समझते सूर्य की तरह निरन्तर अपने कर्मयोग में लगे रहते हैं आखिर छुट्टी हो ही क्यों ? शरीर से काम न हो तो मन से काम होता रहे विचार भी एक कर्म है ''खाली दिमाग शैतान का घर'' कहने वाले छुट्टी को उपयोगी नहीं समझते। ये किसी न किसी काम में अपने को उलझाये रहते हैं। समय को व्यर्थ गंवाना अपने साथ अन्याय है। गरमी की छुट्टी साल में एक बार एक डेढ़ माह की मिलती है। और वह भी उन लोगों को मिलता है जो शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। जिसका पूरा-पूरा लाभ अधिक करके विद्यार्थी और अध्यापक वर्ग उठाते है। अवकाश का हमारे जीवन में क्या उपयोग है यह हमें विचार करने की महती आवश्यकता है। हम वर्ष भर में ९-१० माह अध्ययन काल में व्यतीत करते हैं। और अन्त में परीक्षा के बाद अपने को हल्का महसूस करता है, ग्रीष्म छुट्टी का आज विद्यार्थी जगत् सदुपयोग न करके दुरूपयोग करते हैं। इसलिये हम कुछ छात्रों को हित की बात बताना चाहते हैं। जिससे वे समय का उपयोग कर लाभान्वित हो।

मित्रों ! भारत में अब एक शत्रु घुस गया है, उसका नाम है, ''इण्डियन टाइम''। भारत का आम आदमी यह जान चुका है कि ५ बजे जो कार्य चलना है, वह ६ बजे एक घण्टा विलम्ब से चलेगा। लगता है यह शत्रु भारतीयों को दिवालिया बना डालेगा।

समय तो आखिर समय है उसे आप चाहें तो ताश में गुजारें या बकवास में उसे अपने निवास में गुजारें या वनवास में। उसे चाहें तो रोमांस में गुजारें या नौकरी की तलाश में। अपने चहुंमुंखी विकास में लगाये या अपने सत्यानाश में। उसे चाहें आप भोग विलास में गुजारें या कैलाश में। उसे चाहें तो कलाओं के अभ्यास में लगायें या विद्याओं के विलास में, उसे चाहे तो कहानी कथा या उपन्यास में या नाटक एकांकी काव्य शास्त्र या इतिहास में। समय कभी किसी का हाथ नहीं पकड़ता। आप चाहें जो करें पर यह ध्यान रखें कही आप की जिन्दगी का अनमोल क्षण मिट्टी के मोल तो नहीं चला जा रहा है। भविष्य में इस कार्य का क्या परिणाम निकलेगा, समय बिताने के फेर में ना रहें क्योंकि समय को हम नहीं समय हमें बीता रहा है ''कालो न यातो वयमेव याता:'' (भर्तृहरि शतक)

समय का दुरूपयोग करने से कितनी हानि उठानी पड़ती है यह इस घटना से स्पष्ट हो जायेगी मोहन एवं श्याम दोनों छात्र साथ-साथ पढ़े अध्ययन काल में मोहन समय के महत्व को न समझकर खेलकूद मटरगश्ती गप-शप बहाने बाजी में ही सदा लगा रहता था और दूसरा श्याम अपने समय का सदुपयोग करते हुए अध्ययन खेल कूद आदि का समुचित ध्यान रखते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में पर्याप्त मेहनत करता था। आये दिन दोनों ने अपने-अपने कर्मों का फ़ल चख लिया, मोहन का जीवन दु:खमय निराशामय बन गया और श्याम का जीवन बहुत ही आनंदमय बन गया। दोनों ही एक दूसरे को देख कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दु:खी हो रहे थे । श्याम यह समझ रहा था कि मेरा मित्र मोहन कितना दु:खी हो गया और मोहन यह समझ रहा था कि अगर मैं भी अपना समय का सदुपयोग किया होता तो इतना न सही पर इससे आधा तो अवश्य लाभान्वित होता। इस विषय में महाराज भर्तृहरि की एक बहुत अच्छी सूक्ति है। का हानि: ? समयच्युति:, हानि क्या है ? समय की बरबादी। जो विचार शील होते हैं, वे इस बरबादी से बचते हैं। ऐसे ही समय के सदुपयोगी महापुरूषों का उदाहरण हमें मिलता है।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर समय के बड़े पाबन्द थे। जब वे कालेज जाते तो रास्ते के दूकानदार अपनी घड़ियाँ उन्हें देखकर ठीक करते थे। वे जानते थे कि विद्यासागर जी कभी एक मिनट भी आगे पीछे नहीं चलते।

महात्मा गांधी भी समय के बहुत पाबन्द थे एक बार किसी नेता की प्रतीक्षा में लोगों की भीड़ इकट्ठी थी महात्मा गांधी जी भी वहां पधारे थे नेता जी को आने में पांच मिनट लेट हो गया तब गांधी जी ने तपाक से कहा यदि देश के नेता पांच मिनट विलम्ब से पहुंचे तो स्वराज्य भी पांच मिनट विलम्ब से ही आयेगा।

महापुरूषों के इन उपदेशों और आचरणों पर हमें अमल करना आवश्यक है। फुरसत और खाली समय का उपयोग अच्छे-बुरे किसी भी काम में हो सकता है। नई-नई विद्या, कला, लेखन, शास्त्रार्थ के द्वारा नई सूझ और आध्यात्मिक बुद्धि जाग्रत होती है। इससे अपना व समाज दोनों का ही कल्याण होता है। सत्कर्म में लगाये हुए समय में मनुष्य का जीवन सुखी समुन्नत तथा उदात्त बनता है। जापान की उन्नति का प्रमुख कारण फुरसत के समय का सदुपयोग ही है। वहां सरकारी काम के घंटों के बाद का समय लोग कुटीर उद्योगों में लगाते हैं। छोटे-छोटे खिलौने, घड़ियां आदि बनाते हैं, इससे वहां की राष्ट्रीय सम्पत्ति बढ़ी है, लोगों का जीवन सुखी हुआ है और नैतिक सदाचार का प्रसार हुआ है। खाली समय का उपयोग जिस प्रकार के कार्यों में करेंगे, वैसी ही उन्नति अवश्य होगी।

करो समय का सदुपयोग,
जीवन में काम आयेगा।
होगा भविष्य उज्ज्वल,
अन्त में सुख पायेगा॥

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिहार आर्य महासम्मेलन समारोह पूर्वक सम्पन्न

बिहार प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं वहां के आर्यो के पुरूषार्थ एवं प्रयत्न से प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन आर्य समाज हजारीबाग में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में अत्यंत उल्लास एवं उत्साह के साथ १०, ११, १२ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के विशिष्ट कार्यकर्त्ता एवं ओजस्वी वक्ता श्री स्वामी अग्निवेश जी के अतिरिक्त डॉ. सुनीता शर्मा हैदराबाद, श्री स्वामी इन्द्रदेव जी यति, श्री सियाराम जी निर्भय, श्री स्वामी परमानन्द जी, श्री शिवधरजी वानप्रस्थी, श्री नवल किशोर शास्त्री आदि अनेक विद्वान एवं उपदेशको के प्रभावशाली उपदेश एवं भजन हुए। समारोह के सभी सम्मेलन प्रभावशाली एवं आकर्षक थे। वक्ताओं की तरह से श्रोताओं ने भी अपनी श्रद्धा एवं भक्ती प्रकट की इसकी सफलता के लिये हजारीबाग आर्य समाज के मन्त्री श्री रामेश्वर प्रसाद जायसवाल, श्री पन्नालाल आर्य, सभा प्रधान श्री बुद्धदेव सिंह, मन्त्री श्री प्रभाशंकर आर्य, श्री नारायणदास ग्रोवर निदेशक डी.ए.वी. स्कूल रांची श्री दयाराम पोद्दार आदि का विशेष पुरूषार्थ एवं प्रयत्न रहा। इसकी सफलता से बिहार में नई प्रेरणा एवं उत्साह का वातावरण बना है।

तपोमूर्ति उत्तममुनि जी का अभिनन्दन

आर्य समाज के पुरानी पीढ़ी के विद्वान तपस्वी एवं वयोवृद्ध विद्वान श्री उत्तममुनी जी का अभिनन्दन समारोह महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज लातुर के संयुक्त प्रयेत्न से १५ मार्च को आर्य समाज लातुर के महोत्सव पर किया गया। इस अवसर पर उनको १ लाख की धन राशि भी अर्पित की गई। उन्होंने इस राशि को वैदिक धर्म के प्रचार के लिये सभा को समर्पित कर दिया। इस कार्यक्रम में अनेक विद्वान् एवं भारी मात्रा में आर्य जनता उपस्थित थी।

आर्य समाज मुजफ्फरपुर में आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

आर्य समाज मुजफ्फरपुर में आर्य समाज स्थापना दिवस मुजफ्फरपुर आर्य समाज के प्रधान आर्यरत्न श्री पन्नालाल जी आर्य की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर अनेक विद्वान एवं आर्य जन उपस्थित थे।

ऋषि जन्म दिवस मनाया गया

इन्दौर के स्वामी दयानन्द नगर में श्री शिरूमल जी कथुरिया की अध्यक्षता में श्री वासुदेव जी कटारिया के प्रयत्न से ऋषि जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। इसका संचालन आर्य समाज के विशिष्ट कार्यकर्त्ता श्री जगदीश प्रसाद वैदिक ने किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीमुनि वशिष्ठ (वानप्रस्थ) के साहित्य का परिचय

आदरणीय श्री स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती,

सादर सप्रेम नमस्ते ! आप अभी आपके वार्षिकोत्सव में व्यस्त होंगे। मैं दि. १९.२.९८ को प्रस्थान कर गांधीधाम (कच्छ) आऊंगा वहां से टंकारा ऋषि बोधोत्सव में सम्मिलित होऊंगा, दिं. २८.२.९८ को लौट आऊंगा।

आपका पत्र मिला, समाचार जाने। मेरे साहित्य के संबंध में एक संक्षिप्त परिचय लिखकर आपको भेजने हेतु लिखा है। यूं तो मैं ना विद्वान् हूं, ना पंडित, ना गुरुकुल का विद्यार्थी। मात्र कुछ अध्ययन करके सरल भाषा में लिखने का प्रयास करता हूं। हरयाणा से पत्र आते हैं कि मेरी पुस्तकों में हिन्दी भाषा की बहुत सी त्रुटियां विद्यमान है, सुधार करना मेरा काम है। जैसा बने वैसा कार्य करता हूं। अस्तु !

मैंने यह कार्य १९८७ से प्रारंभ किया हूं। मेरे गृहस्थ की जिम्मेदारियां १९९१ में पूर्ण हो जाने से अब पूर्णत: इसमें लगा हूँ। संस्कार करना, प्रचार करना इससे दक्षिणा प्राप्त होती है वह भी लगा देता हूँ फिर भी निजी खर्च होते ही रहता है कारण १०० का माल ५० में देता हूँ। इसका हिसाब भी छपवा देता हूं। ताकि किसी को अंगूली उठाने का अवसर न मिलें। आप जैसे नैष्ठिक ब्रह्मचारी ने जब जीवन समर्पण कर दिया है तो इसके सामने मेरा थोड़ा त्याग क्या हस्ती रखता है।

प्रथम प्रथम मैंने (१) **ईश्वर अस्तित्व**, (२) **ईश्वर स्वरूप**, (३) **जीवन निर्माण सूत्र**, (४) **यज्ञ ही क्यों** ?, (५) **विश्वमानव वैदिक** धर्म इस प्रकार की पत्रिकायें (फोल्डर) लिखकर प्रसारित किये। लोगों ने बहुत सराहा तब **पूजा किसकी** ? इस लघु पुस्तिका का मराठी अनुवाद कर प्रस्तुत किया, वह भी अच्छा रहा तब छोटी-छोटी पुस्तिकायें लिखने का प्रयास किया जो अभी तक अव्याहत रूप से चल रहा है।

एकदम खंडनात्मक पुस्तके प्रथम मैंने नहीं लिखी, पौराणिकों को भी पसंद आवे ऐसी पुस्तके लिखी जैसे **ओ३म् ही क्यों** ? **संस्कार महत्व**, **आदर्श परिवार** इत्यादि फिर थोड़ा आगे बढा, धम व संस्कृति संबंधी लिखी जैसे **धर्म के पंच प्यारे**, **वैदिक संस्कृति** की महानता फिर बीच में उपनिषद के आधार पर **मानव जीवन** लक्ष्य लिखा वह भी बहुत अच्छी रही। तब एक वेद मंत्र लेके उसका पदार्थ, भावार्थ, दो दृष्टान्त देना यह प्रचार का माध्यम अब नहीं होना। तब विविध उपयुक्त विषयों पर वैदिक विचारधारा को समक्ष रखकर लिखते रहता हूँ।

श्री दौलतराम चड्डा, प्रधान (अभी भूतपूर्व) महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रेरणा से - (१) **पतन से वतन को बचाइये**, (२) **क्रान्ति विना शान्ति कहां** ? ऐसी पुस्तिकायें लिखी जो अभी मेरे पास भी उपलब्ध नहीं।

पश्चात **क्या स्त्रियों के वेदाधिकार हैं** ? यह पुस्तिका पींपरी (पुणे) आर्य समाज में प्रचारार्थ गया था वहां श्रृंगेरी मठ के शंकराचार्य पू. स्वामी भारती जी आये थे उन्होंने स्त्रियों को वेदाध्ययन अधिकार नहीं ऐसा कहा तब मैंने यह पुस्तिका लिखकर आव्हान किया, यह पुस्तिका भी पुणे में ही छपवायी।

गौ माता को ऋण ध्यान में रखकर **गाय जगत् की माता** पुस्तिका लिखी जो बहुत लोकप्रिय हुई। आज एक भी शेष नहीं।

फिर **आर्य समाज में आवें क्यों** ? 'यह पुस्तिका स्वामी परमानन्द इनके रींवा के भाषण के आधार पर लिखी। आर्य समाज का परिचय फोल्डर भी लिखा।

स्वामी दयानन्द जी के संबंध में एक फोल्डर प्रकाशित किया। तुलनात्मक अभ्यास के लिये **ना बाइबिल में ना कुरान में, जीवन जो पाया वेद में**, यह पुस्तिका लागत १-५० होकर भी प्रचारार्थ केवल ५० पैसों में दी है। हिन्दू जाति को चेतावनी स्वरूप उत्तिष्टत जाग्रत लिखी। सर्वधर्म समभाव की बीमारी देश में पनप रही है इसलिये सर्वधर्म भेदभाव पुस्तिका लिखी।

सभी स्वामी विवेकानन्द को सराहते है तब ये कैसे थे इसका पर्दाफाश करने **''स्वामी विवेकानंद, ना वैदिकी, ना वेदान्ती''** लिखी।

मराठी में दो पुस्तिकायें प्रकाशित की। (१) **श्री गजाननाचे सत्यस्वरूप**, (२) **मूर्तिपूजा एक भ्रम पाश**।

मूर्तिपूजा खंडन के लिये मूर्तिपूजा एक विडंबन पुस्तिका लिखी। अब मराठी का अनुवाद हिन्दी में **मूर्तिपूजा - ईश्वर पूजा नहीं**। यह लिख रहा हूँ।

श्री पांडुरंग शास्त्री आठनले से प्रसृत संस्कृति पूजन पर दो आक्षेपों का स्वामी दयानन्द जी के संबंध में देखकर पीछा पकड़ा, मराठी में फोल्डर प्रकाशित किया, तब उस पुस्तक में से दोनों आक्षेप अब दूर किये गये हैं। इस संबंध डॉ. भवानीलाल भारतीय जी ने भी एक पुस्तिका मूर्तिपूजा समीक्षा नामक छपवायी थी।

इस प्रकार कार्य चल रहा है, अकेला व्यक्ति हूं, कोई दान दक्षिणा सहायता करता है तो सहपर्ष स्वीकार करता हूँ।

अब 'क्रान्तिकारियों' के प्रेरक प्रसंग '**सुवर्ण महोत्सव** पर लिखा हूं। शीघ्र प्रकाशित होगी। शेष कुशल !

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Gurukul Ashram Amsena, Nuapada Pin - 766 109 Phone : (06678) 22
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ निर्मित विशुद्ध औषधियाँ

१.	च्यवनप्राश स्पे. १ कि.	१००.००
२.	च्यवनप्राश ,,	८०.००
३.	ब्राह्मी आंवला तेल	२०.००
४.	ब्राह्मी आंवला तेल स्पे.	४३.००
५.	वातराज तेल ५० मि.	२५.००
६.	महानारायण तेल ,,	२३.००
७.	विषगर्भ तेल ,,	१५.००
८.	संजीवनी तेल ,,	१५.००
९.	आयुर्वेदिक चाय	८.००
१०.	बलदापाक	४०.००
११.	सुपारीपाक २०० ग्राम	४०.००
१२.	आश्रम बाम	८.००
१३.	आश्रम दन्तमुक्ता १०० ग्राम	१५.००
१४.	गैसान्तक रस १०० ग्राम	२४.००
१५.	त्रिफला चूर्ण १ पाव	१५.००
१६.	लवणभाष्कर चूर्ण	१२.००
१७.	पौष्टिक चूर्ण	१०.००
१८.	सर्पविषहरी चूर्ण	१०.००
१९.	एक्जिमा मल्हम	२०.००
२०.	सितोपलादि चूर्ण	२०.००
२१.	नेत्रामृत विशेष	८.००
२२.	शक्तिदा ५०० मि.लि.	३०.००
२३.	बलदामृत ,,	४०.००
२४.	कुमार्यासव ,,	२८.००
२५.	लोहासव ,,	२५.००
२६.	अरविन्दासव ५०० मि.ली.	३५.००
२७.	अशोकारिष्ट ,,	२५.००
२८.	अश्वगन्धारिष्ट ,,	३२.००
२९.	दशमूलारिष्ट ,,	३५.००
३०.	अभयारिष्ट ,,	३०.००
३१.	खदिरारिष्ट ,,	३०.००
३२.	अर्जुनारिष्ट ,,	२८.००
३३.	चन्द्रप्रभावटी १० ग्राम	१२.००
३४.	इन्द्रयण वटी ,,	१८.००
३५.	महाशंख बटी ,,	१०.००
३६.	आरोग्यवर्धनी वटी ,,	१५.००
३७.	संजीवनी वटी ,,	१२.००
३८.	कुष्ठकुठार रस ,,	१५.००
३९.	कृमिमुदगर रस ,,	१५.००
४०.	लक्ष्मी विलास रस ,,	१८.००
४१.	आन्दभैरव ,,	१५.००
४२.	धात्रीलौह	१५.००
४३.	सुतशेखर रस	२५.००
४४.	शशि शेखर रस	३५.००
४५.	महायोगराज गुगुल	१६.००
४६.	अर्श रोगामृत	१०.००
४७.	चन्दनादि वटी	२१.००
४८.	लंवगादि वटी	१५.००
४९.	मृत्युञ्जय रस	१२.००
५०.	अष्ठिलारिपु	१५.००

हमारे हिन्दी के प्रकाशन

१.	सत्यार्थ प्रकाश	२०/-
२.	खिलते फूल	४/-
३.	छात्र जीवन योग और स्वास्थ्य	५/-
४.	योगासन	८/-
५.	आश्रम गीताजंली	२/-
६.	फिटकरी	५/-
७.	त्रिफला भाग -१	५/-
८.	त्रिफला भाग -२	६/-
९.	तुलसी	५/-
१०.	शांतिकामार्ग ईश्वर भक्ति	३/-
११.	वैदिक लोरियां	६/-
१२.	दैनिक उपासना	२/-
१३.	युवा और राष्ट्र	२/-
१४.	प्यारा ऋषि	८/-
१५.	मैं ईसाई क्यों नहीं?	१/-
१६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	४०/-
१७.	पौराणिक गप्प दीपका	७/-
१८.	विचित्र ब्रह्मचारी	३/-
१९.	गप्प शिरोमणि श्री राम शर्मा आचार्य	५/-
२०.	ईश्वर कहां है ?	४/-
२१.	गप्प शिरोमणि श्रीराम आचार्य (द्वितीय भाग)	६/-

सेवा में, श्री पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कांगड़ी विश्ववि
हरिद्वार
(उ. प्र.)

ग्राहक संख्या 3012

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक पत्र

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARDWAR

कुलभूमि

June 98

शुद्धि आन्दोलनों की श्रृंखला में एक और अध्याय जुड़ा

शुद्धि आन्दोलन के अग्रणी नेता पू. स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के निर्देश एवं प्रेरणा से उड़ीसा के बलांगीर जिले के रानीसर्डा नामक गाव में ३.५.९८ को उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी ने एक और अध्याय जोड़ा। ध्यान रहे स्वामी व्रतानन्द जी स्वामी जी महाराज के सुयोग्य शिष्य गुरुकुल के उपाचार्य पद को अलंकृत कर रहे हैं। रानीसर्डा गाव के इतिहास में ३.५.९८ का विशेष महत्व है। प्रातःकाल सभी ग्रामवासी स्वधर्म में लौटने की खुशी में मग्न थे एवं सभा प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। जैसे ही सभा प्रधान स्वामी व्रतानन्द अपने सहयोगियों के साथ जीप में पहुंचे ग्रामवासियों में खुशी की लहर और भी दुगुनी हो गई। सभी ग्रामवासी सभा प्रधान के स्वागत के लिए उमड़ पड़े स्वागत कर कार्यक्रम स्थल पर गए। कुछ देर सभी से मिले इसके बाद वह कार्यक्रम शुरू हुआ जिसकी ग्रामवासियों को प्रतीक्षा थी। लगभग १८० परिवारों के ५०० व्यक्तियों ने सामूहिक रूप से अत्यंत श्रद्धापूर्वक यज्ञोपवीत लेकर अपने पुराने वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में हर्षोल्लास के साथ प्रवेश किया। तत्पश्चात् सभा प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी ने शुद्ध हुए दीक्षित बन्धुओं को अपने उद्बोधन में आह्वान करते हुए कहा कि "सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा" हमारी ही वह संस्कृति थी जिसके आगे सारा विश्व नतमस्तक था हमारे पूर्वजों से ही सारा संसार शिक्षा लेता था बीच में महाभारत युद्ध के विनाश के कारण वेदादि शास्त्रों का पठन-पाठन बंद हो गया इसका फायदा ८ वीं शताब्दी के आसपास अरब आदि देशों के मुसलमानों ने व बाद में ईसाइयों ने उठाया। इन्होंने हमारी संस्कृति सभ्यता को तहस-नहस कर रख दिया। अब समय आ गया है हम ईसाई-मुसलमानों के बहकावे में नहीं आवेंगे और अपनी संस्कृति, सभ्यता, धर्म पर होने वाले आक्रमणों का मुंह तोड़ जवाब देंगे। उड़ीसा के लेखराम के नाम से जाने-जाने वाले सभा के भूतपूर्व मंत्री श्री विशीकेशन जी शास्त्री एवं आचार्य अखिलेश जी ने भी इस अवसर पर वैदिक धर्म की विशेषताएं जनता के सामने प्रस्तुत की। जिसे सुनकर दीक्षित बन्धु भाव-विभोर हो गए।

समारोह के अंत में सभा प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी ने एक विज्ञप्ति में बताया कि इससे बड़ा कार्यक्रम इस महीने के अंतिम या जून के प्रथम सप्ताह में उड़ीसा के सीमावर्ती मध्यप्रदेश के ईसाई बहुल रायगढ़ जिले के ग्रामीण इलाकों में पू. स्वामी धर्मानन्द जी की देख-रेख में होने जा रहा है। जिसमें हजारों की संख्या में शुद्धि होनी है। इस अवसर पर आसपास की जनता भी भारी मात्रा में आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थी।

Registration No. 0-595

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन में सहयोग दें

साहित्य के द्वारा ही स्थायी प्रचार हो सकता है, इसी उद्देश्य को लेकर गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से उड़िया भाषा में पांच दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, इनमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, संस्कार विधि जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। परन्तु अब कुछ समय से सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका समाप्त हो चुके हैं, जबकि इनकी मांग निरन्तर बनी हुई है। अकेले सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाशन पर ही लगभग डेढ़ लाख रूपये खर्च होगा। गुरूकुल का सामर्थ्य एक बार इतनी राशि लगाने का नहीं है, अतः वैदिक धर्म प्रेमी सज्जन इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग दे सकें तो महर्षि का यह अमर ग्रन्थ प्रकाशित होकर, अल्पमूल्य में स्वाध्यायशील जनता को उपलब्ध हो सकेगा। आशा है ऋषिभक्त सज्जन इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग देकर पुण्य के भागी बनेंगें।

निवेदक

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आर्य जनता उत्साहपूर्वक आगे बढ़े !

मुझे इस वर्ष आर्य समाज के कई प्रमुख कार्यक्रमों में जाने का अवसर मिला। उन कार्यक्रमों में आर्य जनता की श्रद्धा एवं उत्साह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती है। वैसे भी देश के कोने-कोने में अनेक श्रद्धालु ऋषिभक्त सज्जन उत्साहपूर्वक वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपने-अपने ढंग से लगे हुए हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत प्रयासों से वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार निरंतर आगे बढ़ रहा है। इसे देखकर उत्साह एवं प्रसन्नता होती है। परन्तु कुछ पदलोलुप स्वार्थी व्यक्तियों ने संगठन में फूट डालकर निराशा फ़ैला दी है। उससे कुछ शान्तिप्रिय आर्यजन निराशा अनुभव कर रहे हैं। ऐसे सभी आर्य बन्धुओं से मेरा नम्र निवेदन है कि निराश एवं हताश न हों, वैदिक धर्म के पवित्र प्रचार-प्रसार कार्य में भगवान् हमारे साथ हैं। अतः निराशा को छोड़कर उत्साह पूर्वक वेदप्रचार कार्य में लगें। यह एक ईश्वरीय कार्य है। इसी से ईश्वर का सच्चा आशीर्वाद एवं कृपा प्राप्त हो सकती है। इसके लिये लोगों को वैदिक धर्म में दीक्षित करें। उन्हें संध्या यज्ञ और स्वाध्याय करने की प्रेरणा दें। अधिक से अधिक मात्रा में साहित्य बांटें और एक उत्साह का वातावरण बनायें। समय आने पर ऊपर के झगड़े भी स्वतः समाप्त हो जायेंगे।

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

संध्या उपासना की आवश्यकता

एक विनम्र अनुरोध

सभी श्रद्धालु सज्जनों से विशेषकर अपने को आस्तिक मानने वाले आर्य सज्जनों से विनम्र अनुरोध है कि जीवन के परमोद्देश्य को प्राप्त करने, सच्ची सुखशान्ति पाने, तीन प्रकार के तापों (दुःखों) को नाश करने एवं परिवार में श्रद्धा एवं आस्तिकता की भावना उत्पन्न करने के लिये प्रातः सायं श्रद्धापूर्वक संध्या एवं जप अवश्य करें -

सन्ध्यामुपासते ये तु सततं शंसितव्रताः। विधूतपापास्ते यान्ति ब्रह्मलोकं सनातनम् ॥

जो पवित्र आचरण के साथ प्रतिदिन संध्या करते हैं वे सभी पापों से छूटकर ईश्वर की आनंदमयी गोद में शरण पाते हैं।

मनु जी कहते हैं -

एतदक्षरमेतां च जपन् व्याहृति पूर्विकाम्। सन्ध्ययो वेदविप्रो वेद पुण्येनयुज्यते ॥

जो वेद ज्ञाता विप्र प्रातः और सायं ओ३म् तथा व्याहृति पूर्वक गायत्री का जप सन्ध्या के साथ करता है वह वेद अध्ययन पुण्य को प्राप्त करता है।

परन्तु जो उस सर्वस्व दाता सर्वाकार दयालु प्रभु की उपासना नहीं करते वह जीवित अवस्था में शूद्र हैं उसके समस्त कर्म निष्फल है। परन्तु इस उपासना की सफलता तभी है जब उपासक ईश्वर को उपस्थित मानकर प्रत्येक कार्य करे। अस्तु ! आशा है श्रद्धालुजन हमारी विनम्र प्रार्थना को स्वीकार कर उपकृत करेंगें।

– स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुखपत्र

वर्ष - २०
अंक - ६
माह - जून १९९८
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,०९९
विक्रमी संवत् - २०५५
दयानन्दाब्द - १७४

प्रतिष्ठाता :
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक :
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक :
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक :
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता :
गुरुकुल आश्रम आमसेना
व्हाया - खरियार रोड
जिला - नवापारा (उड़ीसा)
पिन - ७६६ १०९
फोन : (०६६७८) २२३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-
आजीवन - ३००/-
एक प्रति - २.५०/-

सम्पादकीय...

आर्य बन्धु अपने कर्तव्य को पहचानें !

महर्षि दयानंद जी ने जहां घर परिवार के सारे सुख छोड़े और मुक्ति की भी उपेक्षा कर अपना जीवन वैदिक धर्म के उद्धार में लगाया, लुप्त हुए भारतीय गौरव को पुन: जागृत किया। इसके लिये बहुत चिन्तन मनन के पीछे आर्य समाज की स्थापना की, इसका उद्देश्य जहां वेद का प्रचार-प्रसार करना बतलाया वहां संसार का उपकार करना भी बतलाया। महर्षि के उत्तराधिकारियों ने भी इस दिशा में प्रयत्न किया और वे सफल भी हुए। स्वामीजी के आगमन से पहले जहां ईसाई-मुसलमान हमारे धर्म पर हावी थे यहां अनन्तकाल तक अपने शासन की योजना बनाकर चल रहे थे। उन्हें इस दिशा में सफलता भी मिलती जा रही थी। ऐसे समय में महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना कर उनके मनसूबों पर पानी फेर दिया। देश में स्वाधीनता, और स्वगौरव की ऐसी लहर चल पड़ी कि अंग्रेजों को देश छोड़कर जाना पड़ा। इस देश के स्वतंत्र होते ही सारे संसार में स्वतंत्रता की लहर चल पड़ी फलस्वरूप अंग्रेज इंग्लैण्ड में ही सिमट कर रह गये। उन्होंने वैदिक (हिन्दू) धर्म को समाप्त करने की जो योजना बनाई थी वह भी धरी रह गयी। शुद्धि का ऐसा चक्र चला हजारों विधर्मी बने ईसाई-मुसलमान वैदिक धर्म में दीक्षित होने लगे। इससे घबराकर अमर शहीद पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानंद, महाशय राजपाल आदि की हत्या मुसलमानों ने की परन्तु यह लहर बढ़ती गयी। हैदराबाद के नवाब को आर्य समाज से हार माननी पड़ी। वास्तव में आर्य समाज ने उसकी कमर तोड़ दी। इस प्रकार स्वतंत्रता प्राप्ति तक आर्य समाज आपसी संघर्ष में उलझा हुआ भी देश की विशेष शक्ति एवं अस्मिता का प्रतीक बन गया था। परन्तु जब संगठन के प्रभाव का फल लेने का समय आया, तब आर्य समाज के नेता पिछड़ गये। उस प्रभाव के चकाचौंध में बहक गये। पद की आपाधापी में लग गये। बहिन एवं चाचा की मृत्यु से संसार की क्षणभंगुरता का अनुभव कर सर्वस्व त्याग करने वाले दयानंद के शिष्य धनलिप्सु एवं अधिकारी बनकर मान-सम्मान पाने के चक्कर में ऋषि के सारे आदर्श एवं उपदेश को भूल गये। कर्मफल के अटूट विश्वास को छोड़ बैठे, ईश्वर को भूल गये। संसार को ही सब कुछ मान बैठे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है -

कञ्चन तजना सहज है सहज त्रिया का मोह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना येह ॥

अनेक अधिकारी तो कञ्चन का लोभ ही नहीं छोड़ सके। संस्थाओं की धन संपत्ति को ही स्वार्थ में लाने लगे। फिर मान-सम्मान तथा ईर्ष्या को कैसे छोड़ते फलस्वरूप अपना भविष्य तो बिगाड़ा ही समाज को भी पतन के गड्ढे में गिरा दिया।

आर्य जनो ! सोचो इस संसार की एक सुई भी कोई अपने साथ लेकर नहीं गया। साधारण मानव की तो बात ही क्या चक्रवर्ती राजा भी खाली हाथ गये हैं। धन सम्पत्ति तो साथ नहीं गयी हाँ ! पाप जरूर साथ लग गया। विशेष कर सामाजिक संस्थाओं का धन लेना तो अत्यंत दु:ख का कारण होता है। पञ्चतन्त्रकार कहता है -

नरकायमतिस्ते चेत् पौरोहित्यं समाचार। वर्षं यावत् किमन्येन मठचिन्ता दिनत्रयम् ॥

मित्रसम्प्राप्ति श्लोक ७० ॥

अर्थात् यदि नरक में जाना हो तो एक वर्ष तक पुरोहिती कर ले और यदि जल्दी नरक में जाना चाहते हैं तो तीन दिन तक किसी मठ में महन्त बन जाओ। इस कथन में अतिशयोक्ति हो सकती है परन्तु सच्चाई भी है। अत: मेरी विचारशील, वेदभक्त, ऋषि-ऋण को अनुभव करने वाले, देश की एकता एवं अखण्डता चाहने वालों आर्य विद्वानों, अधिकारियों एवं आर्य जनों से विनम्र प्रार्थना है, आर्य समाज की वर्तमान दुर्दशा को समाप्त करें। क्षणभंगुर मिथ्या मान सम्मान एवं धन के मोह से ऊपर उठे, ईश्वर आज्ञा का पालन करते हुए सच्चा यश एवं ईश्वर की प्रसन्नता रूपी सचा धन संचय करने का यत्न करें। शुद्धि का चक्र चलाकर आर्य जाति एवं देश की स्वाधीनता बचाने के लिये आगे आवें।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मानव जीवन का चरम लक्ष्य

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

– पू. स्वामी सत्यपति जी

योग विद्या ब्रह्मविद्या बड़ी सूक्ष्म विद्या है। यह मनुष्य जीवन कितना मूल्यवान है। जीवन काल बहुत अल्प है। कल भी रहेगा या नहीं कह सकते। मनुष्य जीवन की सफलता किसमें हैं ? ईश्वर की प्राप्ति करने ईश्वर को जानने-पा लेने में है, और विफलता न जानने में है। मनुष्य जीवन पाकर भी जो ईश्वर को नहीं पाता, वह न तो अपना न अन्यों का भला करता है।

जो भी व्यक्ति शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म, शुद्ध उपासना अपनायेगा, उसका लक्ष्य सदा ईश्वर ही बना रहेगा। जब ईश्वर ही लक्ष्य बना रहेगा तो उत्तम कार्य ही करता रहेगा। ऐसा करते-करते एक समय आयेगा कि वह अपने परम उद्देश्य ईश्वर की प्राप्ति कर लेगा भले ही अगले जन्म में हो। ईश्वर बहुत प्रयत्न, तप, त्याग, परिश्रम करने से प्राप्त होता है।

आज प्राय: सभी ने अपना लक्ष्य लौकिक सुख (तीन एषणाओं) को पूर्ण करना बना रखा है। ईश्वर प्राप्ति को आडम्बर छल-कपट-झूठ समझते हैं। अपने लौकिक जीवन को रूपान्तरित (छोड़) कर यहाँ ब्रह्म-विद्या सीखें। उत्पन्न हो गये, बड़े होकर खाते-पीते, व्यापार करते वृद्ध होकर समाप्त हो गये। यह जीवन केवल इतना ही नहीं है। कुछ काल पहले हममें से कोई नहीं था, कुछ काल बाद कोई नहीं रहेगा। क्या वर्तमान ही सब कुछ है ? क्या खाना-पीना वस्त्र-मकान बनाने सभी कामनायें पूर्ण हो जाती हैं ? हम आत्मायें एक चेतन वस्तु, पदार्थ तत्त्व है। ये हमारे मन बुद्धि आदि उपकरण-ईश्वर प्रदत्त है। बाहर के जल, थल, वायु, सूर्य आदि हमारे जीने के साधन हैं। इन साधनों का हमसे संवद्ध है। इनको लेकर हम अपने साध्य को प्राप्त कर सकते हैं। यह विद्या जीवन में कैसे आये ? कोई भी विद्या-श्रवण, मनन निदिध्यासन और साक्षात्कार की पद्धति से आती है। योगाभ्यास (चित्त-वृत्ति निरोध) कहीं अन्य स्थल आकाश-पाताल में नहीं, परन्तु अपने इसी शरीर में अंत: स्थल में करना है। हमारी कामना नित्य आनंद को प्राप्त करने से पूर्ण हो जायेगा। कोई भी कितनी ही दुर्लभ वस्तु हो प्रयास करने पर प्राप्त की जा सकती है।

ईश्वर प्राप्ति लक्ष्य क्यों हो ? क्योंकि इसे प्राप्त किये बिना मनुष्य की सब कामनाएँ पूर्ण नहीं हो पाती। 'सब दु:खों से छूटना और सर्वानन्द की प्राप्ति' यह मनुष्य ही क्यों पशु-पक्षी आदि हर प्राणी की इच्छा या लक्ष्य होता है।

परन्तु मनुष्य जाति आज अपना विपरीत लक्ष्य बना चुकी है। पांच इन्द्रियों के भोगों की प्राप्ति के लिए व्यक्ति सब क्रियायें कर रहा है। इन्हीं की पूर्ति के लिए भाई का गला भाई काट रहा है। पति-पत्नी का मूल्य भी धन-सम्पत्ति से आंका जाता है।

.यदि आपने केवल अच्छा सुना व जाना, पर किया नहीं तो समझें ईश्वर और ऋषियों की परम्परा को ठुकरा दिया। समाज में धन-सम्पत्ति के लिए बुरे से बुरे काम लिये जाते हैं। निर्दोष को सरेआम मार दिया जाता है। पर हमें ईश्वर वेद और ऋषियों की आज्ञा का पालन करना है। मरण जन्म तो होते रहते हैं। संसार अनादि काल से चला आ रहा है। अनन्तकाल तक चलता रहेगा। अपने उल्टे आचार-विचार को बदल डाले, चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति को सदा समझ रखें। शुद्ध ज्ञान-कर्म-उपासना से योगी बनकर ईश-साक्षात्कार से ही नित्य आनन्द की प्राप्ति होगी।

कोई भी कार्य रूचि के अनुपात से कठिन और सरल होता है। जिसमें रूचि वह सरल, जिसमें रूचि नहीं वह कठिन।

मनु महाराज कहते हैं - चरित्र निर्माण की शिक्षा लेने इस देश में सारे भूगोल के लोग आते थे। यह शिक्षा वह योग विद्या ही है, जिससे मानव अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

स्वास्थ्य का आधार - ९

स्नान

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

पिछले दों अंकों में मैंने प्राणायाम का संक्षिप्त परिचय दिया यह विषय विस्तृत है। किसी अनुभवी व्यक्ति से ही इसे सीखना चाहिए इसका विशेष उल्लेख अगले अंकों में करेंगे। इस लेख में स्नान के विषय में थोड़ी चर्चा कर रहे हैं। साधारणतया स्नान का अर्थ शरीर को किसी भी प्रकार के पानी से गीला करना समझते हैं। परन्तु ऐसे स्नान से लाभ की अपेक्षा हानि ही होती है। प्रतिदिन स्नान करना स्वास्थ्य के लिये अति आवश्यक है इसके लिये आयुर्वेद में लिखा है -

पवित्रं वृष्यमायुष्यं श्रम स्वेदमलापहम् ।
शरीर बल सन्धानं स्नानमोजस्करं परम् ॥ चरकसंहिता ॥

अर्थात् स्नान शरीर को स्वच्छ कर वीर्य एवं आयु को बढाता है थकावट पसीना मैल को दूर कर बल तथा ओज की वृद्धि करता है। यह हृदय एवं नेत्रों के लिये हितकारी है रक्त शुद्ध कर पाचकाग्नि को बढाता है। प्यास को दूर करता है। परन्तु लाभ विधिवत् स्नान करने पर ही प्राप्त होते हैं।

स्नान सदा स्वच्छ एवं ताजे पानी से ही करना चाहिये। गर्म पानी से स्नान करना उपयोगी नहीं है। कई बार इससे हानि भी हो सकती है। निर्बल तथा रोगी व्यक्तियों को ही साधारण गर्म पानी से स्नान करना चाहिये। अन्यथा शीतल जल से स्नान करना ही लाभदायक है। यदि गर्म पानी से स्नान करना पड़े तो उसे पहले पावों पर डाले। स्नान के आरंभ में गर्म पानी पहले सिर में कभी नहीं डालना चाहिये। तथा ठण्डा जल सदा पहले सिर पर डाले पैर को पीछे गीला करें। पानी अच्छी मात्रा में डालें जिससे सारे शरीर में ठण्डक पहुंच सके। खादी के वस्त्र या खुरदरे से शरीर को अच्छी तरह रगड़ कर पुन: पानी डालें इससे सारे शरीर में ताजगी आ जाती है रक्त शुद्ध होकर उसका प्रवाह बढ जाता है। स्नान करते ही भोजन न करें। स्नान के १५ मिनट पीछे भोजन करें तथा भोजन के ३ घंटे कम से कम २ घंटे पीछे स्नान करना चाहिये। एक वस्त्र पहनकर एकान्त शान्त वातावरण में स्नान करना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या भूत प्रेत का अस्तित्व है ?

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

यद्यपि सभी बुद्धिमान व्यक्ति सामान्यतया इस बात से सहमत हैं कि प्रत्यक्ष अनुमान एवं शब्द प्रमाण से जो वस्तु सिद्ध नहीं होती, उसका अस्तित्व नहीं होता। फिर भी कुसंस्कार लोकापवाद और कथा कहानियों के कारण अधिकतर के मन में भूत-प्रेत का भय बहुत बुरी तरह बैठा हुआ है। वैदिक सिद्धान्तों से प्रभावित व्यक्ति भी कई बार ऐसे भ्रमों में पड़ जाते हैं। पीत पत्रकारिता अर्थात् मिथ्या एवं कल्पित बातों को संसनी खेज घटनाओं के रूप में छापकर पत्रिका की बिक्री बढाना जैसे कुकृत्य भी इन भूत-प्रेतों में आस्था का कारण है और लोगों के विशेषकर महिलाओं के मन में भूत-प्रेत का भ्रम बुरी तरह बैठा हुआ है। इससे कई बार हानि हो जाती है। अत: आईये देखें। वास्तविकता क्या है। पहले इन शब्दों के अर्थ को लें। ''प्रेत शब्द का अर्थ है जब किसी शरीर से जीवात्मा निकल जाय और शरीर पड़ा हो तो उसे प्रेत कहते हैं। इस विषय में मनुस्मृति का प्रमाण भी है। ''गुरो: प्रेतस्य शिष्यस्तु'' और जब उस शरीर को जलाकर या दबाकर नष्ट कर दिया जाय तो उसकी संज्ञा भूत हो जाती है। अर्थात् बीता हुआ। इससे अतिरिक्त इनकी कोई सत्ता नहीं, न ये योनि विशेष है। यदि ये योनि विशेष होती तो उनका प्रत्यक्षादि प्रमाणों से ज्ञान होता। उनका शरीर दूसरों को दिखता। इसके विषय में लोकापवाद है। कि अतृप्त आत्मायें भूत-प्रेत के रूप में घूमती है। परन्तु जीवात्मा बिना स्थूल शरीर के कोई चेष्टा नहीं कर सकती। न्यायदर्शन का एक प्रसिद्ध सूत्र है। ''चेष्टेन्द्रियार्थाशय शरीरम्'' अर्थात् शरीर होने पर ही जीवात्मा कोई चेष्टा करता है और इन्द्रियों द्वारा विषयों का ग्रहण करता है। बिना शरीर के जीवात्मा कोई चेष्टा या गति नहीं कर सकता। मृत्यु होने के बाद में जीवात्मा शरीर छोड़कर वायु के आश्रय से ईश्वर की व्यवस्था और अपने कर्मानुसार नये शरीर में चला जाता है। और जला या दबाकर पुराने शरीर को नष्ट कर दिया जाता है। इस प्रकार पुराना शरीर तो समाप्त हो गया। यदि जीवात्मा उस नये शरीर को छोड़कर आये तो मरा हुआ मानकर उस शरीर को भी नष्ट कर दिया जाय, जैसा पहले लिखा जा चुका है, जीवात्मा बिना शरीर के कोई चेष्टा कर नहीं सकता, फिर एक शरीर में दो जीवात्मा रहेगें कैसे। और दोनों एक शरीर से काम कैसे लेंगे ? इस प्रकार भूत-प्रेत के मानने से कितनी ही समस्याएं खड़ी हो जाती है। फिर भी कुछ पढ़े लिखे लोग वास्तविकता को न सोचकर इन मिथ्या बातों को फैलाते रहते हैं। इनमें पिलखुवा के एक भगत श्री रामशरणदास हुए हैं उसकी झूठी भूत-प्रेत के विषय में कल्पित कहानियां कल्याण पत्रिका में छपती रहती हैं। अभी अप्रैल के अंक में भी ''पढ़ो-समझो और करो'' विषय के अन्तर्गत उसकी इसी प्रकार की मिथ्या कहानी पार्वन श्राद्ध से प्रेतात्मा का उद्धार छपी है। ऐसी कहानियों में वह किसी एक पात्र को आर्य समाजी अवश्य घोषित करता है। क्योंकि आर्य समाज भूत-प्रेत जैसे ढोगों का तीव्र खण्डन करता है। अत: अपनी कहानी को प्रभावशाली सिद्ध करने के लिये ही वह किसी को आर्य समाजी लिख देता है। इन तथाकथित झूठे भक्तों और लेखकों को साधारण जनता पर दया नहीं आती। इस प्रकार के भ्रमों से साधारण जनता लुटी जा रही है। कुछ स्वार्थी लोग ऐसी अफवाह फैलाकर भोली-भाली जनता को लुटते आ रहे हैं अपने आपको परोपकारी एवं महात्मा मानने वाले लोगों का कर्त्तव्य था कि जनता को इस भप से बचाते और वास्तविकता से अवगत कराते परन्तु ये कैसे महात्मा जो जनता को लुटवाने में सहायक हो रहे हैं।

हमारा विचारशील सज्जनों से आग्रह है कि वे इस हानि की ओर ध्यान दें और ऐसे पाखण्डों मिथ्या भ्रमों से जनता को बचायें।

'द' अक्षर की दीक्षा

उपनिषद की कथा है। प्रजापति ब्रह्मा की तीन प्रकार की संताने थी। पहले देवता थे जिन्हें सब प्रकार के सुख वैभव प्राप्त थे, परन्तु वे सदा भोग-विलास में लीन रहते थे। दूसरे थे मानव, जो धन वैभव का अधिकतम संग्रह करने में संलग्न रहते थे, और तीसरे थे असुर या दानव, जो दूसरों पर सदा क्रूरता एवं अत्याचार किया करते थे। देवता, मानव और असुर तीनों विद्याध्ययन के लिए पिता प्रजापति के पास गए। तीनों ने ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए अपनी पढ़ाई पूरी की। ब्रह्मचर्यपूर्वक विद्याध्ययन के बाद देवताओं ने प्रजापति से कहा - ''भगवन् हमारी पढाई पूरी हो गई है, हमें दीक्षा दीजिए।''

प्रजापति ने दीक्षा दी- 'द' केवल एक अक्षर की। फिर पूछा- 'द' अक्षर का कुछ मतलब समझे। देवता बोले - ''हम समझ गए हैं। हम इन्द्रिय लोलुप हैं। आपने हमें शिक्षा दी है 'द' - 'दाम्यत' - इन्द्रियों का दमन करो।'' ब्रह्मा ने उत्तर दिया - ''हाँ, तुमने ठीक समझा है।''

पढ़ाई पूरी कर मानव भी प्रजापति के पास गए। उन्होंने भी पिता प्रजापति से दीक्षा देने की प्रार्थना की। प्रजापति ने उन्हें भी दीक्षा दी - 'द' अक्षर की। पूछा - ''इस 'द' का मतलब समझे ?'' मानव बोले - ''हम पूरी तरह समझ गए हैं। हम मानव लोभी हैं, हमें आपने 'द' से 'दत्त' 'दान दो' की शिक्षा दी है।'' प्रजापति ने स्वीकार किया कि मनुष्यों ने ठीक अर्थ समझा है।

अन्त में असुर प्रजापति के पास पहुंचे। उन्होंने भी प्रजापति से दीक्षा देने का अनुरोध किया। ब्रह्मा ने उन्हें भी दीक्षा दी 'द' अक्षर की। पूछा - ''इस 'द' अक्षर का मतलब समझे ?'' असुर बोले - ''हम लोग क्रूर हैं। आपने हमें 'द' अक्षर से कहा है - 'दयध्वम्' - 'दया करो'।'' वर्तमान समय में भी इस विश्व में देव, मानव और असुर तीनों ही प्रकार के व्यक्ति हैं। उनके लिए प्रजापति की सीख है - 'दमन करो इन्द्रियों का, नियंत्रण करो, लोभ मत करो, दान दो, और किसी पर भी कठोरता न करो। सब पर दया करो। आज कड़कती बिजली दैवी प्राणी के रूप में बार-बार कह रही है- 'द-द-द' 'दाम्यत' - दमन करो, 'दत्त'- दान करो, 'दयध्वम्' - दया करो।

ओमानन्द वेद महाविद्यालय देवधर गांधी नगर (इंदौर) में नया सत्रारम्भ

ओमानन्द वेद महाविद्यालय में २४.४.९८ से नया सत्रारम्भ हो चुका है। दशम कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को ही प्रवेश मिल सकेगा। जिसमें अष्टाध्यायी, काशिका, महाभाष्य तथा चारों वेद पढ़ाये जायेगें। शोध करने वाले छात्रों की भोजन, कपड़े, पुस्तक की व्यवस्था संस्थान की ओर से होगी। इसके लिये एम.ए. (प्रथम श्रेणी) संस्कृत व्याकरण से शास्त्री या आचार्य पास होना आवश्यक है। नैष्ठिक ब्रह्मचारियो को प्राथमिकता दी जायेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आत्मा की आवाज सुनिए

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यशपाल एक कर्मठ, सुशील, होनहार नवयुवक थे। विज्ञान के स्नातक होते ही उन्हें एक कम्पनी में अच्छी नौकरी मिल गई। वहां थोड़े ही समय में अपने परिश्रम और ईमानदारी का प्रभाव सब पर डाल दिया। उनकी प्रतिष्ठा भी बहुत थी। वेतन भी एक हजार रूपये मासिक था। उसके चार-पांच वर्ष के कार्य से ही कंपनी मालिक ने उसे कारखाने के लिए सामान खरीद के कार्य में लगा दिया। यद्यपि इस कार्य में पर्याप्त अनुभव की आवश्यक्ता होती है। इसका विशेष अनुभव नहीं था। परन्तु इस कार्य के लिए विश्वास पात्र व्यक्ति होना भी आवश्यक है, अत: यह कार्य यशपाल को सौंप दिया गया। वह दो-चार महिने में ही अच्छा अनुभवी हो गया। सामान भी पूरे परिश्रम से अपनी देख-रेख में कम खर्च में खरीदता। इससे प्रतिमाह कारखाने को ८-१० हजार रूपये की बचत होने लगी।

सामान विक्रेता व्यापारी सामान्यत: यही विचार रखते हैं कि सामान खरीदने वाला अधिकारी को बिना रिश्वत दिये काम नहीं चलता। अत: अनेक विक्रेताओं ने इस अफसर से भी इसी ढंग की बात की। अपने-अपने ढंग से लोभ दिया। परन्तु यशपाल ने स्पष्ट कह दिया, कि यदि इस ढंग की बातें फिर कही तो कंपनी सामान खरीदना बंद कर देगी।

एक ही रासायनिक कंपनी का सामान लगभग दो लाख रूपये का प्रतिमास इस कारखाने में खरीदा जाता था। उस कम्पनी का एक व्यक्ति यशपाल के पास आया, अपना माल दिखाया, जो पूरा ठीक नहीं था। उसे काम लेने से इनका सामान भी नरम बनता। सो यशपाल ने कह दिया, इसका चलाना कठिन है। तब व्यापारी ने इधर-उधर की बातें की ओर माल चलाने के बदले एक बहुत बड़ी राशि रिश्वत मे देने की बात कही। यशपाल ने मना किया, तो व्यापारी ने राशि और बढ़ा दी। तब उसका मन भी दब गया और व्यापारी को अगले दिन आने को कहा।

अब व्यापारी तो चला गया यशपाल के मन में द्वंद्व मच गया। इसी दुविधा में घर गया। वहां भी विचारों में उतार-चढ़ाव आते रहे। अंत में यशपाल ने मन बहलाने के लिए एक पुस्तक उठा ली। उसमें लिखा था कि अपनी आत्मा की आवाज सुनो -

यदाकूतात्समसुस्नोहृदो वा मनसो वा संभृतं चक्षु षो वा।
प्रेत सुकृतामुलोकं यत्र ऋषयो जामु: प्रयमसा: पुराणा:॥

(यद आकूतात) जो संकल्प युक्त (हृद: वा मनसं वा चक्षुष: वा) हृदय से या मन से या आंख आदि से (संभृतम्) अच्छी तरह धारण किया गया है। (तदनुप्रेत) तदनुकुल उत्तम रीति से चलो। (सुकृतामुलोकम्) उसी से शुभ लोगों को प्राप्त करोगे (यत्त ऋषयो) जहां पूर्वज ऋषि गये हों। वेद के इस मन्त्र में भगवान् ने आदेश दिया है कि जिस कार्य को आत्मा स्वीकार करती है। जिसे कहते हुए भय शंका लज्जा नहीं आती उन कर्मों को करना चाहिए वे ही सद्गति प्राप्त कराने वाले श्रेष्ठ कार्य हैं।

मनु जी महाराज ने भी धर्म का लक्षण बताते हुए लिखा है कि -

श्रुति: स्मृति: सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मन:।

वेद, स्मृति महापुरूषों का आचरण और अपनी आत्मा के जो प्रिय लगे वही धर्म है। एकान्त में जिस कार्य को करती हुई आत्मा डरती है वह पाप है। क्योंकि भगवान अंदर बैठा हुआ सावधान कर रहा है। इस बात को मनु जी ने कहा-

त्वं रहसि एकाकी आत्मानं मन्यसे दृढम्।
अन्त: स्थित स्ते आत्मनि पुण्यपापेक्षिता मुनि:॥

जो तू एकान्त में अपने आप को अकेला मान रहा है। वहाँ भी सर्वदर्शी भगवान् तेरे अन्दर बैठा देख रहा है। यह सब पढ़ते ही यशपाल को शांति मिल गई। उसके संकल्प विकल्प समाप्त हो गये और सही निर्णय प्राप्त हो गया। आत्मा पहले से ही ऊंची थी। अगले दिन नियत समय पर वह व्यापारी आया। यशपाल ने आते ही कह दिया। आपका माल नहीं चलेगा। व्यापारी उठकर चला गया। यह अपने कार्यों में लग गया।

थोड़ी देर पीछे मालिक ने यशपाल को बुलाया। जब वह उनके पास गया तो देखता है, वही व्यापारी वहां कुर्सी पर बैठा है। इसकी आंखे लाल हो गई। तभी मालिक ने कहा- बैठिये। ये हमारे मित्र हैं। आपकी परीक्षा के लिये शर्त लगी थी। इन्होंने कहा था लोभ देकर किसी को भी खरीदा जा सकता है। मैंने कहा था। यशपाल को कोई नहीं खरीद सकता सो मैं जीत गया। ये हार गये। यशपाल वहां आया उसकी आंखों से ईश्वर की दया याद कर दो आंसू टपक गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय-कॉफी से मांगें माफी

श्री गोपानीथ अग्रवाल

आधुनिकता व दिखावे की होड़ में अथवा झूठे आनंद की मृग मरीचिका की तलाश में आज हम जिन अनेक हानिकारक पदार्थों को अच्छा व उत्साह लाने वाला मान बैठे हैं उसमें चाय-कॉफी व अनेक सौफ्ट ड्रिंक्स का प्रमुख स्थान है। इन पदार्थों में उपस्थित कैफीन व उसके अन्य सगे सम्बंधी पदार्थ शरीर को रोगों की ओर धकेलते हैं।

इन पेयों में कोई पोषक तत्व तो होता ही नहीं, उल्टे यह शरीर की क्रिया को हानि पहुंचाते हैं व विटामिन्स को, जो हमारे शरीर तन्त्र के लिये अत्यधिक आवश्यक है और जो अन्य पदार्थों के द्वारा हमारे शरीर में पहुंचते हैं उन्हें भी ये पदार्थ बर्बाद कर देते हैं।

यह एक विडम्बना ही है कि हम अपनी कार में तो शुद्ध पानी ही डालना पसन्द करते हैं किन्तु अपने शरीर में हर प्रकार के पदार्थ उंडेल लेते हैं।

कैफीन से रक्तचाप व दिल की धड़कन की गति कुछ बढ़ती है अत: एक बार यह सैन्ट्रल नर्वस सिस्टम को प्रोत्साहित (Stimulote) करती सी प्रतीत होती है। किन्तु इसका अंतिम परिणाम निराशा ही है। Dr. A.D. Truman ने अपने लेख "Coffee-break may break you" में लिखा है कि एक कप कॉफी में २ से ४ ग्रेन व एक कप चाय में १ से २ ग्रेन कैफीन होता है। यह पदार्थ दिमाग नर्वस सिस्टम दिल पेट व शरीर के अन्य हिस्सों को खराब करता है।

इस पदार्थ का असर तो थके हुए घोड़े को चाबुक मारना जैसा ही है जो ठंड, बुखार, सरदर्द, थकान आदि की अवस्था में तुरन्त प्रभाव करता है सा प्रतीत होता है किन्तु बाद में इसके पीने वाले को हानि ही होती है। जिस कार्य को करते समय सुख सा लगे किन्तु बाद में दु:ख व पछतावा दे, उसे करना बुद्धिमानी नहीं है।

Boston Drug Surveillance Programme Report, Dallas Texas स्कूल रिपोर्ट व Harvard School of Public Halth की खोज के परिणामों व कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी द्वारा २५००० कॉफी पीने वालों की जांच से यथातथ्य सामने आता है कि चाय-कॉफी आदि पदार्थ डिप्रैशन, नर्वसनैश अल्सर आदि को बढावा देते हैं।

Dr. Jullier Morton ने जो १३ वर्ष तक Oesphagus के कैंसर का अध्ययन किया उसके अनुसार चमड़े उद्योग में लगे कर्मचारियों चाय पीने वालो व शराब के शौकीनों को कैंसर का खतरा अधिक है और उसका मुख्य कारण चाय में पाया जाने वाला पदार्थ टैनिन (Tannin) है।

Dr. Phillip Cole ने अनेक रोगियों के अध्ययन के बाद कॉफी से ब्लैडर कैंसर का सम्बन्ध बताया है।

यह समझना कि चाय व कॉफी चिन्ता व निराशा की स्थिति को मिटाकर उत्साह लाती है, एक भ्रम है क्योंकि Michigan, U.S.A. में Psychiatric के रोगियों के अध्ययन से यह प्रकाश में आया है कि जिन पदार्थों में कैफीन है वे चिन्ता व निराशा उत्पन्न करते हैं। जितने अधिक कैफीन युक्त पदार्थों चाय, कॉफी, कोला आदि के आदि हों, उतनी ही चिन्ता व निराशा अधिक होती है।

Dr. A.S. Krisnnawamy जो बंगलौर के एक अवकाश प्राप्त सिविल सर्जन हैं, के अनुसार कॉफी गैस उत्पन्न करती है, व पैप्टिक अल्सर, उच्च रक्तचाप अनिद्रा आदि का कारण बनती है व गुर्दे खराब करती है।

कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी के अध्ययन के अनुसार नियमित Cola लेने वालों को अल्सर का खतरा ५० प्रतिशत अधिक है।

सौफ्ट ड्रिंक्स में जो फौस्फौरिक, एसिड, सिटरिक एसिड, लैक्टिक एसिड, टेनिक एसिड, लीथियम सिटरेट व सैकीन आदि होते हैं वे दांतों पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

हार्वर्ड स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ के डॉ. ब्रेम मैकमोहन तथा उनके सहयोगियों ने अपने शोध कार्यों की रिपोर्ट में लिखा है कि दो कप कॉफी रोज पीने वालों में (पैक्रियाटिक) अग्नाशयी कैंसर की आशंका आम लोगों से १८ गुना अधिक होती है! जो लोग तीन कप या उससे अधिक कॉफी पीते हैं उनमें यह आशंका तीन गुना बढ़ जाती है। इसी टीम ने न्यू इंग्लैण्ड के ग्यारह अस्पतालों से ३६० कैंसर रोगियों का परीक्षण किया और पाया कि ये सब कॉफी का सेवन करते थे।

उपर्युक्त तथ्यों को जानने के बाद आप स्वयं ही निर्णय करें कि इन पदार्थों का उपभोग आपके व आपके परिवार के लिये कहां तक उचित है?

(सहयोगी पावमानी से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्री आसाराम बापू पर एक सरल चिन्तन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामी परमानन्द जी सरस्वती
अध्यक्ष पाखण्ड खण्डन मंच

प्रिय पाठको !

श्री आसाराम जी का जन्म सिन्धु नदी के तट पर बसे नवाबशाह जिले के वेरानि गांव में श्री धाऊमल जी सिंह मलानी के घर १७ अप्रैल १९४१ चैत्र कृष्ण पक्ष षष्ठी के दिन हुआ। इनकी माता जी का नाम भंगीवा था और इनका नाम आसुमल रखा गया। इनकी प्राथमिक शिक्षा सिन्धी भाषा में हुई। भारत पाकिस्तान के बंटवारे में इनका सब कुछ लुट गया। ये भारत में आ गये। सात वर्ष की आयु में इन्हें प्राथमिक शिक्षा के लिए जयहिन्द हाई स्कूल मणिनगर (अहमदाबाद) में प्रवेश दिलाया गया। जब इनकी आयु १० वर्ष की हुई तब इनके पिता धाऊमल का निधन हो गया। तब इन्होंने तीसरी कक्षा पास कर पढाई छोड़ दी और परिवार को आर्थिक मदद पहुंचाने के लिये सिद्धपुर में एक दुकान में नौकरी कर ली। इनका विवाह श्री लक्ष्मीदेवी के साथ हो गया। १७ अक्टूबर १९६४ को इन्होंने घोषणा कर दी कि मुझे परमात्मा के साक्षात् दर्शन हो गये है और अपना नाम आसुमल के जगह आसाराम रख लिया। फिर इसके बाद नाम के साथ बापू शब्द जोड़ दिया। ये है इनका संक्षिप्त परिचय -

आज मेरे समक्ष ऋषि प्रसाद नामक मासिक पत्रिका फरवरी १९९७ का स्वर्ण जयंती अंक है। पत्रिका का नाम ऋषि प्रसाद देख कर मेरा मन इस पत्रिका को पढ़ने के लिए लालायित हो उठा। क्योंकि मुझे यह विदित है कि ऋषि मन्त्र द्रष्टा को कहते हैं। जब इस पत्रिका का नाम ही ऋषि प्रसाद है तो जरूर इसके अंदर गंभीर विषयों का ही प्रतिपादन किया गया होगा। इस आशय से मैंने इस पत्रिका को आदि से अन्त तक पढ़ा। पढ़ लेने पर मुझे तुलसीदास जी की यह चौपाई याद आ गई - विष रस भरा कनक घट जैसे ॥ आज लोक में यह देखा जाता है कि निर्धन भी अपना नाम लक्ष्मी प्रसाद लिखता है। शायद इसी नीति का अनुकरण कर इन्होंने पत्रिका का नाम ऋषि प्रसाद रख दिया हो। आसाराम बापू पृष्ठ ३ पर लिखते है कि भगवान् श्री राम जब करीब १६ वर्ष के हुए तब तीर्थ यात्रा करके आये उन्हें वैराग्य हुआ। उन्होंने खाना-पीना तक छोड़ दिया। अत: वे दिन पर दिन कृश होने लगे।

समीक्षा- मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि श्री आसाराम जी ने बाल्मीकि द्वारा रचित रामायण और तुलसीदास जी द्वारा लिखित रामचरित मानस को नहीं पढ़ा यदि पढ़े होते तो राम के विषय में सही जानकारी होती फिर इस तरह की बेतुकी बातें न लिखते। १५ वर्ष की आयु में तो राम विश्वामित्र जी के साथ चले गये थे। पूरे १० वर्ष विश्वामित्र के साथ रह कर अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा ली और २५ वर्ष की आयु में जनक का धनुष तोड़ कर सीता का पाणिग्रहण किया। खाना-पीना तो रोगी छोड़ता है या पागल इसे बैराग्य नहीं कहते। मैं आसाराम जी से जानना चाहता हूँ कि वह कौन सा तीर्थ है जहां जाने से वैराग्य उत्पन्न हो जाता है और लोग खाना-पीना छोड़ देते हैं क्या आप ने वह तीर्थ किया है या अपने किसी शिष्य को कराया है ? उत्तर दें।

पृष्ठ ४ पर लिखा कि श्री रामजी ने बताया कि तीर्थ यात्रा के अन्नतर मेरा मन विवेक से पूर्ण हो गया। जिससे मेरी बुद्धि भोगों की ओर से नीरस हो गई और उसके द्वारा मैंने इस प्रकार विचारना आरंभ किया। यह जो संसार का विस्तार है इसमें क्या सुख है ? ये जितने भोग है वे सब दु:ख रूप है। जो क्षण भंगुर है उसे ही सब मेरा-मेरा कर रहे हैं। वास्तव मे तो कोई किसी का नहीं है।

समीक्षा - धन्य हो सन्त जी। राम माता-पिता भाई पत्नी आदि को क्या अपना नहीं मानते थे। जब उनकी बुद्धि भोगों की ओर से नीरस हो गई थी तब उन्होंने सीता के साथ विवाह क्यों किया ? फिर सीता को प्राप्त करने के लिये हिंसक युद्ध क्यों किया ? वन से वापस आकर राज्य भोग क्यों किया ? क्या आसाराम जी बता सकते हैं ?

आगे लिखा कि श्रीरामचन्द्र जी की बातें जिन लोगों ने सुनी वे अयोध्या की राजसभा के लोगों के अलावा आकाशचारी सिद्ध, गन्धर्व, किन्नर, नारद, व्यास और पुलह आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा देवता, देवराज इन्द्र, विद्याधरगण एवं महान दिव्य नागों ने भी श्रीरामचन्द्र जी की वे विचित्र अर्थ से परिपूर्ण और परम उदार बातें सुनी थी।

समीक्षा - मेरी समझ में ये नहीं आता कि इस तरह की निराधार गप्पों से श्री आसाराम जी को कौन सा पद लाभ है ? जबकि तुलसी दास जी ने लिखा है -

चौपाई - नहिं असत्य सम पातकपुन्जा। असत्य से बड़ा और कोई पाप नहीं है। यह दुनिया जानती है कि व्यास जी श्री कृष्ण के समय में हुए हैं और आसाराम जी उन्हें दशरथ के दरबार में उपस्थित कर इतिहास को झुठला रहे हैं। मुझे तो आश्चर्य यह है कि इनके अनुयायी इनकी इन गप्पों को आंख बन्द कर कैसे स्वीकार कर लेते हैं ? पृष्ठ (५) - सत्संग सुनने के बाद श्रीराम सत्संग के विचारों का मनन करते थे उनका चिन्तन करते थे कि जगत् भ्रममात्र है स्वप्न है। जिसकी जैसी मान्यता होती है उसे जगत् वैसा ही भासता है। वास्तविक सुख क्या है ? सार तत्त्व क्या है ? मुनीश्वर ने बताया है कि वह अगर अजर अखण्ड अविनाशी शाश्वत और एक रस है। उन्हें अपने उद्धार की इच्छा थी ज्ञान प्राप्ति करने की लगन थी।

समीक्षा - जगत् को भ्रम मात्र एवं स्वप्नवत् कहना विद्या के अभाव को ही सूचित करता है। जैसे - रस्सी में सांप का भ्रम और सांप में रस्सी का भ्रम अज्ञान रूपी अंधकार के कारण ही भ्रम उत्पन्न होता है। जहां ज्ञान रूपी प्रकाश है वहां यह भ्रम नहीं होता। रही बात स्वप्न की यदि हम जगत् को स्वप्नवत् मानें तो संसार में किये हुए कर्मों का फल हमें नहीं मिलना चाहिए। तुलसी दास ने लिखा है। कर्म प्रधान विश्व करिराखा। जो जस करहि सो तस फल चाखा ॥ यह लिखना कि राम को अपने उद्धार की इच्छा थी। केवल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपना उद्धार करना तो स्वार्थियों का काम है। राम तो परोपकारी थे। उनके लिए ऐसा कहना राम की निन्दा करना और मूर्खता की पराकाष्ठा है।

योगियों को भी अपर ईश्वर दूसरा ईश्वर कहते हैं। जिसको वासना नहीं है वे सब ईश्वर रूप है। पृष्ठ ६ पर लिखा। जिसने भी भगवान् को जाना वह भगवत् स्वरूप हो गया।

समीक्षा - श्री आसाराम जी यह लिख कर अपने अनुयायियों को यह बताना चाहते हैं कि हम अपर ईश्वर हैं और भगवान् को जानते हैं इसलिए भगवत् स्वरूप हैं। इसलिए तुम लोग भी मुझे भगवान् समझ कर मेरी ही पूजा अर्चना किया करो। पृष्ठ (८) में लिखते है कि कौशल नरेश की बेटी कौशिल्या का भाग्य बहुत अच्छा है। उसकी शादी राजा दशरथ के साथ होगी उसके घर स्वयं भगवान् बालक राम का रूप लेकर जन्म लेंगे और राम के साथ तुम्हारा युद्ध होगा वे तुम्हें रामपुरी पहुंचायेंगे।

समीक्षा - धन्य हो सन्त जी पहिले तो संसार को भ्रम एवं स्वप्नवत् राम से ही प्रतिपादित कराया और यहां भगवान् का ही जन्म राम को लिखते हो। तो क्या भगवान् को पहिले यह मालूम नहीं था कि संसार भ्रम वा स्वप्नवत् है, यदि था तो उन्होंने इस भ्रम रूपी संसार में क्यों जन्म लिया ? और पहिले आपने यह लिखा है कि राम अपना उद्धार चाहते थे तो क्या भगवान् राम नर्क में थे जो उद्धार चाहते थे ?

पृष्ठ (१९) रावण ने सोचा कि अब कुछ करना पड़ेगा। अतः उसने अपनी अदृश्य विद्या का प्रयोग करने का विचार किया। जिस दिन शादी थी उस दिन कौशल्या स्नान आदि करके बैठी थी और सहेलियां उसे हार श्रृंगार से सजा रही थी उस वक्त अवसर पाकर रावण ने कौशल्या का हरण कर लिया और उसे लकड़ी के बक्से में बन्द करके वह बक्सा पानी में बहा दिया। इधर कौशल्या के साथ शादी करवाने के लिये दुल्हा दशरथ को लेकर राजा आज गुरू वशिष्ठ तथा बरातियों के साथ कौशल देश की ओर निकल पड़े थे। एका-एक दशरथ और वाशिष्ट के हाथी चिंघाड़ कर भागने लगे। महावतों की लाख कोशिशों के बावजूद भी वे रूकने का नाम नहीं ले रहे थे। तब वशिष्ट ने कहा छोड़ो हाथी जहां जाना चाहते हों जाने दो। हाथी दौड़ते भागते वहां पहुंच गये जहां पानी में बहते हुए लकड़ी का बक्सा किनारे आ गया था। बक्सा देखकर सब चकित हो गये। उसे खोलकर देखा तो अन्दर से श्रृंगार से सजी एक कन्या निकली।

समीक्षा - शेखचिल्ली को भी मात देने वाली यह मन गढ़न्त कहानी ने श्री आसाराम जी की विद्या की पोल खोल दी है। मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी ऐसा काम नहीं करेगा। जैसा कि इन्होंने रावण पर रोपित किया है। रावण ने कौशल्या का अपहरण क्यों किया था केवल महल से निकाल कर उसे सुरक्षित पानी में बहा देने के लिये। इस विवेकहीन कहानी को बुद्धि के दिवालिये ही मान सकते हैं। जिससे जरा भी सोचने समझने की क्षमता होगी वह इसे कोरी गप्प ही मानेगा। राजा और राजपरिवार की सवारी रथ होते थे हाथियों का उपयोग केवल सेना के ही लोग करते थे। दशरथ और वाशिष्ठ को हाथी पर सवार लिखना अज्ञानता की ही निशानी है। फिर बरात में तो और बहुत हाथी रहे होंगे वे क्यों नहीं भागे क्या आसाराम जी इसका उत्तर दे सकेंगे ?

१३५ किलो का साढ़े छः फूट लम्बा बालक

१३५ किलो का बालक और वह भी साढ़े छः फुट लम्बा कहीं वह अप्रैल फूल पर किया जाने वाला मजाक तो नहीं है, ऐसा तो अनुमान किसी प्रौढ़ व्यक्ति का भी न तो वजन होता और न ही कद।

११ वर्ष का यह बालक इन्द्रा कालोनी, रोहतक निवासी दुनिया भर के डाक्टरों के लिए शोध का विषय बना हुआ है। विकास के पिता रमेश कुमार गुलानी शहर जयपुर में काम करते हैं जबकि इसकी माता रंजना एक गृहणी हैं।

बताया गया है कि विकास का जन्म जून १९८७ में हुआ। अपने जन्म के लगभग सवा साल तक विकास कद तथा वजन में अप्रत्याशित रूप से वृद्धि होने लगी। कपड़े छोटे हो जाते हैं। अपने वजन और कद के कारण विकास स्कूल में अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों की हंसी का पात्र बनने लगा। परिणाम स्वरूप उसने कक्षा चार में ही स्कूल छोड़ दिया। बताया गया है कि इसके खाने-पीने की मात्रा भी बहुत अधिक है। एक दिन में वह २४ रोटियों के अतिरिक्त सब्जी, दूध, चांवल व अन्य भी बहुत कुछ खा लेता है। इसके बावजूद संगीत सुनने, गाना गाने तथा बच्चों के साथ ताश खेलने का शौक रखने वाले विकास का मानसिक स्तर अपनी उम्र के अनुरूप ही है।

(सांध्य महालक्ष्मी भाग्योदय से साभार)

लक्ष्मी कहां रहती है

वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे दक्षे नरे कर्मणि वर्त्तमाने।
अक्रोधेन देव परे कृतज्ञे जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्ण सत्वे॥

मैं सुन्दर मधुर भाषी, चतुर, अपने कर्त्तव्य में लीन क्रोधहीन, भगवत्परायण, कृतज्ञ जितेन्द्रिय और बलशाली पुरूष के पास बराबर बनी रहती हूँ।

स्वधर्म शीलेषुच धर्मवित्सु वृद्धोपसेवानिरते च दाने।
कृतात्मनि क्षान्तिपरे समर्थे क्षान्तासु दान्तासु तथा बलासु॥

मैं स्वधर्म का आचरण करने वाले धर्म की मर्यादा को जानने वाले वृद्ध जनों अथवा गुरूजनों के सेवा में तत्पर रहने वाले जितेन्द्रिय आत्मविश्वासी, क्षमाशील और समर्थ पुरूषों के साथ रहती हूँ। साथ ही जो स्त्रियाँ सदा सत्यवादिनी सत्याचरण- परायण सदा निष्कपट तथा सरल स्वभाव संपन्ना रहती है वे भी मुझे बहुत पसन्द हैं, इसी प्रकार देवता और गुरूजनों के पूजा में निरत और सदा हंस मुख रहने वाली सौभाग्य युक्त, गुणवती, पतिव्रता, कल्याण कामिनी और अलंकृत स्त्रियों के पास रहने में मुझे बड़ा आनन्द आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुरी की रथयात्रा दयानन्द की दृष्टि में

कुञ्जदेव मनीषी

सारे विश्व को एक नया दृष्टिकोण देने वाले युग द्रष्टा स्वनाम धन्य महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में भारतीय मतमतान्तरों की समीक्षा की है। उससे विवेकशील लोगों में एक क्रान्ति मच जाती है, और एक नया विवेक जागृत होता है। विवेक लाभ की दृष्टि से यह लेख विचारशील लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। ताकि उन्हें एक नया मार्ग दर्शन दयानन्द की इस समीक्षा से हो सके। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने प्रश्नोत्तर रूप में अपना विचार रखा है। पुरी जगन्नाथ के संबंध में भी एक प्रश्नोत्तर मौजूद है। उसे यहां यथावत् रखकर कुछ विचार करेंगे।

"प्रश्न : भला यह तो जाने दो परन्तु जगन्नाथ जी में प्रत्यक्ष चमत्कार है। एक कलेवर बदलने के समय चंदन का लकड़ी समुद्र में से स्वयमेव आती है। चूल्हे पर ऊपर-ऊपर सात हण्डे धरने से ऊपर-ऊपर के पहिले पकते है। और जो कोई जगन्नाथ की परसादी न खावे तो कुष्ठी हो जाता है और रथ अपने आप चलता है पापी को दर्शन नहीं होता है। इन्द्र दमन के राज्य में देवताओं ने मन्दिर बनाया है। कलेवर बदलने के समय राजा, पण्डा और बढ़ाई मर जाने आदि चमत्कारों को तुम झूठ न कर सकोगे!

उत्तर - जिसने बारह वर्ष पर्यन्त जगन्नाथ की पूजा की थी वह विरक्त होकर मथुरा में आया था, मुझसे मिला था। मैंने इन बातों का उत्तर पूछा था उसने ये सब बातें झूठ बतलाई। किन्तु विचार से निश्चय यह है कि जब कलेवर बदलने का समय आता है तब नौका में चन्दन की लकड़ी ले समुद्र में डालते हैं वह समुद्र की लहरियों से किनारे लग जाती है। उसको ले मूर्तियाँ बनाते हैं। जब रसोई बनती है तब कपाट बन्द करके रसोईयों के बिना अन्य किसी को न जाने और न ही देखने देते हैं। भूमि पर चारों ओर छः और बीच में एक चक्रात्कार चूल्हे बनाते हैं। उन हण्डों के नीचे घी मिट्टी और राख लगा छः चूल्हों पर चांवल पका उनके तले मांजकर उस बीच के हंडे में उसी समय चांवल डाल छः चूल्हों के मुख लोहे के तवों से बांधकर दर्शन करने वालों को जो कि धनाढ्य हो बुला के दिखलाते हैं। ऊपर-ऊपर के हण्डों से चांवल निकाल, पके हुए चांवलों को दिखला नीचे के कच्चे चांवल को निकाल दिखा के उनसे कहते है कि कुछ हण्डें के लिये रख दो। आँख के अंधे गाठ के पूरे रूपये अशर्फी धरते और कोई-कोई मासिक भी बांध देते हैं।

शूद्र नीच लोग मन्दिर में नेवैद्य लाते हैं। जब नेवैद्य हो चुकता है तब वे शूद्र नीच लोग झूठा कर देते हैं। पश्चात् जो कि रूपया देकर हण्डा लेवे उसके घर पहुंचाते और दीन गृहस्थ और साधु सन्तों को लेके शूद्र और अन्त्यज पर्यन्त एक पंक्ति में बैठ झूठा एक दूसरे का भोजन करते हैं। जब वह पंक्ति उठती है तब उन्हीं पत्तलों पर दूसरों को बैठाते जाते हैं। महा अनाचार है और बहुतेरे मनुष्य वहां जाकर उनका झूठा न खाके। अपने हाथ बना खाकर चले आते हैं, कुछ भी कुष्ठादि रोग नहीं होते। और उस जगन्नाथ पुरी में भी बहुत से कुष्ठी है नित्यप्रति झूठा खाने से भी रोग नहीं छूटता, और उस जगन्नाथपुरी में भी बहुत परसादी नहीं खाते, और यह जगन्नाथ में बाम मार्गियों ने भैरवी चक्र बनाया है। क्योंकि सुभद्रा श्री कृष्ण और बलदेव की बहन लगती है। उसी को दोनों भाईयों के बीच में स्त्री और माता के स्थान बैठाई है। जो भैरवी चक्र न होता तो यह बात कभी न होती।

और रथ के पहिये के साथ कला बनाई है। जब उनको सूधी घूमाते है, तब रथ चलता है। जब मेले के बीच में पहुंचता है तभी उसकी कील उलटी घुमा देने से रथ खड़ा रह जाता है। पुजारी लोग चिल्लाते है दान देओ, पुण्य करो जिससे जगन्नाथ प्रसन्न होकर अपना रथ चलावें, अपना धर्म रहै। जब तक भेंट आती है तब तक ऐसे ही चिल्लाते हैं। जब आ चुकती है। तब एक ब्रजवासी अच्छे कपड़े दुशाला ओढकर आगे खड़ा रहकर स्तुति करता है। "हे जगन्नाथ स्वामिन! आप कृपा करके रथ को चलाईये हमारा धर्म रक्खो" इत्यादि बोलकर साष्टांग दण्डवत् करके ब्रजवासी रथ पर चढता है। उसी समय कील को सुधा घूमा देते हैं और जय-जय शब्द बोल सहस्त्रों मनुष्य रस्सा खींचते हैं। रथ चलता है।

जब बहुत से लोग दर्शन को जाते हैं तब इतना बड़ा मन्दिर है कि जिसमें दिन में भी अन्धेरा रहता है और दीपक भी जलाना पड़ता है। उन मूर्त्तियों के आगे परदे खेंचकर लगाने के पर्दे दोनों ओर रहते हैं। पण्डे, पूजारी भीतर खड़े रहते हैं। जब एक ओर वाले ने पर्दे को खींचा, झट मूर्त्ति आड में आ जाती है। तब सब पण्डे, पूजारी पुकारते हैं- तुम भेंट धरो तुम्हारे सब पाप छूट जायेगें, तब दर्शन होगा। शीघ्र करो वे बिचारे भोले मनुष्य धुर्त्तों के हाथ लूटे जाते हैं और झट पर्दा दूसरा खेंच लेते हैं तभी दर्शन होता है। तब जय शब्द बोल के प्रसन्न होकर धक्के खाके तिरस्कृत हो चले आते हैं।

इन्द्रमन वहीं है जिसके कुल में अब तक कलकत्ते में है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वह धनाढ्य राजा और देवी का उपासक था। उसने लाख रूपया लगाकर मन्दिर बनवाया था इसलिये की ये आर्यावर्त देश के भोजन का बखेडा इस रीति से छुडावें। परन्तु वे मूर्ख कब छोड़ते हैं देव मानो तो उन्हीं कारीगरों को मानो कि जिन शिल्पियों ने मन्दिर बनाया।

राजा, पण्डा और बढ़ई उस समय नहीं मरते परन्तु वे तीनों उपस्थित रहते हैं वे तीनों प्रधान रहते हुए छोटों को दुःख देते होंगे। उन्होंने सम्मति करके उसी समय अर्थात् कलेवर बदलने के समय उपस्थित रहते हैं, मूर्ति का हृदय पोला रक्खा है। उसमें सोने के सम्पुट में एक सालिगराम रखते हैं कि जिसकी प्रतिदिन धोकर चरणामृत बनाते हैं, उस पर रात्रि की शयन आर्त्ती में उन लोगों ने विष का तेजाब लपेट दिया होगा। उसको धोके उन्हीं तीनों को पिलाया होगा कि जिससे वे कभी मर गये होगें। मरे तो इस प्रकार और भोजन भट्टों ने प्रसिद्ध किया होगा कि जगन्नाथ जी अपने शरीर बदलने के समय तीनों भक्तों को भी साथ ले गये।

ऐसी झूठी बातें पराये धन ठगने के लिये बहुत सी हुआ करती हैं। सत्यार्थ प्रकाश ११ वां समुल्लास ॥

इस समीक्षा से पाठकों का बहुत सा भ्रम दूर हो जाता है और मध्यकाल में भारत के सौभाग्य में एक ही चीज हाथ लगी वह शानदार चीज है भारत का दुर्भाग्य। इस दुर्भाग्य का कारण मन्दिरों में चलने वाली पाखंड वृत्ति है। मन्दिरों के पुजारियों ने समाज सेवा का व्रत छोड़कर अपनी आजीविका के लिये भोले-भाले अज्ञानी लोगों को अपना शिकार बना लिया है। इतनी निष्ठुरता से ये पण्डे पुजारीगण दर्शक यात्रियों से धन ऐंठते हैं कि जिसे देखकर किसी भी सहृदय का हृदय कांप उठेगा। पुरी से घर लौटते हुए तीर्थ यात्रियों से कोई पूछे तो पता चले कि पण्डों ने उसका सिर उलटे उस्तरे से किस तरह मुड़ डाला। पुरी जगन्नाथ मन्दिर का प्रत्यक्ष निरीक्षण करने पर यह और भी स्पष्ट हो जाता है कि वहां सदाचार धर्म और संस्कृति के कितने बड़े दुश्मन धर्म के आड़ में अपनी पशु प्रकृति का भी पोषण कर रहे है।

महर्षि दयानन्द जी के अनुसार वहां वाम-मार्गियों की धूर्तता भी है क्योंकि प्रायः जगन्नाथ मन्दिर के चारों तरफ स्त्री-पुरुषों के नङ्गे चित्र बने हुए दिखते हैं, यह वाममार्गियों का ही खेल है।

रथयात्रा के संबंध में आज के वैज्ञानिक युग में भी इस तरह के अंधविश्वास फैलाने वाले क्रिया कृत्यों को ही लोगों ने धर्म मान रखा है और इसी से स्वर्ग मुक्ति की आशा रखते हैं। इसी कारण हमारे देश का पचास प्रतिशत सत्यानाश हो रहा है ऐसे-ऐसे देशभर में न जाने कितने स्थानों पर यह ठग विद्या और अंधविश्वास अपना जड़ जमा करके बैठा हुआ है। इस क्षेत्र में हमें शीघ्र ही जागरूक होकर इनका बुद्धिपूर्वक उन्मूलन करना होगा। अन्यथा देश का भविष्य अन्धकारमय होता चला जायेगा। और दोषी सारा समाज होगा।

आशा है इस ओर विचारशील लोग अवश्य ध्यान देगें और लोगों को धन, जन की हानि से बचायेंगे।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवकाश के समय का सदुपयोग कीजिये

दुनिया में अधिकांश मनुष्यों को जीविकोपार्जन के लिए कुछ न कुछ काम धंधा करना पड़ता है। पर ऐसे भाग्यशाली व्यक्ति शायद थोड़े ही होंगे जो अपना कारोबार स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी रूचि के अनुसार निर्धारित कर सकें। अधिकांश लोगों को परिस्थितियों से विवश होकर रोजी कमाने के लिये ऐसा काम करना पड़ता है जिसमें उनकी रूचि नहीं हैं। इसमें उनकी शक्तियां पूर्ण रूप से प्रयत्नशील नहीं होती और न कोई उन्नति ही कर पाती है। दूसरे लोग हैं जिनका धंधा स्वयं रूचिकर है या उद्योग करते रहने से और समय बीत जाने से रूचिकर हो गया है, ऐसे लोगों की कुछ शक्तियां उनके काम में पूर्णतः क्रियाशील हो जाती हैं। फिर भी इस मुख्य व्यवसाय का काम ऐसे ढर्रे पर पड़ जाता है कि उसमें व्यक्ति की बहुत थोड़ी सी ही शक्तियां प्रयोग में आती हैं, उनका अधिकांश भाग निकम्मा और सुषुप्त पड़ा रहता है। अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिये, ईश्वर की दी हुई शक्तियों को अधिक से अधिक उपयोग में लाने के लिये और उनको विकसित करने के लिये यह आवश्यक है कि हर मनुष्य अपने लिये अपनी स्वेच्छा से एक रोचक उद्देश्य चुन ले और उसकी प्राप्ति के लिये अवकाश की घड़ियों का प्रयोग तत्परता से करें। अगर आप गौर से सोचेंगे तो देखेंगे कि फुरसत का समय ही आपके जीवन का सबसे मूल्यवान भाग है- यही वह भाग है जो आपके वश में है, जिसे आप अपना कह सकते हैं, इसे आप धन, विद्वत्ता, लोकसेवा अथवा कीर्ति में, जैसी आपकी कामना हो, परिवर्तित कर सकते हैं। महापुरूषों की जीवनियां इस बात के उज्जवल उदाहरण हैं। गैलीलियो डाक्टरी करता था, पर हम उसे डाक्टर की हैसियत से नहीं, बल्कि उन आविष्कारों के लिये याद करते हैं जो उसने बचे हुए क्षणों का उपयोग करके किये थे। माइकल फैरेडे किताबों की जिल्द बांधा करता था। साथ ही अपने बचत के समय को वैज्ञानिक प्रयोग करने में लगाया करता था। ग्लैड्स्टन-सरीखा प्रतिभाशाली मनुष्य अपनी जेब में एक छोटी सी पुस्तक हमेशा लेकर निकलता था कि कहीं कोई क्षण व्यर्थ न चला जाय।

हर एक नवयुवक को अपने फुरसत के समय को किसी अच्छे काम में लगाना चाहिये। ऐसा करने से न केवल उनका जीवन अधिक सुखी और आनन्दमय हो जायेगा, बल्कि उनकी शक्तियां भी काम में लाये जाने के कारण उत्तरोत्तर बढ़ती जायेगी। भिन्न-भिन्न मनुष्य अपने लिये भिन्न-भिन्न उद्देश्य चुनेंगे। इसमें समता या सादृश्य का होना न तो आवश्यक है और न हितकर, यहां पर हम आपके उद्देश्य को निर्धारित नहीं कर रहे हैं, हम तो केवल यह सलाह दे रहे हैं कि अपनी परिस्थिति, अवकाश, नैसर्गिक बुद्धि और तबियत के झुकाव का सावधानी से विचार कर अपने लिये एक उद्देश्य - अपने अवकाश के समय के लिये एक प्रिय काम चुन लें और उसमें प्रवीणता, उस पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिये भरसक प्रयत्न करें। ऐसा करने से व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ईश्वरोपासना में मन क्यों नहीं लगता ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१. हमारा मन-इन्द्रियों के विषय में ज्ञान कम है ।

२. हमारा अपने विषय (आत्मा) के विषय में ज्ञान कम है ।

३. हमारा संसार के विषय में ज्ञान कम है ।

४. हम विषय भोगों से प्राप्त होने वाले दु:खों की अनुभूति नहीं करते । विषय भोगों के सुख को दु:ख मिश्रित अनुभव नहीं करते ।

५. ईश्वर की उपासना से होने वाले लाभों को नहीं जानते ।

६. संसार की वस्तुओं का स्वामी ईश्वर को नहीं मानते।

७. उपासना से पहले मानसिक सज्जा (तैयारी) नहीं करते ।

८. ईश्वर को व्यापक और संसार को व्याप्य नहीं स्वीकार करते ।

९. उपासना काल में संघर्ष नहीं करते ।

१०. व्यवहार काल में आसन ठीक नहीं लगाते । प्राणायाम और जप विधिवत् नहीं करते ।

११. संध्या के मंत्रों के शब्दार्थ ठीक प्रकार से स्मरण नहीं करते ।

१२. शब्द प्रमाण में हमारी श्रद्धा और विश्वास अल्प हैं ।

उपासना काल में नींद का कारण और निवारण :-

ध्यान के समय में नींद को या आलस्य को रोकना आवश्यक होता है । अनेक साधकों को तो यह पता भी नहीं चलता कि वे ध्यान करते हुए सो जाते हैं । अनेकों को पता तो चल जाता है, किन्तु उपासना काल में नींद या आलस्य क्यों आता है, वे कारणों को ठीक-ठीक जान नहीं पाते हैं। नींद तथा आलस्य आने के कुछ कारणों का यहां उल्लेख किया जाता है :-

१. रात्रि में नींद पूरी नहीं होना या अच्छी न होना ।

२. पेट की शुद्धि न होना (शौच खुलकर न आना)।

३. शारीरिक परिश्रम या व्यायाम अधिक मात्रा में करना।

४. भोजन प्रतिकूल, गरिष्ठ (भारी) अधिक मात्रा में करना ।

५. तामसिक या नशीली वस्तु (तम्बाकू भांग आदि) का प्रयोग करना ।

६. शरीर में ज्वरादि रोग का होना ।

७. शरीर में निर्बलता का होना ।

८. आसन ठीक प्रकार से नहीं लगाना (कमर सीधी करके न बैठना) ।

९. उपासना से पूर्व स्नान न करना ।

१०. उचित मात्रा में व्यायाम, भ्रमण, आसन आदि न करना ।

११. ठण्ड के दिनों में रजाई आदि गर्मी देने वाले वस्त्रों को अधिक मात्रा में धारण करना (ओढ़कर बैठना)।

१२. मानसिक परिश्रम अध्ययन-चिन्तन आदि अधिक करना ।

१३. आलसी व्यक्तियों के साथ बैठना ।

१४. संध्या के मंत्रों का शब्दार्थ न जानना ।

१५. उचित मात्रा में प्राणायाम न करना ।

१६. ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा, रुचि का न होना ।

१७. योगाभ्यास के महत्व या लाभों को न समझना ।

साधक लोगों को देखना चाहिए कि उपर्युक्त कारणों में से कौन सा कारण मुझ पर लागू होता है । उसे जानकर दूर करना चाहिए, जिससे योगाभ्यास में सफलता मिले ।

(ब्रह्म विज्ञान से साभार)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेशाब की बर्फ

जगन्नाथ, संयोजक (राजभाषा कार्य)
केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्,
एक्स.वाई. ५८, सरोजनी नगर, नई दिल्ली - ११००२३

यद्यपि संविधान में भारतीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्र प्रतीक और राजभाषा (हिन्दी) तथा उसकी लिपि (देवनागरी) निर्णीत हो चुके थे, किन्तु अभी भी अंग्रेजी और अंग्रेजीयत की मानसिकता वाले अनेक व्यक्ति और पत्रकार मौके-बेमौके अंग्रेजी भाषा और रोमन लिपि के पक्ष में लिखते और बोलते रहते हैं। इस लेख में उनके रोमन लिपि के पक्ष में दिए गए तर्कों के विषय में ही विवेचना की जा रही है।

एक कहानी याद आ रही है। कड़ी सर्दी के दिन थे। बच्चे एक चोड़ी छिछली तश्तरी में पानी भरकर रख देते थे। रात में सर्दी के कारण जमकर वह बर्फ बन जाता था जिसे प्रातः बच्चे मिल बांटकर बड़े चाव से खाते थे। एक बार पानी नहीं मिला तो बच्चों ने तश्तरी मे पेशाब करके उसे छत पर रख दिया। प्रातः जब वे उसकी बर्फ खाने पहुंचे तो उनमें से अपने आप को अधिक सयाना समझने वाला एक बच्चा बोल उठा कि 'यह पेशाब की बर्फ है, अतः पहलें इसे धो लें'। कुछ ऐसी ही सोच रोमन लिपि के पक्षपातियों की है जैसा आगे स्पष्ट है। साथ ही देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता, पूर्णता और सरलता के विषय में भी कुछ अकाट्य तर्क दिये जा रहे हैं।

१. देवनागरी में स्वरों और व्यंजनों का एक निश्चित और सुव्यवस्थित क्रम है। पहले १३ स्वर आते हैं। उनमें भी लघु स्वर पहले आता है और फिर दीर्घ स्वर। उसके बाद व्यंजन आते हैं। व्यंजनों में भी कंठ से बोले जाने वाले क, ख, ग, घ, ङ (कण्ठ्य) पहले आते हैं। फिर तालु से बोले जाने वाले च, छ, ज, झ, ञ (तालव्य) आते हैं। उसके बाद मुर्द्धा के स्पर्श से बोले जाने वाले ट, ठ, ड, ढ, ण (मूर्धन्य) आते हैं। फिर दांतों के स्पर्श से बोले जाने वाले त, थ, द, ध, न (दन्त्य) आते हैं। इनके पश्चात् ओठ मिलाकर बोले जाने वाले प, फ, ब, भ, म (ओष्ठ्य) आते हैं। अंत में स्वरों (इ, ऋ, लृ, उ) से मिलते-जुलते व्यंजन य, र, ल, व (अन्तस्थ) और फिर उष्म वर्ण श, ष, स, ह। इस प्रकार कुल ३३ व्यंजन आते हैं। ये सभी सुव्यवस्थित और भली-भांति अनुशासित सेना के समान है। इनके सामने जरा रोमन लिपि को देखिए, एकदम अराजकता (कोई नियम नहीं है) पहले स्वर A आ गया और उसके बाद व्यंजन B, C, D और फिर एक स्वर E घुस आया। इस प्रकार सारी वर्ण-माला में आदि से अंत तक स्वरों और व्यंजनों का घाल-मेल है। यह वही आदिम व्यवस्था है जो यूनान के आदिम निवासियों ने अपनाई थी। आज के वैज्ञानिक युग में भी इसमें कुछ सुधार नहीं हुआ।

२. देवनागरी में जितनी ध्वनियां हैं उन सबके लिए स्वर और व्यंजन हैं, कोई ऐसी ध्वनि नहीं है जिसकी व्यवस्था नागरी लिपि में न हो।

इसके विपरित रोमन लिपि अंग्रेजी भाषा की ही सभी ध्वनियां व्यक्त करने में असमर्थ हैं। उदाहरण के लिए 'थ' को रोमन में लिखने के लिए T और H को मिलाकर TH लिखा जाता है। इसी प्रकार 'ध' के लिए D और H को मिलाकर DH लिखना पड़ता है।

३. हिन्दी में शब्द लिखे जाने पर उनमें कोई अनावश्यक अक्षर नहीं लिखा जाता है। इसके विपरीत अंग्रेजी में कई शब्दों में अक्षरों का प्रयोग तो होता है किन्तु वे बोलने में नहीं आते। जैसे लिखे हुए- प्साम Psalm को साम बोला जाता है। इस में P और L व्यर्थ ही चोर की भांति छिपे हैं। इसी प्रकार Write और Wrong में अक्षर W बेकार लिखे जाते हैं। अंग्रेजी में Colour का उच्चारण कलर होता है। O तथा OU का प्रयोग अ की भांति होता है, जबकि इस ध्वनि के लिए सीधा-सादा A मौजूद है।

४. देवनागरी में जो शब्द लिखे जाते हैं उनके उच्चारण वैसे ही होते हैं। किन्तु अंग्रेजी में But, Cut, Hut, Nut आदि को बट, कट, हट, नट बोला जाता है, किन्तु Put को पट न बोलकर पुट बोला जाता है। कितनी विचित्र बात है कि by और buy के अर्थ भिन्न-भिन्न हैं किन्तु उच्चारण एक ही है।

५. हिन्दी में एक उच्चारण के लिए एक ही अक्षर है। किन्तु अंग्रेजी में Cut में 'क' की ध्वनि है जो कि रोमन में K और देवनागरी में 'क' की है। इसी प्रकार अंग्रेजी में Queen शब्द Q की ध्वनि भी 'क' जैसी होती है। अंग्रेजी में City शब्द C की ध्वनि S जैसी है जैसे कि अंग्रेजी के Site स्थान शब्द में है। यहां एक और विचित्र बात है कि Sight दृश्य शब्द का उच्चारण भी Site जैसा ही है। Jug में 'जे' की ध्वनि है वही Zebra में भी है लेकिन Zebra में Z का प्रयोग किया जाता है। जबकि दोनों की ध्वनि एक जैसी है। सभ्य संसार में जंगली राज ही फैला हुआ है। अमेरिका की अंग्रेजी में कहीं-कहीं सुधार किया गया है, जंगली राज के शौकीन कोई सुधार अपनाने को तैयार नहीं।

६. कहा जाता है कि रोमन में केवल २६ अक्षरों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम चल जाता है जबकि देवनागरी में ४६ अक्षर हैं। यह भी एक धोखा है। जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं कि रोमन में कई ध्वनियों के लिए अक्षर ही नहीं है। देवनागरी में प्रत्येक ध्वनि के लिए पृथक् वर्ण हैं, जो आवश्यक है, कोई भी वर्ण व्यर्थ नहीं है। किन्तु रोमन को क्या कहेंगे जिसमें लिखाई में छोटे अक्षर और बड़े अक्षर भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। इसी प्रकार रोमन में छपाई के छोटे अक्षर और बड़े अक्षर भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं जिनका कोई तर्कसंगत आधार नहीं हैं।

इस प्रकार रोमन लिपि तथा अंग्रेजी की वर्तनी की कमियों और दोषों के विषय में सैकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं। इस विषय में कुछ वर्ष पूर्व भारत सरकार के एक उपक्रम की पत्रिका 'कुद्रेमुख' में 'फन्नी इंग्लिश' शीर्षक से एक बहुत लम्बी रोचक कविता छपी थी। एक तर्क यह भी दिया जाता रहा है कि कम्प्यूटर आदि के लिए देवनागरी लिपि उपयुक्त नहीं है। किन्तु यह बात तो पुरानी पड़ गई। अब नागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है। फिर यह भी सोचिये कि क्या पैर के माप के अनुसार जूता बनाया जाए या जूते में फिट करने के लिए पैर की काट-छांट की जाए ? कम्प्यूटर की सुविधा के लिए लिपि बिगाड़ने के बजाय उसमें काम करने योग्य कम्प्यूटर ही बन गए हैं। दैनिक जागरण के १५ अक्टूबर १९९७ के अंक में छपा है कि जापान ने जापानी भाषा को कम्प्यूटर के अनुकूल बनाने के लिए अरबों येन खर्च किए। ऐसा उन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने के लिए किया। इसके विपरीत इण्डोनेशिया ने कम्प्यूटर के लिए रोमन लिपि अपना ली जिससे उसकी अपनी भाषा नष्ट हो गई। भारतीय इंजीनियरों और कम्प्यूटर विशेषज्ञों ने ऐसे कम्प्यूटर और सॉफ्टवेयर बना लिए हैं जो देवनागरी में भी काम करते हैं। इनका निर्माण बड़ी तेजी से हो रहा है।

विशेषज्ञों की राय में देवनागरी लिपि कम्प्यूटर के लिए अति अत्यधिक अनुकूल है।

उक्त संदर्भ में हम प्रसिद्ध विद्वान् श्री विश्वंभर प्रसाद 'गुप्त-बन्धु' के लेख का एक अंश नीचे दे रहे हैं -

'सर विलियम जोन्स के शब्दों में' 'अंग्रेजी वर्णमाला और वर्तनी ऐसी बुरी तरह अधकचरी है कि अत्यंत हास्यास्पद हो जाती है'। आर्थर मेक-डोनल का भी यही रोना है कि 'हम योरपीय लोग २५०० वर्ष बाद इस वैज्ञानिक युग में भी वही वर्ण-माला प्रयोग कर रहे हैं जो हमारी भाषा की सभी ध्वनियों को व्यक्त करने में अक्षम है, यहां तक कि हम उसी बेतरतीब वर्ण-क्रम से भी चिपके हुए हैं जिसमें स्वरों और व्यंजनों का गड्ड-मड्ड है। यह यही आदिम सेमिटिक व्यवस्था है जो यूनान के आदिम निवासियों ने ३००० साल पूर्व अपनाई थी'। अधिक क्या कहें, इस भाषा के जानकार तो इसे 'पागलपन की भाषा' कहते हैं। रिवर्ड लेंडरर महोदय ने तो 'क्रेजी इंग्लिश' अर्थात् 'पागलपन की भाषा अंग्रेजी' नामक एक ग्रन्थ ही लिखा था जिसे १९८९ में साइमन एण्ड शुस्टर, न्यूयार्क ने प्रकाशित किया था। 'इस विषय में श्री इसपाक अली का विस्तृत लेख' देवनागरी विदेशी विद्वानों की दृष्टि में पढ़ने योग्य है जो नागरी संगम पत्रिका के जुलाई-सितम्बर १९९७ के अंक में छपा है।

कुछ व्यक्ति कहते हैं कि देवनागरी में भी कुछ ध्वनियों को प्रकट करने के लिए अक्षर नहीं है। किन्तु अब उर्दू और फारसी के कुछ उच्चारणों को हिन्दी के अक्षरों में नीचे बिन्दी लगाकर लिखा जाने लगा है। कुछ साधारण सी कमियां अभी भी देवनागरी में निकाली जा सकती है। किन्तु सन्त विनोबा भावे के शब्दों में पहले देवनागरी को स्वीकार करो और फिर शुद्ध हृदय से बात करो। संक्षेप में देवनागरी लिपि में सम्पूर्णता का गुण है। उसमें सभी ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता है। यह लिपि विश्व भर कि सभी भाषाओं को अंकित करने की क्षमता रखती है। उसमें एक ध्वनि के लिए एक संकेत सुनिश्चित है। नियतता, क्रमानुसारिता, स्पष्टता आदि के गुण भी देवनागरी में भरपूर मात्रा में है। स्वरों और व्यंजनों का वैज्ञानिक वर्गीकरण है। समय-समय पर देवनागरी में परिष्कार के जो सुझाव सामने आते रहे उनमें से अनेक स्वीकार किए जा चुके हैं। भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने एक मानक देवनागरी लिपि को अंतिम रूप दे दिया है। और आज नागरी टंकण यंत्र, मुद्रण, टेलीप्रिन्टर और कम्प्यूटर आदि पर अपनी सार्थकता सिद्ध कर चुकी है। गांव में एक कहावत है कि छाज बोले सो बोले छलनी क्यों बोले जिसमें हजार छिद्र है। उपरोक्त पेशाब की बर्फ की कहानी रोमन पर पूरी तरह लागू होती है जिसे धोकर शुद्ध किया ही नहीं जा सकता।

कितनी विचित्र बात है कि रोमन लिपि के पक्षपाती कुछ नासमझ लोग अपनी पूर्ण वैज्ञानिक और सरल देवनागरी लिपि को छोड़कर पूर्वांचल और मध्यप्रदेश आदि की अनुसूचित जनजातियों की लिपि-विहीन बोलियों के लिए और अन्य कार्यों के लिए अपूर्ण तथा अवैज्ञानिक अधकचरी आदि कालीन असम्भों की रोमन लिपि अपनाने की वकालत करते हैं। इस वैज्ञानिक युग में विश्व की सभी भाषाओं के लिए वैकल्पिक रूप में भी देवनागरी लिपि अपनाए जाने के लिए प्रयत्न करना उचित होगा, जिससे विश्व भर के कोमल मस्तिष्क बच्चों को अंग्रेजी की वर्तनियां रटने की अवांछनीय यंत्रणा न सहनी पड़े तथा उनकी शक्ति अन्य ज्ञान-विज्ञान की पढाई में लगे यही संत विनोबा भावे को अभीष्ट था। इसके लिए वे आजीवन प्रयत्न करते रहे और नागरी लिपि परिषद् का गठन किया।

टिप्पणी : कृपया इस लेख की अतिरिक्त प्रतियां बनवाकर अन्य पत्र-पत्रिकाओं में अथवा अन्य प्रकार से प्रकाशित कराएं। गोष्ठियों और सम्मेलनों आदि में भी उपरोक्त तथ्यों का प्रचार किया जाए जिससे कि देवनागरी प्रेमियों में हीन भौवना न रहने पाए और वे रोमन के पक्षपातियों का मुंह तोड़ जवाब दे सकें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् चालीसा ॥

हरि कुमार साहू
पुस्तकाध्यक्ष, आर्य समाज,
बिलासपुर - 495001 (म.प्र.)

दोहा–

ओ३म् ओ३म् जपते रहो, ईश्वर का शुभ नाम ।
मन मंदिर में ओ३म् धुन, गूंजे आठो याम ॥

चौपाई –

प्यारी बहना, प्यारे भाई ।
ओ३म् सदा सुमिरो सुखदायी ॥
ओ३म् नाम ईश्वर का प्यारा ।
अखिल सृष्टि का पालनहारा ॥
दिनकर में उसका उजियारा ।
रत्नाकर में उसकी धारा ॥
गिरि, वन में, जल, थल में, नभ में ।
कलियों, फूलों के सौरभ में ॥
कण-कण में उसकी ही माया ।
जिसने ध्याया उसने पाया ॥
वेद ओ३म् की महिमा गाते ।
ऋषि मुनि इसका ध्यान, लगाते ॥
ऊषा, निशा, सांध्य, दोपहरी ।
ओ३म् ओ३म् की गूँजे लहरी ॥
ओ३म् जाप से हो मन पावन ।
ओ३म् नाम अतिशय मन-भावन ॥
ओ३म् -दिवाकर का उजियारा ।
हरता अंतर का अँधियारा ॥
ओ३मानंद परम् सुख दाता ।
ओ३म् नाम दुःख बँधन त्राता ॥
ओ३म् बसा है तन में, मन में ।
ओ३म् बसा है हर धड़कन में ॥
ओ३म् नयन में, ओ३म् हृदय में ।
ओ३म् अवनि में, ओ३म् निलय में ॥
यह ब्रह्माण्ड ओ३म् मय सारा ।
बिन जिह्वा, मुख ओ३म् पुकारा ॥
ओ३म् सखा है, शाश्वत अपना ।
ओ३म् नाम को सविनय जपना ॥
ओ३म् जपन से सुख मिलता है ।
भक्ति सुमन सुरभित खिलता है ॥
प्रातः संध्या ओ३म् सुमर लो ।
जीवन को शुचिता से भर लो ॥
ओ३माक्षर अंतर में धारो ।
ओ३म् ओ३म् तन्मय उच्चारो ॥
मन की शांति ओ३म् में पाओ ।
ओ३म् ओ३म् उल्लासित गाओ ॥
ध्यान ओ३म् का अविचल धरना ।
इसमें तनिक प्रमाद न करना ॥
दयानंद ऋषि नहीं अघाएं ।
अविरल ओ३म् नाम गुण गाएं ॥
दुःख में हों हम या हों सुख में ।
ओ३म् ओ३म् हर पल हो मुख में ॥
परमानंद उसी ने पाया ।
ओ३म् नाम की ऐसी माया ॥
राम, कृष्ण का यही सहारा ।
सबने ओ३म् ओ३म् उच्चारा ॥
ओ३म् नाम की महिमा न्यारी ।
ओ३म् नाम अति मंगलकारी ॥
दयानंद इस पर बलि जाते ।
श्रद्धानंद शहादत पाते ॥
लेखराम जीवन न्यौछारे ।
राजपाल प्राणों को वारे ॥
गेंदा, बिस्मिल की कुरबानी ।
वीर भगत, रोशन बलिदानी ॥
आजादी के ये परवाने ।
ओ३म् नाम के थे दीवाने ॥
माता, पिता, सखा अरू भ्राता ।
ओ३म् नाम से अगणित नाता ॥
ओ३म् अखिल जगती का पालक ।
ध्याओ युवा, वृद्ध अरू बालक ॥
छोटे बड़े सभी नर नारी ।
ओ३म् ओ३म् जप लो हितकारी ॥
ओ३म् सच्चिदानंद सुहाना ।
ओ३म् सृष्टि का ताना बाना ॥
मोह भँवर में जीवन नैया ।
पार लगाए ओ३म् खिवैया ॥
आल्हादित शुभ ओ३म् पुकारो ।
पल-पल ओ३म् ओ३म् उच्चारो ॥
तन, मन, प्राण ओ३म् मय कर लो ।
ओ३म् प्रभा से तम को हर लो ॥
आर्य जनों का ओ३म् शुभंकर ।
सत्य, सनातन, शुचि, शिव, शंकर ॥
ओ३म् सत्य, शिव, सुन्दर प्यारा ।
ओ३म् नाम है सबसे न्यारा ॥
सुख, संतोष, शांति का दाता ।
ओ३म् नाम से जोड़ो नाता ॥
ओ३म् भजन में सुख ही सुख है ।
ओ३म् बिना यह जीवन दुःख है ॥

दोहा –

ओ३म् ओ३म् भजते चलो, ओ३म् सृष्टि आधार ।
दयानंद ऋषिराज की गूँजे जै-जैकार ॥
बोलो महर्षि दयानंद महाराज की जै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्संग का फल

गुणवदा श्रयान्निर्गुणोऽपि गुणी भवति ।

निर्गुण दिखने वाली भी गुणवान् के संसर्ग में रहता-रहता गुणी हो जाता है । विवेकी के अनुभवहीन होने पर भी यदि वह अनुभवी लोगों के संसर्ग में रहे, तो अनुभवी बन जाता है ।

क्षीराश्रितं जलं क्षीरमेव भवति ।

जिस प्रकार जल दूध में मिलने पर दूध बन जाता है, उसी प्रकार गुणी हाथों में हाथ देने वाला भी गुणी बन जाता है ।

मृत्पिण्डोऽपि पाटलिगन्धमुत्पादयति ।

मिट्टी का ढेला भी सुगंधित फूलों के गिरने से ही उनके समान सुगंधि वाला हो जाता है, उसी प्रकार दुर्जन पुरूष भी गुणी के संपर्क में आकर गुणवान बन जाता है ।

निर्गंध मिट्टी भी अवसर मिलने पर अपने भीतर से सुगंध भरे पुष्प उत्पन्न कर देती है ।

इसी प्रकार गुण दिखाने का अवसर मिलने पर गुणी लोगों के गुण छिपे नहीं रहते हैं। मिट्टी सुगंधित कुसुमों को अंकुरित करने का अवसर आने पर अपनी सुगन्धोत्पादक शक्ति प्रकट करती है । गुणियों के गुण सच्चे गुण ग्राहियों के संपर्क में आने पर ही प्रकट होते हैं ।

रजकं कनक संगात् कनकं भवति ।

जैसे चांदी, सोने के साथ मिश्रित हो जाने से वह मिश्रित वस्तु सोना ही बन जाती है, चांदी नहीं रहती ।

जैसे सोने के साथ मिलते ही उसके चांदीपन का अन्त हो जाता है, इसी प्रकार महत्वयुक्त मनुष्य से संबंध होने पर अनुभवहीन गुणग्राही व्यक्ति गुणानुभव संपन्न हो जाया करता है ।

चाणक्य सूत्राणि से

ब्र. सुदर्शन देव

क्या आप जानते हैं कि -

चक्रवर्ती शासन करने वाले देश के अनेक टुकड़े क्यों हुए? क्या वह कारण आज भी नहीं चल रहा ?

वह कारण है विदेशी मतों का अंधाधुन्ध फैलाव जो ईसाई, मुसलमान मतों के रूप में आज भी फैलता जा रहा है । विदेशों के पैट्रो डालर से इनके मुखिया पागल होकर अपने मतों के विस्तार में लगे हुए हैं। हमारे बन्धुओं को साम दाम आदि उपायों से बहका-फुसला कर विदेशी बनाने में लगे हुए हैं । जहां ये दोनों मत बढ़ते हैं वहीं से पृथकता की मांग उठती है । इस सिर दर्द का स्थायी इलाज है इन मतों के विस्तार को रोकना तथा धर्म रक्षा महाभियान चलाना । उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से गुरूकुल आश्रम इस कार्य में संलग्न है ।

इस कार्य में थोड़ा सा भी आपका सहयोग हमारे लिये महत्वपूर्ण है । आगामी महीनों में कई कार्यक्रम होने हैं आशा है आपकी आहुति इस कार्य में अवश्य पड़ेगी ।

- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रचार कार्यक्रम

उत्कल आर्य प्र. एवं गुरूकुल आश्रम आमसेना की ओर से वैदिक धर्म का प्रचार, युवाओं को वैदिक धर्म में ढालने के लिये आर्यवीरदल के शिविर सेवार्थ चिकित्सा शिविर एवं धर्म रक्षा महाभियान कार्यक्रम निरंतर चल रहे हैं । कार्यक्रम इतने होते हैं कि यदि सभी का विवरण प्रकाशित किया जाये तो पत्रिका के कई पृष्ठ उसी से भर जाये अत: विशेष कार्यक्रमों की ही सूचना प्रकाशित करते हैं । कई कार्यक्रमों को प्रकाशित करना उचित भी नहीं होता । वैसे भी हमारा उद्देश्य इन कार्यों को प्रकाशित कर यश: या प्रसिद्धि पाना नहीं है। आप की जानकारी के लिये ही कभी-कभी विशेष कार्य का उल्लेख कर देते हैं । हमारे सहयोगी श्री स्वामी परमानंद जी, श्री स्वामी सुधानन्द जी, श्री पं. विशिकेसन शास्त्री, श्री पं. शिवधर जी, श्री ब्र. भास्कर नैष्ठिक, श्री ब्र. कृपा सिन्धु जी आदि तो निरन्तर प्रचार एवं शिविरों में लगे ही रहते हैं । श्री स्वामी व्रतानन्द जी, श्री वैद्य मुरलीधर जी, श्री ब्र. कुञ्जदेव जी भी कार्यक्रमों में जाते रहते हैं । उनके साथ सभा के चार पांच उपदेशक एवं कई वानप्रस्थी संन्यासी भी निरन्तर प्रचार कार्य में लगे हुए हैं ।

अप्रैल-मई माह में कुछ प्रचार कार्यों विवरण इस प्रकार से हैं - दमउधारा में आर्यवीर दल का शिविर लगाया गया ।

धर्मगढ़ (कालाहान्डी) में चिकित्सा शिविर एवं ४ ग्रामों में महायज्ञ श्री विशिकेसन जी शास्त्री द्वारा कोरापुट एवं कालाहान्डी में ३ समाजों में प्रचार एवं उनकी स्थापना ।

श्री स्वामी परमानन्द जी एवं शिवधर जी द्वारा रायपुर के धमतरी क्षेत्र में प्रचार । ब्रह्मचारियों द्वारा नृसिंहनाथ मेले में प्रचार । ब्र. विनय आदि की दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार।

रायगढ़ जिले के १५ आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव में प्रचार।

बलांगीर जिले में शुद्धि । पुलवानी के कई ग्रामों में वार्षिकोत्सव। ब्र. भास्कर की मयूंरमज जिले की प्रचार यात्रा।

- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

महत्वपूर्ण स्थिरनिधि

प्रसिद्ध देशी औषधियों के निर्माता, देश की वैद्यनाथ भवन के संस्थापक स्व. श्री पं. रामनारायण शर्मा की धर्मपत्नी स्व. श्रीमती ग्यारसी देवी की स्मृति में उनके परिवार ने ५०,०००/- रु. की स्थिरनिधि गुरूकुल आश्रम आमसेना को दी है। इसके ब्याज से निर्धन बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था की जायेगी । इतनी ही राशि गुरूकुल होशंगाबाद को भी स्थिरनिधि के लिये दी गई है । इसके लिये हम उस उदार श्रद्धालु परिवार के हार्दिक आभारी हैं।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

उपाचार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नवीन छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नये छात्रों का प्रवेश प्रारंभ हो चुका है। जो सज्जन अपनी सन्तान को सच्चरित्रवान् त्रवान् विद्वान कर्मठ बनाना चाहते हैं वे शीघ्र संपर्क करें। पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण सुयोग्य सुशील, बुद्धिमान् छात्रों को परीक्षा लेकर ही प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेश शुल्क ५०० रूपया, भोजन खर्च १२५ रूपये प्रतिमाह के हिसाब से छ: महीने का प्रवेश के समय अग्रिम लिया जायेगा। विशेष जानकारी के लिये लिखें या मिलें –

आचार्य, गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, जि. नवापारा (उड़ीसा)
फोन : (066787) 22349

"यज्ञशाला एवं वेद मंदिर" का शिलान्यास

आर्य नगर दुर्ग में आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के तत्वावधान में निर्मित होने वाले "यज्ञशाला एवं वेद मंदिर" का शिलान्यास समारोह श्री सत्यवीर शास्त्री की अध्यक्षता एवं श्री अरूण वोरा विधायक दुर्ग, के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। समारोह में उपस्थित श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, श्री गुलाबचन्द बंसल, श्रीमती विमला श्रीवास्तव एवं माता कौशल्या देवी आदि ने यज्ञशाला एवं वेद भवनों की आवश्यकता पर बल देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के सत् प्रयासों की सराहना की एवं सहयोग देने वाले सज्ज्नों का धन्यवाद किया।

नेपाल में आर्य समाज के बढते कदम

आज भारत के पड़ोसी देश नेपाल में आर्य समाज तथा वेद का प्रचार-प्रसार बढता जा रहा है। पं. शुक्रराज शास्त्री का बलिदान पुष्पित एवं पल्लवित नजर होता आ रहा है। नेपाल के एक आर्य समाज भेदिहारी का १६ वां वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण महायज्ञ १८ मार्च से २२ मार्च ९८ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें हजारों की संख्या में प्रतिदिन नर-नारियों ने उपस्थित होकर यज्ञ में आहुति दीं एवं नवल किशोर शास्त्री तथा बी.के. शास्त्री के प्रवचनों को ध्यान पूर्वक सुना। अनेक स्त्री-पुरूषों ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा अभक्ष्य पदार्थों को छोड़ने की प्रतिज्ञा भी की।

आर्य वीर दल शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द विद्यापीठ गेवरा द्वारा संचालित श्री जगन्नाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय ऋषभतीर्थ दमउधारा में १७ अप्रैल से २६ अप्रैल तक ब्र. कपिलदेव एवं पंचमलाल आर्य के नेतृत्व में आर्य वीर दल के दस दिवसीय शिविर का आयोजन गुरुकुल आमसेना के श्री ओममुनि वानप्रस्थी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन १७ अप्रैल को कोरबा के प्रसिद्ध आर्य सज्जन डॉ. लक्ष्मीप्रसाद के करकमलों द्वारा हुआ। इस शिविर में लगभग ६० शिविरार्थियों ने भाग लेकर लाठी, भाला, चाकू, जुड़ो-कराटे आदि आत्मरक्षा के प्राचीन पहलुओं का विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त किया। समारोह के अन्तिम दिन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पू. स्वामी धर्मानन्द जी महाराज, प्रसिद्ध उद्योगपति श्री वीरसेन जी, स्वामी परमानन्द जी, श्री वेदमुनि जी, मध्यप्रदेश के प्रांतीय संचालक श्री बाबूलाल जी आर्य आनन्द, प्रांतीय कोषाध्यक्ष श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आर्यवीरों एवं गुरुकुल आमसेना के ब्रह्मचारियों का भव्य व्यायाम प्रदर्शन हुआ। श्री वीरसेन जी ने सभी ब्रह्मचारियों को एवं शिविर में आये आर्यवीरों को पुरस्कृत किया। शिविर की सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में विद्यालय के सहव्यवस्थापक श्री राजेन्द्र सिंह जी, श्री जसबीर सिंह जी, श्री अशोक कुमार शास्त्री सहित विद्यालय के सभी अध्यापक वर्ग का परिश्रम भी अत्यन्त सराहनीय रहा।

ध्यान रहे इस विद्यालय का संचालन प्रसिद्ध उद्योगपति श्री चौ. मित्रसेन जी, रोहतक की प्रेरणा पर उनके सुपुत्र श्री कै. रूद्रसेन जी एवं श्री वीरसेन जी आदि के सहयोग से श्री स्वामी धर्मानन्द जी कर रहे है।

श्रद्धाञ्जलि

आर्य समाज कोसाबाड़ी (कोरबा) के संस्थापक अध्यक्ष कर्मठ एवं समर्पित आर्य श्री पवनकुमार गुप्ता का निधन २४ मार्च को हो गया। इससे आर्य समाज को गहरी क्षति हुई है। आर्य समाज के समस्त सदस्यों ने इस पर शोक सभा का आयोजन कर अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

आर्य समाज रक्सौल के पूर्व मंत्री श्री यज्ञप्रिय जी एक आदर्श आर्य एवं वास्तव में यज्ञप्रिय थे उनका सारा जीवन समाज के प्रचार एवं उन्नति में बीता, वे उस क्षेत्र के प्रेरणा पुरूष थे। उनके स्वर्गवास पर आर्य समाजी शोक सन्तप्त है। और अपनीं श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्या गुरूकुल सासनी (हाथरस) में प्रवेश

कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, सासनी जनपद-महामाया नगर उ.प्र. में कन्याओं हेतु शिशु (नर्सरी) कक्षा से अलंकार (समकक्ष बी.ए.) जिसमें प्रथम श्रेणी से अलंकार तक गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, गुरूकुल के एक भाग में प्रथमा से आचार्य तक की सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय, वाराणसी की भी नि:शुल्क शिक्षा, सबका सीधा-साधा एक सा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन, नगर के दूर, स्वच्छ वातावरण में नि:शुल्क आवासीय व्यवस्था प्राचीन विषयों के साथ-साथ आधुनिक विषयों-विज्ञान आदि एवं स्त्रियोचित विषयों-गृहविज्ञान, संगीत की भी नि:शुल्क शिक्षा। घी, दूध, जलपान सहित भोजन शुल्क, शिशु से पंचम तक २६० रु. मासिक तथा कक्षा ६ से बी.ए. आचार्य तक २८० रु. मासिक। प्रवेश प्रारम्भ। नियमावली मंगवाये।

कमला स्नातिका मुख्याधिष्ठात्री

प्रवेश प्रारम्भ

आर्य प्रतिनिधि सभा, म.प्र. व विदर्भ द्वारा संचालित, आर्श गुरूकुल होशंगाबाद; म.प्र. प्राचीन आर्ष पाठ विधि से चलने वाला एक मात्र शिक्षण संस्था है। यहाँ प्रथमा से शास्त्री (६ वीं से बी.ए. के समकक्ष) तक नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था है, जो महर्षि दयानन्द वि.वि.रोहतक हरयाणा से मान्यता प्राप्त है। संस्था में ५ वीं पास बालकों को प्रवेशपरीक्षा में उत्तीर्ण होने पर प्रवेश दिया जाता है। प्रवेश की तिथि १५ जून से १५ जुलाई ९८ तक है। अत: निम्न पते र प्रवेश के इच्छुक प्रज्ञन निम्न पर सम्पर्क करें -

जगद्देव नैष्ठिक, आचार्य
आर्य गुरूकुल नर्मदापुरम्
होशंगाबाद - ४६१००१ (म.प्र.)
STD : (07574) 53089

दक्षिण भारत में कन्या गुरूकुल

श्री आचार्य आनंदप्रकाश जी के सत्प्रयत्न से आंध्रप्रदेश के रंगारेड्डी जिले के आलीदाबाद ग्राम में आर्य कन्या गुरूकुल स्थापित किया जा रहा है। श्रद्धालु सज्जनों से निवेदन है दक्षिण भारत के इस कन्या गुरूकुल के विकास में अधिक से अधिक सहयोग उदारतापूर्वक देने की कृपा करें।

- व्यवस्थापक

मेरा कोटि प्रणाम

- राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

माँ की बलिवेदी पर देते,
जो हर्षित हो अपने प्राण।
करते हैं संघर्ष निरन्तर,
देते दलितों को नव त्राण।
जिनका जीवन दिव्य बना है,
त्यागों से, बलिदानों से।
मोह नहीं करते हैं किंचित,
कहीं किसी प्रतिदानों से।

ऐसे वीरों का जीवन है,
सत्य-शिवम्-सुन्दर ललाम।
कालजयी उन वीर सपूतों को है
मेरा कोटि प्रणाम।

जिनके अन्तस में लहराया,
करतीं स्वतन्त्रता लहरें।
शोषित-पीड़ित मानव के जो,
प्रतिपल क्लेश अनेक हरें।
कठिन चुनौती बन कर अरि की,
सतत रहा करते कटिबद्ध।
कथनी-करनी का अन्तर तज,
रहते जो निर्भय प्रतिबद्ध।

करते जो निस्वार्थ भाव से,
कर्म सभी होकर निष्काम!
कालजयी उन वीर सपूतों को है
मेरा कोटि प्रणाम।

सत्य धर्म के लिए सतत,
जो करते रहते हैं संघर्ष।
उच्चादर्शों से प्रेरित हो,
करते मानवता उत्कर्ष।
जिनकी गाथाएं गौरव की,
मण्डित करती हैं 'इतिहास'।
जिनके सत्कर्मों से होता,
सौम्य मनुजता का विकास।

जिनका उज्जवल सा चरित्र है
पुण्य-वरेण्य तथा अभिराम।
कालजयी उन वीर सपूतों को है
मेरा कोटि प्रणाम॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध एवं ताजी जड़ी बूटियों से निर्मित गुरुकुल आश्रम आमसेना की कुछ विशिष्ट दवाईयां

१. ब्राह्मी आंवला तेल

ब्राह्मी एवं आंवला के स्वरस से तैयार यह तेल बालों का सफेद होना एवं झड़ने को रोककर घने एवं लम्बे करता है। सिर दर्द, मस्तिष्क की कमजोरी, पागलपन में भी उपयोगी है।

२. आयुर्वेदिक चाय

दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, काली मिर्च, पीप्पल, सौंफ, तुलसी आदि के योग से निर्मित हानिरहित यह मधुर पेय इसके निरन्तर प्रयोग से गैस, कब्जी, भूख की कमी, सर्दी, जुकाम नष्ट हो जाते हैं।

३. संजीवनी तेल

संजीवनी आदि बूटी से बना यह तेल हर प्रकार के जले, घावादि में अत्यंत उपयोगी है। बहते खून को तुरन्त रोक देता है।

४. सर्पविषामृत

कैसा भी सांप काट दे इसके एक दो खुराक देने से ही जहर समाप्त हो जाता है।

५. महिलामृत पेय

स्त्रियों की कमजोरी तथा हर प्रकार के रोगों को दूर करने में रामबाण है।

६. अशोकारिष्ट

यह महिलाओं का प्राकृतिक मित्र है। स्त्रियों के सभी रोगों में विशेषकर प्रदर एवं कमजोरी में उपयोगी है।

७. बलदामृत

अंगूर आदि फलों से तैयार यह टॉनिक सभी प्रकार की कमजोरी बुद्धि की थकावट आदि में अमृत है।

८. धातु पौष्टिक चूर्ण

वीर्य सम्बन्धी सभी प्रकार के रोगों एवं कमजोरी को दूर कर शरीर को ओज तेज से भर देता है। इसके साथ वीर्य बर्धिनी बटी या वसन्त कुसुमाकर लेने से तुरन्त लाभ मिलता है।

९. शिशु सुधा

यह सुमधुर पेय छोटे बच्चों के सभी रोगों में अत्यंत उपयोगी है। इसके निरन्तर सेवन से बच्चे हृष्ट-पुष्ट एवं निरोग रहते हैं। सुखा रोग, अपचन, दस्तों का होना, दांत निकलते समय होने वाले कष्ट इसके सेवन कराने से नहीं होते।

१०. सौन्दर्य रसायन (कैप्सूल)

यह कैप्सूल सभी प्रकार के चर्म रोगों में विशेष उपयोगी है। रक्त शुद्ध करने में रामबाण है। चेहरे के दाग, झाई आदि को दूर कर मुख की अकृति को सुन्दर बना देती है। केश के रोगों में भी अत्यंत उपयोगी है। बालों का झड़ना, सफेद होना, इस के प्रयोग से तुरन्त रूक जाता है। यदि युवावस्था में इसका लम्बे समय तक उपयोग किया जाये तो सफेद बाल पुनः काले हो जाते हैं। एक बार प्रयोग कर परीक्षा अवश्य करें।

व्यवस्थापक

आयुर्वेदिक फार्मेसी

गुरूकुल आश्रम आमसेना

खरियार रोड, जि.- नवापारा (उड़ीसा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ निर्मित विशुद्ध औषधियाँ

१.	च्यवनप्राश स्पे. १ कि.	१००.००
२.	च्यवनप्राश ,,	८०.००
३.	ब्राह्मी आंवला तेल	२०.००
४.	ब्राह्मी आंवला तेल स्पे.	४३.००
५.	वातराज तेल ५० मि.	२५.००
६.	महानारायण तेल ,,	२३.००
७.	विषगर्भ तेल ,,	१५.००
८.	संजीवनी तेल ,,	१५.००
९.	आयुर्वेदिक चाय	८.००
१०.	बलदापाक	४०.००
११.	सुपारीपाक २०० ग्राम	४०.००
१२.	आश्रम वाम	८.००
१३.	आश्रम दन्तमुक्ता १०० ग्राम	१५.००
१४.	गैसान्तक रस १०० ग्राम	२४.००
१५.	त्रिफला चूर्ण १ पाव	१५.००
१६.	लवणभाष्कर चूर्ण	१२.००
१७.	पौष्टिक चूर्ण	१०.००
१८.	सर्पविषहरी चूर्ण	१०.००
१९.	एक्जिमा मल्हम	२०.००
२०.	सितोपलादि चूर्ण	२०.००
२१.	नेत्रामृत विशेष	८.००
२२.	शक्तिदा ५०० मि.लि.	३०.००
२३.	बलदमृत ,,	४०.००
२४.	कुमार्यासव ,,	२८.००
२५.	लोहासव ,,	२५.००
२६.	अरविन्दासव ५०० मि.ली.	३५.००
२७.	अशोकारिष्ट ,,	२५.००
२८.	अश्वगन्धारिष्ट ,,	३२.००
२९.	दशमूलारिष्ट ,,	३५.००
३०.	अभयारिष्ट ,,	३०.००
३१.	खदिरारिष्ट ,,	३०.००
३२.	अर्जुनारिष्ट ,,	२८.००
३३.	चन्द्रप्रभावटी १० ग्राम	१२.००
३४.	इन्द्रयण वटी ,,	१८.००
३५.	महाशंख वटी ,,	१०.००
३६.	आरोग्यवर्धनी वटी ,,	१५.००
३७.	संजीवनी वटी ,,	१२.००
३८.	कुष्ठकुठार रस ,,	१५.००
३९.	कृमिमुदगर रस ,,	१५.००
४०.	लक्ष्मी विलास रस ,,	१८.००
४१.	आन्दभैरव ,,	१५.००
४२.	धात्रीलौह	१५.००
४३.	सुतशेखर रस	२५.००
४४.	शशि शेखर रस	३५.००
४५.	महायोगराज गुगुल	१६.००
४६.	अर्श रोगामृत	१०.००
४७.	चन्दनादि वटी	२१.००
४८.	लंवगादि वटी	१५.००
४९.	मृत्युन्जय रस	१२.००
५०.	अष्ठिलारिपु	१५.००

हमारे हिन्दी के प्रकाशन

१.	सत्यार्थ प्रकाश	२०/-
२.	खिलते फूल	४/-
३.	छात्र जीवन योग और स्वास्थ्य	५/-
४.	योगासन	८/-
५.	आश्रम गीताजंली	२/-
६.	फिटकरी	५/-
७.	त्रिफला भाग १	५/-
८.	त्रिफला भाग २	६/-
९.	तुलसी	५/-
१०.	शांतिकामार्ग ईश्वर भक्ति	३/-
११.	वैदिक लोरियां	१६/-
१२.	दैनिक उपासना	२/-
१३.	युवा और राष्ट्र	२/-
१४.	प्यारा ऋषि	८/-
१५.	मैं ईसाई क्यों नहीं?	१/-
१६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	४०/-
१७.	पौराणिक गप्प दीपका	७/-
१८.	विचित्र ब्रह्मचारी	३/-
१९.	गप्प शिरोमणि श्री राम शर्मा आचार्य	५/-
२०.	ईश्वर कहां है ?	४/-
२१.	गप्प शिरोमणि श्रीराम आचार्य (द्वितीय भाग)	६/-

सेवा में, श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
(उ० प्र०)

ग्राहक संख्या 3092

गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक पत्र

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

कृषकभूमि

आर्य समाज के अधिकारियों से नम्र निवेदन

आदरणीय श्री मन्त्री जी आर्य समाज .....

सप्रेम सादर नमस्ते

आपकी समाज का अपने क्षेत्र में विशेष स्थान है। वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार एवं रक्षा के लिये आपकी समाज ने अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये, आप सब आर्यबन्धु भी एक विशेष भावना एवं प्रेरणा ले के वैदिक धर्म को अपनाये हुए हैं और इसकी उन्नति के लिये भी प्रयत्नशील है। इस प्रकार आप सब के सहयोग से यद्यपि वैदिक धर्म का प्रचार बढ रहा है, परन्तु वर्तमान के बढते हुए प्रदूषण को देखते हुए हमारा कार्य बहुत कम है। मेरा आग्रह है आप वैदिकधर्म के प्रचार प्रसार के लिये कुछ और विशेष प्रयत्न करें, इसके लिये कुछ सुझाव इस प्रकार है –

1. वैदिकधर्म की शिक्षा देने के लिये आप किसी गांव या मुहल्ले को गोद लें, गोद लेकर सारे गांव में अच्छे वाक्य लिखवायें। गांव के प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति तक वैदिकधर्म की महत्ता एवं परिचय देने वाले छोटे 2 ट्रेक्ट होल्डर पुस्तकें आदि पहुचायें। उस गांव वें महीने में कम से कम एक बार सार्वजनिक बृहत् यज्ञ करके उन्हें इस प्रकार यज्ञ करने को प्रेरणा दें। वहां के किसी एक प्रमुख श्रद्धालु व्यक्ति को प्रेरणा देकर प्रतिदिन स्वाध्याय एवं संन्ध्या कक्षा चलाने की व्यवस्था करें, हो सके तो छोटा मोटा पुस्तकालय वहां बनाया जाय उस गांव के निर्धन छात्रों को वस्त्र पुस्तक आदि की सहायता देकर प्रोत्साहित किया जाये। यदि इन कामों के लिये आपका कोई गृहकार्य निवृत्त सदस्य अपना समय निकाल सके तो अच्छी बात है अन्यथा वैतनिक कर्मचारी रखकर भी इस कार्य को आगे बढाया जा सकता है।
2. अपने समाज व समाज के बाहर सार्वजनिक स्थल में अच्छे वाक्य लिखकर बडे 2 बोर्ड लगायें।

॥ निवेदक ॥

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
कार्यकर्त्ता प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
वर्त्तमान पता–आर्य समाज नयाबांस, दिल्ली–6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल आश्रम आमसेना में प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

जो सज्जन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं या संस्कार आदि करना सिखना चाहते हैं, उनके लिए ११ सितम्बर से ३० सितम्बर तक गुरुकुल में योग्य विद्वानों की देखरेख में प्रचारक प्रशिक्षण शिविर किया जा रहा है। भोजन आदि की व्यवस्था निःशुल्क है। जो सज्जन तपस्यापूर्वक २० दिन तक लगातार रह सकें, वे सज्जन सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, व्यवहार भानु तथा ऋतु अनुकुल विस्तरा साथ लेकर १० सितम्बर तक गुरुकुल पहुंचे।

नोट : कृपया शिविर में पहुंचने से पहले पत्रोत्तर द्वारा स्वीकृति अवश्य प्राप्त करें। स्थान सीमित है

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
आचार्य, गुरुकुल आश्रम आमसेना
जि. - नवापारा - खरियार रोड,
उड़ीसा -७६६१०९

साहित्य वितरण में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सहयोग करें

छोटे-छोटे ट्रेक्ट एवं विज्ञापनों के माध्यम से अच्छा प्रचार हो सकता है। साहित्य प्रचार का सबसे अच्छा माध्यम है, इसलिए सार्वदेशिक सभा ने यह प्रचार अभियान प्रारंभ किया है, इसमें अच्छी सफलता भी मिल रही है। हमारे निवेदन पर अनेक आर्य-समाज व व्यक्तिगत रूप से अनेक सज्जनों ने इन्हें मंगा कर बांटा है। अभी निम्न विज्ञापन व पुस्तकें उपलब्ध है।

१. मद्य निषेध	४०/- सैकड़ा
२. अण्डों से मौत	४०/-सैकड़ा
३. अण्डे मांस से हानियां	४०/- सैकड़ा
४. वैदिक धर्म संक्षिप्त परिचय	४०/- सैकड़ा
५. ईश्वर भक्ति क्यों और कैसे	४०/- सैकड़ा

इसी प्रकार निम्न पुस्तकें भी उपलब्ध है।

१. ईश्वर कहां है ?	४.००
२. शान्ति का मार्ग ईश्वर भक्ति	३.०० रु
३. रु, सच्चा धर्म	३.०० रु
४. वैदिक प्रश्नोत्तरी	८.०० रु.

आशा है आप इन विज्ञापनों व पुस्तकों को मंगाकर अधिक से अधिक संख्या में बांटकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहयोग देंगे। प्रचारार्थ ये सभी पुस्तकें भारी रियायत में दी जा रही है। २५ या इससे अधिक मंगाने पर आधे मूल्य में प्राप्त करें।

पुस्तक व विज्ञापन प्राप्ति स्थान -
गुरुकुल आश्रम आमसेना
जि. नवापारा (उड़ीसा) ७६६१०९

विरजानन्द संस्कृति परिषद द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं में भाग लें

छात्रों एवं नवयुवकों को वैदिक धर्म का ज्ञान देने के लिए धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन नवम्बर के अन्तिम रविवार को होगा। आर्य सज्जनों तथा आर्य विद्यालय के अध्यापकों से निवेदन है कि अपने सुपुत्र एवं छात्रों को अधिक से अधिक संख्या में परीक्षा में बैठने की प्रेरणा दें।

प्रथम परीक्षा ''सिद्धान्त कुसुम है। इसके लिए **वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी** १०० अंक की निर्धारित है। इसका शुल्क पुस्तक सहित १०/- रु अन्यथा ५/- रु. है। गत वर्ष जिन परीक्षार्थीयों ने ''सिद्धान्त कुसुम'' परीक्षा दी थी उनके लिए इस वर्ष **''सिद्धान्तप्राज्ञ''** निश्चित हुई है। इसके लिए पाठ्यक्रम इस प्रकार है -

प्रथम प्रश्न पत्र -

१. छात्र जीवन और योग -	
ले. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती	५० अंक
२. प्यारा ऋषि	
ले. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती	२५ अंक
३. आयोद्देश्य रत्न माला	
ले. महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५ अंक
(प्रथम २५ रत्न याद करने है)	

द्वितीय प्रश्न पत्र -

१. व्यवहार भानु	
ले. स्वामी दयानन्द सरस्वती	५० अंक
२. सत्यार्थ प्रकाश (द्वितीय समुल्लास)	
ले. स्वामी दयानन्द सरस्वती	५० अंक

इन परीक्षाओं पर अनेक आकर्षक पुरस्कार भी रखे गये हैं। विशेष जानकारी के लिए शीघ्र लिखें।

हमारा पता -

श्री परीक्षा मंत्री
विरजानंद सं. परिषद्
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, नवापारा उडीसा - 766109

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-ओइम्-

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुखपत्र

वर्ष - २०
अंक - ७
माह - जुलाई
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,०९९
विक्रमी संवत - २०५५
दयानंदाब्द - १७४

प्रतिष्ठाता :
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक :
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक :
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक :
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता :
गुरुकुल आश्रम आमसेना
व्हाया - खरियार रोड
जिला - नवापारा (उड़ीसा)
पिन - ७६६ १०९
फोन - (०६६७८) २२३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-
आजीवन - ३००/-
एक प्रति - २.५०/-

सम्पादकीय

आज देश जिस दूर अवस्था में से गुजर रहा है, उसे देखकर चाणक्य जैसे महामनीषी की अनायास ही याद आ जाती है कि काश ! आज भी कोई मनु महाराज के इस आदेश को मानने वाला चाणक्य होता।

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधाः ॥

अर्थात् वास्तव में दण्ड ही राजा दण्ड ही शासनकर्ता और वही दण्ड चार वर्ण तथा आश्रमों का प्रतिभु है अर्थात् जामीन है। वहीं सब प्रजा का रक्षक सोते हुए प्रजास्थ मनुष्यों में जागता है, इसीलिये बुद्धिमान् लोग दण्ड ही को धर्म कहते हैं।

समीक्ष्य स धृतः सम्यकसर्वा रञ्जयति प्रजाः।

जो दण्ड अच्छे प्रकार से धारण किया जाए तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है बिना दण्ड के सब वर्ण दूषित और सब मर्यादा छिन्न भिन्न हो जाती है। चन्द्रगुप्त के महामात्य तथा अर्थशास्त्र के निर्माता चाणक्य ने मनु के इस आदेश को मानते हुए उस समय बिगड़े हुए सारे देश की व्यवस्था को सुधार दिया था। वे चाणक्य सूत्र में लिखते हैं - **दण्डः सम्पदा योजते**, अर्थात् दण्ड ही राज्य को सम्पत्ति से युक्त बनाता है। प्रजा दण्ड के ही वश में रहतीहै। उनका इन सम्बंध में एक सूत्र और है।

दण्ड नीतिमनुतिष्ठन् प्रजाः संरक्षति दण्ड नीतिका प्रमादशून्य ठीक ढंग से प्रयोग करने वाला राजा ही प्रजा का पालन कर सकता है। दण्ड नीति ही प्रजा का अस्तित्व बनाये रखने वाला एक मात्र साधन है, अतः जो राजा या शासन इस दण्ड का ठीक उपयोग नहीं कर पाते तो उस राष्ट्र में अपराधी और दुष्ट लोग फलफूलकर प्रजा को अपना आहार बना लेते हैं। बाहर के शत्रु भी उस शासन को कमजोर मानकर खुलकर खेलने लगते हैं। अतः बुद्धिमान् शासक को पूर्ण सावधानी के साथ अन्दर तथा बाहर के शत्रुओं पर कठोरता पूर्वक दण्ड का प्रयोग करना चाहिए। आज दण्ड का प्रयोग बहुत कम हो रहा है। किसी बात का निर्णय करने में न्याय प्रणाली वर्षो लगा देती है और यदि दुर्भाग्यवश अपराध करने वाला प्रभावशाली हो या अपने अपराध को धर्म का नाम दे दें तो इन तथा कथित धर्मनिरपेक्ष राजनेताओं के हाथ पांव फूल जाते हैं। इसलिए आज देश के अन्दर और बाहर अपराधियों और शत्रुओं की बाढ़ आयी हुई है। सारे देश में लूटमार हो रही है। आतंकवादी खुलेआम हत्या करते हैं, और घूमते हैं, क्योंकि इन्हें पता है जिस देश में दण्ड व्यवस्था अत्यंत शिथिल है यदि कोई भूलवश दण्ड का प्रयोग करने का साहस करता है, तो यह स्वार्थी राजनेता चिल्ला चिल्लाकर वातावरण को खराब करने में कमी नहीं रखते और नहीं तो मानवाधिकार का नाम लेकर वातावरण को खराब कर देते हैं, अनुशासनप्रिय योग्य अधिकारियों को अनेक दोष लगाकर बदनाम करते हैं, पाठक भुले नहीं होंगे पंजाब में आतंकवाद समाप्त करने वाले साहसी पुलिस अधिकारियों को किस प्रकार अपमानित एवं परेशान किया गया। फलस्वरुप जिससे परेशान होकर एक दो अधिकारियों ने आत्महत्या तक करने के लिये विवश होना पड़ा।

सारा संसार जानता है कि पाकिस्तान कश्मीर में निरन्तर आतंकवादी गतिविधियां चला रहा है। देश के दूसरे भागों में भी तोड-फोड़ करवा रहा है, परन्तु किसी भी राजनैतिक दल ने उसे धमकाकर दबाने का बल नहीं किया। उल्टे उनके सामने हाथ जोड़ते रहे क्योंकि सामान्यतः नियम यह है कि दुष्ट सज्जनता या सहनशीलता को कायरता मानकर अधिक शिर पर चढ़ता है, पाकिस्तान भी हमारे शासकों की कमजोरी मानकर देश में निरन्तर समस्या खडी करता आ रहा है, सीमा पर वातावरण को उत्तेजित बनाये रखता है, इससे परेशान होकर वर्तमान गृहमंत्री श्री लालकृष्ण आडवानी ने उसे धमकी दी तो पाकिस्तान सकपका गया, ऐसे समय में दूसरे दल के राजनेताओं को भी पाकिस्तान की भर्त्सना करनी चाहिए। इससे उसका साहस और टूटता परन्तु हमारे देश के वर्तमान राजनेताओं की यही नीति है कि शासन करनेवाले में दोष निकालकर उसे बदनाम करो। चाहे देश की कितनी हानि हो जाय, अब भी इन तथाकथित नेताओं ने श्री आडवानी के वक्तव्य की निन्दा करते हुए पाकिस्तान एवं चीन के आगे हाथ जोडने का परामर्श दिया। यह लोग पाकिस्तान के संरक्षक अमेरिका एवं ब्रिटेन से बिना कारण डरते हैं।

जबकि उन दोनों देशों की नीति फूट डालो और राज करो की रही है, उसी नीति का अनुसरण करते हुए भारत पर सदा के लिये शिरदर्द बनाये रखने के लिये दोनों तरफ दो पाकिस्तान बनाये, यदि उस समय चाणक्य जैसा शासक होता तो इंग्लैण्ड के जाते ही दोनों पाकिस्तानों को भी समाप्त करके इस शिरदर्द को सदा के लिए समाप्त कर देता। अब भी अवसर है भारत के राजनेताओं को दण्ड की महत्ता समझकर इसका सदुपयोग करना चाहिए तथा एक बार हिम्मत करके सारी कश्मीर घाटी को अपने अधिकार में ले ही लेना चाहिये। इसके लिये पहले अन्दर के आतंकवादियों को कठोरतापूर्वक समाप्त करना आवश्यक है, भले इसमें कुछ अधिक लोगों की प्राण हानि हो परन्तु इससे आगे सदा के लिये स्थायी शान्ति हो जायगी। जो बहुत सस्ता ही होगा। देखें देश के कब सुदिन आते हैं। चाणक्य नहीं तो सरदार पटेल, स्वामी स्वतन्त्रतानंद जैसा लौह पुरुष देश को कब मिलता है।

व्रतानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदोपदेश

धन कमावें किन्तु पवित्रता पूर्वक

❑ ब्र. सचीन कुमार शास्त्री

धन मनुष्य जीवन के लिए परमावश्यक वस्तु है। संसार में, संसार के ढंग से जीवन यापन के लिए, धन अनिवार्य है। निर्धन व्यक्ति पंखकटे पक्षी के समान है, जो नाममात्र जीवित है, न कहीं जा आ सकता है और न पेट की आग ही बुझा सकता है। निर्वाह की आवश्यकता के पश्चात् मनुष्य को समाज में सम्मान पूर्वक जीने की इच्छा होती है पैसे के अभाव में समाज में आपके सब गुण निरर्थक लगते है और समुदाय में जो सम्मान मिलना चाहिए वह भी नहीं मिलता। वैदिक प्रार्थनाओं में कहा गया है – **''वयं स्याम पतयोरयीणाम्''** हमारे समाज के सब मनुष्य ऐश्वर्यशाली हों, **''मूर्धाऽहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्''** मैं ऐश्वर्य का मस्तक बनकर रहूं अर्थात् धनार्जन की योजनाएँ मेरे मस्तिष्क से आविर्भूत हो और मैं अपने बराबर वालों में उनका नेता बनकर रहूँ **''नाभिरहं रयीणां नाभि समानां भूयासम्''** मैं ऐश्वर्य का केन्द्र बनकर रहूँ अपने समकक्षों की गतिविधियाँ भी मेरे चलाने से चले।

अतः वेद संसार में मानवजीवन को सम्पन्न, सुखी और उत्तम गुण कर्मों का केन्द्र बनाने की प्रेरणा देता है। इसके साथ ही वेद कहता है धन संसार में बहुत-कुछ है, किन्तु सब कुछ नहीं, धन के ऊपर धर्म का नियन्त्रण रहना चाहिए जहां यह अंकुश नहीं रहता, वहीं कभी न बुझनेवाली विलासिता की भीषण आग जल उठती है। वेद ने खूब धन कमाने का आदेश दिया है, परन्तु कैसे? परिश्रम और सच्चाई से यही सभी के हित में है। वेद में कहा गया – **''रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे । यशसं वीरवत्तमम्**– अर्थात् मनुष्य पुष्टि-कारक यशदायक और बलदायक धन ऐश्वर्य को ही प्रतिदिन अपने घोर परिश्रम से प्राप्त करे।

सर्वेषामेव शौचानामर्थशौचं परं स्मृतम्।
योऽर्थे शुचिर्हि स शुचिर्न मृदारिशुचिः शुचिः॥

अर्थ सभी प्रकार की शुद्धियों में अर्थ से संबंध शुद्धि ही परम शुद्धि है। जो धर्म (न्याय) ही से पदार्थों का संचय करता है वही सब पवित्रताओं में उत्तम पवित्रता है अर्थात् जो अन्याय से किसी पदार्थ का ग्रहण नहीं करता वही पवित्र है। किन्तु जल, मिट्टी आदि से जो पवित्रता होती है वह धर्म के समान उत्तम नहीं है।

नेहेतार्थान्प्रसङ्गेन न विरुध्देन कर्मणा।
न विद्यमानेष्वर्थेषु नार्त्यामपियतस्ततः॥

अर्थ –कभी भी किसी दुष्ट के प्रसंग से धन इकट्ठा न करे न गलत काम से और न किसी वस्तु के होते हुए उसे छिपा करके ही। चाहे कितना भी दुःख उठाना पडे तो भी पाप से धन न बटोरे।

अतः धन को अपेक्षित महत्व तो देना ही चाहिए। इसमें दो ही बातों की सावधानी आवश्यक है पहली अर्जन प्रक्रिया और दूसरी उपभोग की मर्यादा। धन कमाने के विषय में वेद के इस मन्त्र में कहा गया कि धन परिश्रम से कमाओ! एक स्थान से लेकर दूसरे स्थान पर जमा करने का नाम कमाना नहीं है असली कमाई तो देश का उत्पादन बढ़ाने वाला है। ऐसे व्यवसाय और काम, जिनकी न्यूनता की पूर्ति के लिए देश को परमुखापेक्षी होना पड़ता है देश के बुद्धिमान् नागरिकों को परिश्रम करके उनका उत्पादन करना चाहिए।

अजानन्माहात्म्यं पततु शलभो दीपदहने
स मीनोरप्य ज्ञानात् वडिशयुतमश्नात पिशितम्
विजानन्तोत्येते वयंमिह विपज्जालजटिलान्
मुंचामः कामानहो! गहन मोहमहिमा॥

अग्नि के माहात्म्य से अनभिज्ञ पतंग दीपक की लौ में स्वयं को भस्म कर डालता है और मछली भी फन्दे को न जानकर बंशी में लगे मांस को खाने के लिये लपकती है। इसी प्रकार हम अपनी कामनाओं को विपत्ति का जटिल जाल को जन्जाल युक्त जानते हुए भी उन्हें नहीं छोडना चाहते। अहो, मोह की महिमा कैसी गहन है।

जो परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है। क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रक्खे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना 'कृतघ्नता' और 'मूर्खता' से कम नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का श्रावणी पर्व का सन्देश व अपील...

मान्यवर,

सादर नमस्ते,

इस वर्ष श्रावणी का पवित्र पर्व ८ अगस्त १९९८ शनिवार को मनाया जाना है। वैदिक संस्कृति का यह प्राचीनतम पर्व भगवान की पवित्र वाणी वेद का संदेश लेकर आता है। वैसे सारा देश ही इसे किसी ने किसी रुप में मनाता है, परन्तु ऋषियों ने इसका प्रचलन वेद शास्त्रों के स्वाध्याय के लिए किया था। वेद का स्वाध्याय परम धर्म एवं परमतप है। आर्य समाज की पहली पीढ़ी के जो आदर्श कार्यकर्त्ता जो हमारे प्रेरणाश्रोत हो गये हैं उनमें से अधिकतर आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के बल पर ही इतने ऊंचे स्तर तक उठे थे। आशा है आप भी इधर ध्यान देंगे एवं निम्न लिखित बातों पर आर्य जनता को ध्यान दिलायेंगे।

१. इस पर्व को हैदराबाद सत्याग्रह में बलिदान हुए सत्याग्रहियों तथा अन्य आर्यवीरों के बलिदान के रूप में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। अतः इस वर्ष भी इस पर्व को बलिदान दिवस के रुप में मनायें व श्रद्धांजलि अर्पित करें।

२. आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य वैदिक धर्म में आने के लिये लोगों को प्रेरित करें एवं उन्हें यज्ञोपवीत देकर आर्य बनायें।

३. श्रावणी से कृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह समारोह पूर्वक मनायें। इसके लिए कोई उपदेशक उपलब्ध न हो तो कोई स्वाध्यायशील सदस्य स्वयं कथा उपदेश आदि करे। इसके लिये प्रतिदिन अलग-अलग घरों में सत्संग की व्यवस्था भी करें।

४. वैदिक धर्म के प्रचार के लिए छोटे-छोटे ट्रेक्ट आदि छपवाकर शिक्षित व्यक्तियों में बंटवायें।

आशा है इस अवसर पर अपनी सहायता राशि भी सभा को अवश्य भेजेंगे। यदि चैक या ड्राफ्ट भेजें तो ''पं. लेखराम बलिदान शताब्दी समारोह'' दिल्ली के नाम से भेजें।

''निवेदक''

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती	धर्म पाल आर्य	स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती
कार्यकर्ता प्रधान	***कोषाध्यक्ष***	***मंत्री***

उपप्रधान

प्रो. शेरसिंह, सत्यवीर शास्त्री, केशवदेव वर्मा, रमेश चन्द्र श्रीवास्तव, विट्ठलराव आर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्: जप: विधि और निर्देश

❑ आचार्य ज्ञानेश्वर

जप के विषय में कुछ आवश्यक निर्देश

1. किसी मंत्र, वाक्य या शब्द का बार-बार उच्चारण करना 'जप' कहलाता है।
2. जिस मंत्र, वाक्य या शब्द से जप किया जाये, वह ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना या उपासना से सम्बंधित होना चाहिए, अन्य किसी विषय से संबंधित नहीं होना चाहिए।
3. जप के समय तीन क्रियाएं होनी चाहिये –

   (क) शब्द का उच्चारण ,

   (ख) शब्द के अर्थ का विचार (जिसे भावना कहते है)

   (ग) ईश्वर – प्रणिधान

   उपर्युक्त तीनों क्रियाओं के बिना जप का पूरा लाभ नहीं होता।
4. यदि जप के काल में तीनों क्रियाएँ एक स्थान न हो सकें, तो पहले शब्द मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए। फिर रुक कर शब्द के अर्थ का विचार करना चाहिए किन्तु ईश्वर प्रणिधान तो दोनों क्रियाओं के साथ रहना चाहिए। अभ्यास से तीनों क्रियाएं एक साथ होने लगती है।
5. जप मुख्य रुप से तीन प्रकार से किया जा सकता है।

   (क) ऊंचे स्वर से बोलकर ,

   (ख) बिना ध्वनि के, केवल होठ हिलाकर।

   (ग) मन में उच्चारण करके (बिना होठ हिलाये)।
6. नवीन साधक को ऊंचे स्वर मे जप करने में सरलता रहती है। ऐसा करने से वह वृत्तियों को रोकने में समर्थ हो जाता है, जैसे साधक की योग्यता बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे दूसरी व तीसरी विधि अनुकूल पड़ने लगती है।
7. एक काल में (एक समय की उपासना में) एक ही मंत्र या शब्द का बार-बार उच्चारण पूर्वक जप करना चाहिए। जैसे ओऽऽऽऽऽऽम् न्यायकारी, ओऽऽऽऽऽऽऽऽम् न्यायकारी, ओऽऽऽऽऽऽम् न्यायकारी। ऐसा करने से ईश्वर के स्वरुप का हम पर विशेष प्रभाव पड़ताहै। इसके विपरीत शीघ्र ही शब्दों को बदलते जाने से विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, जैसा कि ओऽऽऽऽऽऽम् न्यायकारी ओम दयलु ओऽऽऽऽऽम् अजन्मा इत्यादि।
8. यद्यपि ईश्वर के किसी भी नाम का जप, ध्यान के समय किया जा सकता है, किन्तु जिन मंत्रों या शब्दों से या वाक्यों से ईश्वर का सर्वाधिक स्वरुप (गुण,कर्म, स्वभाव) हमारे समक्ष उपस्थित होता है, उन शब्दों या मंत्रों का जप करना अधिक लाभकारी रहता है। ऐसे अनेक शब्दों या मंत्रों का निर्वाचन ऋषियों ने कर रखा है, हमें उन्हीं के माध्यम से जप करना चाहिए, जैसे कि (क) ओ३म् (ख) गायत्रीमंत्र, (ग) प्राणायाम् मंत्र ओ३म् भू. ओ३म भुव....इत्यादि। (घ) ओ३म् असतो मा सद्गमय...। इसी प्रकार से अन्य शब्दों से या मंत्र से भी जप कर सकते हैं, जैसे कि (च) ओ३म् आनन्द (छ) ओ३म् सत्यं ज्ञानं अनन्त ब्रह्म (ज) ओ३म् तेजोऽसि तेजो मयि धेहि... (झ) ओ३म् विश्वानिदेव सवितर... इत्यादि....।
9. ईश्वर के जिस गुण, कर्म, स्वभाव को मन में रखकर जप किया जाता है तो ईश्वर के उसी गुण की प्राप्ति होती है, जैसे कि –

(क) 'आनन्द' शब्द से जप करें तो आनन्द की प्राप्ति होगी।

(ख) 'सर्वज्ञ' शंब्द से जप करें तो ज्ञान की प्राप्ति होगी।

(ग) 'रक्षक' शब्द से जप करें तो हमारे अन्दर भी और दूसरों की रक्षा करने का गुण आयेगा।

(घ) 'निर्भय' शब्द से जप करें तो निर्भयता की प्राप्ति होगी।

'ओ३म्' शब्द की जपविधि (ध्वनिपूर्वक बोलकर) इसकी विधि इस प्रकार से है कि साधक को अच्छी प्रकार आसन लगाकर सीधा होकर बैठना चाहिए और प्राण वायु को शरीर में धीरे-धीरे भर लेना चाहिए। जब वायु शरीर में पूरी तरह भर जावे तो 'ओ३म्' शब्द का गंभीरता से प्रेम पूर्वक उच्चारण करना चाहिए। उच्चारण करते समय अन्दर भरी हुई वायु अपने आप बाहर निकलती रहेगी। जब 'ओ३म्' शब्द का एक अर्थ (यथा सर्वरक्षक) का विचार करना चाहिए। यह विचार इन शब्दों में किया जा सकता है। कि "हे परमेश्वर ! आप सर्वरक्षक है, आप मेरी रक्षा करो"। इतना विचार कर फिर शरीर में दुबारा श्वास भर कर पूर्व की तरह धीरे-धीरे गंभीरता व प्रेमपूर्वक 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण करना चाहिए। जब उच्चारण जावे तो पुनः उसी प्रकार अर्थ का विचार करना चाहिए। इस प्रकार बार-बार उपासना काल में 'ओइम्' शब्द का लम्बे स्वर से उच्चारण तथा इस शब्द के किसी एक अर्थ की चिंतन करना चाहिए। इन दोनों कार्यों को करते हुए एक तीसरा काम ईश्वर प्रणिधान भी करना चाहिए। "ईश्वर मुझे देख-सुन-जान रहा है। मैं उसी में डूबा हुआ हूं ईश्वर मेरे अन्दर विद्यमान है"। ऐसा विचार (करना –भावना बनाना" "ईश्वर प्रणिधान" कहलाता है। शब्द का उच्चारण शब्द के अर्थ का विचार तथा ईश्वर प्रणिधान बनाये रखने से ही जप का विशेष लाभ होता है।

इसी प्रकार बिना उच्चारण किये (केवल होठ हिलाकर) तथा होठ को भी न हिलाते हुए मन में शब्द का उच्चारण, अर्थ चिन्तन तथा ईश्वर प्रणिधान करते हुए जप किया जा सकता है। ❑

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्मफल कालान्तर में

स्व. श्री ओम्प्रकाश जी आर्य

कर्म सिद्धान्त एक अत्यन्त ही मानवोपयोगी विषय है। यह सब सिद्धांतों में मुख्य और सर्वोपरि है। सृष्टि की उत्पत्ति का मुख्य कारण कर्म ही है। इसी के कारण इस जीव को उत्तम, मध्यम, और निकृष्ट योनियों में भटकना पडता है और कर्मानुसार फल भोगना पड़ता है। यह सिद्धान्त इतना व्यापक, उपयोगी और आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति को इसके जानने, समझने और तदनुसार आचरण करने का यत्न करना चाहिए।

हम देखते हैं कि एक व्यक्ति तो ऐसा है जिसका परिवार खिलाने-पिलाने का प्रबन्ध कर सकता है। एक दूसरा ऐसा परिवार है जिसमें १०-२५ व्यक्ति रहते हैं। उनके रहने को मात्र एक झोपडी है जिसमें सूर्य का प्रकाश नहीं, खाने-पीने का कोई प्रबन्ध नहीं। परिवार के लोग सड़कों पर सोते हैं। वर्षा, गर्मी और सर्दी से बचने का कोई साधन नहीं। आखिर दोनों परिवारों में इतनी बड़ी विषमता क्यों है ? क्या यह अकारण ही है जबकि परमात्मा हम सबका ही माता, पिता, बन्धु, रक्षक और पालनकर्ता हैं ?

हमारे कुछ मित्र प्रश्न किया करते हैं कि हम यहाँ पिछले कर्मों का फल भोगते हैं इस जन्म के किये कर्मों का फल क्यों नहीं भोगते ? ईश्वर की ऐसी व्यवस्था को कौन अच्छा कहेगा ? उनकी धारणा यह है कि पाप करने वाला दिनदुगुनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है और हम धार्मिक जीवन व्यतीत करने वाले सदा दुःखी ही रहते हैं। अनेक व्यापारी ऐसे हैं जो अपने माल में मिलावट करते हैं, उनका धंधा ही ब्लैक करना है। रातों रात में ही लखपति और करोड़पति बन जाते हैं और दूसरे व्यक्ति जो भगवान की प्रजा की दिन-रात सेवा करते हैं, पूजा-पाठ में मन लगाते हैं, बड़े दुःखी और असहाय दीनता का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे भाइयों का विचार मिथ्याज्ञान पर ही निर्भर रहता है। यह ठीक नहीं है। न तो सारे धार्मिक व्यक्ति दुःखी हैं और न सारे ही पापी या अपराधी सुखी रहते हैं। उन्हें यह बात समझनी और समझानी चाहिए कि जो धार्मिक व्यक्ति दुःख भोग रहा है धर्म के कारण अर्थात् धर्म के फलस्वरूप वह व्यक्ति दुःखी नहीं है अपितु धर्म करते समय (धर्म का सम्पादन करने में) आने वाले कष्टों से कष्टित है। इसी प्रकार से पाप करते समय सुखी है न कि पाप करने के कारण सुखी है। No because of that but inspite of that, अतः ऐसे भाइयों को समझ लेना चाहिए कि धर्म का फल सदैव ही सुख मिलेगा और पाप का फल दुःख ही होता है।

न्याय दर्शन में महर्षि गौतम ने एक सूत्र लिखा है -

पूर्वकृत कलानुबन्धात् नदुत्पत्ति :३/२/६३

पूर्व शरीर में किये कर्मों का फलों के अनुबन्ध-लगाव से वर्तमान शरीरोत्पत्ति होती है। शरीर की रचना पूर्वकर्मानुसार ही है। पहले किये कर्मों के फलस्वरुप अदृष्ट धर्माधर्म के सम्बन्ध सहयोग से सद् उत्पत्तिः उसकी शरीर की उत्पत्ति या रचना होती है।

इस सूत्र पर वात्स्यायन मुनि जी लिखते हैं -उसका भाव है - पहले जन्मों के काल में जो वाणी, उन कर्मों के फलस्वरुप धर्माधर्म संस्कार आत्मा में रहते हैं। भूतों से शरीरोत्पत्ति में आत्मा सहित वे पाप-पुण्य के बुद्धि और आत्मा ने शुभाशुभ कर्म किये शरीर द्वारा सहयोगी रहते हैं। भूत तत्व शरीर निर्माण में उपादानकारण और पूर्वकृत् कर्म निमित्त कारण बनते हैं। इसलिए भेद दिखता है, कोई समृद्ध कुल में जन्म लेता है, कोई साधारण और कोई अति निर्धन कुल में, कोई शरीर से अत्यन्त सुन्दर, कोई कुरुप कोई रोग रहित और कोई रोगी, कोई कष्टमय जीवन बीता रहा है कोई बहुत ही सुखी है, कोई ठिगना, कोई लम्बा, किसी के शरीर में इन्द्रियाँ शिथिल- नठीक सुनाई दे, न ठीक दिखाई दें, कोई बहुत ही मूर्ख, कोई बहुत ही चतुर इत्यादि ऐसा शरीर पूर्वकृत कर्मों के आधार पर ही मिला करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम अकेले हो, पर शक्तिहीन नहीं !

❑ श्रीराम चरण महेन्द्र

पक्षी फल न रहने पर वृक्ष को छोड देते हैं, सारस जल सूख जाने पर सरोवर का परित्याग कर देते हैं, मृग दग्ध वन को छोड़कर भाग जाते हैं आपको अपना मित्र कहने वाले व्यक्ति आपत्तिकाल आने पर हाथ झाडकर दूर खडे हो जाते हैं। परिवार के व्यक्ति तक जब उनका स्वार्थ सिद्ध नहीं होता, तो मनुष्य का परित्याग कर देते हैं। सब लोग सांसारिकता, मिथ्या प्रदर्शन तथा झूठे सम्बन्धों में स्वार्थवश प्रेम करते हैं। वास्तव में कौन किसका प्रिय है ? तुम अकेले हो।

कितने ही व्यक्ति इस संसार को यह अकेलापन न जानकर दूसरों से कष्ट या असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार पाकर बडे दुःखी होते हैं। माता-पिता अपने पुत्र पुत्रियों की गलतियाँ गिनाते हैं, उपदेशक अपने श्रोताओं की, दुकानदार अपने ग्राहकों की खराबियाँ बखानते है, लेकिन संसार के अकेलेपन का अनुभव नहीं करते, जो व्यक्ति दूसरों से अनावश्यक झूठी आशाएं लगाये रहते हैं, वे निराश होकर अन्त में संसार की कठोरता का अनुभव करतेहैं।

अमुक की हमने पढ़ाई करायी थी, वह अब हमारी सहायता करेगा, अमुक से हमें ऋण प्राप्त हो जायेगा, अमुक चीज हमने माँगी हुई दी है , अब वह दुगुनी वापस आ जायगी। ये आशाएं प्रायः पूर्ण नहीं होती। लोग अपने दुःखों, तकलीफों तथा कठिनाईयों के कटु अनुभव दूसरों को सुनाते नहीं थकते। अपने ये अनुभव सुनाकर वे यह आशा लगाये रहते हैं कि दूसरे उनसे सहानुभूति प्रदर्शित करेंगे, रुपये-पैसे से सहायता करेंगे, पुत्री के लिये वर खोजने में मदद कर देंगे। ऐसी आशाएं संसार की कठोर चट्टानों पर टकराकर चूर-चूर हो जाती है।

किसे पडी है कि आपके आंसू पोंछे। किसे आपकी हृदय-विदारक मन्त्रणाएं सुनने का अवकाश है ? किसके पास इतना रुपया है कि आकर आपके ऋण को उतार देगा और आपकी जीविका में सहारा लगायेगा ! कौन आपकी पुत्री के लिये वर तलाश करने का सरदर्द मोल लेगा। कौन बैठे बिठाये व्यर्थ आपकी समस्याओं में उलझेगा ? आप अकेले है ! आप कहेंगे कि आपके पिता, माता, पुत्र, भाई, बहिन, परिवार, कुटुम्बी तथा इष्ट मित्र हैं, फिर हम क्योंकर अकेले हैं ? आपका तर्क ऊपरी दृष्टि से ठीक है। तत्व की तह में जाइये तो आपको धीरे-धीरे उनका स्वार्थ दिखायी देने लगेगा। जब तक आपके द्वारा उनकी स्वार्थ सिद्धि होती है, उपरि रिश्ता चलता है। जिस दिन यह स्वार्थ रज्जु टूट जायगी, सब अलग हो जायेंगें।

मनुष्य का अकेलापन इस बात से प्रकट होता है कि वह इस पृथ्वी पर अकेला ही आया है। अकेला ही माता की गोद में पलता रहा और बड़ा हो गया। बडा होने पर उसे भाई-बहिन माता-पिता परिवार का ज्ञान हुआ, किन्तु फिर भी वह अनेक दृष्टियों से अकेला ही रहा। अपने स्वास्थ्य, विचार, चुनाव इत्यादि के विषय में वह अकेला है। जब आपके स्वास्थ्य में विकार होता है तो कौन आकर अपना अङ्ग उधार दे सकता है। आपके कान नाक मुंह हाथ, पांव बेकार होने पर कौन उनकी जगह दे सकता है ? आपके पाप, पुण्य उत्कर्ष या सत्कार्यों का भार आपको छोड़कर किसके अन्तः करण पर हो सकता है ? आप जो असत्य भाषण करते हैं, उसके द्वारा होने वाले मिथ्याचार का कौन उत्तर दायी हैं ? क्षणिक उत्तेजना या प्रमादवश जब आप कुछ नासमझी का कार्य कर बैठते हैं, तो उसके द्वारा आप पर आयी हुई आपत्तियों के केवल आप ही जिम्मेदार हो सकते हैं।

अपने पाप में आप अकेले हैं। अपने पुण्यों का सुखभोग करने में भी आप अकेले हैं। अपने जीवन के दुःख, तकलीफ, लाभ, हानि, ज्ञान, अज्ञान, धन, गरीबी, बन्धन, मोह, स्वतन्त्रता, रोग, शोक, विवेक-दृष्टि, मन्दमति से आप अकेले ही जिम्मेदार हैं। दूसरों को अपनी असफलताओं का कारण मत समझिये स्वयं आपकी बुद्धि, मनोविकार,, सुझबूझ ही आपकी सफलता असफलता के लिये जिम्मेदार है।

यदि आप अकेले हैं तो घबराने, दिल छोटा करने, निराश होने की आवश्यकता नहीं है। अकेले हैं, तो स्वयं अपने ऊपर भरोसा रखा कीजिये। अपने कार्य को दूसरों पर मत छोड़िये। 'मैं स्वयं ही इस कार्यको कर सकता हूँ। मेरे अंदर परमेश्वर की शक्तियां जाग्रत हैं। मैं ईश्वरीय नियमों के अनुसार ही विश्व में निज कर्तव्य की पूर्ति कर रहा हूँ। मेरी शक्तियाँ असीम है, इस भावना को दृढ करने की आवश्यकता है।

तुम अकेले ही सबकुछ कार्य सफलता से पूर्ण करने में सम्पन्न हो तुम्हें किसी का आश्रय नहीं खोजना है, अनेक जन्मों के उपरान्त इस परम पुरुषार्थ के साधन रुप नर देह को, जो अनित्य होने पर भी परम दुर्लभ है, पाकर धीर पुरुष को उचित है कि स्वयं आगे बढ़ता रहे। दूसरों का आश्रय ग्रहण करने के लिये किसी की प्रतीक्षा न करें।

तुम अकेले हो, पर शक्तिहीन नहीं ! हे अविनाशी आत्माओं ! तुम तुच्छ नहीं हो, कायर नहीं हो, तुम्हे कोई सता नहीं सकता। तुम्हें किसी आवश्यकता का अनुभव नहीं करना है, कुछ मांगना नहीं है, तुम्हें आदिकर्ता ने उन सभी शक्तियों से विभूषित करके पृश्वी पर भेजा है, जिनके बलपर तुम आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकते हों ?

जिन साधनों को लेकर तुम अवतीर्ण हुए हो वे अचूक ब्रह्मास्त्र है। इनकी शक्ति अनेक इन्द्रबलों से अधिक है। सफलता और आनन्द तुम्हारे जन्म जात अधिकार है, उठो ! अपने को अपने हथियारों को, भलीभांति पहचानों और बुद्धिपूर्वक कर्त्तव्य मार्ग में अग्रसर होओं। दूसरे की सहायता या प्रोत्साहन की अपेक्षा मत करो। दूसरा कोई तुम्हारी सहायता नहीं करेगा। तुम स्वयं कल्पवृक्ष हो, पारस हो अमृत हो और सफलता की साक्षात् मूर्ति हो तुम शरीर नहीं हो, वर आत्मा हो, तुम इन्द्रियों के गुलाम नहीं हो, गंदी वासनाएं तुम्हे मजबूर नहीं कर सकती। पाप और अज्ञान में इतनी शक्ति नहीं कि वे तुम्हारे ऊपर शासन कर सके। अपने को दीन-हीन, पतित, पराधीन और दूसरों पर आधारित मानना एक प्रकार की आत्महत्या है। हे महान् पिता के महान् पुत्रों अपनी महानता को पहचानों। उसे समझने, खोजने और प्राप्त करने में तत्परता से जुट जाओ।

अपनी वास्तविकता को पहचानना, अपनी कमजोरियों तथा शक्तियों से परिचित हो जाना ही स्वाधीनता का मार्ग है। गीता का यह वचन स्मरण रखों -

उद्धरेदात्मनाऽऽत्मानं नात्मानमवसादयेत् ।
आत्मैव ह्यात्मतो बन्धुरात्मैव शत्रुरात्मनः॥

अर्थात हमें स्वयं अपना उद्धार करना चाहिये। अपनी हिम्मत हम कभी न हारें, क्योंकि हमारी आत्मा ही हमारा मित्र है और हमारी आत्मा ही हमारा शत्रू है। कोई दूसरा शत्रू मित्र नहीं है।

❑ आशा की नयी किरणों से साभार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय का पर्व श्रावणी

सुदर्शनदेवार्य
गुरुकुल आमसेना

श्रावणी उपाकर्म महत्वपूर्ण वैदिक पर्व है। गृहसूत्रों के अनुसार इस पुण्य पर्व का सम्बन्ध वेदाध्ययन के शुभारम्भ से है। वर्षाकालीन चातुर्मास्य के मनोरम वातावरण में वेद के स्वाध्याय को प्रारम्भ कर पौष मास में इसका विसर्जन किया जाता था, श्रावणी आर्यों के प्रचलित प्रसिद्ध पर्वों मे से एक महान् सामाजिक पर्व है। पर्व का अर्थ है पूरक वा ग्रन्थि। यह जन मानस को आनन्द पूरित करने के कारण पूरक तथा ग्रन्थि स्वरुप होने से हमारी पुण्य ऐतिहासिक परम्पराओं का सुरक्षा कवच भी है। ईख के रस को जिस प्रकार इक्षु दण्ड की ग्रन्थि ही सुरक्षित रखती है। बांस की सुरक्षा उसकी ग्रन्थियों से ही सम्भव है, जैसे समस्त शरीर की सुदृढता का मूल कारण शारीरिक ग्रन्थिया ही है। इसी प्रकार हमारे समाज में मनाये जाने वाले विविध पर्व जातीय संगठन का मुख्य आधार प्रतीत होते हैं। राष्ट्र की भावात्मक एकता का संयोजन करने वाले यह सुपावन पर्व ही है। यह पर्व केवल पर्व ही नहीं गृह कर्म भी है।

आर्य जाति के सभी पर्व ऋतुओं के अनुकूल होते हैं। श्रावणी पर्व भी ऋतु-परिवर्तन के अनुसार मनाया जाता है। वैसे तो हमारे पूर्वज नित्य ही वेद पढना-पढ़ाना अपना कर्त्तव्य समझते थे पर इसपर्व को वे विशेष रुप से वेद के स्वाध्याय का पर्व मानते थे। वर्षा ऋतु में वेद का प्रचार वैदिक शिक्षाओं का उपदेश सर्वत्र किया जाता था इसका कारण यह था कि भारत कृषि प्रधान देश है यहां के किसान आषाढ और श्रावण में खेती करने में अधिक जुटे रहते हैं। श्रावण की फसल की जुताई आषाढ़ से शुरु करके श्रावण के अन्त तक समाप्त हो जाती है। श्रावण पूर्णिमा तक ग्रामवासी किसान खेती के काम से निश्चिन्त होकर आनेवाली फसल की ओर ध्यान देते हैं। वर्षा के कारण खेती अधिक न करके विश्राम लेते है। अधिक वर्षा होने से क्षत्रिय भी युद्ध के लिए बाहर नहीं जा सकते, इस कारण ग्राम या नगर में रहकर जनता सन्त महात्माओं के उपदेश सुनकर वेद पढ़ते और धर्मोपदेश से लाभ उठाते हुए चौमासा बिताते थे। जिस दिन वेद के पढ़ने-पढ़ाने का यह शुभकार्य प्रारम्भ होता था उसे उपाकर्म कहते थे। यह श्रावण सुदि पूर्णिमा या पंचमी को शुरु होता था।

श्रावणी पर्व का सीधा सम्बन्ध स्वाध्याय से है, स्वाध्याय की गरिमा शतपथकार ने ऐसे लिखी है स्वाध्याय शील व्यक्ति सोलह लाभों से वञ्चित नहीं रह सकता। १. योगी की तरह मनस्वी २. पर-मुखापेक्षी नहीं ३. न आर्थिक दृष्टि से न अन्तर्दृष्टि के अभाव से कष्ट पाता है ४. सुख की नींद सोता है ५. कष्ट में अपना उपचार भी आप करता ६. इन्द्रिय संयमी ७. नित्यपरमानन्द में लीन ८. प्रज्ञावृद्धि अपनी ही नहीं दूसरों की ९. हर किसी की आवाज १०. आदर्शवत्-राष्ट्र पुरुष ११. कीर्ति वान १२. लोग उसके पास उड़ेचलें आते हैं १३. उसकी पूजा करने १४. उसके लिए भेंट चढाने १५. उसकी अपरिग्रहता पर मुग्ध होने १६. उसकी अस्मिता से स्वयं होने।

इस प्रकार के सब आत्मोन्नति लाभों को देखते हुये हमारे प्राचीन मनीषियों ने स्वाध्याय हेतु एक पर्व को निश्चित किया। इसलिये श्रावणी पर्व प्रतिवर्ष यह सन्देश देता है कि हमें अपने पूर्वजों के समान वेद का स्वाध्याय करने में किसी प्रकार भी आलस्य नहीं करना चाहिए। महर्षि दयानंद जी आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखते हैं ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' हमें अपने परम धर्म का पालन, अवश्य करना चाहिए।

श्रावणी उपाकर्म का पर्व भारतीय समाज में रक्षा बंधन के नाम से भी मनाया जाता है। प्राचीन काल में ब्रम्हवर्चसी ब्राम्हण वेद की रक्षार्थ क्षत्रियों तथा वैश्यों के करकमलों में रक्षा सूत्र बांधकर उन्हें वेद सर्वस्व रक्षा का व्रत दिलाते थे। मध्ययुग में विदेशी आक्रान्ताओं के भय से भारतीय देवियां भी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए भाइयों तथा अन्य बलिष्ट कलाइयों में स्नेहमय राखियां बांधकर वे पवित्र उत्सव मनाने लगी। यही भाई बहिन के सच्चे स्नेह का प्रतीक तथा नारी रक्षा के पुण्य व्रत का स्मारक रुप सिद्ध हुआ। इस पर्व के दिन जहां आर्यो के घर में यज्ञ होता है, यज्ञोपवीत बदले जाते हैं, वहां भाई-बहिन के इस प्रेम के नाते को भी मजबूत बनाया जाता है। आजकल तो केवल आड़म्बर शेष रह गया है, बहिन का भाई के साथ राखी बांध देना और भाई का कुछ रुपये देना यही रक्षा-बंधन का उद्देश्य समझ लिया गया है। किन्तु रक्षा-बंधन के पवित्र भाव को हमें ग्रहण कर देश की रक्षा में तन-मन-धन से जुट जाना चाहिये जिससे कि कोई भी बाहरी शत्रु हमारी इस पुण्य भूमि भारत देश पर आँख उठा के देख न सके॥ ❑

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसिये और स्वस्थ रहिये

• शरच्चन्द्र आर्य

प्राणी जगत् में संभवतः मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो खुलकर हंसता है। हंसना मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। न जाने कितने ही लोग हंसी हंसी में दुःख दर्द को भूल जाते हैं। ज्यादा हंसी-मजाक को भले ही हम अशिष्टाचार की संज्ञा दे दें, मगर खुलकर हंसना बहुत फायदे मन्द हो सकताहै। वैज्ञानिकों ने भी शोधकर यह साबित कर दिया है कि हंसना तन और मन के लिये व्यायाम के समान है। अमेरिका के स्टेन फोर्ड विश्व विद्यालय के शोर्धकर्ता डॉ. विलियम्फ्राई ने वर्षों तक शोध करके यह निष्कर्ष निकाला कि हंसने-हंसाने से अनेक घातक बीमारियां दूर होती है। मानसिंक तनाव भी काफी हद तक कम हो जाता है। डॉ. फ्राई का यह भी मानना है कि हंसने से शरी की बहुत सी मांस पेशियां खिंचती है। इससे अनेक प्रकार के पीड़ा दायक रोग जैसे गठियां आदि को भी काफी हद तक राहत मिलती है। सिर का दर्द भी कम होता है, और तो और कैंसर जैसे असाध्य रोग भी हंसने वालों से कोसों दूर रहता है, क्योंकि कई बार कैंसर भावुकता या उदासीनता के कारण होता देखा गया है। अक्सर खिन्न या उदास रहने वालों को कैंसर कुछ ज्यादा ही होता है। ऐसे लोग यदि हंसने साने का माहौल तैयार करें तो कैंसर होने का असर समाप्त हो सकता है।

> हंसने हंसाने से केवल मानसिक तनाव ही खत्म नहीं होते अपितु अनेक घातक बीमारियां भी दूर भाग जाती हैं। अतः हंसने -हंसाने में हमें आपस में एक दूसरे का सहयोग कर खुद भी हंसे, औरों को भी हंसायें।

डॉ.रेमण्ड मूडी ने हंसने के फायदों पर एक किताब **लाफ आफ्टर लाफदी हिंलिंग पवार आफ ह्योम** लिखी है। उनका मानना है कि जो खुलकर नहीं हंसता वह किसी ना किसी विकास से वंचित है। वैज्ञानिकों ने काफी खोज कर इस तथ्य का भी उजागर किया है कि हंसने -हंसाने से रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ जाती है क्योंकि इससे रक्त का बहाव सुधरता है और मानसकि तनाव काफी हद तक कम हो जाता है। हंसी मजाक में एक ऐसी अदृश्य शक्ति छिपी है जो निराशावादी को आशावादी निर्बल को सबल और मृतप्राय में भी धीरे धीरे शक्ति का संचार कर देता है। आज दुनियां में हृदयघात एवं हृदय संबंधी रोगों को काफी वृद्धि हुई है, अगर हंसने का आदत डालें तो इस रोग को कम किया जा सकता है। जब से इस संबंध में खोज प्रारंभ कर अच्छी सफलता मिली है मनोरोग चिकित्सक हंसने को दवा के रुप में इस्तेमाल करने लगे हैं। बंगलौर स्थित मानसिक तांत्रिक संस्थान निमहन्स ने हंसने को एक मनोवैज्ञानिक चिकित्सा के रूप में अपना लिया है। यह एक ऐसा व्यायाम है जो किसी भी समय स्थान में, किसी भी आसानी से किया जा सकताहै।

आज के इस आधाधापी, तनाव भरे माहौल में लोग हंसना ही भूलगये हैं। लोग बाहरी तौर से भले ही स्वस्थ दिखते हों अन्दर से वे खोखले होते जा रहे हैं। आज आवश्यकता है हंसने का प्रशिक्षण देन की जगह-जगह हास्य समारोह का आयोजन होना चाहिए। कम से कम घर में एक ऐसा स्थान रखे जहां घर के प्रत्येक सदस्य इकट्ठे होकर हंस सकें। याद रखियें सभी प्राणियों में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसे प्रकृति ने यह व्यवस्था दी है। अतः हमें हंसने-हंसाने में कभी भी कन्जुसी नहीं करनी चाहिए क्योंकि इसमें कोई खर्चा है नहीं। हंसने-हंसाने से हम दुःख तनाव रहित स्वस्थ तो रहेंगे ही आस-पास पड़ौस को भी खुश रख सकेंगे। लेकिन हमे ध्यान रखना होगा हमारे हंसी मजाक से किसी को कोई चोट न पहुंचे। हमारी प्राचीन संस्कृति और साहित्य ने भी हास्य रस को प्रमुख स्थान दिया है। पहले राजा लोग भी राजदरबार में विदूषक नियुक्त करते थे, जिनका कार्य केवल हंसाने का होता था। बुलाकर देखा जाय तो हंसने हसाने में मनुष्यों का फायदा ही हुआ है। हमें याद रखना चाहिए प्रकृति ने यह गुण केवल मानव को ही दिया है अतः उसे हंसने हंसाने में पीछे नहीं रहना चाहिए। ☐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी अरुणाचल प्रदेश की यात्रा

मोहन लाल चढ्ढा
प्रधान- आर्य समाज ,भिलाई

पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के प्रेरणा एवं आग्रह से मैं राजेन्द्र शास्त्री के साथ अरुणाचल में वैदिक धर्म के प्रचार की संभावना का पता लगाने के लिये ५ मई को चलकर १० मई को वहां पहुंचे। हमे गौहाटी से अरुणाचल प्रदेश जाने के प्रवेश पत्र लेने के लिए २ दिन रुकना पड़ा। प्रवेश पत्र हमे डा. नारायण दास जी एवं श्री हंसराज जी के सहयोग से शीघ्र प्राप्त हो गया। मार्ग में जंगल एवं प्राकृतिक दृश्य देखते हुए हम इटानगर के उपनगर नाहरलगन में श्री तेजनारायणआर्य के घर पहुचे। यहां का वातावरण पाश्चात्य संस्कृति प्रधान है। इंटानगर नाहरलगन से १० कि.मी. दूर ऊंचाई में स्थित है। हमारे पहुंचने से पहले ही वहां के लगभग २० बच्चे गुरुकुल आमसेना आने को तैयार थे, उनका विदाई समारोह १६ मई को रखा गया था। इसके निमंत्रण देने के माध्यम से अनेक श्रद्धालु लोगों से वहां मिलने का सुअवसर मिला, वहां आर्य समाज को छोड़कर बाकि सभी संस्थाओं के केन्द्र बने हुए हैं, वे अपने अपने ढंग से कार्य भी कर रहे हैं। इसमें रामकृष्ण मिशन, वनवासी कल्याण आश्रम, गायत्री परिवार आदि मुख्य है। इनके प्रयास से वहां कुछ वातावरण बन रहा है परन्तु अब तक वहां के मूल निवासियों को इनमें से कोई भी धर्म के प्रति सन्तुष्ट नहीं कर सका है। ये लोग अपनी संस्कृति के साथ साथ धर्म के वास्तविक् रुप को भी जानना चाहते हैं ये डोत्री (सुर्य) तथा पोलो (चान्द) की पूजा करते हैं, इसके अतिरिक्त इनका और कोई धर्म पुस्तक नहीं है। धर्म का सच्चा स्वरुप इन्हें आर्य समाज ही दे सकता है।

ईटानगर में गर्ग परिवार से मेरा परिचय हुआ वे श्रद्धालु आर्य है प्रतिदिन यज्ञ आदि करते हैं। वहां घुमने, फिरने में उन्होंने हमारा बड़ा सहयोग किया। उनका कहना यही था वैदिक धर्म इन्हें शीघ्र आकर्षित कर सकता है। वहां हम शिवमंदिर तथा भारत सेवा संघ के आश्रम में भी गये, वहां यज्ञ तो वैदिक विधि से हो रहा था परन्तु साथ में उन्होंने कुछ पौराणिक विधि भी जोड़ ली है। अधिक कार्य एवं साधन ईसाइयों के पास ही है जिनके द्वारा वे दिन रात ईसाइयत फैलाने में लगे हुए हैं। पिछले कुछ वर्षों से वहां ४०% लोग ईसाई हो गये है। इससे वहां के सभी देश प्रेमी चिन्तित है कि कहीं हमारी भी स्थिति नागालैण्ड जैसी न हो जाये इसलिये वहां के लोग अपनी संस्कृति की रक्षा के लिये बच्चों को वैसे ही शिक्षा दिलाना चाहते हैं वे कहते हैं हमारा खान पान तो बदलना संभव नहीं (ध्यान रहे मांस वहां का मुख्य भोजन है) मिथुन नामक गाय जैसा पशु वहां के लोगों को प्रिय आहार है और मुख्य संपत्ति भी। वे जंगल में घुमते हुए भी लोगों में सपत्ति के रुप में बंटे हुए है। विशेष अवसर पर इसको बुलाके इसका मांस पकाया जाता है।

अरुणाचल की कुल जनसंख्या लगभग दस लाख है, इन में केवल चार लाख लोग ही यहां के मूल निवासी है बाकि अन्य प्रदेशों के है उसमें अधिकतर आसामी, बिहारी ,बंगाली और उड़ीया है। यहां जन जातियों के २९ काबिले है सभी की अपनी अलग-अलग बोलियां है इसलिये हिन्दी को इन्होंने सम्पर्क भाषा के रूप में अपनाया हुआ है। परन्तु रोमन में ही लिखते हैं। यहां के निवासियों की आकृति एवं रहन सहन तिब्बतियों जैसी है और नाम वर्मा जैसे। यह प्रदेश वनों से घिरा हुआ है। इसकी सीमा चीन , वर्मा, भुटान से मिलती है। यहा मकान प्रायः बांस के बनते हैं क्योंकि यहां जंगल बहुत है। अरुणाचल में यहां के मूल निवासियों को छोडकर भारत का अन्य नागरिक भूमि नहीं खरीद सकता। यहां की भूमि या तो यहां के मूल निवासियों की है या फिर सरकार की है। फिर भी वहां की सरकार , धार्मिक एवं सेवार्थ संस्थाओं को कार्य करने के लिये भूमि दे देती है। ऐसा मुझे श्री ओमप्रकाश जी ने बताया। मेरा वहां जाने का एक लक्ष्य यह भी था की वहां केन्द्र कहां पर बनाया जाय, इस संबंध में वहां के कुछ लोगों ने सुझाव दिया कि आसाम की सीमावर्ती किसी स्थान में विद्यालय बनाकर उसे केन्द्र कर कार्य किया जाय। आसाम के कुछ स्थानों को भी हमने देखा। सभी तरफ वहां वैदिक धर्म के प्रचार और वैदिक शिक्षा की विशेष मांग की गई। गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से वहां शीघ्र कार्य आरंभ करने का विचार है। इसलिये गुरुकुल के योग्य ब्रह्मचारी राजेन्द्र कुमार शास्त्री ने अरुणाचल प्रदेश में जाकर प्रचार कार्य शुरु कर दिया है। यदि श्री स्वामी धर्मानन्द जी को आर्य जनता का विशेष सहयोग मिला तो वहां बहुत अच्छा कार्य हो सकता है और बढती ईसाईयत पर रोक लगाई जा सकती है। इसके लिये गुरुकुल की ओर से आगामी अक्टुबर में पुनः एक दल उन क्षेत्रों में जाकर प्रचार का वातावरण बनाने का यत्न करेगा और केन्द्र बनाकर कार्य शुरु किये जायें ऐसी व्यवस्था की जायेगी। पूज्य स्वामी जी के तरह पूर्वांचल को बचाने के लिये आर्य जनता को इधर विशेष ध्यान देना चाहिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्ल का दिवालिया ब्रह्म कुमारी मत

ग्यारहवीं किश्त

प्रिय पाठकों,

म हाभारत और गीता का सच्चा स्वरुप और सार नामक पुस्तक में लेखक ने अपनी हठ धर्मी का ही परिचय देते हुए **एकां लज्जां परित्यज्य विजयी** सर्वत्र भवेत् की कहावत को ही चरितार्थ किया है, जिसने लज्जा को त्याग दिया हो वह सब कुछ कह सकता है। ऐसे लोग कृषि रुपी धार्मिक जगत् में ओले (बर्फ) बनकर कृषि को नष्ट कर स्वयं नष्ट हो जाते है। लेखक पुस्तक के पृष्ठ २७४ में लिखता है कि गीता ज्ञान कृष्ण को पूर्व में प्रजापिता ब्रह्मा के रुप में प्राप्त किया था परमपिता शिव ही ने उनके पूर्व जन्म वाले मानवीय तन में आकर दिया था।

समीक्षा–मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक कोई मादक द्रव्य का आदी है, या फिर सन्निपात का रोगी है। लेखक को यह बताना चाहिए कि कृष्ण का पूर्व जन्म कहां और किसके यहां हुआ था तुम्हारा कथन है कि यादव अमेरिका में रहते थे तो अबं यह बताओ कि तुम्हारा लिंग स्वरुप शिव ने कृष्ण के शरीर में प्रवेश कर गीता ज्ञान अमेरिका में दिया था या भारत में। तुम्हारा यह भी कहना है कि पूर्व कलियुग के अन्त में जो व्यक्ति थे सब वहीं ज्यों के त्यों वगैर किसी परिवर्तन के इस युग के अन्त में है। जब पूर्व में तुम्हारे शिव ने कृष्ण को गीता ज्ञान दिया था तो अब कृष्ण को न देकर अनपढ़ दादा लेखराज को क्यों दिया ? मूर्ख व्यक्ति भी इस प्रकार की अनर्गल बातें नहीं कहता।

पृष्ठ २७५ – श्री कृष्ण का ही दूसरा नाम श्री नारायण था। आप जानते होंगे कि भारत में पहले यह प्रथा थी कि स्वयंबर होने पर वर वधू दोनों का नाम प्रायः बदल दिया जाता था। इसी प्रथा के अनुसार त्रेता युग में जानकी जी की नाम बदलकर श्री सीता जी हुआ था।

समीक्षा – कृष्ण का नाम नारायण नहीं था, नारायण, विष्णु, हरि ये पर्यायवाची है, पुराणों के आधार पर महा – प्रलय पर जब विष्णु समुद्र के अंदर शेष शय्या पर विश्राम करते हैं तब उनका नाम नारायण रखा। नर +अयन् =नर कहते है। पानी को और अयन कहते है घर अर्थात् जिसका घर पानी में हो उसको नारायण कहते हैं। वही नारायण जब बैकुंठ में रहते हैं तो उन्हें विष्णु कहते हैं और हरि भी। ये कल्पना बिल्कुल मूर्खता पूर्ण है कि कृष्ण का नाम नारायण था, क्योंकि कृष्ण को विष्णु का अवतार मानते थे। इसलिए उन्हें नारायण हरि आदि नामों से संबोधित करते थे। भारत में ये कभी प्रथा नहीं रही कि विवाह संस्कार में नाम संस्कार हो। यह कहना विवाह में वर और वधू का नाम बदल दिया जाता था। ये निराधर कल्पना है। तुमने जो यह लिखा जानकी का नाम विवाह के बाद बदलकर सीता रखा गया, मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि तुमने कभी स्वप्न में भी रामायण आदि ग्रन्थ को नहीं देखा। जानकी का नाम पैदा होते ही सीता था, उपनाम में सीता को जानकी, जनक पुत्री, जनक दुलारी, जनक लली, मैथिली कुमारी, सब उपनाम थे और यही उपनाम उर्मीला के भी थे मैथिली, जनक दुलारी आदि, तुमने जो ये लिखा कि वर वधू के नाम बदल जाते है तो राम का नाम क्यों नहीं बदला।

पृष्ठ २८० –श्री कृष्ण ने वास्तव में सतयुग के आरम्भ में जन्म लिया था।

समीक्षा – मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक पूर्णरुप से दुराग्रही है और उसे यह भी होश नहीं है कि मैं क्या लिख रहा हूं, क्योंकि पहले इसने, लिखा कि कृष्ण का जन्म कलयुग के अंत में संगम युग में हुआ , और यहां लिखता है कि सतयुग में हुआ। इस तरह से परस्पर विरोधी बातें तो विवेक बुद्धि वाला व्यक्ति नहीं लिख सकता है।

पृष्ठ २७७ –आज भी आप देखते हैं कि श्री नारायण तथा श्री लक्ष्मी के राजतिलक का दिव्य उत्सव अर्थात् दीपावली का त्यौहार है।

समीक्षा – लेखक ने अपनी निराधर कल्पना से शेखचिल्ली को भी मात दे दी है। गप्प का भी कोई आधार होता है परन्तु इससे राजतिलक तो लिख दिया लक्ष्मी और नारायण का परन्तु यह नहीं बताया कि वह कौन सा राज्य था जहां कि ये राजा बने और इनसे पहले वहां का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा कौन था।

पृष्ठ २८४ –में लिखा कि ब्रम्हा की सर्वश्रेष्ठ पुत्री सरस्वती ने श्री राधा अथवा श्री लक्ष्मी के रुप में जन्म लिया और दूसरी जगह लिखा कि राधा का स्वयंवर कृष्ण के साथ हुआ तब कृष्ण नारायण कहलाये राधा लक्ष्मी कहलाई।

समीक्षा – मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक नीम पागल है। राधा कृष्ण का नाम इसने लोगों से सुना और समझ लिया कि राधा कृष्ण की पत्नी होगी। तो स्वयंवर की कल्पना कर ली जबकि कृष्ण का जब जन्म हुआ था तब राधा की आयु ३० वर्ष की थी। वह कृष्ण को गोद में लेकर खिलाती थी। राधा का विवाह यशोदा के भाई रायन के साथ हो गया था। रिश्ते में राधा कृष्ण की मामी होती थी, जो मां के बराबर कहलाती है। राधा को कृष्ण की पत्नी कहलाते, लज्जा को भी लज्जा आयेगी। परन्तु लेखक को नहीं आयी, शायद इसलिए कि वह उस संस्था का सदस्य है, जहां लज्जा नाम की कोई चीज ही नहीं है।

पृष्ठ ४३३–हमारा उद्देश्य शब्द कोश व्याकरण या निरुक्त इत्यादि को लेकर गीता की कोई टीका लिखना नहीं है। हममे न तो शब्द शास्त्र की विद्वता है न ही गीता शास्त्र का पाण्डित्य, हमने तो सेवार्थ ही इस विषय पर लेखनी उठाई है। करुणा सिन्धु ज्योति बिन्दु परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापति ब्रम्हा द्वारा हमें जो ज्ञान रुपी अमृत अथवा संजीवनी प्रदान की है, इसमें हमारा अपना जो कुछ भी है सब उसी प्रभु की देन है।

समीक्षा – लेखक ने शायद पहली बार ही सत्य बोला है कि मुझे न तो शब्द कोश का ज्ञान है और न व्याकरण निरुक्त का ज्ञान है, न गीता शास्त्र का अर्थ कर सकता हूं। मैने तो जो कुछ प्रजापिता ब्रम्हा यानि दादा लेखराज से सुना सीखा है वहीं लिखा हूं। इतना कथन लेखक का पूर्ण सत्य है। क्योंकि इनकी लिखी हुई गप्पों से यह सिद्ध है कि लेखक में विद्या का अभाव है। इनके गप्पों के मार्गदर्शक लेखराज दादा है। दादा उसे कहते हैं जो गुण्डा मुहल्ले गांव शहर में आतंक फैलाता है उसे भयभीत लोग दादा कहकर उसे खुश रखने का प्रयत्न करते हैं और उसकी हर बात में हां में हां मिलाते हैं और वह गुण्डा लज्जा का महान् त्यागी होता है, और उसके हर अनुयायी भी उसी महानता के त्यागी होते हैं।

पृष्ठ ४३३ –लेखक ने प्रजापति ब्रम्हकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सम्पर्क में आने के बाद जब उस परमपिता परमात्मा द्वारा दिया हुआ ज्ञान प्राप्त किया तब उससे उसे जो अर्थ साक्षात्कार हुआ उसी के आधार पर तथा उसी दृश्य से यहां सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि गीता का सार लिखा गया है।

समीक्षा – लेखक से मैं यह जानना चाहता हूं कि ईश्वरीय विद्या तो वेद है। क्या इस विद्यालय में वेद पढाये जाते हैं, और क्या तुमने वेद पढे हैं ? यदि नहीं तो फिर इसका नाम ईश्वरीय विद्यालय कैसे रखा। शायद इस लिए कि आजकल के फैशन के अनुसार लोग कुत्ता पालते हैं, और उसका नाम 'टाइगर' रख देते हैं जबकि कुत्ता कुत्ता ही रहता है, शेर कभी नहीं होता, और तुम्हारे शिव ने जो ज्ञान लेखराज सिन्धी को दिया था वह किस भाषा में दिया था। संस्कृत में या सिन्धी व हिन्दी में। संस्कृत तो तुम्हारे दादा जानते ही नहीं थे और सिन्धी और हिन्दी शिव नहीं जानते थे। तो वहां दो भाषिया कौन था, जो शिव की संस्कृत भाषा सुनकर लेखराज को सिन्धी में बताता था। तुमने सब शास्त्र शिरोमणी गीता लिखा है यह तुम्हारे मुर्खता का जीता जागता सबूत है। शास्त्र उसे कहते हैं, जिसमें विधि, निषेध को तर्क मुक्ति से सिद्ध किया गया हो किसी के उपदेश को शास्त्र नहीं कहते और शिरोमणी उसे कहते हैं जो सर्वप्रथम लिखा गया हो। तुममें यदि साहस हो तो यह बताओ कि गीता के बाद में कौन–कौन से शास्त्रों की रचना हुई और किसने किस समय में की, केवल कोरी गप्प लिखकर विद्वानों में उपहास के पात्र मत बनो। पहले तुम्हारा नाम भोंदुचन्द था जब से तुम इस संस्था में आये और देखा कि यहां गोपियां ही गोपियां है तब तुमने अपना नाम बदलकर जगदीशचन्द रख दिया क्योंकि लोग श्री कृष्ण को भी जगदीश कहते हैं और बगैर कृष्ण बने रास लीला करना संभव नहीं था, इसलिए दादा लेखराज ने भी सर्वप्रथम अपने को कृष्ण अवतार कहा फिर रासलीला शुरु की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित तुलसी राम

उपकृतरेव खलानां दोषस्य गरीयसी भवति हेतु : ।
संसार की ही सेवा, शुभ टेक हो हमारी ।
हम आर्य चाहें तन बलिदान के लिए हो ॥

जिस व्यक्ति के जीवन की चर्चा हम अपनी इन पंक्तियों में करने चले हैं उनका वध उस सम्प्रदाय के व्यक्तियों ने किया जिनके लिये अहिंसा सर्वस्व है। जिनका धर्म ग्रन्थ अहिंसा परमोधर्मः की दु दुंभि बजाता हुआ सूक्ष्मातिसूक्ष्मा हिंसा से बचने का आदेश देता है। जो भगवान् महावीर को अपना आचार्य मानते हैं। पंडित तुलसीराम का इन जैनियों से कोई द्वेष नहीं था, वे सरल साधु प्रकृति थे, परन्तु उनका सत्य प्रचार इनके कानों में पीड़ा उत्पन्न करता था। इन लोगों ने उनका प्राणान्त करके अपनी इस पीड़ा को दूर किया। परन्तु क्या सचमुच इनकी पीडा दूर हो गई ?

पंडित तुलसीराम का जन्म जिला गुरदासपुर के डेरा बाबा नानक के समीप रुडा ग्राम में हुआ था। ये पवित्र पूज्य वंश के ब्राह्मण थे। इनके पिता श्री हरिराम जी थे जो साहू का काम करते थे। आपके दो छोटे भाई और एक बहिन थी, जिसका नाम लक्ष्मी देवी था। बचपन में ही माता आपको छोड़ स्वर्ग सिधार गई। १२ वर्ष की आयु में पिता की छाया भी आप पर से उठ गई।

गुरदासपुर के गवर्नमेंट हाईस्कूल से आपने दसवीं की परीक्षा पास की इसके बाद रुड़की ओवरसियर क्लास में पढ़ने चले गये। वहां आठ महीने पढते रहे। पश्चात् बीमार हो जाने से छोड़कर चले आये और रेल्वे में नौकरी कर ली और लोधरा स्टेशन पर लगे। जब आप सनावा में असिस्टेन्ट स्टेशन मास्टर थे तब बटाला में श्रीमती लाजवन्ती देवी से उनका विवाह हुआ आपने रसीदा, मुलतान, छावनी, पत्तों की मुरीद, के शोरकोट रोड, फरीदकोट इन स्टेशनों पर कार्य किया।

आप में आर्य समाज के कार्य करने की बड़ी लगन थी। आर्य समाज का संस्कार उनमें गुरदासपुर में पढ़ते हुए मास्टर मुरलीधर जी से आया था। आप जहाँ जाते आर्य समाज का प्रचार करते थे। यदि समाज नहीं होती तो नई समाज की स्थापना करते और यदि होती तो यथाशक्ति उसको उन्नति करते थे। रेलवे कार्यकाल के बाद अपना समय प्रचार में लगाते थे। और कई बार रात को दो-दो बजे घर लौटते थे। आप गायक बड़े अच्छे थे और प्रचार कार्य में अपनी इस कला का भी उपयोग करते थे। उनकी सितार अब तक उनके घर पर पडी है।

सनावा में वे लगभग सन् १९०० में थे। सनावा में आर्य समाज से लोग अनभिज्ञ थे। आप अपनी ड्यूटी के बाद सनावा नगर जिला मुजफ्फरगढ़ में और आस पास के ग्रामों में प्रचार करते थे। गुरनामी में उनके प्रेम चौधरी रत्नचन्द्र जी थे। सनावा में आपने बहुत से लोगों का मांस मदिरा छुड़ाया। आप मूर्तिपूजा के विरुद्ध भी जोरदार विचार प्रकट करते थे। सनावा से आप स्टेशन मास्टर बनकर तबदील हुए।

आप अतिथि सत्कार बड़े आदर से करते थे। आपके घर पर कोई न कोई उपदेशक अतिथि रुप में रहता ही था। रसीदा स्टेशन रोड पर स्वर्गीय पंडित लेखराम जी कई बार अतिथि आपके बने थे।

बदलते हुए आप फरीदकोट स्टेशन पर १९०३ में आये रियासत में जैनियों का प्रावल्य था। इनका शान्तिमय और निर्दोष धर्म प्रचार उनके हृदय में चुभने लगा । भावड़ा जाति के जैनियों ने इनके वध का षडयंत्र किया। रियासत के अधिकारी भी इसमें सम्मिलित हो गये। गोपीराम भी जिसकी श्री पं. तुलसी राम ने स्टेशन पर जनाना डिब्बे के सामने शरारत करने के कारण भर्त्सना की थी, इस षडयंत्र में शामिल हो गया। रात को आर्य समाज फरीदकोट के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में पंडित तुलसीराम जी सितार बजाते हुए नगर में प्रचार कर रहे थे। शनिवार का दिन था। एक जगह अंधेरे में इनसे किसी ने पूछा कौन हो ? इन्होंने उत्तर दिया - तुलसीराम ! उसने लालमिर्ची और रेत आंखों में झोंक दी। जब वह पीड़ा से बैठ गये वह उन्हें छूरा घोंपकर भाग गया।

बड़ी मुश्किल से ये स्टेशन पर पहुंचे। वहां से इन्हें फिरोजपुर लाया गया। मालुम होता है आततायियों ने डाक्टरों की जेबें पहले ही गरम कर दी थी। लाजवन्ती बेचारी रास्तों से अनजान भटकती रही। उसे पता नहीं कहा जाये। जब वे अस्पताल पहुंची तो पता चला की उनका उचित उपचार नहीं हुआ। महाधन के अन्तिम शब्द थे - बिना अपराध के मार दिया अच्छा धर्म के मार्ग पर मैंने प्राण दिया।

सोमवार को शाम को साढ़े पांच बजे इनका देहावसान हो गया। गोपीराम को आजीवन कारावास की सजा हुई थी। परन्तु दस साल की सजा काटकर वह टीका के विवाह पर छूट गया। रियासत का वजीर भी इस षडयन्त्र में शामिल होने के कारण निकाला गया।

महाधन होने के समय श्री पंडित तुलसीराम जी की आयु ३२ वर्ष की थी। इनका शरीर लम्बा और सुडोल था। देखने में कमनीय थे व भक्त प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनकी वेरागिन जिससे वे ध्यान करते थे। श्रीमती लाजवन्ती देवी के पास अब तक है। संध्या हवन नियम पूर्वक रोज करते थे। धार्मिक भावना में वे इतने दृढ़ थे कि जब छूरा लगने पर शरीर में शक्ति देने और खूंन रोकने के लिए स्टेशन पर ब्राण्डी लाई गई तो उन्होंने नहीं ली। प्राण दिया परन्तु शराब का स्पर्श नहीं किया।

उन्होंने नौ वर्ष तक भिन्न-भिन्न स्टेशनों पर काम किया। इतने दीर्घ काल में आदमी क्या नहीं कमा लेता। परन्तु इन्होंने कभी किसी से रिश्वत नहीं ली। मरते समय कमाई के कुल एक हजार रुपये वे छोड़ गये। इनकी दो लड़कियां विद्यमान हैं।

❑ (साभार - आर्य समाज के बलिदान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श देवी के गुण

१. स्त्री की महत्ता सफल गृहिणी और माता बनने में है न कि क्लर्क, वकील, डाक्टर, प्रोफेसर आदि बनने में हैं। यदि विशेष व्यवस्था वश नौकरी करनी ही पड़े तो अध्यापक का कार्य स्वीकार किया जा सकता है।

२. स्त्रियों को पुरुषों के कार्य अपनाकर गौरव नहीं मानना चाहिए। दोनों की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था अलग अलग है तो कार्यक्षेत्र भी पृथक् है।

३. यद्यपि पर्दा करना अच्छा नहीं परन्तु महिलाओं को अपनी लज्जा अवश्य बनाये रखनी चाहिए, वस्त्र ऐसे पहने कि जिससे शरीर का कोई भाग नंगा न दीखे। निरर्थक फैशन करना दोष का कारण है।

४. भारतीय परिधान ही इस देश के जलवायु, स्वास्थ्य एवं संस्कृति के अनुकूल है अतः यथा संभव साड़ी आदि का ही प्रयोग करें।

५. लम्बे नख रखना, बाल काटना या नकली जूड़ा बान्धना हमारी संस्कृति के अनुकूल नहीं है।

६. श्रृंगार करके अकेले घूमना, क्लबों में जाना, पर पुरुषों के साथ हंसना, बोलना, पर पुरुषों को स्पर्श करना अपने चरित्र एवं महत्ता को गिराकर नरक में जाना है।

७. गहने कम पहनना अच्छा है यदि आभूषण बनवायें भी तो सादे एवं मजबूत बनवायें कि जिसमें ताम्बे आदि की मिलावट कम से कम हो। जिससे अवसर मिलने पर उसका उचित मूल्य मिल सके।

८. बच्चों को अच्छा संस्कार डालना, उनके स्वास्थ्य एवं चरित्र का निर्माण कर उन्हें शिक्षित करना ही सच्चा धन कमाना है, इसी से महिलाओं का मातृत्व सफल होता है।

९. घर की प्रत्येक वस्तु की संभाल, उसका सदुपयोग, आय के अनुसार व्यय करना, फिजुल खर्ची न करना।

१०. मासिक धर्म (रजस्वला) के समय ३ दिन किसी पवित्र वस्तु खान पान का बनाना या किसी व्यक्ति का स्पर्श न करे।

चरैवेति

लहरों से डरकर के नौका पार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती॥
नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है।
चढती दीवारों पे सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है।
चढकर गिरना गिरकर चढना ना अखराता है।
मतनत उसकी खाली हरबार नहीं होती।
कोशिश करने ----------------॥१॥

डुबकियां सिन्धु में गोताखोर लगाता है।
जा जा के फिर खाली हाथ वो लौट के आता है।
मिलने ना सहज ही मोती गहरे पानी में।
बढता दुगुना उत्साह उसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती॥
कोशिश------------------॥२॥

असफलता चुनौती है स्वीकार करो।
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।
जब तक ना सफल हो ओ चैन की नीन्द त्यागो।
संघर्षो का मैदान ना छोड के तुम भागो।
कुछ किए बिना ही जय जय.कार नहीं होती।
कोशिश -----------------॥३॥

प्रार्थना

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना।
अब तक जो निभाया है, आगे भी निभा देना॥

दल बल के सहित माया, घेरे जो मुझे आकर।
तो देखते न रहना, झटआके बचा लेना॥१॥

सम्भव है झंझटों में, मैं तुझको भूल जाऊं।
पर नाथ कहीं तुम भी, मुझकों न भुला देना॥२॥

तुम देव मैं पुजारी, तुम इष्ट मैं उपासक।
यह बात सत्य है तो, सिद्ध करके दिखा देना॥३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोई भी अण्डा शाकाहारी नहीं

अनिशेचित अण्डे को खाने में जीव हत्या नहीं होती यह उनकी कोरी कल्पना है, अनिशेचित अण्डों में क्रोमोसोम होते हैं। क्रोमोसोम की संख्या निशेचित अण्डों की आधी होती है। क्रोमोसोम केवल जीवों में ही पाये जाते हैं अतएव अनिशेचित अण्डों को खाना जीव हत्या है।

प्रचारार्थ यह लिखना कि अण्डों में प्रोटीन की सर्वाधिक मात्रा होती है। आई.सी.एम.आर.की.हैल्थ बुलेटिन संख्या २३ के अनुसार अण्डों में प्रोटीन केवल १३ ग्राम प्रतिशत होतीहै जबकि दालों में २४ ग्राम प्रति और सोयाबीन में ४४ ग्राम प्रति प्रोटीन होती है मूंगफली में ३२ ग्राम प्रति प्रोटीन होती है। अण्डों की प्रोटीन न केवल कम बल्कि मंहगी भी होती है। अण्डे की एक ग्राम प्रोटीन का मूल्य २० पैसा जबकि दाल की प्रोटीन का मूल्य ५ पैसा होता है। अण्डों के प्रचारक पत्रिकाओं पुस्तकों के अनुसार अण्डों के सभी पौष्टिक तत्व होते हैं। परन्तु उन्हें पता नहीं कि अण्डों में विटामिन "सी" नहीं होता है। अमेरिका और इग्लैण्ड में अण्डों की खपत कम हो रही है इसका कारण अण्डों को हृदय रोग, लकवे की बीमारी समझा जाता है वहां के चिकित्सक लोगों को सप्ताह में केवल एक या दो अण्डे से अधिक अण्डा न खाने की शिक्षा दे रहे हैं। भारतवर्ष में तो उल्टा मार्ग पकड़ने का फैशन सा बन रहा है। यह कोई समझ की बात नहीं। अण्डों में १५० रन्ध्र होते है जिनके द्वारा जीवाणु अन्दर पहुंचकर अण्डों को खराब कर देते हैं इन रन्ध्रों के द्वारा सालमोनेला स्टेफाइलोकोकस नाम के जीवाणु अन्दर पहुंच कर अण्डे खाने वालों में हैजा और मियादी बुखार उत्पन्न कर देते हैं इंग्लैण्ड में अण्डों को खाने वालों को हैजा की बीमारी हो गई थी वहां के स्वास्थ्य मंत्रालय ने अण्डे न खाने की सलाह दी थी।

अण्डों का पीला भाग मानों हृदय रोगियों के लिए विष का कार्य करता है। "यह पीला भाग कोलेस्ट्रोल से संतृप्त होता है जो" हृदय की नलियों को बन्द कर देता है, सभी चिकित्सालयों में अण्डों को स्वास्थ्य का शत्रु समझा जाता है। अण्डों में हरापन कंगल इन्फैक्सन का सूचक माना जाता है। इसके खाने में मृत्यु का टिकट आसानी से मिल सकता है।

अण्डा खाना स्वास्थ्य के लिए उपयोगी नहीं है अण्डा खाने से पहले यह सोच लें कि जो अण्डा आप खा रहे हैं सड़ा हुआ तो नहीं है, इसका पता लगाना टेढी खीर है २४ से ४८ घंटे तक सेवन नहीं किया तो समझों सड़ा हुआ है। अण्डों पर एक्सपायर डेट नहीं होती।

प्रचार का युग है, धन कमाने वाले अपनी वस्तु का चाहे वह जैसी भी, रोचक, प्रभावशाली, आकर्षक नित्य नये ढंग से पेश करते हैं, शराब तथा सिग्रेट, बीड़ी, खैनी, नसवार जो भी तम्बाकू से बनती है। यदि स्वास्थ्य वर्धक है तो फिर सरकारे व संस्थाये इनके अवगुणों को क्यों बताती है प्रत्येक पैकिट पर लिखा भी होता है कि हानिकारक है यह सब नशे है चाय भी हल्का नशा है। समय पर न मिले तो सर दर्द है काम नहीं होता यह क्यों कहता है पीने वाला या पीलाने वाला, जो नहीं पीते वहीं सुखी, चाय मंहगी दूध सस्ता।

अजानन्माहात्मयं पततु शलभो दीपदहने
स मीनोप्यज्ञानाद् वडिशयुतमश्नातु पिशितम्
विजानन्तोप्येते वयमिह विपज्ञालजटिलान्न
मुंचामः कामानहह ! गहनो मोहमहिमा ॥

अर्थात – अग्नि के माहात्म्य से अनभिज्ञ पतङ्ग दीपक की लौ में स्वयं को भस्म कर डालता है और मछली भी फन्दे को न जानकर बंशी में लगे मांस को खाने के लिए लपकती है। इस प्रकार हम अपनी कामनाओं को विपत्ति का जटिल जाल को जंजाल युक्त जानते हुए भी उन्हें नहीं छोड़ना चाहते। अहो, मोह की महिमा कैसी गहन है ?

वलिभिर्मुखक्रांन्तांक पलितैरङ्कितं वरिंत्रतैरक्तिं शिरः।
गात्राणि शिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते ॥

झुर्रियों से मुख भर गया शिर के केश श्वेत हो गये शरीर शिथिलता को प्राप्त हो गया , तो भी तृष्णा घटने की अपेक्षा तरुण ही होती जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल आमसेना में बितायें ११ महीनों का मेरा अनुभव

श्री वजीर सिंह जी, सिसाय जि. हिसार (हरियाणा) निवासी है। वे गत् चार-पांच वर्षों से एक भयंकर बीमारी से पीड़ित थे। गुरुकुल की पुण्यभूमि में ११ महीने रहकर इन्होंने स्वास्थ्य लाभ के साथ-साथ गुरुकुल के सारे विभागों को व यहां के ब्रह्मचारियों को निकटता से देखा-जाना है।

कुलभूमि के सहृदय पाठकों के सामने उनके विचार ज्यों का त्यों छाप रहें हैं।

-सह सम्पादक

मैं स्वास्थ्य लाभ हेतु गुरुकुल आमसेना के आचार्य पूजनीय स्वामी धर्मानन्द जी महाराज के आदेश पर पहली बार अगस्त १९९७ में गुरुकुल भूमि में आया। मेरे लिये यहां सब कुछ नया-नया था, पहली बार गुरुकुलीय जीवन को इतनी पास से देखने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यहां के आचार्य श्रद्धेय स्वामी जी महाराज के तप त्याग को भी निकटता से देखने का अवसर मिला स्वामी जी महाराज द्वारा सञ्चालित गुरुकुल आमसेना वास्तव में ही गुरुकुल है। मैं यहां लगभग ११ महीने रहा, यहां के ब्रह्मचारियों का व्यवहार मेरे प्रति इतना अच्छा रहा कि जिसे मैं यहां से जाते वक्त अनुभव कर रहा हूं। आज मुझे वो पल याद आ रहे हैं जब-जब मैंने यहां शारीरिक वेदना का अनुभव किया तो ब्रह्मचारी बड़े भाई की तरह मेरी सेवा करते रहे और स्वामी जी का भी मेरे प्रति बड़ा स्नेह रहा है, मैं स्वामीजी का इतना ऋणी हूं जिसे कह नहीं सकता। मैं कई बार मन में सोचता हूं एक माता पिता भी अपने बीमार पुत्र की सेवा यह कर सकते जितना कि इन लोगों ने मेरी की है। यहां बितायें जीन्दगी के कुछ पल मुझे सदा याद रहेंगे। अब मैं थोड़ी सी चर्चा स्वामी जी महाराज द्वारा सञ्चालित गुरुकुल के विभिन्न विभागों के बारे में करना चाहूंगा।

यहां आयुर्वेदिक दवाईयां बनाने के लिए बहुत बड़ी फार्मेसी है इसका संचालन स्वामी जी महाराज की देखरेख में आयुर्वेद के प्रसिद्ध ज्ञाता वैद्य मुरली धर जी वानप्रस्थी कर रहे है मुझे अधिकतर समय इनके सानिध्य में रहते हुए इनका आर्शीवाद तो मिला है साथ में अनेक बातें भी सीखने को मिली। ७८ वर्ष की आयु में भी लगन और परिश्रम के साथ घर बार का मोह छोड़कर इसका संचालन कर रहे हैं।

फार्मेसी के साथ दिल्ली निवासी श्री वृजकिशोर अग्रवाल के सात्विक दान से ३० शय्या का धर्मार्थ अस्पताल है इसमें एक्स रे मशीन ई.सी.जी. आदि सभी उपयोगी मशीनें उपचार हेतु उपलब्ध है। यह हास्य लाल पू. स्वामी जी के शिष्य व्यक्तित्व के धनी श्री स्वामी व्रतानन्द जी श्री सतीश जी आदि के सहयोग से कर रहे हैं। स्वामी व्रतानन्द जी का आयुर्वेद के साथ एलौपैथिक प्राकृतिक चिकित्सा, होम्योपैथिक आदि विधियों पर पूरा अधिकार है।

इसके साथ-साथ कन्याओं के लिए कन्या गुरुकुल वृहत आश्रम पुस्तकालय, उत्कल साहित्य संस्थान, संग्रहालय, गौशाला बगीचा, हालर आटा चक्की साधनों के साथ यहां से जन सेवा एवं प्रचार कार्य निरन्तर चलते रहते हैं। इन सबके संचालन में श्री ब्र. कुञ्जदेव जी मनीषी, श्री शरतचन्द्र र्या, श्री हलधर जी शास्त्री, श्री पीताम्बर प्रसाद आर्य आदि का पुरुषार्ष सराहनीय है। इन सबका भी पूर्व स्नेह सहयोग एवं प्रेरणा भी मुझे निरन्तर मिलती रही इसके लिए मैं सबका आभारी हूं।

मैं परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता हूं कि यह गुरुकुल दिन इसी रातचौगुनी उन्नति करें। भविष्य में जितना बनेगा अपनी सामर्थ्यानुसार इसकी सेवा के लिए सदा तत्पर रहूंगा।

वजीर सिंह सिहाग
(सिसाय)
जि. हिसार (हरियाणा)

◆◆◆

❖ गुरुकुल आश्रम द्वारा निर्मित विशुद्ध आयुर्वेदिक दवाईयों का सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें। विशेष जानकारी के लिए लिखें या मिलें।

❖ प्रसिद्ध अनुभवी वैद्य से निःशुल्क परामर्श की सुविधा उपलब्ध हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूर्तिपूजा ईश्वर की पूजा नहीं है

• कृष्णचन्द्र गर्ग

सोना, चांदी, लोहा, लकड़ी, पत्थर या मिट्टी को मूर्ति बनाकर उसे पूजना, उस पर फल, फूल मिठाई आदि चढ़ाना उसके आगे नाचना, गाना, उससे भीख मांगना, उसके आगे प्रार्थना करना, घंटी घड़ियाल बजाना, उसे कपड़े गहने पहनाना आदि क्रियाएं व्यर्थ है। वह जड़ मूर्ति ये सब नहीं जानती है।

यह ईश्वर पूजा भी नहीं है। ईश्वर तो सर्वत्र व्यापक होने से फल, फूल, वस्त्र आदि में भी विद्यमान है, और ईश्वर की पूजा मनुष्य की तरह नहीं हो सकती, ईश्वर की कोई शक्ल सूरत नहीं है। इसलिए उसकी मूर्ति नहीं बन सकती।

ईश्वर के बनाए इस विचित्र ब्रह्माण्ड को देखकर उसके अद्भूत गुणों का मन में चिन्तन करना चाहिए। सूर्य, चन्द्र, तारे, पृथ्वी आदि सभी ईश्वर ने बनाए है, ऐसे महान परमेश्वर की विचार करना चाहिये।

मूर्तिपूजा करने वालों ने सब व्यवस्था उलट दी है। ईश्वर ने इन्हें बनाया, उन्होंने ईश्वर को बना दिया। ईश्वर सब जगह व्यापक है, इन्होंने उसे एक स्थान पर सीमित कर दिया, ईश्वर आजाद है, इन्होंने उसे मंदिर में कैद कर दिया। ईश्वर सबका रक्षक है, इन्होंने उसे अपनी रक्षा का भी मोहताज बना दिया। ईश्वर सबको खिलाता है, ये उसे ही खिलाने का ढ़ोंग करते हैं।

मनुष्यों के सबसे अधिक नजदीक जो वस्तु है वह है ईश्वर क्योंकि वह हमारे हृदय में बसा हुआ है। इसलिए उसे बाहर ढूंढ़ना व्यर्थ है।

हमने ईश्वर पूजा का मजाक बनाया। आज सब जगह हमारा मजाक हो रहा है। सत्य, न्याय, परोपकार आदि शुभ कर्मों को हमने छोड़ दिया और निरर्थक मूर्तिपूजा में फंस गए। यह हमारा अत्यन्त दुर्भाग्य है।

आदि गुरु शंकराचार्य मूर्तिपूजा के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने परापूजा नामक अपनी पुस्तक में बड़े तर्क पूर्ण ढंग से मूर्तिपूजा को गलत सिद्ध किया है। गुरु नानक देवं, कबीर, दादू, समर्थ गुरु रामदास आदि सन्तों ने मूर्तिपूजा का जोरदार खण्डन किया है। वेद, शास्त्र, उपनिषद् मनुस्मृति आदि किसी भी वैदिक ग्रन्थ में मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। इस युग के महानतम वैदिक विद्वान तथा समाज सुधारक महर्षि दयानन्द ने तो मूर्तिपूजा को आर्यों (हिन्दुओं) के पतन का सबसे बड़ा कारण बताया है।

तीर्थेषु पशु यज्ञेषु काष्ठ पाषाण मृन्मये।
प्रतिमायां मनों येषां ते नरा मूढ़चेतसः॥

(आदि गुरु शंकराचार्य, परापूजा में)

अर्थ - तीर्थों में, ऐसे यज्ञों में जिनमें पशु बलि दी जाती है और लकड़ी, पत्थर, मिट्टी को मूर्ति में जिनका मन है, वे मनुष्य मूढ़ मति वाले हैं।

स्वगृहे पायसं त्वक्त्वा भिक्षामृच्छति दुर्मतिः।
शिलामृत, दारु चित्रेषु देवता बुद्धि कल्पिता॥

(आदि गुरु शंकराचार्य, परापूजा में)

अर्थ- अपने घर की खीर को छोड़कर मूर्ख मनुष्य भीख मांगता फिरता है। पत्थर, मिट्टी और लकड़ी, में देवताओं की कल्पना करता है। अपने अन्दर परमात्मा घर में खीर समान है तथा मूर्तिपूजा भीख समान है।

प्रकृति पूजा क्या है ? प्रकृति जड़ है और जड़ पदार्थ से ठीक उपयोग लेना ही उसकी सही पूजा है। आग को चाहे सौ साल तक हाथ जोड़ते रहों, पर उसमें हाथ डालने पर वह जला ही देगी। यह नहीं देखेगी कि यह मेरा पुजारी है।

जो व्यक्ति तैरना नहीं जानता यदि वह गंगा में कुद पड़े तो गंगा उसे डुबा देगी। वह यह नहीं देखेगी कि यह मेरा पुजारी है और मेरा नाम जपता है। दूसरी तरफ कोई कसाई पशुओं का वध करके आया हो और खून से भरा हो वह गंगा भैया नहीं कहता पर तैरना जानता है गंगा में घुस जाता है। गंगा उसका कुछ न बिगाड़ेगी, अपितु उसका शरीर शुद्ध करेगी तथा उसे तैराकी का आनन्द भी देगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धि समाचार

शद्धि आन्दोलन की श्रृंखला में एक नया अध्याय जोड़ चुके शुद्धि आन्दोलन के नेता पू. स्वामी धर्मानन्द जी महराज के निर्देश एवं प्रेरणा पर उन्हीं के शिष्य एवं उत्कल आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी व्रतानन्द जी शुद्धि आन्दोलन की श्रृंखला में बार-बार एक नया अध्याय जोड़ने की कोशिश करते रहे हैं और इसमें लगातार सफलता भी प्राप्त हो रही हैं। प्रायः हर महीने हो रहे शुद्धि के कार्यक्रमों में स्वामी जी की अपनी एक अलग भूमिका है। वैसे तो पूरा उड़िसा ही ईसाईयों से ग्रसित है लेकिन सबसे अधिक प्रभाव उड़ीसा के प्राकृतिक दृष्टि से अति रमणीय तथा आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त निम्न स्तर का होने के कारण फुलवाणी जिले पर है। यहां प्रायः सरकार की ओर से कोई बिजली, पानी, यातायात व अन्यान्य दैनिक उपभोग की सुविधा भी नहीं दी जाती। अतः विकास की दृष्टि से यह जिला अत्यन्त पिछड़ा हुआ है। इसका भरपूर फायदा ईसाई पादरी उठा रहे है। लेकिन गत लगभग दो दशकों से पू. स्वामी धर्मानन्द जी महाराज द्वारा चलाए गए शुद्धि आन्दोलनों का प्रभाव यहा की जनता पर भी पड़ा है। जिले में श्री स्वामी जी के प्रेरणा पर तीन-चार वानप्रस्थी एवं आठ-दश स्थानीय नवयुवक इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। इसी का परिणाम है जहां आर्य समाज क्या है ? ये भी नहीं जानते थे वहां आज दयानन्द का नाम गुंजायमान हो रहा है। वैदिक धर्म के नारे लग रहे। ईसामसीह की जय बोलने वाले आज वहां राम, कृष्ण की जय, हिन्दु धर्म की जय हो का उद्घोष कर रहें हैं सारे आर्य जगत के लिए आश्चर्य एवं गौरव की बात है कि फुलवाणी जिले में कुछ गांव ऐसे भी है जहां प्रातः और सायं दोनों समय संध्योपासना एवं साप्ताहिक यज्ञ का कार्य गत कई वर्षों से अनवरत हो रहा है। ये परिणाम पू. स्वामी जी महाराज के अथक परिश्रम का परिचायक है। ऐसा ही एक वृहत कार्यक्रम फुलवाणी जिले के मडियागाण्डा नामक गांव के ११० परिवारों के लगभग ५०० व्यक्तियों का सामूहिक रूप से हिन्दुधर्म में प्रवेश पर था। सभी जनसमुदाय उस घड़ी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे जिसके लिए वे इकट्ठे हुए थे। बाद में वह घड़ी भी आई जब हिन्दु धर्म से दीक्षित होकर सभी दीक्षित बन्धु स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे।

इस कार्यक्रम को हर्षोल्लाश के साथ सम्पन्न कराने में सभा प्रधान श्री स्वामी व्रतानन्द जी एवं उनके सहयोगी सभा के भूतपूर्व मंत्री श्री विशिकेसन जी शास्त्री का प्रयास तो बन्दनीय रहा है। साथ में स्थानीय सज्जनों में श्री नारायण जी शास्त्री श्री दासरथी प्रधान एवं सभा के प्रचारकों का प्रयास भी काफी प्रशंसनीय रहा। इस अवसर पर दीक्षित बन्धुओं के अतिरिक्त स्थानीय आर्य बन्धु भी भारी संख्या में उपस्थित थे। इस प्रकार यह कार्यक्रम अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ उत्सव मय वातावरण में सम्पन्न हुआ।

❑ *मनजीत कुमार आर्य*

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नवीन छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नये छात्रों का प्रवेश प्रारंभ हो चुका है। जो सज्जन अपनी सन्तान को सचरित्रवान् विद्वान कर्मठ बनाना चाहते हैं वे शीघ्र सम्पर्क करें। पांचवी कक्षा उत्तीर्ण सुयोग्य सुशील बुद्धिमान् छात्रों को ही परीक्षा लेकर प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेश शुल्क ५०० रुपया, भोजन खर्च १२५ रु. प्रतिमाह के हिसाब से छः महीने का प्रवेश के समय अग्रिम लिया जायेगा। विशेष जानकारी के लिए लिखे या मिलें -

श्री आचार्य जी
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, जि.- नवापारा(उडीसा)
फोन :(06678) 22349

यही कोश अक्षय है, जितना व्यय करे उनता ही बढ़ता जाय, अन्य सब कोश व्यय करने से घट जाते हैं और दायभागी भी निज भाग ले लेते हैं, और विद्या कोश को चोर वा दायभागी कोई भी नहीं हो सकता इस कोश की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है।

(स.प्र.तृ. समुल्लास)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ निर्मित विशुद्ध औषधियाँ

१.	च्यवनप्राश स्पे. १ कि.	१००.००
२.	च्यवनप्राश ,,	८०.००
३.	ब्राह्मी आंवला तेल	२०.००
४.	ब्राह्मी आंवला तेल स्पे.	४३.००
५.	वातराज तेल ५० मि.	२५.००
६.	महानारायण तेल ,,	२३.००
७.	विषगर्भ तेल ,,	१५.००
८.	संजीवनी तेल ,,	१५.००
९.	आयुर्वैदिक चाय	८.००
१०.	बलदापाक	४०.००
११.	सुपारीपाक २०० ग्राम	४०.००
१२.	आश्रम वाम	८.००
१३.	आश्रम दन्तमुक्ता १०० ग्राम	१५.००
१४.	गैसान्तक रस १०० ग्राम	२४.००
१५.	त्रिफला चूर्ण १ पाव	१५.००
१६.	लवणभास्कर चूर्ण	१२.००
१७.	पौष्टिक चूर्ण	१०.००
१८.	सर्पविषहरी चूर्ण	१०.००
१९.	एक्जिमा मल्हम	२०.००
२०.	सितोपलादि चूर्ण	२०.००
२१.	नेत्रामृत विशेष	८.००
२२.	शक्तिदा ५०० मि.लि.	३०.००
२३.	बलदामृत ,,	४०.००
२४.	कुमार्यासव ,,	२८.००
२५.	लोहासव ,,	२५.००
२६.	अरविन्दासव ५०० मि.ली.	३५.००
२७.	अशोकारिष्ट ,,	२५.००
२८.	अश्वगन्धारिष्ट ,,	३२.००
२९.	दशमूलारिष्ट ,,	३५.००
३०.	अभयारिष्ट ,,	३०.००
३१.	खदिरारिष्ट ,,	३०.००
३२.	अर्जुनारिष्ट ,,	२८.००
३३.	चन्द्रप्रभावटी १० ग्राम	१२.००
३४.	इन्द्रयण वटी ,,	१८.००
३५.	महाशंख बटी ,,	१०.००
३६.	आरोग्यवर्धनी वटी ,,	१५.००
३७.	संजीवनी वटी ,,	१२.००
३८.	कुष्ठकुठार रस ,,	१५.००
३९.	कृमिमुदगर रस ,,	१५.००
४०.	लक्ष्मी विलास रस ,,	१८.००
४१.	आन्दभैरव ,,	१५.००
४२.	धात्रीलौह	१५.००
४३.	सुतशेखर रस	२५.००
४४.	शशि शेखर रस	३५.००
४५.	महायोगराज गुगुल	१६.००
४६.	अर्श रोगामृत	१०.००
४७.	चन्दनादि वटी	२१.००
४८.	लंवगादि वटी	१५.००
४९.	मृत्युञ्जय रस	१२.००
५०.	अष्ठिलारिपु	१५.००

हमारे हिन्दी के प्रकाशन

१.	सत्यार्थ प्रकाश	२०/-
२.	खिलते फूल	४/-
३.	छात्र जीवन योग और स्वास्थ्य	५/-
४.	योगासन	८/-
५.	आश्रम गीताजंली	२/-
६.	फिटकरी	५/-
७.	त्रिफला भाग -१	५/-
८.	त्रिफला भाग -२	६/-
९.	तुलसी	५/-
१०.	शांतिकामार्ग ईश्वर भक्ति	३/-
११.	वैदिक लोरियां	१६/-
१२.	दैनिक उपासना	२/-
१३.	युवा और राष्ट्र	२/-
१४.	प्यारा ऋषि	८/-
१५.	मैं ईसाई क्यों नहीं?	१/-
१६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	४०/-
१७.	पौराणिक गप्प दीपका	७/-
१८.	विचित्र ब्रह्मचारी	३/-
१९.	गप्प शिरोमणि श्री राम शर्मा आचार्य	५/-
२०.	ईश्वर कहां है ?	४/-

सेवा में,

३०४९: श्री सम्पादक जी
'गुरुकुल पत्रिका' गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ.प्र.)

ग्राहक संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Exchange

Aug 98

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक पत्र

कुलभूमि

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

3/10/98

कृष्ण जन्माष्टमी एवं स्वतन्त्रता दिवस के पावन पर्व पर पाठकों को हार्दिक अभिनन्दन

इस वर्ष सौभाग्यवश जिस दिन स्वतन्त्रता का पावन पर्व है उसी दिन महान् नीतिज्ञ देश की एकता के सूत्रधार आजीवन अन्याय से संघर्ष कर न्याय पूर्ण धर्म की स्थापना में जीवन र्पण करने वाले योगेश्वर कृष्ण का जन्म दिवस भी है। इस अवसर पर हम पाठकों का ार्दिक अभिनन्दन करते हैं, तथा आशा करते हैं देश में बढ़ रही अराष्ट्रीय गतिविधियों को कने का प्रयास कर, देश की एकता की रक्षा करने का संकल्प लेगें। उत्कल आर्य प्रतिनिधि भा इसी लक्ष्य को लेकर निरन्तर धर्म रक्षा अभियान चला रही है, इसमें आपका आशीर्वाद वं सहयोग हमें मिलता रहेगा ऐसी आशा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल में अपना जन्म दिवस मनाकर एक पन्थ दो काज को सार्थक करें

शुभ कामनाओं, अच्छे वचनों एवं आशीर्वाद के शान्ति मिलकर आयु बढ़ती है। ऐसा पूर्वजों का कथन है। सात्विक एवं पवित्र लोगों का आशीर्वाद अधिक फलदायी है। अतः गुरुकुल के पवित्र ब्रह्मचारियों का एवं कन्या गुरुकुल की छोटी-छोटी सात्विक कन्याओं का आशीर्वाद लेने के लिये अपना जन्म दिवस गुरुकुल में मनायें। तथा उस दिन का भोजन ब्रह्मचारियों व कन्याओं को खिलाकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें। कन्या गुरुकुल में एक समय मिष्ठान्न युक्त भोजन बनाने पर १०००/-रु तथा गुरुकुल में १५००/- रु. व्यय आता है। परन्तु यदि आप १५००० या १०,००० रुपये की राशि भेजकर उसकी स्थिरनिधि जन्मदिवस के लिये स्थिर कर दे तो प्रतिवर्ष आपके जन्म दिवस पर प्रातःकाल यज्ञ एवं मध्यान्ह भोजन आपकी ओर से बनाया जायेगा। आपको आशीर्वाद दिया जायेगा। इस योजना से प्रतिवर्ष आपका जन्मदिवस सात्विकता पूर्वक मनाया जाता रहेगा तथा ब्रह्मचारियों को आपकी ओर से भोजन मिल जायेगा, गुरुकुल की सहायता हो जायेगी। यही है एक पन्थ दो काज।

गुरुकुल आश्रम आमसेना में प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

जो सज्जन वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करना चाहते हैं या संस्कार आदि करना सिखना चाहते हैं, उनके लिए ११ सितम्बर से ३० सितम्बर तक गुरुकुल में योग्य विद्वानों की देखरेख में प्रचारक प्रशिक्षण शिविर किया जा रहा है। भोजन आदि की व्यवस्था निःशुल्क है। जो सज्जन तपस्यापूर्वक २० दिन तक लगातार रह सकें। वे सज्जन सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, व्यवहार भानु तथा ऋतु अनुकुल बिस्तरा साथ लेकर १० सितम्बर तक गुरुकुल पहुंचे।

नोट : कृपया शिविर में पहुंचने से पहले पत्रोत्तर द्वारा स्वीकृति अवश्य प्राप्त करें। स्थान सीमित है

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
आचार्य, गुरुकुल आश्रम आमसेना
जि. - नवापारा, खरियार रोड,
उड़ीसा - ७६६१०९

विरजानन्द संस्कृति परिषद द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं में भाग लें

छात्रों एवं नवयुवकों को वैदिक धर्म का ज्ञान देने लिए धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन नवम्बर के अन्ति रविवार को होगा। आर्य सज्जनों तथा आर्य विद्यालय अध्यापकों से निवेदन है कि अपने सुपुत्र एवं छात्रों अधिक से अधिक संख्या में परीक्षा में बैठने की प्रेरणा

प्रथम परीक्षा ''सिद्धान्त कुसुम है। इसके लिए वैदि धर्म प्रश्नोत्तरी १०० अंक की निर्धारित है। इसका शु पुस्तक सहित १०/- रु अन्यथा 5 /- रु. है। गत जिन परीक्षार्थीयों ने ''सिद्धान्त कुसुम'' परीक्षा दी उनके लिए इस वर्ष ''सिद्धान्त प्राज्ञ'' निश्चित हुई इसकी परीक्षा फीस ६ रु. है। इसके लिए पाठ्यक्रम इ प्रकार है -

प्रथम प्रश्न पत्र -

१. छात्र जीवन और योग	५/-
ले. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती	५० अंक
२. प्यारा ऋषि	६/-
ले. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती	२५ अंक
३. आर्योद्दश्य रत्न माला	१/-
ले. महर्षि दयानन्द सरस्वती	२५ अंक
(प्रथम २५ रत्न याद करने है)	

द्वितीय प्रश्न पत्र -

१. व्यवहार भानु	२.५०/-
ले. दयानन्द सरस्वती	५० अंक
२. सत्यार्थ प्रकाश (द्वितीय समुल्लास)	
ले. दयानन्द सरस्वती	५० अंक

परीक्षा फीस के साथ पुस्तकों का मूल्य ४० रु. हो है। जो इन पुस्तकों को इकट्ठे लेगें उन्हें परीक्षा फीस साथ ३० रुप देना होगा।

इन परीक्षाओं पर अनेक आकर्षक पुरस्कार भी र गये हैं। विशेष जानकारी के लिए शीघ्र लिखें।

हमारा पता - **श्री परीक्षा मंत्री**
विरजानंद सं. परिषद्
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, नवापारा उड़ीसा - 76610

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-ओ३म्-

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुखपत्र

वर्ष - २०

अंक - ८

माह - अगस्त

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,०९९

विक्रमी संवत - २०५५

दयानंदाब्द - १७४

प्रतिष्ठाता : पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक : स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक : कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक : शरच्चन्द्र आर्य, पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता :

गुरुकुल आश्रम आमसेना

व्हाया - खरियार रोड

जिला - नवापारा (उड़ीसा)

पिन - ७६६ १०९

फोन - (०६६७८) २२३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-

आजीवन - ३००/-

एक प्रति - २.५०/-

वेदोपदेश

वयं स्याम पतयो रयीणाम्

हमारी वैदिक संस्कृति में श्रम के बड़े गुण बखाने गए है - **''कृतं में दक्षिणे हस्तेजयो में सव्य आहितः''** (अथर्व) मेरे दाएं हाथ में श्रमशीलता है तो सफलता मेरे बाएं हाथ का खेल है। वेद में अकर्म्मा और निठल्ले को दस्यु कहा है व्राह्मणग्रन्थ और औपनिषद् साहित्य में **''पापो नृषद्वरो जन** कहकर आलसी और प्रमादियों की निन्दा की गई। **''शेरतेऽस्य पाप्मानः श्रमेण प्रपथेहता :** परिश्रमीव्यक्ति के मार्ग में आने वाली बाधाएं उसके तप से नष्ट हो जाती है,और वह सम्पन्न बनता है परन्तु हम धन तो कमाएं किन्तु स्वार्थ सिद्धि के लिए नहीं उसे त्याग पूर्वक भोगने के लिए क्योंकि सांख्यकार कपिलमुनि जी ने कहा ''श्येनवत् सुखी दुःखी भवति त्याग वियोगाम्याम्''श्येन (बाज) पक्षी अपने मुख में मांस का टुकड़ा लिये जा रहा हो और उस टुकड़े को स्वयं अपनी चोंच से छोड़ दे तो यह स्थितिं उसे सुखी रखती है, इसके विपरीत कोई प्रवल पक्षी श्येन पर झपटकर बलपूर्वक उस चोंच में दबे मांस के टुकड़े को छीन ले तो उसे दुःख होता है, ठीक यही अवस्था मनुष्य की भी है। यदि वह विवेकपूर्वक अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु का त्याग करता है तो उसके मन में सुख ही होता है, इसके विपरीत यदि कोई बलपूर्वक छीन ले तो उसे दुःख होगा। पहली स्थिति का नाम त्याग, वह सुखी बनाती है दूसरी स्थिति का नाम वियोग है और वियोग की अवस्था में मनुष्य दुःखी होता है।

परिणाम यह निकला कि त्याग पूर्वक भोग की भावना ही संसार को सुख और शांति दे सकती है। जहां त्याग है वहां प्रेम है। धनके संवन्ध में वेद की आज्ञा है कि धन इस प्रकार कमाओं कि आत्मा का पतन न हो, ऐसा धन कमाओं जो प्रतिदिन शक्ति वढाये, भय का कारण न बना रहे, जो यश देने वाला हों, जिससे वीरों और विद्वानों का पालन हो ऐसा ही धन वास्तविक धन है। ऐसे धन की निन्दा न वेद करता है, न कोई ऋषि और महर्षि।

अथर्व वेद में तो धन के संवंध में कितने ही मन्त्र आते हैं तीसरे काण्ड का एक मंत्र है।

येन धनेन प्रपणं चरामि धनेन देवा धनमिच्छमानः।

हे प्रभो ! जिस धन से मै और धन कमाने की इच्छा करता हूं वह लगातार बढ़ता जाय कभी कम न हो।

यह है वेद का उपदेश !वेद धन को समाप्त करने, उसे मिटा देने, उसे कम करने और उससे घृणा करने का उपदेश नहीं देता अपितु उसे निरन्तर बढ़ाने का उपदेश देता है। इसी मंत्र के दूसरे भाग में कहा

तस्मिन्नयइन्द्रो रुचिमा दधातु प्रजापतिः सविता सोमो अग्निः।

अर्थात् हे प्रभो ! ऐसी कृपा करो कि इन्द्र प्रजापति सविता सोम और अग्नि मेरी इस इच्छा को पूर्ण करने में मेरे सहायक वन जाये। इस मन्त्र में एक वड़ी मनोरंजक बात भी है, वेद के प्रत्येक मन्त्र में यह बात विद्यमान रहती है। किसी भी मन्त्र में यदि कोई उपदेश दिया जाये या प्रार्थना की जाये, यदि किसी इच्छा को प्रकट किया जाये तो उसमें उसकी चाबी भी विद्यमान रहती है। उसी में यह भी बता दिया जाता है कि यह इच्छा या प्रार्थना किस प्रकार पूर्ण होगी। इस मन्त्र में भी यह चावी विद्यमान है। पूर्वार्द्ध में इच्छा या प्रार्थना किस प्रकार पूर्ण होगी। दूसरे भाग में उसकी चावी। इन्द्र का अर्थ है सबसे वड़ा संकेत यह है कि ऐ मानव ! यदि तू इच्छा पूर्ण करना चाहता है, अपने धन में निरन्तर वृद्धि चाहता है तो सब से बड़ा बनने की इच्छा को लेकर आगे बढ़ जहां तक पहुंच गया है, वहीं रुक न जा, बैठ न जा, खड़ा न हो जा, अपितु सबसे बड़ा बनने का प्रयत्न कर। प्रजापति का अर्थ है पालन करने वाला जो प्रजा का दूसरे मनुष्यों का और प्राणियों का पालन करता है वही प्रजापति है, संकेत यह है कि अपना पेट भरने के लिए, अपने ही सुख के लिए धन कमाने की इच्छा मत कर, अपितु दूसरों की पालनकर,रक्षा कर उनकी सहायता कर। सविता का अर्थ है उनकी जीवन देने वाला सुख और कल्याण के लिए प्रेरणा प्रदान करने वाला उन्हे नीचे गिराने का नहीं ऊपर उठाने का प्रयास करो निर्बल को बलवान बनाने वाला भाव यह है कि यदि धन-उपार्जन करना चाहते हो तो दूसरों की मौत मत बनो उनका जीवन बनो गिरे हुए को उठाने वाला, रोगी को आरोग्य प्रदान करने वाला, उन्हें कुपथ पर न ले जाकर कल्याण की ओर ले-जाने का प्रयत्न करो। सोम का अर्थ है चंचलता और बेचैनी से दूर, प्रेम और शान्ति की वृष्टि करने वाला। भाव यह है कि यदि धन कमाना चाहते हो तो दूसरों से प्यार करो उनके लिए शांति उत्पन्न करो, उनके हृदय में आग न लगाओ उनसे घृणा न करो, ईर्ष्या और द्वेष के मार्ग पर न चलो, राक्षस न बनो सविता बनो, और अन्त में अग्नि का अर्थ है अग्रणी-आगे बढ़ने वाला, उपर उठने वाला। संकेत यह कि आगे बढ़ने और ऊपर उठने की भावना को लेकर कामकर, पीछे जाने का प्रयत्न न कर। नीचे न गिर! उठ चल आगे बढ़।

ब्र. सचिन कुमार आर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पादकीय

१५ जुलाई को रायपुर से निकलने वाले समाचार पत्रों में कांग्रेस के प्रवक्ता तथा भूतपूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री संगमा का वक्तव्य पढ़कर आश्चर्य तो नहीं दुःख अवश्य हुआ। ये तो अपने उपर ''सुपा बोले तो बोले छालनी भी क्या बोले जिसमें सौ छेद है।'' इस लोकोक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं, उन्होंने अपने वक्तव्य में भाजपा को चेतावनी देते हुए कहा है कि वह भारत के पूर्वोत्तर प्रान्तों में ईसाईयों के हिन्दु बनाने की कोशिश न करें, अन्यथा इसका परिणाम अच्छा नहीं होगा। हिन्दु जाति तो वैसे ही धर्म के विषय में उपेक्षा कर रही है, धर्म परिवर्तन के विषय में तो ईसाई मुसलमान ही इस देश के निवासियों के साथ जबरदस्ती तथा छलकपट साम-दान आदि सारे उपाय काम में ला रहे हैं। सारे देश से प्रतिदिन ऐसी अनेक घटनाएं प्रकाश में आ रही है, कि किस प्रकार छल करके हिन्दू देवी देवताओं की निन्दा करके, तो किसी की चिकित्सा करके, किसी को नौकरी देकर किसी का घर बनवाने तो कहीं-कहीं अपनी पालित वैश्याओं के द्वारा चरित्र भ्रष्ट करके लोगों को ईसाई बना रहे हैं। हिन्दुओं के मान्य महापुरुष की निन्दा करते है। इनकी बहु बेटियों को करके अपहरण करते हैं। यदि इस विषय में कोई कुछ बोलता है तो भ्रष्ट धर्म के नाम पर झगड़ा खड़ा कर देते हैं। लाखों प्रचारक ईसाई मत फैलाने में लेगे हुए है। अकेले अरुणाचल जैसे छोटे प्रदेश में ही इनके हजारों प्रचारक ईसाई बनाने में जुटे हुए है। इसी वर्ष मिजोरम से ही ५०० से अधिक प्रचारक अरुणाचल में ईसाई बनाने के लिए आये हैं। जब वह प्रान्त बना तो गिने चुने ईसाई थे आज वहा चालीस प्रतिशत ईसाई हो गये हैं। मदरटेरेसा के ट्रस्ट ने भी अपनी शक्ति झोंक रखी है। परन्तु यह सब संगमा साहब को नहीं दिखता। उनकी दृष्टि में ईसाई मुसलमान जो कुछ करे ठीक और हिन्दु अपनी रक्षा के लिए कुछ करें तो सम्प्रदाय वादी हो जाते हैं। अनेक तथाकथित राजनेता भी क्षणिक स्वार्थ में अन्धे होकर इन्ही का पक्ष लेते हैं। कभी स्वार्थ में अन्धे होकर एक आम्भि या जयचन्द्र ने ही विदेशियों से मिलकर देश को पराधीन करवा दिया था। आज तो अधिकत्तर राजनैतिक पार्टियां इन स्वार्थी जयचन्दों से भरी हुई है।

ईसाई मुसलमानों का तो यह षड़यंत्र है कि अपने आप तो अन्धाधुन्ध लगकर पक्षपात करके जैसे-तैसे बने इन हिन्दुओं को अपने सम्प्रदाय में लेते जाओं यदि कोई शोर मचाए तो धर्म निरपेक्षता के नाम पर शोर मचा दो। दुष्ट का यही लक्षण है वह स्वयं सर्वप्रकार की दुष्टता करता है। परन्तु जब कोई प्रबल उनका विरोध करता है तो मारने का बाहना करके ढोंग करता है और सोर मचाता है। इसी प्रकार ये ईसाई हमारे इतिहास और संस्कृति को नाश करने पर तुले हुए है। दुर्भाग्यवश आज इनका वर्चस्व बढ़ता जा रहा है। कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी तो पूरी तरह से इन ईसाई मुसलमानों की कब्जे में आ गयी है। श्रीमती सोनिया गांधी से लेकर नीचे तक के अधिकतर अधिकारी ईसाई एवं मुसलमान है। कितने दुर्भाग्य की बात है कि इन विदेशी मतावलंबियों की पराधीनता को अनेक हिन्दुनेता शक्तिहीन बनकर सह रहे हैं और इनकी चाटुकारी कर रहे हैं। सम्भवतः इन्होंने ईसाई मुसलमानों के पुराने इतिहास से शिक्षा नहीं ली कि किसी भी ईसाई मुसलमान ने अपना पूरा समर्थन देने वाले हिन्दु को समय आने पर नष्ट करने में कमी नहीं रखा मध्यकाल का सारा इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा हुआ है कि पहले हिन्दुओं से सहायता लेकर ये ईसाई या मुसलमान शासक आगे बढ़े और समय आने पर सबसे पहले उन्ही की हत्या की। इन नेताओं को समझ लेना चाहिए कि आज भी इनका स्वभाव बदला नहीं है। समय आने पर ये विदेशी शासको से मिलकर देश को बेचने में देर नहीं लगायेंगे। इनके षड़यन्त्र कितने गहरे होते है। ये हमारे इतिहास एवं संस्कृति को नष्ट करने में क्या-क्या हथकण्डे अपनाते है। इसकी एक घटना उद्धृत कर रहा हूं।

अभी सन् १९७४ की बात है, एक ईसाई धोखा प्रकाश में आया है। मद्रास के आर्कविशप डा. अरुलप्पा ने गणेश अय्यर नामक एक तमिल ब्राम्हण को इस बात के लिए तैयार किया कि वह दक्षिण भारत में ईसाई मत के आरम्भ के समय का जबकि सेंट टामस दक्षिण में आया था, अध्ययन करके यह सिद्ध करे कि आजकल के जितने हिन्दु मन्दिर है वे सब पहले गिरजा घर थे। ईसा की पहली सदी में सेन्ट थामस ने दक्षिण के महान सन्त तिरुवल्लूवर को ईसाई मत की दीक्षा दी थी और उसकी सिहव कुरल जो तिरुवल्लूवर द्वारा लिखित है और तमिलनाडु में गीता की तरहपूज्य है, लिखने की प्रेरणा दी थी। लेकिन बाद मे तमिलके हिन्दु ब्राह्मणों ने उन सब गिरजाघरों को मंदिरों में परिणत कर दिया।

गणेश अय्यर को उक्त खोज करने के लिए गत ६ वर्षो में १४ लाख रुपये दिया गया। उसकी कोठी बनवाई गई, कार दी गई, उसके व्यक्तित्व को परिवर्तित करके उसका नाम आचार्य पाल रखा गया, उसे ब्रम्हचारी घोषित किया गया, जब कि उसकी पत्नी और तीन बच्चे विद्यमान है, वह ७५ वर्षीय सन्त बताया गया, जब कि वह केवल ५५ वर्ष का है। कहा गया कि ईसा के आर्शीवाद से ही वह ७५ वर्ष की आयु में भी इतना युवा लगता है उसे सारे योरोप की यात्रा करवाई गई, रोम के पोप से मिलवाया गया और सारे योरोप में यह प्रवाद प्रचारित किया गया कि आचार्य पाल ने तीस वर्ष के परिश्रम से जो अनुसंधान किया है, वह प्रकाश में आते ही सारा भारत वर्ष ईसाई पन्थ की शरण में आ जायेगा।

गणेश अय्यर की इस खोज को प्रमाणित करने के लिए कुछ जाली ताड़-पत्र तैयार किये गये, और जाली दस्तावेज (Docu,Emts)तैयार किए गये और उनकी फोटो लेकर पुस्तक प्रकाशित करने की योजना बनाई गई। परन्तु अन्त में गणेश अय्यर से बने आचार्य पाल ने आर्क विशप अरुलप्पा के इस सारे षड़यंत्र का भण्डाफोड़ कर दिया। तब आर्क विशप ने गणेश अय्यर पर १४ लाख रुपये गबन का आरोप लगाकर पुलिस से सांठ-गांठकर उसे जेल भिजवा दिया। इस समय सन् (१९८०) गणेश अय्यर जमानत पर छूटा हुआ है।

(उक्त घटना भयंकर साजिश नामक पत्रिका से उद्धृत)

पाठक इस एक घटना से अनुमान लगा सकते हैं कि इन विदेशियों का षड़यन्त्र कितना गहरा होता है। अंग्रेजों के शासन के समय इन्होंने क्या-क्या छल नहीं किया होगा। जबकि आज स्वाधीन देश में भी ये इस प्रकार का दुःसाहस करते हैं। श्री संगमा भी उसी कड़ी के है मदरटेरेसा सारी आयु ईसाईयत फैलाती रही और पूजनीय भी बनी रही। संगमा जी तो ईसाई, पादरियों के कारण ही यहां तक पहुंचे हैं फिर उनका पक्ष क्यों न लेंगे परन्तु देशवासियों को तो इनके षड़यन्त्र से सावधान होना ही चाहिए।

❑ *– व्रतानन्द सरस्वती*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर्श देवी के कर्तव्य

- पति को ईश्वरवत् मानकर सब प्रकार से उनको सुख पहुंचाये।
- पतिकी सेवा को ही अपना स्वभाव बना ले।
- पति के माननीय माता-पिता आदि का सेवा सम्मान करे।
- पति के आदर्श या सम्मति के अनुसार घर की सारी व्यवस्था करे।
- पति से कोई भूल हो जाये तो उसे बिना किसी क्षोभ के शान्त भाव से सहन कर ले।
- पति के अतिरिक्त अन्य पुरुषमात्र को अपना पिता, भाई तथा पुत्र के समान समझे। बिना काम किसी से भी मिले नहीं।
- पति के अतिरिक्त किसी पुरुष का जान बुझकर स्पर्श न करे, न किसी को माला पहनाये। चरण-स्पर्श भी न करे।
- पति के प्रतिकूल कोई भी कार्य न करे। पति के अनुकूल हो तो भी पापकर्म न करे।
- पति के अनुकूल निर्दोष कार्य सदा सर्वथा प्रफूल्ल चित्त से करे।
- पति को उनके मन के या घर की परिस्थिति के प्रतिकूल गहने कपड़े आदि के लिये न कहे, तंग तो कभी करे ही नहीं।
- पति का कभी तिरस्कार अपमान न करे, कोई चुभती बात न करे।
- पति के विचारों का उग्र खण्डन न करे। कभी कुछ कहना हो तो, जब वे प्रसन्न हो, तब नम्रता से कहे।
- पति के सामने सदा हंसमुख तथा विनययुक्त रहे।
- पति के सिवा किसी को गुरु न बनाए।
- पति के व्यक्तिगत सेवा सुविधा का कार्य यथासाध्य स्वयं करें।
- पति के लिये ही श्रृंगार करे दिखावे के लिये नहीं।
- पति को जिससे दुःख पहुंचे ऐसी बात की कभी भूलचुककर कल्पना भी न करे।
- पति न चाहते हो तो उनके सामने अपने माता-पिता या मैहर बातों की प्रशंसा न करे।
- पति को धार्मिक कार्यों में प्रवृत्त प्रोत्साहित करे।

श्री हनुमानप्रसाद पौद्दार

वेद ज्ञान रहित व्यक्ति नंगा है

विष्णु पुराण में स्वाध्याय की महिमा अतिसुन्दर शब्दों में गाई गई है, एक गाथा उसमें आती है। मैत्रेय ने महर्षि पराशर से पूछा नंगा कौन हैं ?

कहने को तो बात साधारण -सी प्रतीत होती है। महर्षि पराशर कह सकते थे जिसने कपड़ा नहीं पहना वह नंगा है। परन्तु मैत्रेय के प्रश्न में रहस्य था। महर्षि ने उसे समझा वैसे ही उसका उत्तर दिया।

मैत्रेय ने पूछा -

को नग्नः किं समाचारों नग्नसंज्ञा नरो लभेत्।
नग्नस्वरुपमिच्छामि यथावत् कथितं त्वया॥

अर्थात- 'हे महाराज! नंगा कौन है ? कैसे आचरण करने से मनुष्य नंगा है, ऐसा कहा जाता है ? मुझे इस नग्न रुप को जानने की इच्छा है। आप मुझे अच्छी प्रकार समझाकर कहिये।

ऋग्यजुस्सामसज्ञेयं त्रयी वर्णावृर्तिर्द्विज :।
एतामुज्झति यो मोहात्स नग्नः पातकीद्विजः॥
त्रयी समस्त वर्णानां द्विजसंवरणं यतः।
नग्नो भवित्युज्झितामायतस्तस्या न संशयः॥

अर्थात :- ऋग, यजु और साम यह त्रयी विद्या है, यह है तीनों वर्णो के ओढ़ने का कपड़ा। इस विद्या के कारण तीनों वर्ण ढके रहते हैं, आदर पाते है। जब इन तीन वर्णों का कोई व्यक्ति इस त्रयी विद्या से विमुख हो जाता है, उसे छोड़ देता है, तब उस पापी व्यक्ति को नंगा है, ऐसा कहा जाता है, यह सची बात है इसमें सन्देह नहीं।

- सुभाष चन्द्र शास्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर-प्रवेश

मेरे अनुभव में तो यह आया है कि जनता में प्रभु-दर्शन की पिपासा है। वह इस प्यास को बुझाने का यत्न करती है। कुछ स्वार्थी लोग जनता की इस पिपासा का दुरुपयोग करते है। ऐसे लोगों ने प्रभु-दर्शन की दुकाने खोल रखी है। जनता वहां जाती है और लाभ की जगह हानि उठाती है। ऐसे दुकानों पर गये हुए श्रद्धालुओं को सन्मार्ग नहीं दिखलाया जाता, अपितु वहाँ अपनी स्वार्थ सिद्धि की जाती है।

एम.टी. अथवा वेदतीर्थ की श्रेणी में प्रविष्ट होने के लिए जो विद्यार्थी आते है उनसे पहले पूछा जाता है कि उन्होंने पहली श्रेणियों की परीक्षायें उत्तीर्ण कर ली है या नहीं ? उनके प्रमाण-पत्र देखे जाते है और पूरी तसल्ली कर लेने के पश्चात् उन्हें उचित श्रेणी में प्रविष्ट होने के लिए कुछ भी नहीं देखा जाता। इस श्रेणी में बिठलाने से पूर्व जिन श्रेणियों की परिक्षायें देनी होती है वे एक दो नहीं अधिक हैं। इनमें से सबसे पहली श्रेणी में उत्तीर्ण होना अत्यधिक आवश्यक है। इस पहली श्रेणी का नाम है -यम दूसरी का नियम। ये दोनों बड़ी दुर्गम घाटियां है , तीसरी श्रेणी है - आसन, चौथी -प्राणायाम, पांचवी प्रत्याहार, छठी धारणा फिर सातवीं ध्यान आती है। इन सात के बाद समाधि है। परन्तु आजकल साधक भी यह चाहता है और योग का दुकानदार भी कि पहली श्रेणियों को जाने दो और समाधि में पहुंचा दो। यह शास्त्र मर्यादा और यथार्थता के सर्वथा विपरीत है। यम किसे कहते ?योग दर्शन साधनपाद के तीसरे सूत्र में इसका उत्तर दिया है। -

अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये पांच यम है योग (प्रभु-दर्शन) के जो आठ अंग शास्त्र ने बतलाये हैं, इनके अनुष्ठान के बिना हृदय की गांठ नहीं खुलती। अज्ञान, अविद्या, रागादि के क्लेश और अशुद्धि का नाश नहीं होता। इनके नाश के बिना प्रभु दर्शन नहीं हो सकता इन आठ अंगों में प्रधान अंग यम है।

योग दर्शन ने तो यमों का पहला स्थान आत्म दर्शन के लिए रखा है, परन्तु यह मेरा अटल विश्वास है कि आधुनिक संसार के सारे क्लेशों और विपत्तियों का अंत करने का एक मात्र साधन भी ये यम ही है। अमेरिका, रूस इंग्लैण्ड योरुप और एशिया के दूसरे सारे देशों के विद्वान संसार के जिस भय, अशान्ति भूख और असंतोष को सहस्रों योजनाये बनाकर भी दूर कर पाये, उन सबका अन्त योग की यह पहली श्रेणी ही कर सकती है।

❑ ***पूज्य आनन्द स्वामी जी महाराज***

संसार में स्थायी सुख नहीं

संसार के भोगने पर निर्णय होगा कि इसमें पूर्ण सुख नहीं है। संसार को कम से कम (अति आवश्यक ही) भोगे। संसार सत् है इसे भोगे परन्तु इसमें बहना नहीं तैरना है।

जब तक मनुष्य की संसार के प्रति तृष्णा समाप्त नहीं होती तब तक ईश्वर की ओर श्रद्धा नहीं होगी। जब तक इस संसार के जानने देखने से तृप्ति नहीं होती तब तक इससे छुटकारा नहीं होगा।

जब तक संसार में दुःख की अनुभूति नहीं करेंगे उससे नहीं ऊबेंगे तब तक ईश्वर के सुख ज्ञान, बल आनन्द के प्रति रुचि नहीं होगी। संसार में सुख तो है पर पूर्ण सुख नहीं है। कोई न कोई दुःख लगा हुआ है जो थोड़ा सुख है वह भी दुःख मिश्रित है अतः बुद्धिमान् ऋषिलोग उसे भी दुःख मानकर छोड़ देते हैं। वह पूर्ण सुख (मुक्ति) (ईश्वर प्राप्ति) चाहतें हैं।

१. **कुत्रापि कोऽपि सुखी न** अर्थात् संसार में कोई भी कहीं भी पूर्ण सुखी नहीं हैं।

२. **विविध बाधना योगात् दुःखमेव जन्मोत्पतिः** (न्याय) अनेक प्रकार के दुःखों के साथ संबध होने से शरीर में आना (जन्मलेना) दुःख ही है।

३. **न वै शरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोपहरतिरस्ति** शरीर के रहते सांसारिक सुख दुःख हुए बिना नहीं रहते निष्कामभाव से प्रयोग करते यदि सुख-दुःख की अनुभूति नहीं करेंगे तो ये दुःख नहीं सतायेंगे जैसे ऋषि लोगों को विपरीत दुःख की अनुभूति योगावस्था में नही होगी।

-स्वामी सत्यपति परिव्राजक

आर्य समाज रींवा में शुद्धि व विवाह सम्पन्न

१. आर्य समाज रींवा द्वारा ४-६-९८ को कु. शालिनी तिरकी पुत्री श्री आवेदनेगो तिरकी (ईसाई) निवासी गान्धीनगर रींवा का धर्म परिवर्तन कर चि. सुधांशु श्रीवास्तव का गणमान्य विद्वानों के समक्ष वैदिक रीति से विवाह संस्कार किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-स्वप्न

❑- सविता रस्तौगी
सरस्वती बिहार, नई दिल्ली

भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को कुरुक्षेत्र में दिया गया आदेश मनुष्य को सहीं ढंग से जीने की राह दिखाता है। उनके उपदेश को गीता में संकलित किया गया। वह उपदेश अमूल्य और गूढ़ है तथा आम व्यक्ति की समझ से बाहर है। इसलिये धार्मिक लेखकों और नेताओं ने मूल उपदेश को सार-रूप में लिखा गीता का न्यूनतम सार-रूप एक पृष्ठ का है जिसमें केवल मुख्य बातों को लिखा गया है। यह सार-रुप एक पृष्ठ का है जिसमें केवल मुख्य बातों को लिखा गया है। यह सार -रुप इतना सरल है कि इसे बच्चे भी पढ़ सकते हैं। परन्तु पढ़ पाना एक अलग बात है, और पढ़कर उसका भावार्थ समझना दूसरी बात। सार में छिपे भावार्थ को केवल कुछ बड़प्पन आने पर ही समझा जा सकता है, परन्तु सबसे कठिन पर जरुरी बात है उपदेशों पर अमल करना जो केवल विरले ही कर पाते हैं।

गीता के अनेक उपदेशों में से एक उपदेश है -भूत जा चुका है, भविष्य को अभी आना है पर वर्तमान चल रहा है। इसका अर्थ यह है कि जो जिंदगी बीत चुकी है, उसके बारे में बैठकर सोचते ही नहीं रह जाना चाहिये। हालांकि बीती हुई जिंदगी को भूलना आसान नहीं, बल्कि यह कहना चाहिये कि ऐसा करना असंभव है, इसलिये यह कह सकते हैं कि इसका अर्थ है कि बीती हुई बातों से सबक लेकर पर उन्हें भूलते हुए। इंसान को जीवन पथ पर आगे बढ़ते जाना चाहिये।

परन्तु आगे बढ़ने के लिये कोई रास्ता तो होना चाहिये। वह रास्ता मिलता है भविष्य के लिये योजनाएं बनाकर इसलिये भविष्य के बारे में चिन्ता नहीं करनी है कि क्या होगा। हमें तो योजनाएं बनानी है, स्वप्न देखने है कि हमारा भविष्य कैसा होना चाहिये। फिर उस स्वप्नों के आधार पर वर्तमान में कार्य करना है जिससे उन स्वप्नों का साकार होना संभावितं हो सके।

इसलिये यह कहना गलत नहीं होगा कि वर्तमान में जो कार्य वह भविष्य के सपने पूरे करने के लिये करता है, इसलिये स्वप्न देखना जहां एक ओर स्वाभाविक है, वहीं दूसरी ओर मनुष्य की कमजोरी भी है; परन्तु साथ ही साथ यह आवश्यक भी है, क्योंकि स्वप्न नहीं होंगे तो मनुष्य जिस स्तर पर है, वहीं रह जायेगा, उससे आगे नहीं बढ़ पायेगा। मनुष्य आदि मानव की स्थिति से आज जो अंतरिक्ष में पहुंचा है, वह सपनों की बदौलत ही तो।

परन्तु खाली स्वप्न देखने से स्वप्न पूरे नहीं हो जाते, उनके लिये कार्य वर्तमान में करना पड़ता है। यह भी आवश्यक नहीं कि कार्य करने से स्वप्न पूरे ही हो जाए क्योंकि गीता का एक और उपदेश है कि कर्म करना मनुष्य के हाथ में हैं, परन्तु उसका फल देना भगवान् के हाथ में हैं।

कार्य करने के बाद सफलताएं भी मिलती है, असफलताएं भी सफलताएं और असफलताएं एक ही सिक्के के दो पहलू है। असली मनुष्य वहीं है जो सफलता और असफलता को समान रुप में ले। चाहे सफलता हो या असफलता, मानव धर्म यही है कि वह कार्य पथ पर निरन्तर बढ़ता रहे क्योंकि वहीं प्रगति का पथ है। सफलता मिलने पर व्यक्ति की एक आवश्यकता पूरी होती है परन्तु क्योंकि मनुष्य की इच्छाएं अथवा आवश्यकताएं असीमित है, इसलिये किसी एक समय पर मनुष्य की सभी आवश्यकताएं पूरी हो जाएं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। आवश्यकताएं हमेशा बनी रहती है,

अगर किसी को सफलता मिलती है तो खुशी की प्राप्ति होती है, परन्तु सफलता से मिलने वाली उपलब्धि की भावना कुछ ही समय तक रहती है, दूसरी ओर असफल व्यक्ति उदासीन और दुखी रहता है, परन्तु अगर वह समझदार है तो जो हुआ उसको ईश्वरेच्छा मानकर, फिर से किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हो जाता है। फिर ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति पूर्णतया सफल हुआ अथवा असफल क्योंकि हर व्यक्ति आंशिक रुप से असफल होता है और आंशिक रुप से सफल होता है और आंशिक रुप से सफल।

संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि मनुष्य वही है जो सफलता-असफलता में समान रह कर भविष्य के लिये स्वप्न देखे, स्वप्न जो कुछ वास्तविकता पर आधारित हो और फिर स्वप्नों को साकार करने के लिये प्रयत्नशील रहे। इसलिये कहा जा सकता है कि जीवन के सपने तो जीवन की बुनियाद है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान कृष्ण का उपदेश

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥

अर्थात् – जो प्रारम्भ में विष तुल्य अप्रिय परन्तु परिणाम में अमृत सम सुखप्रद होता है, जिसमें आत्मा एवं बुद्धि का चैतन्य रुप विकास होता है न कि शराबादि के समान चैतन्य–लोप वह सुख सात्विक सुख कहलाता है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारुढानि मायया ॥

अर्थात् – हे अर्जुन ! ईश्वर प्राणिमात्र के हृदय में बैठा हुआ है। अपनी रचना शक्ति द्वारा यन्त्रारुढ़ करके घुमाता हुआ स्थित है।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते ।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥

अर्थात् – जो भोग इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष जन्य है उनका क्योंकि आदि भी है और अन्त भी। इसलिये वे क्षण भंगुर होने के कारण वियोग में अति दुःखदायी होते हैं। बुद्धिमान् उनमें नहीं रमता।

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भव :
यज्ञाद् भवति पजेन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः ॥

प्राणिमात्र अन्य से सत्ता पाते हैं अन्न की सत्ता बादल से होती है। बादल की सत्ता यज्ञ से और यज्ञ सात्विक कार्यों से सम्भव है अतः सदा यज्ञादि शुभकर्म करते कराते रहना चाहिये।

कर्मण्येवाधिकारस्ते माँ फलेषु कदाचन
मा कर्मफलहेतु भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

अर्थात–हे अर्जुन ! तेरा कर्म में ही अधिकार है उसके फल में कभी नहीं। तू कर्मफल का हेतु मत बन, अकर्म में तेरी प्रीति नहीं होनी चाहिये।

गीता से –

वाचा वदत मधुमता

वाणी ऐसी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय॥

धन का उपयोग कैसे हो ?

धर्माय यशसेऽर्थाय आत्मने स्वजनाय च।
पञ्चधा विभजन्वित्तमिहामुत्र च मोदते ॥

हमारे पूर्वजों ने धन को पाँच भागों में बांटकर उसका उपयोग करने का आदेश दिया है। धर्माय =धर्म की रक्षा और देश हित के लिए धन का एक भाग लगाया जाये। धन का दूसरा भाग यश एवं मान सम्मान दिलाने वाले कार्यों में खर्च किया जाय। धन का तीसरा भाग धन की वृद्धि करने में व्यय करें अर्थात् व्यापारादि ऐसे कार्यों में लगावें जिससे धन की निरन्तर वृद्धि हो। धन का चौथा भाग आत्मने = अर्थात् अपने शरीर एवं परिवार की रक्षा एवं पालन पोषण के लिये व्यय करो तथा धन का पांचवां भाग अपने मित्र संबधी आदि की सहायता में व्यय करें।

नव निर्मित शाला भवन का उद्घाटन

(आर्य प्रति सभा म.प्र.व.वि. द्वारा संचालित)

कोहका भिलाई ता ३०–६–९८ को मध्यान्ह ४ बजे महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय के नवीन भवन का उद्घाटन डां. सुश्री मालती प्रजापति उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. के करकमलों द्वारा हुआ। इस अवसर पर बाहर से पधारे सभा के पदाधिकारी के अतिरिक्त आर्य समाज दुर्ग–भिलाई के पदाधिकारी एवं सदस्य कोहका आर्य समाज के पदाधिकारी एवं अनेक प्रतिष्ठित नर–नारी सम्मिलित हुए।

गुलाबचंद बंसल
भिलाई नगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने को हीन न समझें

❑ रामचरण महेन्द्र

अच्छा बुरा जैसे आप स्वयं अपने आपको मानते है वैसे ही आपके मानस चित्र में हृदय पटल पर अंकित होता है। पुनः तदनुरुप गुप्त मनोभाव आपकी नित्य प्रति की क्रियाओं में प्रकट होकर समाज के समक्ष प्रकट होते हैं। अपने विषय में जैसी आपकी अपनी राय है वस्तुतः वैसी ही धारणा आपके विषय में संसार बनाया करता है। विश्व के सर्वोत्कृष्ट महापुरुष अपनी योजनाओं और शक्ति के विषय में कुछ स्वयं अपने को मानते थे, उसी उत्कृष्ट भावना के अनुसार उन्होंने संसार में सफलताएं प्राप्त की है। आपके गुप्त निश्चय एवं प्रिय आदर्श ही आपका पथ उच्च और प्रशस्त करते हैं, यदि आपके ये आधारभूत विचार या अपने सम्बन्ध में बनाई हुई गुप्त धारणाएं ही निर्बल होगी तो निश्चय ही आप निर्बल बनेगें। आपका आत्मबल आपका साहस और आपका पौरुष भी कमजोर ही रहेगा, आपकी शक्तियां भी उसी अनुपात में कार्य करेगी और क्रमशः जीवन के प्रति आपकी वैसी ही मनोवृत्ति भी बनेगी। दुर्बलता शरीर की नहीं होती उसका केन्द्र मन में रहने वाले विचार है कमजोर व्यक्ति पहले मन में अपने को दीन हीन विचारों में डुबाता है उसका दूषित मानसिक विष उसकी तमाम उत्पादक शक्तियों को पंगु बना देता है। उसके चारों ओर इसी प्रकार का निर्बल वातावरण निर्मित होता जाता है। स्वयं अपने ही विचारों की क्षुद्रता के कारण वह पतित या दीन-हीन या दुःखद अवस्था को प्राप्त होता है।

याद रखिए, अपने को तुच्छ या नगण्य समझने वाला व्यक्ति संसार में कभी कुछ नहीं कर सकता, वह सुस्त और निराश दिखाई देता है, उसे सब अपने से बड़े और सशक्त दिखायी देते हैं वह बोलते भी डरता है सदा सबके पीछे ही चलता है। यदि इस प्रकार आप पिछड़ते गये, हीनत्व को पालने पोषने लग गये तो आपको कंधे पर उठाकर कोई नहीं ले चलेगा। यदि स्वयं आपने अपने-आपको ठोकर मार दी, तो स्मरण रखिए प्रत्येक व्यक्ति आपको ठोकर ही लगाता जायेगा, गाली देगा और कुचलता हुआ आगे बढ़ता चलेगा। यह संसार यह समाज, यह युग हंसते हुए के साथ हंसता है रोते को छोड़ देता है। बढ़ते और दौड़ते का साथी है मरे हुए को फूंककर अथवा दफनाकर शीघ्र ही भूला देता है। दीन हीन के लिए यहां कोई स्थान नहीं है। मनोविज्ञान का यह सिद्धान्त है कि चिन्तन से उसी भाव का गुण की वृद्धि होती है जिसके विषय में आप निरन्तर सोचते-विचारते रहते हैं? यदि आप जीवन के कष्टप्रद कटु त्रुटिपूर्ण पक्षों या अपनी निर्बलताओं में विचरण करते रहेगें तो अपने दोषों की ही वृद्धि करेगें। कुछ मनुष्यों में ऐसा विश्वास जम जाता है कि मेरा अमुक दोष, मेरी अमुक त्रुटि अमुक न्यूनता मेरे पूर्वजों से आ गयी है और मैं विवश हूं। यह गलत विचार धारा है। मनुष्य स्वभाव, गुण और चरित्र को जब जैसे, चाहे आत्मबल से नये मार्गों में मोड़ सकता है। ऐसी गलत विचारधारा मन से निकाल देनी चाहिये।

कुत्सित कल्पना से धीरे-धीरे मानसिक रोग उत्पन्न होकर मनुष्य का नाश कर देते हैं। यदि कोई व्यक्ति आपको दीन हीन कहता है, तो कभी उसकी बातों को स्वीकार न कीजिए। उसे नम्र भाषा में किन्तु साहस तथा विश्वास के साथ ऐसा जवाब दीजिए जिससे उसे पुनः कभी वैसी ओछी बात मुंह से उच्चारण करने का प्रलोभन न हो। एक बार किसी राजा से एक व्यक्ति ने कहा कि आपके राज्य में अमुक पुरुष ऐसा है जिसका मुख देखने से दिनभर भोजन नहीं मिलता। राजा ने कहा यदि ऐसा है तो उसका मुख देखकर तुम्हारे कथन की परीक्षा लेगें। राजा ने उस अभागे का मुख देखा। संयोग ऐसा हुआ कि उस दिन दिन भर भोजन करने का सुभीता राजा को न हुआ। राजा ने सोचा वह निश्चय ही मन्दभागी राज्य के लिए अहितकारी है। अतः राजा ने उससे कहा देखो तुम अभागे हो सुबह हमने तुम्हारा मुंह देखा तो दिन-भर भोजन नहीं मिला। यदि तुम हमारे राज्य में रहोगे तो न जाने कितनों को तुम्हारे दर्शन से भूखा रहना पड़ेगा। हम तुम्हे फांसी की सजा देते हैं। वह सजा सुनकर स्तब्ध रह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर अपने आपको हीन मानने के लिए तैयार नहीं था । उसने धैर्य से कहा-राजन् ! मैं तुच्छ नहीं हूं । अपने मन से मेरे प्रति यह दुर्भावना निकाल दीजिए । आपका मेरे ऊपर यह मिथ्या आरोप है कि मेरा मुख देखने से आपको भोजन नहीं मिला । मुझे आपका मुख देखकर फांसी का हुक्म मिला है । मेरी अपेक्षा तो आप तुच्छ और अभागे प्रमाणित हो रहे हैं । राजा ने विचार किया तो सन्देह के काले बादल छंट गये । उन्हें आत्मबोध हुआ कि किसी को तुच्छ नहीं समझना चाहिये । जैसे हम अपने आपको हीन न समझे वैसे दूसरों को भी तुच्छता का भ्रम न कराये, जिस प्रकार अपने को दीन-हीन समझना आत्महत्या के समान है, उसी प्रकार दूसरों को तुच्छता का भ्रम कराना पाप है ।

बहुत से शिक्षकों तथा माता पिताओं में यह बूरी आदत होती है कि वे अपने बच्चों तथा शिष्यों की तनिक तनिक सी भूलें निकाला करते हैं और विस्तार से उनका वर्णन करते हैं । क्रोध से कहते हैं ''तुम यह काम न कर सकोगे । तुम में बुद्धि और प्रतिभा कहां है ? तुम्हारा जीवन तो बेकार है । तुम तो हमेशा नीचे ही पड़े रहोगे । इन बुरे संकेतों का कोमलमति सुकुमार हृदयों पर या अल्पवयस्क किशोर किशोरियों पर बहुत गहरा और हानिकारक प्रभाव पड़ता है । बच्चे भावुक होने के कारण पकड़ लेते हैं और अनायास ही नहीं भूल पाते । अतएव यह प्रतिज्ञा कर लीजिए कि चाहे कुछ भी हो आप निन्दा के विषाक्त ब्यंग्य बाण न चलाकर किसी का भविष्य अन्धकार मय नहीं बनायेगें । अपना जैसा अच्छा या बूरा मानस चित्र आप अपने अन्तःकरण में निर्माण करते हैं वहीं आपका यथार्थ रुप हो जाता है । यदि आप अपने आपको संसार में नग्न पाते हैं, दब्बू पाते हैं, दूसरों से अन्याय पूर्वक दबते हुए पाते हैं, तो इसके उत्तरदायी आप स्वयं ही है । बाह्य शक्तियां आपके ऊपर इतना प्रभाव नहीं डालती जिसका जितना आपके अपने गुप्त मनोभाव, आन्तरिक कल्पनाएं, मानसिक चिन्तन और विचार डालते हैं । अपने चारों ओर जो वातावरण आप देखते हैं । वह स्वयं आपके मानसिक जगह की प्रतिच्छाया है । दोषी आप स्वयं ही है बाह्य जगत् नहीं । मन में हीनत्व की बुरी भावना रखकर ही आपने अपनी यह अधोगति की है, आप इस दयनीय स्थिति तक गिर गये हैं और अपनी आत्मा का तिरस्कार किया है इस घृणित दल-दल से आज ही अपने को निकालिये । क्या हुआ यदि आपके पास धन नहीं है । संसार के अनेक महान व्यक्ति बिना धन के पूज्य हुए । धन का महानता से बहुत कम संबंध है । क्या हुआ आपके पास आलीशान मकान तड़क-भड़क के वस्त्र, आभूषण, मोटर, बंगला आदि विलास के साधन नहीं है । संसार में ऐसे बहुत कम व्यक्ति ही है । क्या हुआ आप कुरुप है । महानता रुप में नहीं है । यदि बाहरी रुप से ही कोई ऊंचा उठा करता तो वैश्यायें पूज्य होती और प्रतिष्ठित समझी जाती लेकिन नहीं यह कभी नहीं हुआ । वे कभी प्रतिष्ठित नहीं समझी गयी । चरित्रशीलता, विद्वत्ता, ठोस कार्य, परिश्रम, इन्द्रिय निग्रह आदि ऐसी विभूतियां है जिनसे महानता प्राप्त होती है और मनुष्य प्रतिष्ठित समझा जाता है । इस छिपे हुए महाभण्डार में अगणित अतुलित रत्न राशि छिपी पडी है । जो कोई इसमें से जितना निकाल लेता है वह उतना ही धनी बन जाता है । परमात्मा का अमर राजकुमार अपने में अपने पिता की सम्पूर्ण दिव्य शक्तियों का सच्चा उत्तराधिकारी है । इच्छा और प्रयत्न करने पर सब कुछ उसे मिल सकता है । आपकी क्षमताओं, आपकी योजनाओं, गुणों और शक्तियों की सम्भावना इतनी ऊंची है कि साधारण बुद्धि से उनकी कल्पना सम्भव नहीं है । हर एक बात सम्भव हो सकती है । आप उन्नति, सम्मान, आत्म सन्तोष चाहते हैं तो गुप्त विचारों को आज से ही बदल दीजिए । अपने विषय में उच्च नैतिक बौद्धिक मनोधारणायें और नये विश्वास ही जमाइये । दूसरों के अनिष्टकर संकेतों को कदापि स्वीकार मत कीजिए । आपकी अपने प्रति जैसी श्रद्धा है वैसा ही रुप बनने वाला है । आत्मश्रद्धा ही निर्माण करने वाली महाशक्ति है । अपनी श्रद्धा अर्थात् अपने चरित्र का निर्माण करने वाली है । आत्मश्रद्धा ही वह आधार है जो आपको ऊंचा उठाने वाली है अतः खोई हुई आत्मश्रद्धा को एक बार फिर जगाइये । श्रद्धा व्यक्ति के चरित्र को प्रकट करती है । ईश्वर में उनकी कृपा में उनके नाम की शक्ति में सच्चीपूर्ण जीवन्त और अटल श्रद्धा रखो । ध्यान करो और अपने को दिव्यप्रकाश की ओर अनावृत कर दो । याद रख तू अमृत पुत्र है यह मानव शरीर ईश्वर की सर्व श्रेष्ठ कृति है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्ल का दिवालिया, ब्रह्माकुमारी मत

वारहवीं किस्त

▲ *स्वामी परमानन्द सरस्वती*

प्रिय पाठकों

आज मेरे समक्ष ज्ञान के अनमोल रत्न पुस्तक है लेखक है श्री जगदीश प्रकाशक प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय पाण्डव भवन आबू पर्वत (राजस्थान)

पुस्तक के पृष्ठ ६ पर लिखते हैं – जगत माता शीर्षक से

प्रश्न उठता है कि निराकार परमात्मा शिव तो अविनाशी होने के नाते हम सभी आत्माओं के पिता है। पर जगदम्बा जो कि शरीर धारी है। वह सारे जगत की माता केसे है इसका सही उत्तर जानने के लिये जगदम्बा माता के अलौकिक कर्तव्यों को समझाना होगा। इस अलौकिक मां का पूरा कर्तव्य वाचक नाम शिवं वंशी ब्रह्मकुमारी आदि देवी जगदम्बा सरस्वती है।

समीक्षा–श्री जगदीश के इस लेख ने तो अक्ल के दिवालिये पन को भी मात दे दी है। ब्रह्माकुमारियों को शिववंशी लिख कर /वंश उस पुरुष के नाम से चलता है जिसने संतान उत्पन्न की हो और वह उत्पन्न की हुई सन्तान भी संतानों को उत्पन्न करती चली आ रही हो और माता कहलाने के लिए पति और पुत्र होना आवश्यक है। अब देखना यह है कि इनकी जगत माता, बह्माकुमारी का पति कौन है और पुत्र कौन है तथा इनका अलौकिक कर्तव्य क्या है। ये लोग शिव को निराकार कहते हैं और निराकार से कोई वंश चल ही नहीं सकता तब अपने आप को शिववंशी लिखना उन्माद के शिवाय और कुछ भी नहीं है। ब्रह्माकुमारी लिखने से तो यही सिद्ध होता है कि ये ब्रम्हा की पुत्रिया है और ये लेखराज को प्रजापिता ब्रह्मा कहती है तब ये सब लेखराज की पुत्रियां कहलाई लेखराज की पत्नी का नाम जशोदा है तो क्या ये सब ब्रह्माकुमारिया जशोदा के गर्भ से उत्पन्न हुई है यदि नहीं तो क्या लेखराज ने इनकी माताओं को पुत्री का वरदान दिया है मेरी समझ में यह नहीं आता कि ब्रह्माकुमारी कहने का औचित्य क्या है। वृद्ध बात इन्होंने और मजेदार लिखी है कि ब्रह्माकुमारी अलौकिक कर्तव्य कर के माता बनती है संसार में पशु पक्षियों से लेकर मनुष्य तक सभी एक ही नियम के अन्तर्गत प्रजनन क्रिया का सम्पादन करते हैं जिसे ये लौकिक कहते हैं। अब देखना यह है कि ब्रह्माकुमारी कौन सा अलौकिक कर्तव्य कर के माता बनती है। आज तक तो इन्होंने कोई ऐसा अलौकिक कर्तव्य कर के दिखाया नहीं है जो कि गिनिज बुक में लिखा जा सके और न इनके दादा लेखराज जिन्हें परमात्मा शिव कहती है उन्होंने भी लौकिक तरीके से ही संताने उत्पन्न की है उन्होंने भी कोई अलौकिक कर्तव्य करके नहीं दिखाया फिर जगदीश के मासिक में यह अलौकिकता का चित्र कहां से उभरा। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि ये पुरी गये हों और वहां अपने नाम के मंदिर में जो चित्र चारों तरफ बने है उनमें जो अलौकिक कर्तव्यों का प्रदर्शन किया गया है। उहें देख कर इनके अन्दर एक प्रेरणा जागृत हुई हो कि इस मृत प्राय संस्कृती को मै पुनः क्यों न जाग्रत करु। क्योंकि हमारे परमपिता परमात्मा दादा लेख राज ने तो लौकिक रास लीला का ही प्रतिपादन किया है और अब मैं इस अलौकिक संस्कृति का बीजारोपन कर इसे पल्लवित कर अपने दाता के कार्य को और गति दूँ। दादा द्वारा निर्मित भूमि (ब्रह्मकुमारी) में उर्वरक शक्ति ज्यादा होने से बीज जल्द अंकुरित हो कर पल्लवित हो जायेगा।

पृष्ठ ६– पर लिखते हैं कि कुछ लोग कहते हैं कि गृहस्थाश्रम में तो काम विकार की छुट्टी है। वे कहते हैं कि अभी तो पवित्र रहने की हमारी अवस्था ही नहीं है अभी तो इस विकार को भोगना गृहस्थ धर्म है। यह तो निभाना ही है वरन शादी करने और गृहस्थ बनने का कोई अर्थ ही नहीं है। वृहस्थ में भोग करने के लिए ही तो हमारे धर्म शास्त्री और महापुरुषों की आज्ञा है। हम दूसरी नारियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रति कुदृष्टि का विचार नहीं रखते।

वास्तव में इस प्रकार की विचार धारा ही गलत है क्योंकि जिस गृहस्थ में काम भोग है उसे तो आश्रम की संज्ञा हम दे ही नहीं सकते कारण कि आश्रम पवित्र स्थान का नाम है । अतः लोगों की अज्ञानता और उनकी अपवित्रता के कारण ही घर अलग और आश्रम अलग बन गए हैं।

समीक्षा – इन अक्ल के कोल्हुओं को यह कैसे समझाया जाय की आश्रम चार होते हैं ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यास ये जहां भी रहते हैं उसी का नाम घर है। जेसे ब्रह्मचर्य आश्रम ब्रह्मचारी पैदा हो कर २५ वर्षों की आयु तक गृहस्थ के घर में ही रहता है। वानप्रस्थ भी गृहस्थ के कार्यों से निवृत होकर अलग घर में रहकर स्वाध्याय करता है। संन्यासी परिव्राजक होकर किसी न किसी गृहस्थ के घर में ही आश्रय लेता है। जहां आश्रय लिया जाय उसे आश्रय करते है जहां रहा जाय उसे घर कहते हैं ये दोनो एक ही अर्थ के बोधक है। इन आश्रमों में गृहस्थ आश्रम ही श्रेष्ठ आश्रम है क्योंकि तीनों आश्रमों का जन्म दाता और पालन कर्ता यही है। इसके न होने से कोई आश्रम रह ही नहीं सकते। केवल विवाह कर लेने का नाम गृहस्थ नहीं है। माता पिता बनने पर ही गृहस्थ कहलाता है। और बगैर काम भोग के माता पिता बना ही नहीं जा सकता।

पृष्ठ ९ –पर लिखते हैं कि आज धर्म पति और धर्म पत्नी के बीच से धर्म का संबंध टूट गया है और दोनों एक दूसरे को धर्म भ्रष्ट और पतित करने के लिए ही साथी बने हुए है। आज तो पति पत्नी एक दूसरे पर काम का कुठारा घात करके एक दूसरे को लहु लुहान करते हैं और इस प्रकार घोर हिंसा करके आदि मध्य अन्त दुःख के भागी बनते है।

समीक्षा – काम ही एक ऐसा सूत्र है जो दम्पत्ति जीवन में रस घोलता है और वहीं दोनों में धर्म को संजोये रखता है। दोनों एक दूसरे से धर्म भ्रष्ट तब होते है जब काम शक्ति का अभाव होता है। काम ही एक ऐसी शक्ति है जो एक दूसरे को आकर्षित करती है और ईश्वरी नियमानुसार सृष्टि की वृद्धि करती है परन्तु जगदीश जी पति पत्नी के स्मरण को धर्म भ्रष्ट और पतित मानते हैं। इससे तो यही सिद्ध हुआ कि जगदीश और उनकी संस्था की सभी ब्रह्माकुमारी धर्म भ्रष्ट और पतित लोगों की सन्ताने है क्योंकि ये सभी संभोग से ही पैदा हुई है। आसमान से तो टपकी नहीं है। धर्म भ्रष्ट और पतितों की सन्तानें भी धर्म भ्रष्ट और पतित ही होगी।

इसलिये ये पूरी संस्था धर्म भ्रष्ट और पतित है इस संस्था के संस्थापक दादा लेखराज जिन्हें ये परम पिता परमात्मा शिव कहते हैं उन्होंने अपनी पत्नी को काम कुठार से लहु लुहान कर के ही नारायण आदि सन्तानों को पैदा किया है। जगदीश के कथनानुसार ये आदि मध्य और अन्त में दुःख यानी नर्क में गये है आज तक तो ऐसा न देखा गया और न सुना ही गया कि पति के रमण करने से पत्नी लहु लुहान हो जाय। ऐसा जरूर सुना गया है। कि जब कोई कामान्ध प्रौढ़ पुरुष किसी नाबालिक से बलात्कार करता है तब वह नाबालिक लहु लुहान हो जाती है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि जगदीश जी ने यहा अपनी अनुभव को ही उद्धृत किया है।

पृष्ट १६– *क्या परमात्मा सर्वव्यापक है ?*

किसी वस्तु को प्रत्यक्ष तभी देखा जा सकता है। जब दर्शक और दृश्य वस्तु के बीच खाली स्थान हो। यदि दोनों के बीच खाली स्थान ही न हो तब तो देखने की क्रिया हो ही नहीं सकती। अतः यदि परमात्मा को सर्वव्यापक माना जाय तब तो परमात्मा का दिव्य प्रत्यक्ष अथवा साक्षात्कार हो ही नहीं सकता क्यों कि परमात्मा और आत्मा के बीच कोई रिक्त स्थान न होने से देखने की अन्य कोई भी क्रिया हो नही सकती है। क्रिया होती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही तब है जब कोई खाली जगह हो। यदि परमात्मा सर्वव्यापक हो तो वह भी हम को देख नहीं सकता।

समीक्षा – इन्होंने ईश्वर की सर्वव्यापकता को न मानने में जो हेतु दिये है वह इनके दुराग्रह से प्रेरित अज्ञानता को ही दर्शाता है। ईश्वर कोई भौतिक वस्तु तो है नहीं जो आंखों से देखी जा सके। वह तो अभौतिक है इन्द्रियों से परे हैं। आंख तो केवल रुपवान वस्तु को ही देख पाती है। अरुपवान वस्तु को नहीं। जैसे वायु, शब्द, गन्ध, स्वाद, विद्युत आदि को नहीं देख सकती जब की ये सब भौतिक ही है, तब अभौतिक को देखने का प्रश्न ही नहीं उठता। इन्द्रियों के द्वारा ईश्वर का प्रत्यक्ष अथवा साक्षात्कार मानना तो उन्मादियों का काम है। इन्द्रियों द्वारा प्राप्त हर ज्ञान यथार्थ नहीं होता। जैसे सांप में रस्सी और रस्सी में सांप का ज्ञान। इसी लिये इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान का निरीक्षण मन करता है, मन द्वारा किये निरीक्षण की जांच बुद्धि करती है और बुद्धि द्वारा की गई जांच का विश्लेषण तत्व ज्ञान करता है। वही ज्ञान उन्नति के मार्ग को प्रस्तुत करता है। दर्शक और द्रव्य वस्तु के बीच खाली स्थान का होना आवश्यक है। यह नियम केवल स्थूल वस्तुओं पर ही लागू होता है। सूक्ष्म पर नहीं। खाली उसे कहते हैं जहां कुछ भी न हो। संसार में कोई जगह ऐसी नहीं है जो खाली हो, हर जगह कुछ न कुछ है। जैसे वायु विद्युत गैसादि स्थूल आंख से देखकर हम जिस जगह को खाली कहते हैं। वह खाली नहीं होती। जैसे के छड़ को देख कर हम कहते है यह ठोस है इसमें कोई जगह खाली नहीं है, परन्तु अग्नि उसमें प्रवेश कर जाती है। उसके लिये उसमें जगह खाली थी। सूक्ष्म वस्तु स्थूल में प्रवेश कर जगह नहीं घेरती और ना आवरण ही करती है। सूक्ष्म रुप से व्यापाक भी होती है। सूक्ष्म समान रुप से व्यापक भी होती है। जैसे विद्युत बी.बी.सी. लंदन से रेडियों प्रसारण होता है, तब विश्व के सारे देश एक ही समय में सभी उसे सुनते है। इससे यही सिद्ध हुआ कि जो विद्युत लंदन में है वहीं सारे विश्व में व्यापक है। जब तक एक भौतिक पदार्थ अपनी व्यापकता को इस प्रकार प्रदर्शित कर रहा है। तब विद्युत से भी सूक्ष्म अभौतिक ईश्वर की व्यापकता पर सन्देह करना अक्ल के दिवालिये पन का ही सबूत है। सबसे पहली बात तो यह है कि तुम लोग ईश्वर की चर्चा करने के अधिकारी ही नहीं हो क्योंकि महर्षि व्यास ने वेदान्त दर्शन के प्रथम सूत्र में लिखा है। अथातों ब्रह्म जिज्ञासा इस सूत्र का भाष्य करते हुए भाष्यकार ने लिखा है कि ब्रह्म को जानने की इच्छा वहीं कर सकता है जिसने यम नियम का यथावत पालन किया हो। पहली कक्षा का छात्र यदिं मैट्रिक के कोर्स की चर्चा करे तो यह उसकी अनाधिकार चेष्टा ही होगी। मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी किसी साधारण व्यक्ति को ईश्वर नहीं कहेगा। परन्तु तुम लोगों ने लेखराज जैसे विद्या से हीन साधारण व्यक्ति को ईश्वर कह कर मूर्खता की भी तोहिन की है। केवल निजी स्वार्थ के लिये। ''स्वार्थी किं न करोति पापम्'' वह कौन सा पाप है जिसे स्वार्थी न कर सकता हो।

सभा के पदाधिकारियों का सम्मान एवं शीतल जल यंत्र युक्त प्याऊ घर का उद्घाटन

दुर्ग। ता.३२-५-९८ को सुबह १० बजे आर्य समाज मठपारा दुर्ग में पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के नवनिर्वाचित पदाधिकारी एवं सदस्यगण सर्वश्री सत्यवीर जी शास्त्री प्रधान, श्री मोहन लाल जी गुप्ता उपप्रधान, श्री जवाहरलाल जी ग्रोवर कोषाध्यक्ष, श्री रमेशचंद्र जी श्रीवास्तव अधिष्ठाता दुर्ग भूसम्पत्ति, श्री गुलाबचंद जी बंसल अधिष्ठाता वेद प्रचार, श्रीमती विमला श्रीवास्तव-सहसम्पादक आर्यसेवक, का पुष्पहार एवं श्रीफल व उपहार भेंटकर हार्दिक अभिनंदन किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री कृष्ण का जन्म जेल में नहीं हुआ

❑ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

हमारा प्राचीन साहित्य अत्यन्त विस्तृत और गौरवशाली है। संस्कृत साहित्य का जितना बड़ा भंडार है, संसार की अन्य किसी भाषा का साहित्य उससे चौथाई भी नहीं होगा। इस साहित्य में ज्ञान विज्ञान तो भरा ही हुआ है, हमारे देश का ही नहीं सारे संसार का इतिहास भी इसमें समाया हुआ है। इस विस्तृत ज्ञान भरे भण्डार को देखकर जो भी विदेशी आया वह जल-भुन गया। अतः अधिकतर लोगों ने इससे लाभ लेने की अपेक्षा, इसे भ्रष्ट करने का ही यत्न किया। हमारे इस साहित्य में इतनी मिलावट की गई कि आज असली-नकली हो गया और नकली-असली। विशेषकर पुराणादि ग्रन्थ तो हैं ही मिलावट का भण्डार। इनके निर्माण में जहां पंडितों की हठधर्मी एवं मूर्खता कारण रही, वहां मुसलमान आदि विदेशियों का दिया लोभ भी इस अमूल्य साहित्य को बिगाड़ने में कारण रहा। मुसलमानी काल में व्यसनों में फंसे पंडितों ने लोभ में आकर जहां पुराने ग्रन्थों में मिलावट तो की ही वहां नयी-नयी झूठी पुस्तकें जिनमें वेदों की निन्दा, गौ मांस भक्षण, मद्यपानादि का खुला समर्थन किया गया। महापुरुषों पर मिथ्या दोष लगाये गये। इन महापुरुषों में योगेश्वर कृष्ण का जीवन सबसे अधिक बिगाड़ा गया। सारे पाप उनके जीवन में भर दिये गये। अनेक मिथ्या दोष उन पर लगाये गये। ऐसा ही मिथ्या दोष उन पर लगाया गया है कि उनका जन्म जेल में हुआ, और उसके पिता रातों रात उसे वृन्दावन पहुंचाकर बदले में नन्द की कन्या को ले आये। जब वसुदेव कृष्ण को ले जाने लगे तो जेल के दरवाजे अपने आप खुलते गये। यमुना नदी ने अपना बहाव रोककर उसे रास्ता दिया इत्यादि। इस परिवर्तन का कारण था, कंस को सुनी हुई आकाशवाणी कि वसुदेव की आठवीं सन्तान तेरी मृत्यु का कारण बनेगी। इसी डर से कंस देवकी की सब सन्तान को मारता गया इत्यादि। अब यह झूठ इतनी दृढ़मूल हो गई है कि कोई भी इस बात को सोच तक नहीं सकता कि ये सब बाते झूठी है और कृष्ण का जन्म जेल में नहीं हुआ। कितनी विचित्र बात है इधर सारे देवता कंस को मरवाने के लिए कृष्ण को पृथ्वी लोक पर भेजते हैं। उधर आकाशवाणी से कंस को सावधान भी कर रहे हैं। महर्षि नारद को ईश्वर का सबसे बड़ा भक्त एवं तीनों लोकों में अबाध गति से घूमने वाला कहा जाता है। वही नारद कंस को कृष्ण से सावधान होने और बचने के लिए कहता है। कोई बताये तो सही जब कंस को विश्वास था कि वसुदेव की सन्तान मुझे मारेगी, तो उन्हें जेल में रखकर सन्तान पैदा करने ही क्यों दिया। सामान्यतया जेल में स्त्री पुरुषों को अलग-अलग ही रखा जाता है। कंस को यदि यह ज्ञात होता कि इसकी सन्तान मेरी मृत्यु का कारण बनेगी तो अपने बहनोई को आसानी से मरवा सकता था। जिस कंस ने अनेक हत्याएं की, पिता से राज्य छिनकर उसे असहाय बनवा दिया, वह वसुदेव या देवकी पर क्या दया करता, जो आठ-आठ बालकों की हत्या करने से नहीं डरा, वह एक वसुदेव को मारने में क्या संकोच करता। जब उसे आकाशवाणी आठवीं सन्तान के मरने की थी तो पहले सात पुत्र को क्यों मारा?

महाभारत और हरिवंश पुराण देखने से ज्ञात होता है, ये सब कपोल कल्पनाएं पीछे की है। कंस ने वसुदेव को कभी जेल में रखा ही नहीं। जब बलराम, कृष्ण और उनके साथियों का प्रभाव बढ़ता गया और इन्होंने कंस की प्रेरणा पर दुष्टता करने वाले, प्रजा को पीड़ा देने वाले उसके कई अधिकारियों को मार गिराया, इससे बलराम और कृष्ण की कीर्ति चारों ओर फैल गई, तब भी, कंस यही मानता था कि कृष्ण नन्द का पुत्र है। इसके समाधान के लिए अपने मुख्य-मुख्य व्यक्तियों की एक सभा बुलाई। उसमें अपने पिता उग्रसेन और अपने बहनोई वसुदेव को भी बुलवाया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततो ज्ञातीन् समानाय्य पितरं चोग्रशासन :।
निशिस्तिमितमूकायां मथुरायां जनाधिपः ।।
(२२.७.२८०)

अर्थात् तब भयंकर शासन करने वाले राजा कंस ने रात्रि के शान्त समय में मथुरा में रहने वाले बन्धु–बान्धव तथा पिता उग्रसेन को बुलाया।

एष कृष्ण इतिख्यातो नन्द गोपसुतो ब्रजे।
वर्धमान् इवाम्भोधिर्मूलं नः परिकृन्तति।।
(१२.२१.२८०)

और सबसे कहा– यह जो ब्रज में कृष्ण नाम से विख्यात नन्द गोप का पुत्र है, वह मर्यादा को लांघकर बढ़ने वाले समुद्र की तरह बढ़–चढ़कर हमारी जड़ें काट रहा है।

अनमात्यस्य शून्यस्य चारान्धस्य ममैव तु।
कारणान्नन्दगोपस्य स सुतो गोपितो गृहे।।
(१२–२२–२८१)

मेरे पास कोई योग्य मंत्री नहीं है। मैं हृदय तथा विचार से इस प्रकार शून्य हूं तथा गुप्तचर रुपी नेत्रों से हीन होने के कराण अन्धा हो गया हूँ। मेरे इसी दोष के कारण नन्द गोप का वह पुत्र कृष्ण अपने घर में सुरक्षित रह रहा है।

तस्य नाहं गति जाने न योगं न पराक्रमम्।
नन्दगोपस्य भवने जातस्याद्‌भुतकर्मण :।।
(२–२४–२८१)

नन्द के घर में उत्पन्न हुए उस अद्‌भुत बालक की शक्ति सामर्थ्य को मैं नहीं जानता। मुझे यह भी नहीं पता कि उसमें इतनी अमानुषिक शक्ति कहां से आई। उसको वश में करने का उपाय भी मेरे पास नहीं है।

इस बीच किसी दूत के माध्यम से उसे पता–चला कि यह कृष्ण नन्द का पुत्र न होकर वसुदेव का पुत्र है, जिसे नन्द ने पाला है तब वह वसुदेव आदि मुख्य व्यक्तियों तथा अपने सहयोगियों को बुलाकर कहता है –

स एष वासुदेवो वै वसुदेव सुतो बली।
बान्धवो धर्मतो मह्यं हृदयेनानन्तकोरिपु :।।

यह वसुदेव का पुत्र कृष्ण धर्म से तो मेरा वन्धु है, किन्तु हृदय से विनाशकारी शत्रु बना हुआ है।

जैसे काक जहां बैठता है उसी सहारा देने वाले की आंखों को फोड़ता है इसी प्रकार यह वसुदेव परिवार सहित मेरे पास रहता है, यहीं खाता पीता है और मेरी ही जड़े को काटने में लगा हुआ है और एक श्लोक में वसुदेव को संबोधित करते हुए कहता है –

वसुदेव वृथावृद्धः यन्मया त्वं पुरस्कृत :।

हे बूढ़े वसुदेव ! मैने सदा तुझे सम्मान दिया आगे रखा तथा पुरस्कृत किया। परन्तु मेरा यह सब कुछ करना बेकार हो गया। तेरी दुष्ट बुद्धि से ही हम सभी संकट में पड़ गये हैं इत्यादि।

उपरोक्त प्रमाणों से ज्ञात होता है कि कंस वसुदेव को अत्यन्त मान सम्मान के साथ रखता था। बीच–बीच में भेंट आदि भी देता था। इससे स्पष्ट हो गया कि वसुदेव जेल में नहीं था। फिर शंका होती है यदि ऐसी बात थी तो वसुदेव ने कृष्ण को नन्द के पास पालने के लिए क्यों रखा। इसका सीधा सा उत्तर है वसुदेव का उग्रसेन के प्रति विशेष अपनापन था। कंस के चरित्रहीन, तथा– भ्रष्ट व्यवहार से ये सभी दुःखी थे, और अन्दर ही अन्दर उसका विरोध करते आ रहे थे। अतः वसुदेव आदि को डर था कि हमारा षडयन्त्र जानकर कंस कभी भी हमारे साथ कुछ भी व्यवहार कर बैठेगा। सबकी हत्या भी करवा देगा। इसी विचार से वसुदेव ने कृष्ण बलराम को अपने से दूर रखा। अतः कृष्ण का जेल में जन्म होना न तो बुद्धिगम्य है, न हीं महाभारत आदि से प्रमाणित होता है। किसी ने कृष्ण की महत्ता बनाने के लिए यह सब कल्पना कर डाली और शनैः शनैः फैलती–फैलती यह कल्पना बद्धमूल हो गई। अतः हमें कृष्ण भगवान के वास्तविक जीवन को महाभारत से जानने का यत्न करना चाहिए वे हमारे एक आदर्श पवित्र आत्मा अपने समय के महान नीतिज्ञ तथा सुझबूझ वाले योगीराज थे। उस समय के प्रमुख भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, धृतराष्ट्र आदि कृष्ण को सबसे अधिक सम्मान देते थे। कृष्ण ने विखरे देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया। भगवान कृष्ण की महत्ता जेल में जन्म लेने से नहीं कार्यों से है। आज भी वे संसार के नमस्य एवं वन्दनीय है। कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर हमारा उस महापुरुष को शत–शत नमन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गणेश की पूजा

स्वरुप सच्चाई एवं सार्थकता

कुंजदेव मनीषी

भारत वर्ष में देवी देवताओं की इतनी बड़ी संख्या है कि उनका हिसाब लगाना भी टेढ़ी खीर है। वर्ष के एक एक दिन में एक एक देवता की पूजा करें तो वर्ष में ३६५ देवताओं की पूजा हो सकती है। फिर भी पूजा के लिए और भी देवता बच जाते हैं। क्योंकि पौराणिक जगत् में देवताओं की संख्या आम तौर पर ३३कोटि मानी जाती है। इन देवताओं में भी सबसे प्रमुख देव का नाम है – गणेश। भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्थी तिथि में गणेश पूजा का कार्यक्रम पूरे भारत वर्ष में बड़े धूम धाम से और हर्ष उल्लास के साथ मनाया जाता है कई स्थानों पर तो गणेश की साज सज्ञा पर प्रतियोगिता भी होती है, और एक एक गणेश पर लाखों लाखों रुपये व्यय किये जाते हैं। पूरे भारत वर्ष के गणेश पूजा में हुए व्यय का हिसाब लगाया जाये तो करोड़ों रुपये का व्यय हो जाता है। इतना व्यय करना भारतीयों के बुद्धि हीनता का ही सूचक है। बुद्धि बढ़ाने वाले गणेश देव की पूजा दीर्घ काल से करते हुए भी भारतियों की बुद्धि क्यों नहीं बढ़ रही है, यह विशेष आश्चर्य की बात है।

देश की स्वतन्त्रता के लिये संघर्ष चल रहा था। भारतीय देश भक्त देश को स्वतंत्र करने की अनेकों योजनायें बना रहे थे, और उसे क्रियान्वित भी कर रहे थें। पर ब्रिटीश सरकार यह नहीं चाहती थी कि भारतीय नेता गण संगठन कर सकें। ऐसी विषम परिस्थिति में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी ने लोगों को संगठित करने के लिए एक जोरदार अभियान छेड़ा। यह अभियान था गणेश पूजा का। इसके माध्यम से देश भक्त नवयुवकों का संगठन खड़ा किया गया और अंग्रेज सरकार यह समझती रही कि ये सब गणेश की पूजा मात्र कर रहे हैं जब कि यह अंग्रेज शासन के उन्मूलन का एक शानदार प्रयास था, और यह प्रयास काफी हद तक सफल भी रहा। तब से यह एक विशेष परम्परा बन गई और दिनों दिन गणेश पूजा की बढोत्तरी होती जा रही है। परन्तु गणेश पूजा का शायद ही कोई विशेष लाभ उठा पा रहा हो।

कुछ वर्ष पूर्व गणेश की मूर्ति ने एक चमत्कार दिखाया चमत्कार यह था किं गणेश जी दुध पी रहे थे। देश और विदेश में यही समाचार सुनने में आ रहा था कि गणेश जी सर्वत्र दुग्धपान कर रहे हैं। अभी तक विचारशील लोगों के मध्य यह प्रश्न बना हुआ है। क्या वास्तव में गणेश जी दुग्ध पान कर रहे थे क्या लोगों का दृष्टि भ्रम था ? देवी देवताओं के संबंध में इसी प्रकार की अनर्गल बातें प्रया: सुनने को मिलती है। जिससे हम लोगों में व्यर्थ का भ्रम ही फैला रहता है। दुग्ध पान करने में भला गणेश जी का क्या चमत्कार हुआ, यदि लोगों की बिगड़ी बुद्धि को ठीक करते तो शायद यह चमत्कार बहुत ही लाभ दायक सिद्ध होता और उनके नाम की सार्थकता भी होती दूध पीकर अपने संबंध में विश्वास जगाने की कोशिश कर रहे थे तो भी तो इसमें असफल ही रहे। गणेश पूजा में आजकल अतिवाद होने लगा है और इस अतिवादिता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का दुष्परिणाम सारे समाज को भोगना पड़ रहा है।

गणेश पूजा के समय प्रथम तो अनर्गल चन्दा मांगने वालों की भीड़ सड़क में घूमती रहती है और जिस किसी को परेशान करती है। इसमें अनैतिकता और असामाजिकता को प्रोत्साहन मिलता है। चन्दे से प्राप्त राशि का प्रायः दुरुपयोग ही किया जाता है। गणेश पूजा के समय लोग सात दिन तक निठल्ले पड़े रहते हैं जिससे मन में विविध प्रकार की हानिकर विचार उठते रहते हैं। फल स्वरुप झगड़ा झंझट और व्यभिचार आदि बढ़ जाते हैं। विद्यार्थियों की पढ़ाई लिखाई भी मारी जाती है। कितने ही छात्र परिश्रम छोड़कर भगवान भरोसे हो जाते हैं। जिससे उनकी लगन पढ़ाई में कम पड़ जाती है। एक और भारी विड़म्बना यह है कि गणेश की तो पूजा होती है और फिल्मों के अश्लील गाने बजते हैं डिस्कों डांस होता है। इससे लोगों के सामने संस्कृति का भद्दा रुप ही दिखाई देता है। यह सब लिखने का मतलब यह है कि गणेश पूजा समाज और व्यक्ति के हित में हो तो लाभ है, अन्यथा समय श्रम और धन की बर्बादी ही समझनी चाहिए। गणेश का वास्तविक रुप भी समझना होगा। वास्तविक स्वरुप को जानने के लिए महर्षि दयानंद जी का विचार :- **गणेश शब्द** गण + ईश = दो शब्दों के योग से बना है और गणपति शब्द गण+पति= इन दोनों के योग से बना है। इन दोनों का अर्थ यह है कि संसार में जितने भी प्राणी और जड़ वस्तु विद्यमान है उन सब का स्वामी और पालन करने वाला गणेश या गणपति कहलाता है ये दोनों भी ईश्वर के गुणवाचक नाम है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि ईश्वर एक और उसके नाम अनन्त है। अतः गणेश को अलग देवता नहीं अपितु ईश्वर ही गणेश और गणपति है। वास्तव में यह विचार सत्य को प्रकट करता है। गणेश का वास्तविक स्वरुप भी यही होना चाहिए। चूंकि ईश्वर ही सब देवों में प्रथम है। इस लिए वहीं प्रथम पूजनीय देव गणेश भी है।

• • •

बधाई

मॉरीशस के भारत रत्न श्री मोहन लाल जी मोहित

आर्य नेता एवं आर्य रत्न श्री मोहन लाल जी मोहित को मारीशस में आम नागरिक एवं शासन बड़े ही आदर की दृष्टि से देखता है श्री मोहित जी का ही प्रयास है कि मॉरीशस जैसे छोटे से देश में जिसका कुल क्षेत्रफल ७२० वर्ग किलोमीटर है कुल ४३० आर्य समाजें हैं एवं अनेक स्कूल हैं सभी आर्य समाजों के सुन्दर भवन है। एक आर्य समाज तो वहां के सुप्रसिद्ध समुद्री बीच (Beach) ग्रीग्री पर स्थित है। मैं मॉरिशस में १ अप्रैल तक आर्य समाज के आमंत्रण पर गया हुआ था।

यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आर्य रत्न श्री मोहन लाल मोहित को मॉरिशस सरकार ने वहां के सर्वोच्च नागरिक सम्मान Godk से सम्मानित किया है। Godk का अर्थ है - Grand officer of the Starand key. इससे पूर्व सन् १९७० में उन्हें ब्रिटिश शासन की समाप्ति के पश्चात् तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री शिवसागर राम गुलाम ने सरकार की ओर से Officer of Britesh Empire (OBE) पदवी से सम्मानित किया था।

समस्त आर्य जनों को इस सम्मान पर गर्व है जो एक आर्य नेता को मॉरिशस शासन की ओर दिया गया। श्री मोहित जी को हमारी अनेक -अनेक बधाई।

के. दैवरत्न आर्य
मुम्बई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योगेश्वर श्री कृष्ण

श्री कृष्णचन्द्र गर्ग

आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व कौरव और पाण्डव के समय महाराज श्री कृष्ण जी हुए थे। महर्षि दयानन्द जी के शब्दों में (सत्यार्थ प्रकाश) ''देखो !श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी और कुब्जा दासी से समागम परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि मिथ्या दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़-पढ़ा सुन-सुना के अन्य मतवाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती''।

महर्षि वेदव्यास रचित महाभारत में श्रीकृष्ण जी का अति उत्तम पवित्र जीवन-चरित्र मिलता है। योगेश्वर श्री कृष्ण जी महात्मा, धर्मात्मा, धर्मरक्षक, दुष्टनाशक, परोपकारी, सदाचारी सत्यमानी एवं सत्यवक्ता पुरुष थे। बहुत वर्ष पश्चात् किसी धूर्त्त स्वार्थी ने भागवत पुराण नाम का पुस्तक लिखकर श्री कृष्ण जीवनी पर धब्बा लगाया मात्र अपने दोष ढ़ापने के लिये।

महामना श्री कृष्ण जी महाराज संयमी पराक्रमी तथा एक पत्नी व्रत थे। एक पत्नी थी -रुक्मिणी उनके जीवन का संयम व्रत सदा ही इतिहास याद रखेगा। वे विवाह पश्चात् बारह वर्ष तक ब्रह्मचारी रहे फलस्वरूप प्रद्युम्न नामक तेजस्वी वर्चस्वी श्री कृष्ण जी जैसा पराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुआ। श्री कृष्ण जी ने प्रजा के हित में अन्यायकारी दुराचारी राजा कंस का वध करके सुसाम्राज्यक प्रजामनोरञ्जक उग्रसेन को मथुरा का सुशासक बनाया। योगेश्वर पराक्रमी नीतिमत्ता कृष्ण के सूझबुझ तथा बुद्धिबल से ही कम शक्ति होते हुए भी पाण्डवों को कौरवों पर विजय प्राप्त हुई थी। श्री कृष्ण में जो उच्च भावना थी वह तब इतिहास में दिखता है। जब जुए में हारकर पाण्डव वन को चलते है अब श्री कृष्ण जी को पता चलने पर वे उनसे मिलने जाते हैं और कहते हैं । ''मैं द्वारिका में न था यदि होता तो हस्तिनापुर अवश्य आता तथा यह अनर्थ नहीं होता। धृतराष्ट्र और दुर्योधन को अनेक दोष दिखाकर जुए से रोकता।'' राजसूय यज्ञ में जो भूमिका श्री कृष्ण जी की रही इतिहास शायद कभी भूल सकेगा। युधिष्ठिर जी महाराज भी ने उन्ही से परामर्श का अन्तिम रुप देकर राजसूय यज्ञ प्रारम्भ किया था। इस महत्ता के कारण श्री कृष्ण जी आज हमारे सामने महान तथा पूज्य हैं।

भगवान श्री कृष्ण सदा सत्य और न्याय पर चलने वाले थे। रुढ़ियों और गलत बातों को वे कभी भी स्वीकार नहीं करते थे। गीता आज भी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। वे क्रांति के प्रहरी तथा अग्रदूत थे। श्री कृष्ण भगवान ने आत्मा की अमरता, निष्काम कर्म करने, तथा कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का उपदेश हमारे सामने गीता रुप में दिया। हमें श्री कृष्ण की जीवनी से प्रेरणा लेनी चाहिए। श्री कृष्ण जी गौ भक्त थे अतः गौ माता का सदा सम्मान कर गौवध रोकने में यत्न करना चाहिये और श्री कृष्ण जी की जीवनी से प्रेरणा लेकर जीवन को महान बनाने हेतु यत्न करना चाहिये।

भव्य ऋषि मेला

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषि उद्यान अजमेर में परोपकारिणी सभा का वार्षिक समारोह ९, १०, ११ अक्टूबर ९८ को उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर प्रति दिन सामवेद परायण महा यज्ञ तथा विद्वानों के प्रवचन होंगे तथा अधिक से अधिक संख्या में पहुंच कर लाभ उठावें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित बस्तीराम जी आर्योपदेशक

आर्य समाज के इतिहास में पूज्य पंडित बस्तीराम जी महत्व पूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने बाल्यकाल से लेकर वृद्धावस्था पर्यन्त वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। श्री पंडित जी पुराण एवं ज्योतिष के बहुत बड़े ज्ञाता थे। अतः कभी भी ये शास्त्रार्थ में पराजित नहीं होते थे। पंडित जी का जन्म सुलतानपुर खेड़ी (रोहतक) में सम्वत् १८९८ को ब्राह्मण परिवार में हुआ था, पिता जी संस्कृतज्ञ थे। पिता जी ने देवनागरी के साथ संस्कृत को पढ़ाया धीरे-धीरे बस्तीराम जी यज्ञ आदि भी स्वतः कर करवाते थे। इन्हें मूर्तिपूजा तथा पौराणिक पाखण्डों पर बहुत विश्वास था अतः प्रचार में लगे रहते थे। उन दिनों महर्षि दयानन्द जी महाराज भी जोरों पर प्रचार में थे। उनके सुधार कार्यों की सारे देश में धूम मची थी। भारत के कोने-कोने में ऋषिवर की चर्चा थी इसकी चर्चा बस्तीराम जी के कानों तक भी जा पहुंची। एक विज्ञापन भी इन्हे मिले। जिसमें लिखा था मूर्तिपूजा वेदविरुद्ध है, पुराण वेद विरोधी है, गंगास्नान से मुक्ति नहीं होती आदि आदि। जब पंडित जी ने पढ़ा तब ऋषि दर्शन की इच्छा होने लगी। शास्त्रार्थ करने का भी मन में ठान लिया। अनेक लोगों को सुनाकर शास्त्रार्थ करवाने चले। उन दिनों ऋषि दयानन्द हरिद्वार में पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़कर खंडन में लगे हुए थे। महर्षि के एक दो प्रश्नोत्तर से बस्तीराम जी प्रभावित होकर अधिक बातें और न कर सके तथा ऋषि दर्शन से बस्तीराम जी प्रभावित होकर कृतार्थ हो गए। १५-१६ दिन ऋषि के पास रहकर शंकाओं को मिटाकर आर्य बस्तीराम हो गये और आर्य समाज के दिवाने बनकर प्रचार करने लगे। घर परिवार छोडकर ऋषि मान्यताओं के प्रचार में लगे रहे। ४० वर्ष की उम्र में वे अन्धे हो गए थे। भजन पार्टी तैयार कर हरयाणा के ग्रामों-ग्रामों में प्रचार करने लगे। इनके खण्डन से ब्राम्हण लोग सदैव रुष्ट रहा करते थे। किसी की कुछ परवाह न कर अन्धे रहने पर भी वृद्धावस्था पर्यन्त प्रचार किया। अवैतनिक प्रचारक रहे। इन्होंने भजनों के पुस्तक भी लिखे जैसे-पोप की नाखर, पाखण्ड खण्डनी, महर्षिदयानन्द जीवन कथा, गऊभजन संग्रह, अघमर्षण प्रार्थना आदि। हरयाणा में आर्य समाज के प्रचार का श्रेय पूज्य बस्तीराम को ही है। इन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द, लेखराम स्वतन्त्रतानन्द आदि महारथियों के साथ प्रचार किया २६ अगस्त १९५८ का ११७ में स्वर्गवास हो गया। इस दृढ़व्रती उपदेशक के लिए शतशः हमारा प्रणाम है।

साभार- आर्य समाज के बलिदान से

गुरुकुल आश्रम आम सेना में नवीन छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल आश्रम आमसेना में नये छात्रों का प्रवेश प्रारंभ हो चूका है। जो सज्जन अपनी सन्तान को सचरित्रवान विद्वान कर्मठ बनाना चाहते हैं वे शीघ्र सम्पर्क करें। पांचवी कक्षा उत्तीर्ण सुयोग्य सुशील बुद्धिमान छात्रों को ही परीक्षा लेकर प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेश शुल्क ५०० रुपया, भोजन खर्च १२५ रु. प्रतिमाह के हिसाब से छः महीने का प्रवेश के समय अग्रिम लिया जायेगा। विशेष जानकारी के लिए लिखे या मिले -

श्री आचार्य जी
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, जि.- नवापारा(उड़ीसा)
फोन :(06678) 22349

आर्य समाज सान्ताकुंज (प.)

प्रधान	-	श्री ओंकारनाथ आर्य
वरिष्ठ उपप्रधान	-	श्री विमल स्वरुप सूद
उपप्रधान	-	श्री आर.के. सहगल
महामंत्री	-	श्री लालचंद आर्य
मंत्री	-	श्री संगीत शर्मा
मंत्री	-	श्री यशप्रिय आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री पुरुषोत्तम अग्रवाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध एवं ताजी जड़ी बूटियों से निर्मित गुरुकुल आश्रम आमसेना की कुछ विशिष्ट दवाईयां

१. ब्राह्मी आंवला तेल

ब्राह्मी एवं आंवला के स्वरस से तैयार यह तेल बालों का सफेद होना एवं झड़ने को रोककर घने एवं लम्बे करता है। सिर दर्द, मस्तिष्क की कमजोरी, पागलपन में भी उपयोगी है।

२. आयुर्वेदिक चाय

दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, काली मिर्च, पीप्पल सौंफ, तुलसी आदि के योग से निर्मित हानिरहित यह मधुर पेय इसके निरन्तर प्रयोग से गैस, कब्जी, भूख की कमी, सर्दी, जुकाम नष्ट हो जाते हैं।

३. संजीवनी तेल

संजीवनी आदि बूटी से बना यह तेल हर प्रकार के जले, घावादि में अत्यंत उपयोगी है। बहते खून को तुरन्त रोक देता है।

४. सर्पविषामृत

कैसा भी सांप काट दे इसके एक दो खुराक देने से ही जहर समाप्त हो जाता है।

५. महिलामृत पेय

स्त्रियों की कमजोरी तथा हर प्रकार के रोगों को दूर करने में रामबाण है।

६. अशोकारिष्ट

यह महिलाओं का प्राकृतिक मित्र है। स्त्रियों के सभी रोगों में विशेषकर प्रदर एवं कमजोरी में उपयोगी है।

७. बलदामृत

अंगूर आदि फलों से तैयार यह टॉनिक सभी प्रकार की कमजोरी बुद्धि की थकावट आदि में अमृत है।

८. धातु पौष्टिक चूर्ण

वीर्य संबंधी सभी प्रकार के रोगों एवं कमजोरी को दूर कर शरीर को ओज तेज से भर देता है। इसके साथ वीर्य बंधिनी बटी या वसन्त कुसुमाकर रस लेने से तुरन्त लाभ मिलता है।

९. शिशु सुधा

यह सुमधुर पेय छोटे बच्चों के सभी रोगों में अत्यंत उपयोगी है। इसके निरन्तर सेवन से बच्चे हृष्ट-पुष्ट एवं निरोग रहते हैं। सुखा रोग, अपचन, दस्तों का होना, दांत निकलते समय होने वाले कष्ट इसके सेवन कराने से नहीं होते।

१०. सौन्दर्य रसायन (कप्सूल)

यह कैप्सूल सभी प्रकार के चर्म रोगों में विशेष उपयोगी है। रक्त शुद्ध करने में रामबाण है। चेहरे के दाग, झाई आदि को दूर कर मुख की आकृति को सुन्दर बना देती है। केश के रोगों में भी अत्यंत उपयोगी है। बालों का झड़ना, सफेद होना, इस के प्रयोग से तुरन्त रुक जाता है। यदि युवावस्था में इसका लम्बे समय तक उपयोग किया जाये तो सफेद बाल जाते हैं। एक बार प्रयोग कर परीक्षा अवश्य

व्यवस्थापक
आयुर्वेदिक फार्मेसी
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, जि.-नवापारा (उडीसा)

सेवा में,

३०४९: श्री सम्पादक जी
'गुरुकुल पत्रिका' गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ.प्र.)

ग्राहक संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र

कुलभूमि

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

गौ आदि प्राणियों की रक्षा से ही मनुष्यों की रक्षा हो सकती है गौ माताओं की भीमाता है जो आजीवन दुध आदि से मनुष्यों का पालन करती है अत: गौ हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगना चाहिये तथा इसे राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाना चाहिये महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं- ''भला जिनके दुध आदि खाने पीने में आते हैं वे माता पिता के समान माननीय क्यों न होने चाहिये। ईश्वर की सृष्टि से भी विदित होता है कि मनुष्यों से पशु और पक्षी अधिक रहने से कल्याण है क्योंकि ईश्वर ने मनुष्यों के खाने पीने के पदार्थों से भी पशु और पक्षियों के खाने पीने के पदार्थ घास, वृक्ष, फूल, फल आदि अधिक रचे हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरूकुल में अपना जन्म दिवस मनाकर एक पन्थ दो काज को सार्थक करें

शुभकामनाओं, अच्छे वचनों एवं आर्शीवाद से शान्ति मिलकर आयु बढती है। ऐसा पूर्वजों का कथन है। सात्विक एवं पवित्र लोगों का आर्शीवाद अधिक फलदायी है। अत: गुरूकुल के पवित्र ब्रह्मचारियों का एवं कन्या गुरूकुल की छोटी-छोटी सात्विक कन्याओं का आशीर्वाद लेने के लिये अपना जन्म दिवस गुरूकुल में मनायें। तथा उस दिन का भोजन ब्रह्मचारियों व कन्याओं को खिलाकर उनका आर्शीवाद ग्रहण करें। कन्या गुरूकुल में एक समय मिष्ठान्न युक्त भोजन बनाने पर १०००/-रू तथा गुरूकुल में १५००/-रू.व्यय आता है। परन्तु यदि आप १५,००० या १०,००० रूपये की राशि भेजकर उसकी स्थिरनिधि जन्मदिवस के लिये स्थिर कर दें तो प्रतिवर्ष आपके जन्मदिवस पर प्रात:काल यज्ञ एवं मध्यान्ह भोजन आपकी ओर से बनाया जायेगा। इस योजना से प्रतिवर्ष आपका जन्मदिवस सात्विकता पूर्वक मनाया जाता रहेगा तथा ब्रह्मचारियों को आपकी ओर से भोजन मिल जायेगा, गुरूकुल की सहायता हो जायेगी। यही है एक पन्थ दो काज।

आयुर्वेदिक एवं हिन्दी परीक्षायें

गुरूकुल में हिन्दी विश्वविद्यालय हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद की परीक्षाओं का केन्द्र है। ये परीक्षाएं शासन से मान्यता प्राप्त है। यहां पर प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, शिक्षा विशारद (B.Ed) आयुर्वेद रत्न आदि की परीक्षाएं होती है। इच्छुक सज्जन शीघ्र सम्पर्क करें। फार्म भरे जा रहे हैं।

विरजानन्द संस्कृति परिषद द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं में भाग लें

छात्रों एवं नवयुवकों को वैदिक धर्म का ज्ञान देने के लिए धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन नवम्बर के अन्तिम रविवार को होगा। आर्य सज्जनों तथा आर्य विद्यालय के अध्यापकों से निवेदन है कि अपने सुपुत्र एवं छात्रों को अधिक से अधिक संख्या में परीक्षा में बैठने की प्रेरणा दें।

प्रथम परीक्षा "सिद्धान्त कुसुम" है। इसके लिए वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी १०० अंक की निर्धारित है। इसका शुल्क पुस्तक सहित १०/-रू. अन्यथा ५/-रू. है। गत वर्ष जिन परीक्षार्थियों ने "सिद्धान्त कुसुम" परीक्षा दी थी उनके लिए इस वर्ष "सिद्धान्त प्राज्ञ" निश्चित हुई है। इसकी परीक्षा फीस ६ रू. है। इसके लिये पाठ्यक्रम इस प्रकार है -

प्रथम प्रश्न पत्र-

१. छात्र जीवन और योग	५/-
ले.स्वामी धर्मानन्द सरस्वती	५० अंक
२. प्यारा ऋषि	६/-
ले.स्वामी धर्मानन्द सरस्वती	२५ अंक
३. आर्योद्दश्य रत्न माला	१/-
ले.महर्षि दयानन्द सरस्ती	२५ अंक
(प्रथम २५ रत्न याद करने है)	

द्वितीय प्रश्न पत्र -

१. व्यवहार भानु	२.५०/-
ले.दयानन्द सरस्वती	५० अंक
२. सत्यार्थ प्रकाश (द्वितीय समुल्लास)	
ले.दयानन्द सरस्वती	५० अंक

परीक्षा फीस के साथ पुस्तकों का मुल्य ४० रू. होता है। जो इन पुस्तकों का इकठ्ठे लेगें उन्हे परीक्षा फीस के साथ ३० रू.देना होगा।

इन परीक्षाओं पर अनेक आकर्षक पुरस्कार भी रखे गये हैं। विशेष जानकारी के लिए शीघ्र लिखें।

हमारा पता-
श्री परीक्षा मंत्री
विरजानंद सं.परिषद्
गुरूकुल आश्रम, आमसेना
खरियार रोड, नबापारा उडीसा-७६६१०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र

वर्ष	-	२०
अंक	-	९
माह	-	सितम्बर
सृष्टि संवत्	-	१,९६,०८,५३,०९९
विक्रमी संवत	-	२०५५
दयानंदाब्द	-	१७४

प्रतिष्ठाता:
पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

सम्पादक:
स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

सह सम्पादक:
कुन्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक:
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता:

गुरूकुल आश्रम आमसेना
व्हाया- खरियार रोड
जिला- नवापारा (उडीसा)
पिन- ७६६१०९
फोन- (०६६७८) २२३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-

आजीवन - ३००/-

एक प्रति - २.५०/-

सम्पादकीय

श्रद्धा को धारण करें

पाठकवृन्द! संसार में मुख्यत: दो प्रकार के व्यक्ति हैं प्रथम जो भौतिकवाद को ही सब कुछ समझते हैं। इसलिये वे प्रत्यक्ष प्रमाण को ही महत्व देते हैं। अर्थात् जो वस्तु आंख आदि इन्द्रियों से दिखती है उसकी सत्ता मानते हैं, अच्छे-अच्छे विचारशील व्यक्ति भी इस प्रत्यक्ष को महत्व देने के कारण अनेक चीजों का अनुभव करते हुए भी मिथ्या अभियान में पड़कर अनेक अच्छी बातों का खण्डन कर बैठते हैं। इससे वे अपना एवं समाज का बहुत बड़ा अहित कर देते हैं। चार्वाक (वाम मार्गी) एवं उसकी शाखा भूत जैन बौद्ध लोक इस प्रत्यक्ष को यहां तक अच्छे कर्मों का भी निषेध कर बैठे। जिससे अच्छे एवं बुरे अपने एवं पराये का भी भेद नहीं रहा। फलस्वरूप मिथ्या अहिंसा को अपनाकर विदेशियों का साथ देने लगे और देश को पराधीनता की भट्ठी में झोंक दिया। आज के समस्त राजनीतिक भी उस चार्वाक मत को मानने वाले ही प्रतीत हो रहे हैं जिसने कहा था -

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पीबेत् ।
भस्मीभूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कु त: ।।

अर्थात् -जब तक जीवो सुख पूर्वक जीवो चाहे ऋण करके घृत खाओ मृत्यु पश्चात् इस शरीर का आगमन और कहां। इस सिद्धान्त के अनुसार सामने प्राप्त भोग धन, ऐश्वर्य और पद प्रतिष्ठा को ही देख रहे हैं। अत: आज कल चुनावों में भी धनशाली एवं शक्ति सम्पन्न व्यक्ति ही जीत पाता है। इसलिए जैसे बने धन एवं बल को पाकर राजनैतिक सत्ता को प्राप्त करने का यत्न करते हैं इसी से सारे पाप एवं बुराइयां फैल रही है। इसका कारण है कि ये लोग दुष्कर्मों से भविष्य में मिलने वाले कष्टों एवं दु:खों के फल के प्रति श्रद्धा विश्वास नहीं रखते। न भविष्य को मानते हैं न ही आत्मा परमात्मा की सत्ता को मानते एवं जानते हैं। इनमें से कोई-कोई धर्म के नाम पर कभी-कभी दिखावा करते हैं, वह भी लोगों को उल्लू बनाने के लिए धर्म को ये प्रदर्शन की वस्तु मानते हैं। ऐसे व्यक्तियों के विषय में तो मुझे कुछ नहीं कहना। दूसरे वे व्यक्ति हैं जो अपने को आस्तिक कहते हैं। आत्मा-परमात्मा, पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म, आदि को मानने की घोषणा करते हैं परन्तु व्यवहार में वे भी कोरे ही (खाली) दिखते हैं इसका कारण है उनकी ये बातें वाणी तक सीमित है। इनके मानने की आस्था उनके हृदय में नहीं बैठी है। इसलिए ऐसे लोग भी नास्तिकपन का ही व्यवहार करते प्रतीत होते हैं। इसका कारण है गम्भीर चिन्तन एवं विवेक का अभाव तथा स्वाध्याय की कमी। ऐसे बन्धुओं से ही मैं कुछ कहना चाहता हूँ। सज्जनों! आप थोडे से शान्त हृदय से सोचें प्रकृति की कौन सी वस्तु किसके साथ गई है। सृष्टि के प्रारम्भ से आज तक का इतिहास बता रहा है बडे-से बडा सम्राट भी संसार की साधारण सी वस्तु अपने साथ नहीं ले गया। इसी बात को किसी कवि ने राजा भोज के मुह से कहलवाया है:

मान्धाता च महीपति कृत युगेऽलंकारभूतो गत: ।
सेतुर्येन महोदधौ विरचित : क्वासौ दशास्यान्तक: ।।
अन्ये चापि युधिष्ठिर प्रभृतयो याता दिवं भूपते
नैकेनापि सम गता वसुमतिर्नूनं त्वया यास्यति ।।

अर्थात् - मान्धता नामक एक राजा हुये थे वे इस युग में सम्राटों के अलंकार होकर इस दुनियां से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले गये । हे राजन् जिस राम चन्द्र ने समुद्र पर पुल बान्धा था उनकी भी विचित्र दशा हुई थी, हे राजन् और भी जितने युधिष्ठिरादि चक्र वर्ति राजा हुये वे भी इस संसार से चले गये । किसी ने भी धन, सम्पत्ति, अपने साथ नहीं लिया । खाली हाथ ही गये पर आप तो जरूर ले जायेगें, ऐसा आपके व्यवहारों से लग रहा है । फिर भी हम संसार की चमक –दमक से ही नहीं उठ पा रहे हैं । ईशोपनिषद मे लिखा है:- **हिरण्यंमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितमुखम्, अर्थात्:**– संसार की चमक दमक से सच्चाई या वास्तविकता ढकी हुई है । इस चमक दमक या संसार के आकर्षण से ऊपर उठकर ही हम सच्चाई या वास्तविकता को जान सकेगें । इस चमक दमक को तभी छोड सकेगें जब श्रद्धा को धारण करेंगे । मै अन्ध श्रद्धा की बात नहीं करता । परन्तु आप्तोपदेश को मानना ही चाहिये । अन्ध श्रद्धा का नाम लेकर अपने पूर्वजों की सभी अच्छी बातों को छोड बैठना कहां की बुद्धिमत्ता है । केवल भोग–विलास से आज तक किसको शान्ति मिली है इसलिये आईये हम श्रद्धा को धारण करें । पाप पुण्य का विचार कर कार्य करें । वर्त्तमान की अपेक्षा भविष्य को सोच कर कार्य करें । इसलिये महर्षि **याज्ञवल्क्य** ने शतपथ ब्राह्मण में लिखा है – **'परोक्ष प्रिया देवा प्रत्यक्ष द्विष:** अर्थात् विद्वान् लोग प्रत्यक्ष को महत्व न देकर भविष्य का चिन्तन करके कार्य करते हैं । आईये हम भी थोडा सा अपने को इधर झुकायें । भौतिकवाद से ऊपर उठें । अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर राष्ट्र एवं समाज को भी आगे बढाने का सोचें । महर्षि दयानन्द जी महाराज ने आर्य समाज के छठे नियम में लिखा है– संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उपदेश है । समाज की तो क्या बात, हम अपना उपकार करना ही भूल गये । छोटे–छोटे पद एवं कुछ आर्थिक लाभ को ही सब कुछ मानकर संगठन की कोई भी हानि करने में संकोच नहीं करते । मेरा पाठकवृन्द से विशेषकर आर्य बन्धुओं से विशेष निवेदन है कि ईश्वर को सब कार्य में उपस्थित मानकर ऐसे कार्य करने का सोचें जिससे कम से कम अपनी आत्मा को तो शान्ति मिले । यह शान्ति छोटे–मोटे स्वार्थ छोडने से ही मिलेगी । तभी हम संगठन एवं देश को भी बचा सकेंगे । आज विदेशी सम्प्रदाय अपने मत भेद भूलाकर प्राण–पण से इस देश की पवित्र संस्कृति को नष्ट करने में लगे हुए हैं । छोटे-२ मिथ्या सम्प्रदाय भी फल फूल रहें हैं परन्तु आर्य सज्जन छोटे-छोटे पदों के लिए ही लड– झगडकर क्षीण तो कर ही रहे हैं अपनी एवं समाज की भी अपूरणीय क्षति भी कर रहे हैं जबकि महर्षि दयानन्द जी महाराज की कृपा से उद्धार किया हुआ वैदिक धर्म ही संसार को सुख शान्ति दे सकता है । इसकी रक्षा एवं विस्तार करना हमारा परम कर्त्तव्य है । इस कर्त्तव्य की पूर्त्ति हम श्रद्धा धारण करके ही कर सकेगें । याद रखें– **श्रद्धया विन्दते वसु** ।

व्रतानन्द सरस्वती

पीपल और ब्रह्मा

❑ डा.कुन्दन लाल पा[illegible]
पटियाला

औषधियों के नाम रखने में जो गूढ तत्व संस्कृत भाषा में पाया जाता है वह और किसी भी भाषा में नहीं पाया जाता ।. यही कारण है कि संस्कृत को देव भाषा भी कहा जाता है । यदि हम और बातों को छोड भी दें और केवल औषधियों के नाम पर विचार करें तो आयुर्वेद का बहुमूल्य कोण हमारे हाथ लग सकता है । परन्तु देश का दुर्भाग्य है कि हमारे सामने रत्न पडे हैं और हम केवल आलस्य के कारण उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते । हमारा देश विशेषत: आर्य जाति में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो सारा दिन बेकार बैठे हैं । यदि वे चाहें तो इस काम को कर सकते हैं । क्योंकि ज्यों-ज्यों समय बितता जा रहा है संस्कृत भाषा के रत्न हमारी पहुंच से दूर होते जा रहे है और अधिक अन्धेरे की गहराईयों में चले जा रहे हैं । संस्कृत भाषा में पीपल को **ब्रह्मा** के नाम से जाना जाता है और यह देश के लगभग सब भागों में प्रसिद्ध है । पुराने समय की महिलाएं अब भी पीपल को **ब्रह्मा** मानकर उस पर जल चढाती हैं । अब यह प्रथा कुछ कम होती जा रही है अन्यथा पुराने लोग पीपल, बड और नीम को **ब्रह्मा** और रूद्र मानकर उनकी ठण्डी छाओं और रोग, गुणों से लाभ उठाकर दवाएं बनाया करते थे । इसलिए राज–सरकार ने इन का काटना वर्जित किया था बल्कि धार्मिक रूप में इसे पाप समझा जाता था । आज के लोग प्राय: ऐसे वृक्ष लगाते हैं जिन में न तो च्छाया होती है और न फल । प्राचीन काल में ऐसे वृक्ष लगाए जाते थे जिनमें बहुमूल्य औषध, तत्व, फल और असीम छाया होती थी । आज उन वृक्षों को लगाना तो दुर लगे हुए वृक्षों को बडी निर्दयता से काटा जा रहा है और वह भी केवल सुन्दरता के लिए । इस देश में यह विचार सदा से चला आ रहा है कि **ब्रह्मा** सृष्टि का सृजन करता है, विष्णु इसकी पालन करता है और रूद्र हंसकर संहार करता है । पीपल को **ब्रह्मा** क्यों कहा जाता है । वेदों में अनेक मन्त्र पाए जाते हैं जिन में पीपल को बांझपन की दवा बतलाया गया है । यह पुरूषों के वीर्य और स्त्रियों के रज के दोष को दूर करता है और संतान योग्य बनाता है । इसलिए इसे **ब्रह्मा** कहा गया है । योग–पीपल के जड के छिल्के को छाया में सुखाकर बारीक पीस लें और अच्छी प्रकार कपडछान कर लें और पीपल की जड के रस मे ४० दिन खरल करें । सूख जाने पर छ:मासा की मात्रा से प्रात: सायं गाय के गरम दुध से लें । पुरूषों के वीर्य की कमजोरी दूर होगी । ❑

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जिन्होंने वैदिक धर्म पर गद्दियाँ वार दीं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

❐ प्रा.राजेन्द्र जिज्ञासु

महर्षि दयानन्द जी महाराज को महाराणा उदयपुर ने एकलिंग की गद्दी का महन्त बनने की प्रार्थना की । मेवाड राज्य का स्वामी एक लिंग महादेव जी को ही माना जाता था । महाराणा उदयपुर इसी गद्दी के सेवक होते थे ।अपार धन सम्पदा वाली यह गद्दी ऋषि जी ने वेद पर वार दी । महाराणा ने कहा था, ''महाराज मूर्ति पूजा का खण्डन न करना । कभी ऋषि के भक्त धर्म भाव से बडी श्रद्धा व जोश से कुवँर सुखलाल के शब्दों में एतद्विषयक ऋषि की सिंहगर्जना या उत्तर को झूम- झूम कर गाया करते थे-

ना बांधो हम फकीरों को,
अरे जर की जंजीरों से ।

ओखी मठ की गद्दी भी ऋषिवर ने ठुकरा दी । महर्षि दयानन्द के पश्चात् पहली दूसरी व तीसरी पीढी के आर्य विद्वानों व सन्यासियों के सामने महर्षि के जीवन की ये दोनों घटनायें एक बहुत बडा आदर्श थी । अपनी सुख सुविधा को सम्मुख न रखकर सिद्धान्तों का,सत्य को सर्वस्व मानकर महर्षि के दीवानों ने भी बडे बडे मठ व गदि्यां वैदिक धर्म पर वार दी ।आज ऐसे कुछ उदाहरण इस लेख में पाठकों की सेवा में रखता हूँ ।

पूज्य आर्य मुनि जी : महामहोपाध्याय पं.आर्य मुनि जी ने काशी में ऋषि के दर्शन किये । ऋषि के वचनामृत को पान करने का सौभाग्य प्राप्त किया । ऋषि के शास्त्रार्थ भी सुने ।जीवन पलट गया । वैदिक धर्म प्रचार के लिये समर्पित हो गये ।आप बहुत बडी गद्दी के महन्त होते । यह गद्दी अब भी है वहाँ डेरे पर आपका नाम भी लिखा है । गद्दी के वर्तमान अधिकारी भी पूज्य पण्डित आर्य मुनि जी का बडा सम्मान करते हैं । यह गद्दी अबोहर के पास ही है ।

वे महापुरूष किस मिट्टी के बने थे ।आज गद्दियाँ पाने,आश्रम व मठ बनाने में आर्य कहलाने वाले सामान्य योग्यता के लोग भी बहुत पापड बेलते देखे गए हैं परन्तु उस युग के लोगों ने गद्दियों का मोह तज कर कांटों की राह चुन ली ।ईंट पत्थर खाए, न घबराए, वैर विरोध सहा, भूखे प्यासे रहे । अभावों की चक्की में पिसे परन्तु वैदिक पथ अपनाकर पछताए नहीं ।

स्वामी विज्ञानन्द जी : हरियाणा में पटौदी की एक गद्दी बडी प्रसिद्ध है । स्वामी विज्ञानन्द इस गद्दी के महन्त बनते परन्तु इस मौजी साधु पर स्वामी आत्मानन्द जी का कुछ ऐसा प्रभाव पडा कि गद्दी ठुकरा दी । गद्दी वाले भी इनका बडा आदर करते थे । आप हिन्दी सत्याग्रह में स्वामी आत्मानन्द जी के प्रथम जत्थे में एक सत्याग्रही के रूप में चुने गए । हम एक ही जेल में महीनों इकट्ठे रहे

आचार्य प्रवर भद्रसेन जी : श्री आचार्य भद्रसेन जी ने श्रीयुत् पं.ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु आदि महान विद्वानों से वेदादि सत्य शास्त्रों की उच्च शिक्षा प्राप्त करके कैवल्यधाम लोनावाला,पूना के संस्थापक श्री स्वामी कुवलयानन्द जी से योगविद्या सीखे । स्वामी जी आपको अपना उत्तराधिकारी बनाने का मन बना चुके थे । आप ने वेद प्रचार के लिए जीवन अर्पण करने का व्रत ले रखा था । अजमेर की महर्षि अर्ध निर्वाण शताब्दी निकट आई तो आपने अपने योग के गुरू से विदाई मांगी । गुरूजी को इससे बडा कष्ट पहुँचा। आपने कहा, ''मैं तो बहुत पहले महर्षि दयानन्द के वैदिक मिशन के लिए अपना जीवन भेंट करने का व्रत ले चुका हूँ । इसी लक्ष्य के पूर्ति के लिए योग मार्ग का पथिक बना। योग विद्या सीखने के लिए इतने वर्ष आपकी सेवा में रहा । ''आचार्य भद्रसेन जी का सादा जीवन संघर्षमय रहा। सुख सुविधायें उनसे ऐसे दूर रहीं जैसे अंधेरे में छाया भी मनुष्य के आसपास नहीं भटकती। वैदिक धर्म के लिए कौन सा कष्ट है जो आपने न सहा हो । लोनावाला पूना के कैवल्य धाम की सम्पत्ति आज करोडों रूपयों की है । आचार्य जी को जीवन भर कभी इस बात का पश्चाताप न हुआ की मैंने कैवल्यधाम की गुरू गद्दी क्यों छोडी । यह त्याग कोई साधारण नहीं है । इसका मूल्यांकन हमने कभी कियां ? आचार्य जी को यह साहसिक पग उठाने की प्रेरणा महर्षि जी के जीवन की उपरोक्त घटनाओं से ही प्राप्त हुई ।

स्वामी सुधानन्द जी : राजस्थान में एक राम स्नेही सम्प्रदाय है । महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में इस मत की भी समीक्षा की है । शाहपुरा में इस मत की एक बहुत बडी गद्दी है । स्वामी सुधानन्द नाम के एक लम्बे चौडे साधु इस गद्दी के अधिकारी थे । वह एक अच्छे वैद्य थे । स्वतन्त्रता संग्राम में जेलों में भी गये । किसी के सत्संग व

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाध्याय से वैदिक धर्मी बन गए। नंगे पाव रहते थे। वर्षो वैदिक धर्म का प्रचार किया। उनके जानने वाले सब जानते थे कि यह साधु रामस्नेही पंथ की गुरू गद्दी छोडकर वैदिक धर्मी बन गया है। वह यदा कदा शाहपुर जाया करते थे। उनका गुरू भाई (जो गद्दी पर आसीन था) व अन्य सब राम स्नेही साधु उनका बडा सम्मान करते थे। हमने उनके मुख से कभी यह भी नहीं सुना कि मैनें वैदिक धर्म के लिए इतना बडा त्याग किया है। हम मई, जून की कडकती धूप में पंजाब, हरियाणा व देहली की सडकों पर उन्हें नंगे पांव चलते देखकर दंग रह जाते थे। उधर मई, जून में सडकों का पत्थर भी पिघल जाता है। लुक पांव को चिपक लाए तो पांव झुलस जाता है। वह मस्ती से गर्मी में, सर्दी में पैदल घुमकर ग्राम ग्राम में वेद प्रचार करते रहे।

स्वामी धर्मानन्द जी : पंजाब में एक संत बूटा सिंह नाम के महात्मा थे। वह पंजाबी में अच्छे भजन, दोहे व गीत रच लेते थे। बडे त्यागी तपस्वी व लोकप्रिय महात्मा थे। उनके चेलों की बहुत बडी संख्या थी। उन्होने अपना ही ग्रन्थ बना लिया। चेले उसी का पाठ किया करते थे। यह ग्रन्थ अभी छपने की तैयारी में था कि सन्त जी ने चेलों के हठ से आर्य समाज के खण्डन के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ लिया। सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करते करते आपका हृदय परिवर्तन हो गया। आप स्वयं कहा करते थे, ''मैं तो आर्य समाजी बनकर घाटे मे रहा। पहले ब्रह्म था परन्तु अब जीव बन गया। पहले लोग मेरे दर्शन को आते थे अब मैं उन तक वेद सन्देश देने जाता हूँ।'' सन्त जी अब स्वामी धर्मानन्द बन गए सदाचार व विरक्ति की मूर्ति थें आपने सहस्त्रों के जीवन पलट दिये। महर्षि दयानन्द के चुम्बकीय जीवन पावन चरित्र व सत्य सिद्धान्तों की छाप ने कितने पुण्यात्माओं को बलिदान मार्ग का पथिक बना दिया

(परिवर्तन से साभार)

यदि भारत की एक भाषा बनाना चाहते हैं तो हिन्दी ही हमारी राष्ट्र भाषा हो सकती है।

महात्मा गान्धी

अंग्रेजी-लॉबी के षडयन्त्र ने फिर सिर उठाया

तीन-चार साल पहिले अंग्रेजी-लॉबी के षड यन्त्र का भण्डा-फोड हुआ था जब अंग्रेजी-माध्यम विद्यालयों के संचालक 'फादर्स/मदर्स' के नाम उनकी सर्वोच्च संस्था का एक अतीव गोपनीय पत्र अखबारों मे छपा था। पत्र में संस्था के अध्यक्ष ने देश में 'अंग्रेजी की अनिवार्यता-विरोधी' लहर पर गम्भीर चिन्ता प्रकट की थी और सरकारों में महत्वपूर्ण पदों पर बैठे हुए अपने आज्ञाकारी शिष्यों से 'युद्ध स्तरीय अग्रता' से कर्यवाई करने को कहा था, अन्यथा यदि अंग्रेजी-अनिवार्यता हट गई तो संघ- लोक सेवा- आयोग/कर्मचारी-चयन आयोग आदि की भर्ती-परिक्षाओं द्वारा उनके छात्र ऊचें पदों पर न पहुँच सकेंगे और उन्हे सरकारों से, बहुराष्ट्रीय संस्थानों/कम्पनियों से सहायता/आशीर्वाद न मिल पाने के कारण उनका अस्तित्व ही खतरे में पड गया जाएगा। तब षडयन्त्र कुचला नही गया था, अत: उसने फिर सिर उठाया। राज्य-सरकारों पर प्राथमिक विद्यालयों से ही अंग्रेजी - मा/यम पुन: लागू करने के लिए जोर डाला जा रहा है, इस थोथी दलील पर कि अंग्रेजी के बिना छात्रों का भविष्य विनाश के कगार पर है। पं.बंगाल में तो एस.यू.आई.नाम के एक राजनीतिक दल ने एक करोड लोगों के हस्ताक्षर कराकर प्राथमिक स्तर से अंग्रेजी-शिक्षा आरम्भ करने के लिए 'शिक्षा बचाओ' नाम का अभियान ही छेड दिया है। वे यह मानते है कि छात्र विज्ञान आदि विषयों में अत्यन्त प्रतिभा-सम्पन्न हैं, केवल अंग्रेजी में कमजोर होने के कारण उन्नति नहीं कर पा रहे। स्पष्ट है कि विद्यालयों से लेकर सरकारी भर्ती-परिक्षाओं सहित सभी स्तरों से अंग्रेजी-अनिवार्यता समाप्त करने के बजाय अंग्रेजी आरोपित करने की माँग करने के लिए वे अंग्रेजी-लॉबी की कठपुतली बन गए हैं। ऐसे राष्ट्र-विरोधी षडयन्त्रों/आन्दोलनों का सामना करने का एक ही सार्थक उपाय है कि सारी लोक-प्रिय सरकारें तुरन्त ही केन्द्र पर दबाव डालें कि संघ-लोक-सेवा-आयोग/कर्मचारी-चयन आयोग आदि की भर्ती-परीक्षाओं से अंग्रेजी की अनिवार्यता तुरन्त समाप्त की जाए, तभी छात्रों का भविष्य नष्ट होने से बच सकेगा। उनकी प्रतिभा का निखार तो भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही सम्भव है और भारतीय संविधान की अपेक्षाएं भी पूरी होंगी।

विश्वम्भर प्रसाद गुप्त-बन्धु
१५४-लोक विहार, दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सच्चा साथी कौन ?

❐ महात्मा आनन्द स्वामी

एक ब्राह्मण का बेटा रामदास, एक गांव में अपने पिता के साथ रहता था। पिता मन्दिर में पूजा करते थे। लोगों के घरों में कथा आदि पढते थे। बेटा रामदास उन्हे देखता, उनसे प्यार भी करता परन्तु उस विद्या को प्राप्त न कर सका। तब एक दिन आया जब रामदास के पिता का देहान्त हो गया। माता पहले ही नहीं थी। दूसरा कोई सम्बन्धी भी नहीं था। पिता भी चले गये तो रामदास के लिए यह संसार सुना हो गया। कभी उसने अपने पिता से भगवान् का नाम सुना था। दु:खी अवस्था में उसने सोचा, उसी भगवान को मिलूँगा जो सबका अपना है। परन्तु भगवान् को मिले कैसे ? पाए कहाँ पर ? यह तो उसे पता नहीं था। एक महात्मा के पास पहुँचा, उनसे प्रार्थना की, कि ''मुझे भगवान् का दर्शन करा दो, उससे मिला दो।'' महात्मा बोले ''यह बहुत कठिन कार्य है, सरलता से होगा नहीं, इसके लिए बहुत परिश्रम करना होगा ''रामदास ने कहा मै करूँगा परिश्रम। ''महात्मा बोले, ''बहुत अच्छी बात है। वह है कुटिया, उसमें बैठ कर भगवान् का नाम लिया कर। भोजन तुझे मिल जायेगा। खाने और सोने से अवकाश मिलते ही जप किया कर। रामदास ने ऐसा प्रारम्भ किया। परन्तु प्रभु के लिए जो प्यार होना चाहिए वह तो उसके पास नहीं था। कुछ दिन वहां रहा, जप भी करता रहा। परन्तु जब कुछ हुआ नहीं तो उसने सोचा, ये महात्मा तो मुझे ऐसे ही धोखा दे रहे हैं। यह वस्तुत: कोई विधि नहीं शायद भगवान भी कुछ नहीं। इस प्रकार सोचकर एक दिन वह चुपके से उठा, कुटिया को छोडकर अपने गांव में आ गया। निराश होकर एक वृक्ष के नीचे बैठ गया गांव वाले कृपा करके खाना दे देते तो खा लेता, नहीं तो उस वृक्ष के नीचे ही बैठा रहता तभी उस गांव में एक जमींदार ने अपनी इच्छा पूरी होने पर एक बकरी दान देने का निश्चय किया। परन्तु दान किसको दें, यह उसे पता नहीं लगा किसी ने सुझाव दिया, अपना वह रामदास जो है, किसी महात्मा से शिक्षा लेकर भी आया है, उसी को यह बकरी दे दो।'' इस प्रकार रामदास को बकरी मिल गई। वह घास काटकर बकरी को खिलाता, नहलाता, उसका दुध पीता, उसे हर समय अपने साथ रखता। रात को उसके पास ही सो जाता। उसके जीवन में एक साथी की कमी थी, वह साथी उसे मिल गया उसने बकरी का नाम ही साथी रख दिया। प्यार से उसे कहता, आओ साथी, यह घास खाओ। आओ साथी, यह पानी पीओ। आओ साथी, यहाँ छाया में बैठो, वहाँ धूप है। बकरी को भी पता लग गया की उसका नाम साथी है। जब भी वह उसे साथी कहकर बुलाता, तभी वह दौडी हुई उसके पास आ जाती। ऐसा प्यार हो गया उसे बकरी से कि उसके बिना एक क्षण भी रह नही सकता था। हर समय वह और उसका साथी, हर समय रामदास और बकरी। अब वह प्रसन्न था कि कोई अपना मिल गया, प्रसन्न था की उसका साथी उसके पास है। परन्तु एक दिन वह बकरी पता नहीं कहांखो गई। रामदास ने उसे साथी-साथी कहकर पुकारा। वह आई नही। पागलों की भाँन्ति वह इधर से उधर और उधर से इधर दौडने लगा, 'साथी ओ मेरे साथी' कहकर पुकारने लगा। प्रत्येक व्यक्ति से पूछने लगा, ''तुमने मेरे साथी को देखा है ? किसी ने पुछा, ''कौन साथी ? रामदास बोला मेरी बकरी। लाल रंग की है। इतनी-सी। उस वक्ति ने कहा, ''ऐसी एक बकरी गांव के परली और खेतों में भागी जाती मैने देखी थी।'' रामदास 'साथी साथी' पुकारता हुआ उस ओर भागा। दौडता जाता, पुकारता जाता, साथी, ओ मेरे साथी, तुम कहां हो ? मार्ग में वे महात्मा मिले जिन्होने उसे भगवान के नाम का जप करने के लिए कहा था। आश्चर्य में उन्होने पुछा, ''अरे रामदास तुझको यह क्या हुआ ? क्या अवस्था बना रखी है तूने ? किसको ढूँढता है रामदास ने रोते हुए कहा, ''मेरा साथी खो गया है गुरूजी ! मैं उसके बिना पागल हुआ जाता हूँ। मुझे कुछ नहीं सुझता। आपने कहीं मेरे साथी को देखा है ?''रामदास ने राते हुए कहा?''महात्मा जी ने पूछा, परन्तु तेरा साथी है कौन ?''रामदास ने रोते हुए कहा, ''एक बकरी है गुरूजी ! लाल रंग की बकरी। महात्मा ने हंसते हुए कहा, ''हत्तेरे की ! अरे तु बकरी को अपना साथी बना बैठा? रामदास के स्थान पर बकरी दास बन गया? अरे पागल, तेरा वास्तविक साथी तो तेरे अन्दर है जो कभी तेरा साथ नहीं छोडता। जिस प्रकार तु बकरी के लिए बैचैन है, उसी प्रकार यदि उस सच्चे साथी के लिए बैचैन होता तो तेरे लिए कल्याण के द्वार खुल जाते। परन्तु अरे ओ रामदास को बकरी दास कहने वालों तुम भी तो सोचो, तुम किसके दास बने, जाते हो। कहीं मकानदास, कहीं नौकरीदास, कहीं धनदास, कहीं मनदास, कहीं पत्नीदास, कहीं पुत्रदास। अरे यह कितनो को साथी समझ बैठे तुम वास्तविक साथी जानो। ❐

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्ध्या

❒ स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

स्वास्थ्य का आधार सन्ध्या के नाम से सम्भवत: कुछ पाठक चौकें कि सन्ध्या से स्वास्थ्य क्या सम्बन्ध ! परन्तु उन्हे पता नहीं स्वास्थ्य का मूल आधार मन है। **''मन: एव कारणंबन्धमोक्षयो:''** किसी कवि ने हिन्दी में भी लिखा है- **''मन के हारे हार है मन के जीते जीत''**। अर्थात् शरीर को चलाने वाला मन है। मन के स्वस्थ एवं सबल रहने से ही शरीर स्वस्थ एवं सबल रह सकता है। एक व्यक्ति शरीर से चाहे कितना भी बलवान् है यदि उसका मन कमजोर है तो वह थोडी सी आपत्ति या संकट आने पर घबरा जाता है। अनेक बार थोडे से दु:ख को बडा मानकर आत्महत्या तक कर बैठता है। कई लोग छोटे से रोग को बडा मानकर घबरा जाते हैं फलस्वरूप उनका शरीर भी क्षीण होता जाता है। जबकि शरीर से दुर्बल और मन से बलवान व्यक्ति बडे से बडे संकट को भी सहज रूप से तैर जाता है। ऐसी अनेक घटनाऐं मिलती है कि घबराकर व्यक्ति किस प्रकार साहस छोड बैठा। इस सम्बन्ध में विदेश की एक घटना प्रसिद्ध है -कुछ वैज्ञानिकों ने मन के प्रभाव को जानने के लिए सरकार से एक ऐसे व्यक्ति की मांग की, जिसे मृत्यु दण्ड दिया गया हो। बहुत विचार विमर्श मे बाद शासन ने मृत्यु दण्ड प्राप्त एक व्यक्ति वैज्ञानिकों को सौंप दिया। वैज्ञानिकों नें उस व्यक्ति से कहा। हम तुझे इस प्रकार मारेंगे जिससे कोई कष्ट न हो। तेरा सारा खून शरीर से शनै: शनै: निकाल देंगे। सारा खून निकालने पर बिना कष्ट के तेरी मृत्यु हो जायेगी। यह कहकर उसे कुर्सी पर बैठा दिया और उसके आंखों पर कपडा बांध दिया और हाथ पैर बांध दिये। फिर उसके एक पांव में इंजेक्शन की सीरीज डाल दी, परन्तु उससे खून नहीं निकलने दिया। वहां पर एक बारीक गर्म पानी की धार छोड दी और उससे कह दिया गया कि खून निकलना चालु हो गया और बीच-२ में उसे कहते रहे कि इतना-२ खून निकल गया। वह उनकी बातें सुनकर उसी प्रकार हताश होता गया और अन्त में घबराकर मृत्यु को प्राप्त हो गया। जबकि उसका खून बिल्कुल नहीं निकाला गया। इस प्रकार के अनेक परीक्षणों से वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि शरीर के संचालन में मन का महत्व पूर्ण स्थान है। और मन को बलवान् बनाने में सन्ध्या का प्रमुख साधन है। सन्ध्या से मन शुद्ध एवं बलवान होता है। सात्विकता आती है ईश्वर पर अटूट विश्वास होकर निर्भयता बढती है। जैसे - जब तक घर में माता पिता आदि बुजुर्ग उपस्थित रहते हैं तो बच्चे निश्चिंत एवं निर्भय बने रहते हैं। इसी प्रकार सन्ध्या के द्वारा ईश्वर विश्वास बना रहता है और व्यक्ति ईश्वर को अपने पास उपस्थित मानकर बडे से बडे दु:ख को भी सहज रूप में सह लेता है। इसको महर्षि दयानन्द जी महाराज ने लिखा है- हमारे सभी प्राचीन स्मृतिकारों ने सन्ध्या की बहुत महत्ता बतलाई है। राजर्षि मनु लिखते हैं

न तिष्ठति तु य: पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्।
स शुद्रवद् बहिष्कार्य: सर्वस्माद् द्विजकर्मण:।

जो प्रात: एवं सायंकाल सन्ध्या नहीं करता उसे शुद्र की तरह सब कार्यों से बहिष्कृत कर देना चाहियें अत: सुख शान्ति के इच्छुक प्रत्येक व्यक्ति को सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये। जैसे शरीर के लिए भोजन आवश्यक है उसी प्रकार आत्मा के लिए सन्ध्योपासना आवश्यक है वैसे भी मानव का चरम लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति है। क्योंकि इसे प्राप्त किये बिना मनुष्य की सब कामनायें पूर्ण नहीं हो सकती, समस्त दु:खों से छूटना और पूर्णानन्द की प्राप्ति की भावना मनुष्य ही नहीं जीव मात्र में है। प्रत्येक प्राणी की सारी चेष्टायें सुख एवं आनन्द प्राप्ति के लिए ही है। अत: इस प्राप्ति का यत्न जल्दी से जल्दी करना चाहिये। यह यत्न संन्ध्या के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। दुर्भाग्यवश आज मनुष्य ने अपना लक्ष्य उल्टा बना लिया है। आज का मानव पांचों इन्द्रियों के भोगों को प्राप्त करना ही अपना लक्ष्य समझता है। जिससे उत्तरोक्त दु:ख बढते जाते हैं। अत: पूर्ण स्वास्थ्य एवं सच्ची सुख शान्ति के लिये प्रतिदिन सन्ध्या अवश्य करनी चाहिये यह आत्मा का भोजन है। ❒

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौतिकवाद

ब्र.अभय देव दर्शनाचार्य

वर्तमान समय में प्रत्येक देश,प्रत्येक समाज,प्रत्येक संगठन,प्रत्येक संस्था,प्रत्येक परिवार इस भौतिकवाद से प्रभावित हैं शायद ही कोई व्यक्ति इस भौतिकवाद से पृथक होगा। भौतिकवाद के अन्दर धनादि को आवश्यकता से अधिक महत्व दिया जाता है। आज प्रत्येक विद्यार्थी के विद्या अध्ययन का उद्देश्य धन ही होता है। यहाँ तक की सैनिक और राजनीतिज्ञ भी धन से अत्यन्त प्रभावित हैं जिसके कारण देश की आर्थिक व्यवस्था बहुत ही खराव हो गई है। जो धन देश के विकास में व्यय होना चाहिये वह धन घोटाले का शिकार हो रहा है। आज धन वाला व्यक्ति धन और प्राण दोनो को गवां रहा है। जब धन के कारण किसी स्त्री को जला दिआ जाये तो समझना चाहिये कि यह भौतिकवाद की चरमसीमा है। भौतिकवाद चरम सीमा पर आ गया है पर सुख और शान्ति कहाँ है ? वास्तव में अमर्यादित भौतिकवाद सुख का कारण बन ही नहीं सकता है।

भौतिकवाद की उपलब्धियाँ – भौतिकवाद की इस फलती-फूलती अवस्था में एक तरफ तो भुखों नंगो की पंक्ति खडी है दूसरी ओर हथियारों की पंक्ति लगी है यही घातक हथियार ही क्या भौतिकवाद की देन है ? अव भौतिकवादियों से पूछना चाहिये कि आपके अमन चैन के नारे कहाँ हैं। इन्हीं अमन् चैन के नारों ने ही तो दुनियाँ को भ्रमित किया है।

भौतिकवाद से समस्याओं का निवारण नहीं – भौतिकवाद से प्रभावित व्यक्ति व समाज प्रात: काल से सायंकाल तक धन की प्राप्ति के लिये 'येन केन प्रकारेण' प्रयत्न करता है। इतना प्रयत्न करने के उपरान्त भी जनता की मूल आवश्यकता जैसे:-भोजन,वस्त्र,आवासादि की भी पूर्ति नहीं हो पाई। कुछ लोगों के पास पर्याप्त धन हो जाना समस्या का समाधान नही है क्यों कि किसी के पास साधनो की भरमार और किसी के पास साधनों के अभाव के कारण असन्तोष और राग-द्वेष का वातावरण बना रहता है जो कि दु:ख का कारण है। और भौतिकवाद में असन्तोष को हटाना मुश्किल ही नहीं असम्भव है।

भौतिकवाद में उन्नति की गलत परिभाषा – भौतिकवाद में जिस व्यक्ति के पास जितने अधिक भौतिक साधन होते हैं वह व्यक्ति उतना ही अधिक उन्नत माना जाता है परिणाम यह होता है कि साधनों के संग्रह की होड सी लग जाती है जबकि 'उपनिषद्कार' ऋषि ने कहा है- **''न वितेन तर्पणीयो मनुष्य:''** अर्थात धन से कोई भी व्यक्ति तृप्त नहीं हो सकता है भले ही वह चक्रवर्त्ती राजा वन जाये। साधनों की होड में इतना अधिक धन इकट्ठा कर लेता है कि कोई आवश्यकता ही नही है। वहुत से लोगों को तो साधन मिल नही पाते हैं अथवा अधिक मूल्य पर मिलते हैं जिससे सामान्य नागरिक को वस्तु उपलब्ध नहीं हो पाती है जो वस्तु घरों में अनावश्यक पडे हुये हैं वही वस्तु बाजार में हो तो अवश्य ही वस्तुओं का मूल्य कम होगा,क्यों कि अनावश्यक रखी हुई वस्तुएं अनेक लोगों की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकती है।घर में जो अनावश्यक वस्तुएं हैं उनकी प्राप्ति और रक्षा में व्यर्थ ही समय और शक्ति का व्यय होता है जो कि दु:ख का कारण बन जाता है। अत: भौतिकवादियों की उन्नति की परिभाषा से समस्यायें वढी हैं ''वास्तव में सुख का वढना उन्नति है न कि साधनों का वढ जाना,यदि साधनों से सुख ही नहीं बढता है फिर अधिक साधनों का क्या महत्व,साधन तो सुख के लिये होते हैं यदि आवश्यक साधनों में ही सुख वढता है तो वही श्रेष्ठ है,वही आवश्यक उन्नति है।

भौतिक साधनों से सभी दूर नहीं हो सकते हैं – जो व्यक्ति साधन सम्पन्न है वह व्यक्ति भी दु:खी,चिन्तित यहाँ तक आत्महत्या करता हुआ देखा जाता है क्यों कि उसके पास दु:ख शेष रहते हैं अज्ञान,राग,द्वेष,मोहादि के कारण ही कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है उस अज्ञान,राग,द्वेषादि को धन से हटाया नहीं जा सकता है अगर हटाये जाते तो अमेरिका आदि देशों में इतनी आत्महत्यायें क्यों होती ?इतना ही नहीं आत्महत्या के साथ-२ दूसरे की हत्या, चोरी, डकैती, भय और आतंक ये सब अत्याधिक साधनों से ही हटाये जा सकते हैं।अगर व्यक्ति धर्मानुसार गृहस्थाश्रम में रहता हुआ एक निश्चित काल तक आवश्यक साधनों का संग्रह करे और जब पुत्र का पुत्र हो जाये अर्थात् गृहस्थ को छोडकर वानप्रस्थ आश्रम में धन प्राप्ति की इच्छा छोड दे और वहां सन्यासाश्रम की तैयारी करे तो समझना चाहिये कि भौतिकवाद का अन्त हो चुका है और इसी को अध्यात्मवाद कहते हैं इसके बिना समाज और राष्ट्र में सुख शान्ति सम्भव नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी शक्ति का ह्रास क्यों ?

❒ ब्र.सुदर्शन देवार्य

मनुष्य जीवन ईश्वर का एक अनुपम उपहार है। जो सुविधायें किसी जीव जन्तु को नहीं मिली वे मनुष्य को मिली है।हंसना, बोलना, पढना, सोचना, परिवार, चिकित्सा,उद्योग, निवास, वाहन,मनोरञ्जन आदि के जितनी सुविधा साधन मनुष्य को मिले है वैसे क्या और किसी प्राणी को उपलब्ध है ? उत्तर नहीं,तो मनुष्य अपनी शक्ति का ह्रास होने क्यों देता है। किसी लेखक का कहना है-यदि जीवन-यापन ठीक तरह से किया जाय तथा जीवन-तत्वों को ह्रास से बचाया जाय,तो मनुष्य दीर्घकाल तक जीवन का सुख लूट सकता है।समस्त मनुष्य समाज को उन सारी विपत्तियों से दूर रहना चाहिये जिनसे अमूल्य जीवन शक्ति का ह्रास होता हों। अब हम विचार करेंगे किन दूषित तत्वों द्वारा मनुष्य का विनाश होता है- मनीषियों ने कहा सर्वप्रथम (१) मनुष्य की शक्ति का ह्रास करने वाली चीज अधिक भोग-विलास है। विश्व के सारे पशु-पक्षियों की प्रजनन-शक्ति अत्यन्त परिमित है। वे केवल मात्र अधिक वासना के वशीभूत होकर क्रिया नहीं करते ! विशेष ऋतुओं में ही उनका प्रजनन कार्य होता है। प्रकृति जब उन्हे विवश कर देती है,तब उनका गर्भाधान होता है,परन्तुआज के मनुष्य समाज ने देवी तुल्य नारी को केवल वासना तृप्ति का साधन मात्र समझ लिया है। पति-पत्नी के संयोग की मात्रा अनियमित हो रही है। हम सन्तानों की प्राप्ति का लक्ष्य वैदिक आदर्श तथा प्रकृति का आदर्श नहीं समझ रहे हैं -जिससे समाज में आयु-हीन अकर्मण्य, निकम्मे, असंयमी, अजितेन्द्रिय बच्चे बढ रहे हैं। इन्द्रियों की चपलता काम वासना बढ रही है। अत्यन्त भोग-विलास के कारण मनुष्य निर्बल-कमजोर होते जा रहे हैं। कामुकता में लगे रहने वाले जीव या मनुष्यों के बच्चे कभी बलवान्, आचारवान्, संयमी, बुद्धिमान्, चरित्रवान्, धर्मात्मा, विचारवान् नहीं हो सकते। वीर्य का एक-एक बिन्दु शक्ति का बिन्दु है। एक बिन्दु का भी ह्रास शक्ति को नष्ट करना है। यदि अपनी शक्ति,जीवन तथा आरोग्य की रक्षा करना चाहते हैं तो भोग-विलास से दूर रहिये ! (२) शक्ति के ह्रास का दूसरा कारण है अधिक दौड-धूप। आधुनिक मनुष्य जल्दी में है। उसे लाखों काम है। प्रात: से सांय तक वह व्यस्त रहता है। उसका काम ही समाप्त नहीं होता। बडे-बडे शहरों में तो दौड-धूप इतनी बढ गयी है कि मनुष्य को दम मारने का समय नही है।वह आफिस में कार्य करता है,क्लबों-लाजों में गपशप करता है,घर के लिए एक से एक सामान लाता है,बाल बच्चों को स्कुल भेजता है,चिकित्सालय से दवाई लाता है।यदि वह व्यापारी है तो सुबह से सांय तक व्यापार के चक्कर में दौड-धूप करता है। आज के मनुष्य को शान्ति से बैठकर मन एकाग्र करने का समय नहीं मिलता है। संसार के चारों ओर से उद्विग्नता की हाहाकार सुनायी दे रही है। चित्त की चञ्चलता इतनी बढती जा रही है कि हम क्षुब्ध एवं दु:खी होते जा रहे हैं। इस दौड धूप में एक क्षण भी शान्ति नहीं। यदि इसी उद्विग्न और व्यस्त अवस्था मेंचलते रहें तो जीवन में शान्ति, आनन्द, सुख एवं प्रतिष्ठा कैसे पा सकते हैं। जब हमारे चारों ओर का वायुमण्डल विक्षुब्ध है तो आत्मा की उच्चतम शक्ति कैसे सम्पादन कर सकेंगे। अतएव-जो व्यक्ति अथवा समाज शक्ति-संचय करना चाहते हैं तो उन्हे चाहिये,वे अधिक दौड-धूप से बचें,केवल मात्र धन कमाना ही जीवन का उद्देश्य न समझें,शान्ति दायक विचारों में रमण करें,इसी में सुख,शान्ति और पुण्य है।(३) शक्ति ह्रास का तीसरा कारण अधिक बोलना। जिस प्रकार अधिक दौड-धूप करने से, चलने से जीवन क्षय होता है,उसी प्रकार अधिक बोलने,भाषण देने,बातें बनाने,बडबडाने.अपशब्द बोलने, गाली-गलौज देने,चिढकर काँव-काँव करने से फेफडे कमजोर-निर्बल हो जाते हैं। पुन: पुन: तेज आवाज निकालने से फेफडों का निर्बल हो जाना स्वाभाविक है। इतना ही नही गले में खुश्की से खांसी उत्पन्न होती है। यह खांसी बनी रहने से यक्ष्मा रोग होने की सम्भावना बनी रहती है जिससे की मृत्यु का निमन्त्रण भी स्वीकारना पडताहै। प्राय: देखते हैं कि वक्ता,अध्यापक, लेकचरार पतले- दुबले रहते हैं,यह शक्ति के क्षय का प्रत्यक्ष लक्षण है। अधिक बोलने से शारीरिक शक्ति का ह्रास होना जरूरी है,यह अपनी शक्ति का अपव्यय ही है। अधिक बोलने की आदत से मनुष्य बकवासी बनता है,लोग उसके उपर विश्वास ही नहीं करते ढपोरशंख कहते हैं। वह प्राय: दूसरों की भली-बुरी सोचता रहता है,अनावश्यक बाते कहता है,निन्दा करता है,अपनी गम्भीरता खो बैठता है। ऐसा जो करते हैं वे कहीं भी आदर सम्मान नही पाते। अतएव शक्ति को अपव्यय से बचाने क़ी इच्छा रखने वालों को चाहिये कि वे मितभाषी बनें,कम बोले,किन्तु बोले भी तो मनोहारी वचन बोलें तथा दूसरे अपने हृदय को प्रसन्न करने वाले सारयुक्त वचन बोलें। नीतिकार कहते है-**क:पर: प्रियवादिनम्**। यदि शक्ति को ह्रास से बचाना है,संसार में प्रतिष्ठा पानी है,अपना और दूसरों का उपकार,सेवा करना है तो उपरोक्त बातों को अपने व्यवहार में लायें,जिससे स्वयं का,समाज व राष्ट्र का कल्याण होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"असफलता - प्रेरक अथवा बाधक"

❒ सविता रस्तौगी

असफलताएँ मनुष्य के जीवन काअभिन्न अंग है और एक व्यक्ति के जीवन को रूप प्रदान करती है। सुख-दुख मनुष्य के जीवन के दो पहलू हैं। कोई व्यक्ति सब प्रकार से सुखी हो,ऐसा नहीं कहा जा सकता। दु:खों के अनेक कारण होते हैं जैसे तृष्णा,महत्वाकांक्षाएँ ,मोह इत्यादि। मुख्य रूप से यहाँ हम महत्वाकांक्षाएँ और उनके फलस्वरूप होने वाली असफलताओं और दु:खों पर वर्णन देंगे। महत्वाकांक्षाओं का अर्थ है,जीवन में कुछ करने और पाने की इच्छा। किसी महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिये कर्म (कार्य)करना पड्ता है। पर कार्य किस लगन से किया जाता है,यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह व्यक्ति उसके फल को पाने के लिये कितना लालायित है। किसी चीज को पाने के लिये व्यक्ति जितनी अधिक कोशिश और कार्य करता है,उतनी ही उस वस्तु को पाने की उसकी इच्छा और अधिक तीव्र हो जाती है। इस तरह से कार्य करने की लगन और उसके फ़ल पाने की इच्छा,दोंनो एक-दुसरे पर निर्भर और एक -दुसरे की निर्णायक है। अधिक कार्य लगन,मतलब अधिक कार्य-फल पाने की इच्छा। इसी प्रकार किसी चीज को पाने की अधिक इच्छा,उसके लिये अधिक लगन से कार्य करने की प्रेरणा देती है।जहाँ एक ओर कार्य करना इंसान के अपने हाथ में है,वहीं दूसरी ओर उसका फल पानाउसके हाथ में नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में मनुष्य को सिर्फ कर्म का दायित्व दिया है,कर्म के फल देने का अधिकार उन्होने अपने पास रखा है, यह बात हालांकि सब लोंगों को अच्छी तरह मालुम है पर फिर भी मनुष्य असफलता से आसानी से समझौता नहीं कर पाता। असफलता को समझ पाना मेरे ख्याल से संवेदशील व्यक्तियोंके लिये और भी मुश्किल हो जाता है।एक और कहावत है जो मनुष्य को असफलताओं से समझौता करने की बात पर जोर देती है,और वह है-भाग्य से अधिक और समय से पहले कभी किसी को कुछ नहीं मिलता।महत्वाकांक्षाओं को जीवन स्वप्न के रूप में भी देखा जा सकता है। जीवन में जो चाहा जाए,वह कभी नहीं मिलता,या यह कहा जा सकता है कि जो मिल गया,उसकी कद्र नहीं रहतीं जो नहीं मिला उसको पाने की इच्छा बनी रहती है ओर दु:ख का कारण बनती है। हालांकि यह बात नहीं हे कि किसी बात से मिलने वाला दु:ख केवल एक व्यक्ति तक ही सीमित हैं। एक व्यक्ति के दु:खी होने से उसके परिवारजन व निकट संबंधी भी दु:खी रहते हैं कई बार व्यक्ति अपने दु:ख को औरों के दु:ख से बडा जानकर दु:खी रहता है,जबकि सच तो यह है कि औरों के दु:ख से अपने दु:ख को छोटा समझना चाहिये।कुछ लोग जीवन में मिलने वाली असफलताएँ से घबराकर हिम्मत हार जाते हैं और आगे कार्य करना रोक देते हैं जबकि जीवन तो चलने का नाम है और असफलताओं को पूर्णतया हटाया नहीं जा सकता है। इसलिये समझदारी इसी में है कि मनुष्य असफलताओं से घबराकर टूटे नहीं बल्कि और दृढ निश्चय के साथ अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने में लग जाए।सब कुछ समझ में आते हुए भी यह बात समझ में नहीं आती कि भगवान की दी हुई इस जिन्दगी को कैसे जिया जाए कि मोक्ष की प्राप्ति हो और सफलता-असफलता के चक्रव्यूह से छुटकारा मिले।

सी- ९५,सरस्वती विहार
दिल्ली - २३

ऋषि-उवाच

※ सब दु:खों से छूटके केवल परमेश्वर की ही प्राप्ति के लिये धर्मयुक्त सब कर्मो को यथावत् करना यही निष्काम मार्ग कहता है।

※ ब्रह्मचर्य,गृहस्थ,वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम के सत्याचरण रूप जो कार्य है वे भी परमेश्वर की ही प्राप्ति कराने के लिये है।

※ जो मनुष्य सत्य,प्रेम,भक्ति से परमेश्वर की उपासना करेंगे,उन्हीं उपासकों को परम कृपामय अन्तर्यामी परमेश्वर मोक्ष-सुख दे के सदा के लिये आनन्द युक्त करेगा।

※ जो परमेश्वर की स्तुति,प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अक्ल का दिवालिया, ब्रह्माकुमारी मत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरहवीं किश्त

❒ स्वामी परमानन्द सरस्वती

प्रिय पाठको,

महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार नामक पुस्तक के पृष्ठ १८५ में लिखते हैं कि प्राय:लोग मानते हैं कि गीता ज्ञान श्री कृष्ण ने युद्ध मैदान में अर्जुन को दिया था। परन्तु यदि ज्ञान क़ी दृष्टि से अर्थात् आत्मिक दृष्टि से देखा जाय और विवेक का प्रयोग किया जाय तथा श्री मद् भागवत गीता के महावाक्यों पर विचार मन्थन भी किया जाय तो यह मान्यता ठीक नहीं मालूम होती, बल्कि मनुष्य इसी निर्णय पर पहुचता है कि गीता ज्ञान परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता **ब्रह्मा** द्वारा दिया था और कि भगवान ने कौरवो-पाण्डवों के बीच कोई हिंसक युद्ध कराया ही नही।

समीक्षा- ब्रह्मा कुमारियों ने अपने आप को महान विद्वान सिद्ध करने व उन्हें आकर्षित करने के लिये जगदीश ने जो वेशिर पैर की गप्पो का सृजन किया है। इससे भले ही जगदीश चन्द कृष्णचन्द बनकर रासलीला खेल ले परन्तु यह जिस भी पढे लिखे के हाथ पडेगी वही इनकी बुद्धि पर तरस खा कर कहेगा कि क्यो विद्या को बदनाम कर मनुष्यता को कलंकित कर रहे हो। इनका कथन है कि गीता का ज्ञान अर्जुन को नहीं दिया था और न महाभारत युद्ध ही हुआ था। गीता ज्ञान तो परम पिता महात्मा शिव ने प्रजापिता **ब्रह्मा** द्वारा दिया था।अब प्रश्न यह है कि मनुष्यो के पिता तो शिव हुआ तो प्रजापिता **ब्रह्मा** किसका पिता है, पशुओं का या या मनुष्यों का, प्रजा तो मनुष्यो को ही कहते है। तब मनुष्यो के दो पिता हो गये। शिव और **ब्रह्मा** और तीसरा पिता वो जो जिसने पैदा कर पाला पोसा, अब इनके हिसाब से पिता तीन और माता एक, यह सृष्टि मैथुनी है। रज वीर्य के संयोग हुये वगैर सन्तान होती ही नहीं और रज वीर्य का संयोग वगैर मैथुन के हो ही नहीं सकता। प्यारे जगदीश चन्द तुमने किसी न किसी माता के गर्भ से ही जन्म लिया होगा और गर्भ वगैर मैथुन के रह ही नही सकता। गर्भ के लिये कोई न कोई वीर्य दाता होता है और उस वीर्य दाता को ही पिता कहा जाता है। परन्तु तुम्हारे तो तीन पिता है तो क्या तीनों वीर्य दाता है या एक है, यदि एक है तो दो को पिता कहने का औचित्य क्या है। उत्तर दें। तुमने तो यह लिखा कि गीता ज्ञान परमात्मा शिव ने प्रजापिता **ब्रह्मा** के द्वारा दिया। अब प्रश्न यह है कि प्रजा पिता **ब्रह्मा** कौन है और उसने यह ज्ञान किसको दिया कब और कहां। तुमने इसी पुस्तक के पृष्ठ ३८४ में लिखा कि शिव ने कलयुग के अन्त मे प्रजा पिता ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट हो कर दिया और उसके बाद से सतयुग लग गया। ऐतिहासिक गणित के हिसाब से एक चतुर्थ युग की आयु ४३२०००० वर्षो की होती है और तुम्हारे द्वारा कल्पित आयु ४८०० वर्ष होती है। यदि हम तुम्हारी कल्पित आयु को ही मान लें तो प्रजा पिता **ब्रह्मा** (लेखराज) को गीता ज्ञान दिये जाने के बाद से सतयुग लगा फिर त्रेता फिर द्वापर लगा फिर कलयुग लगा और तुम्हारे हिसाव से अब कलयुग भी समाप्त हो रहा है। कितने आश्चर्य की बात है कि ४८०० वर्षो मे तुम्हारे प्रजा पिता **ब्रह्मा** द्वारा दिया गया गीता ज्ञान किसी भी व्यक्ति को यह ज्ञान क्यों याद नही रहा किसी भी विद्वान ने एक शब्द भी नही लिखा बल्कि कृष्ण द्वारा दिया गया गीता ज्ञान ५००० वर्ष बीत जाने पर भी जन जन में अभी भी व्याप्त है। इनका कथन है कि दादा लेखराज ही प्रजापिता **ब्रह्मा** है शिव ने इन्हीं को पूर्व कलयुग के अन्त में गीता ज्ञान दिया था और इन्हीं का नाम कृष्ण था। यह दुनिया जानती है कि श्री कृष्ण द्वापर के अन्त में हुये थे और उनकी मृत्यु के १० वर्ष वाद से कलयुग लगा था जिसकी संवत सा आज भी पंचागों में अंकित रहती है। परन्तु जिसने लज्जा को तिलांजलि दे दी हो, वह सब कुछ कह सकता है। इन्होने इसी पुस्तक के पृष्ठ १८६ मे गीता के अध्याय २ के २२ श्लोक के एक शब्द को उद्धृत कर अपने पक्ष में प्रमाण रूप प्रस्तुत किया है।

वासांसि जीर्णनि यथा विहाय। नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि॥
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा न्यन्यति संयाति नवानि देही॥

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नये वस्त्रो को ग्रहण करता है ये वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्याग कर दूसरे नये शरीरों को प्राप्त होता है। इनके प्रजापिता **ब्रह्मा** (लेखराज) ने पूर्व कलियुग के अन्त मे शरीर त्यागा गीता के अनुसार इनको दूसरा शरीर अवश्य मिला होगा। इनके शरीर त्यागने के बाद सतयुग, त्रेता, द्वापर और पूरा कलयुग निकल गया तब इन्हें मनुष्य का शरीर मिला। इससे यह सिद्ध है कि ये इन चार युगों में पशु पक्षियो में कुत्ते, शुकर, कौवा, चमगीदड, उल्लू आदि योनियों में अपने किए हुए पुण्य कर्मो का फल भोगते रहे कर्म फल शेष होने पर इन्हे फिर से मनुष्य शरीर मिला। और इस जन्म में किये हुए पुण्य कर्मो को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखते हुए ऐसा प्रतीत हो रहा है कि अब इन्हें मनुष्य योनि मिलना दुर्लभ ही है। पृष्ठ १८६-आप देखते हैं कि आज श्री मद्‌भगवद् गीता नाम से प्रकाशित जो पुस्तक मिलती है उनमें तो श्री कृष्ण का शारीरिक रूप चित्रित होता है और लोग उसे ही गीता का भगवान् मानते हैं। गीता में भगवान् का ज्योतिर्मय रूप तो कहीं भी चित्रित नहीं होता और शारीरिक रूप जो भगवान से भिन्न है अर्थात् जो कि भगवान नही है। वल्कि जड प्रकृतिकृत तथा नश्वर है उसे ही चित्रित करके उसे भगवान् बताया गया है। विवेक से स्पष्ट है कि यह गलत चीज है। स्वयं भगवान् ने भी गीता में कहा है कि मुझे अव्यक्त और अविनाशी सत्ता को न पहिचान कर जो मुझ अव्यक्त परमात्मा के व्यक्त भाव को मानते हैं वे बुद्धिहीन पुरूष हैं वे मेरे मनुष्य तन को देखते है महेश्वर को नही जानते।

समीक्षा- प्यारे जगदीश पढे-लिखे होने पर भी तुम्हारी बुद्धि इतनी ज्यादा भ्रष्ट क्यों है इसका कुछ न कुछ कारण तो होना ही चाहिये क्यों कि वगैर कारण के कोई भी कार्य नहीं होता। बुद्धि भ्रष्ट होने का कारण तुलसी दास जी ने इस प्रकार लिखा है।

इम कुपन्थ पग देत खगेसा। रहे न तेज तनु बुद्धि लव लेसा॥

जिसके पैर वुरे रास्ते की ओर वढ जाते हैं तो उसकी बुद्धि का विनाश हो जाता है। और बुद्धि के विनाश हो जाने से वह व्यक्ति आरत हो जाता है। तुलसी ने लिखा-रहत न आरत के चित चेतू। आरत हुये व्यक्ति का मस्तिष्क विक्षिप्त हो जाता है इसीलिये कहा कि। आरत काह न करे कुकर्मू। वह कौन सा ऐसा कुकर्म है जिसे आरत व्यक्ति न कर सकता हो। तुमने लिखा कि आज जो गीता प्रकाशित मिलती है उसमें श्री कृष्ण का शारीरिक रूप चित्रित रहता है तो क्या इससे पहले जो गीता प्रकाशित होती थी उसमें लेखराज का चित्र प्रकाशित होता था। अरे मदन मस्त जी जिसने गीता कही और जिसने सुनी उन्ही के चित्र तो प्रकाशित होंगे और चित्र तो शरीर का ही होता है ज्योर्तिमय आत्मा का नहीं। शारीरिक रूप से जो कि भगवान् से भिन्न है भगवान् नही बल्कि जड तथा नश्वर है उसे ही चित्रित कर भगवान् बताया गया है विवेक से यह गलत है। इसे विवेक से गलत कहना विवेक हीनता है। जो बनता है वही बिगडता है। आत्मा अव्यक्त है इसलिए न बनता है न विगडता हैं शरीर व्यक्त है। इसलिये बनता विगडता है। जो बनता विगडता है चित्र भी उसी का बनता है। श्री कृष्ण भगवान् थे इसलिये उनका चित्र भी भगवान् का चित्र कहलायेगा। गीता में श्री कृष्ण का यही तो कहना है कि मनुष्य शरीर में जो आत्मा है वह अव्यक्त है उसे व्यक्त कहना मूर्खता है। गीता वैष्णव सम्प्रदाय का मुख्य ग्रन्थ है उसमें श्री कृष्ण जी को विष्णु अवतार मान कर ही उसकी संरचना की गई है। उसमे तुम्हारे लिंग स्वरूप शिव का और प्रजापिता ब्रह्मा (दादा लेखराज) का नामो निशान नहीं है। तुमने तो इस शेर को ही चरितार्थ किया है।

देख अकद सरइया, उन्हें अंगूर की सूझी।
अन्धे को अन्धेरे में दूर की सूझी॥

तुमने श्री मद्‌भगवत गीता के कुछ शब्दों को उसके श्लोकों से उद्‌धृत कर यह सिद्ध करना चाहा है कि गीता शिव की कही हुई है कृष्ण की नही और चालाकी यह की है कि पूरे श्लोक नही लिखे तुमने जो लिखे हैं वे निम्न है-गीता अ.२ श्लोक २२/२-२५/३-२८/७-२४/८-९/८-४/८-९/८-१०/८-१२/८-२१/९-४/९-११/१०-१२/११-३/ १३-३३/ इन श्लोको में कहीं भी तुम्हारे शिव या प्रजापति ब्रह्मा की गन्ध भी नही है। गीता ८-१/

किं तद ब्रह्मकिमध्यातं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते॥

अर्जुन ने कहा-हे पुरुषोत्तम। वह ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभुत नाम से क्या कहा गया है और अधिदैव किसको कहते हैं

गीता ८-२- हे मधूसूदन यहाँ अधियज्ञ कौन है? और वह इस शरीर में कैसे है?। अर्जुन के इन प्रश्नों का उत्तर भगवान कृष्ण ने क्रमश: देते हुये अन्त में कहा कि।

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
य: प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमा गतिम्॥

जो ओम् इस एक अक्षर रूप ब्रह्मा को उच्चारण करता हुआ और उसके अर्थ रूप निर्गुण ब्रह्मा का चिन्तन करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है वह पुरुष परम गति को प्राप्त होता है। ८-१३॥ पृष्ट १८८/ अब प्रश्न उठता है कि गीता के भगवान् का नाम क्या है? शरीर आत्मा के वस्त्रों के समान है। अब नाम के बारे में निर्णय करते समय ध्यान देने योग्य बात यह है कि वस्त्र का जो नाम होता है। पहनने वाले का वही नाम नहीं होता, सोचने की बात है कि कृष्ण नाम किसका हो सकता है। शरीर का या आत्मा का यदि कृष्ण संज्ञा वाचक नाम है तब भी वह भगवान् (परमेश्वर) का नाम नही हो सकता क्योंकि भगवान् के तो सभी नाम गुण वाचक अर्थात् कर्त्तव्य वाचक है। यदि कृष्ण गुण वाचक नाम है तो भी भगवान् का नाम नही हो सकता क्यों कि कृष्ण का साँवला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। **समीक्षा–** जगदीश जी मनुष्य उसे कहते हैं जो मननशील होता हो और ज्ञान हीन विचार वाले को पशु कहते हैं। जीव का कोई नाम रूप नही होता है। अब मैं तुम्हीं से पूछना चाहता हूँ कि तुम और तुम्हारा शरीर अलग –अलग है अब यह बतलाओ कि जगदीश नाम किसका है। शरीर का या आत्मा का। यदि तुम्हारा हाथ कट जाय तो यही कहा जायेगा कि जगदीश का हाथ कट गया यह तो नहीं कहा जायेगा कि शरीर का हाथ कटा। इसलिये नाम जीवात्मा का ही होता हैं मुख्य नाम ना तो गुण वाचक होता है और न कर्म वाचक वह तो पहिचान वाचक होता है। नाम पैदा होने के ११ दिन बाद रख दिया जाता है।तब उस बालक में ना कोई गुण होता है ना कोई कर्म। मूल नाम के शब्दों का अर्थ भी नही लगाया जाता जैसे तुम्हारा नाम जगदीश है इसका अर्थ होगा सारे संसार का मालिक अब तुम्ही सोचो कि इस अर्थ के अनुसार तुममे गुण कर्म है क्या ? तुम्हारा प्रश्न है कि गीता मे भगवान का नाम क्या है। कितने आश्चर्य की बात है ,तुम्हारे स्थूल बुद्धि मे इतनी सरल सी बात भी नही घुसती। गीता जिसने अर्जुन के प्रति कही वही उसका भगवान कहलाता है। श्री कृष्ण अर्जुन संवाद का ही नाम लोगो ने गीता रखा है। रही बात ईश्वर की तो गीता अध्याय ८ श्लोक १३में स्वयं भगवान् श्री कृष्ण जी कहते हैं कि ओम् इस एक अक्षर रूप ब्रह्म को जो जपता है वही परमगति को पाता है।

आओ आर्यो चलें -

आर्य समाज गान्धीधाम (कच्छ) का वार्षिकोत्सव १८,१९,२० सितम्बर–९८ पीछली ९ जून को कण्डला क्षेत्र में जो हुआ सभी परिचित हैं। स्थानीय आर्य समाज ने इस तुफान पीडित लोगों में भारी सहायता की जिसमें गान्धीधाम की सेवा एवं राहत कार्य सबसे ज्यादा रहा। ५ ट्रक राहत सामग्री ४००० पैकेट फूट वितरित किए गए।

आगामी १८,१९,२० सितम्बर को इस समाज का वार्षिकोत्सव है जिसमे दीक्षानन्द जी,वृजपाल जी कर्मठ,कमलेश अग्निहोत्री आदि गणमान्य नेता तथा विद्वान् पधार रहे हैं।अत: सभी आर्य जनो से अनुरोध है कि अधिक से अधिक संख्या में उक्त कार्यक्रम की शोभा बढावें।

वाचोनिधि आर्य
मंत्री

घाटी के हिन्दुओं के लिए कहर का दिन होता है 'शुक्रवार'

पाकिस्तान द्वारा जम्मु कश्मीर में जारी अघोषित युद्ध ने सक्रिय भाडे के विदेशी आतंकियों को अल्प संख्यकों के सामुहिक नर–संहार के लिए एक ही दिन शुक्रवार चुना है,पाकिस्तान परस्त विदेशी मुस्लिम कट्टर पन्थी फसादियों ने जम्मु में अल्पसंख्यक हिन्दुओं की नृशंस हत्या के लिए एक विशेष दिन ही चुना है।इसी दिन घाटी में अल्प संख्यक हिन्दुओं को अपनी गोली का निशाना बनाया जाता है।अभी तक जम्मु काश्मीर में जितनी भी सामुहिक हत्याएं हुई है सभी मुस्लिम समुदाय तथा मुस्लिम देशों के अवकाश के दिन शुक्रवार को ही हुई है। मुस्लिम कट्टर पन्थी आतंकियो ने जिला डोडा में हाल ही में एक बार फिर पच्चीस हिन्दुओं को घेरकर गालियों से भुन डाला।

जिला उधमपुर के पठानकोट में इससे पूर्व विदेशी मुस्लिम कट्टर पन्थी आतंकियों ने २६ पुरुष, महिलाओं तथा बच्चों को काट डाला था। यह जघन्य नरसंहार १७ अप्रेल १९९८ को शुक्रवार के दिन ही किया गया था। २३ फरवरी १९९८ को कँप–कपाँती सर्दी तथा बर्फबारी के बीच कश्मीर घाटी के गांदाबल क्षेत्र में बहनामा में भाडे के विदेशी आतंकियों ने २१ कश्मीरी पण्डितों को गोलियों से छलनी कर दिया था तब भी शुक्रवार का पवित्र दिन ही था।३० जनवरी १९८८ को भी शुक्रवार ही था और आतंकीयो ने नावापांची जिला डोडा में ९ की हत्या कर दी थी। संग्रामपौरा जिला बडगांव में पिछले साल २१ मार्च को आतंकियो ने ७ काश्मीरी हिन्दुओं को मार गिराया था तब भी शुक्रवार ही था। ६ जून १९९६ को सुंबर क्षेत्र जिला डोडा में १७ लोगों की हत्या कर दी गई थी वह भी शुक्रवार था। १२ जनवरी १९९६ को भ्रदवाह में आतंकियो ने ७ लोगों की हत्या कर दी थी दिन था शुक्रवार।१६ जनवरी बराशाला में १६ हिन्दुओं को घरों से बाहर निकालकर सामुहिक कत्लेआम किया था तब भी शुक्रवार ही था।

(साभार - दैनिक जागरण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख्य सुधार की नींव

सन् १८८२ में ब्रिटिश सरकार ने डा.हण्टर की अध्यक्षता में एक कमीशन की स्थापना कर उससे राजकार्य के लिए उपयुक्त भाषा की सिफारिश करने को कहा। यह आयोग हण्टर कमीशन के नाम से जाना गया। यद्यपि उन दिनों सरकारी काम-काज में उर्दू-फारसी एवं अंग्रेजी का प्रयोग होता था, परन्तु स्वामी दयानन्द के सन् १८७२ से सन् १८८२ तक के व्याख्यानों, ग्रन्थों, शास्त्रार्थों तथा आर्य-समाजों द्वारा प्रचार एवं उनके अनुयायियों की हिन्दी-निष्ठा से हिन्दी भी सर्वत्र लोकप्रिय हो गई थी। हण्टर कमीशन के माध्यम से हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिलाने के लिए स्वामी जी ने देश की सभी आर्य-समाजों को पत्र लिखकर बडी संख्या में हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन भेजने की प्रेरणा की और जहां से ज्ञापन नहीं भेजे गए उन्हें स्मरण-पत्र भेजकर सावधान किया। आर्य-समाज फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश) के स्तम्भ बाबू दुर्गादास को भेजे पत्र में स्वामी जी ने लिखा, ''यह काम एक के करने का नहीं है और अवसर चूके तो यह अवसर आना दुर्लभ है। जो यह कार्य सिद्ध हुआ अर्थात् हिन्दी भाषा बना दी गई तो आशा है, मुख्य सुधार की नींव पड जाएगी।'' स्वामी जी की प्रेरणा से देश के कोने-कोने से आयोग को बडी संख्या में लोगों के हस्ताक्षर कराकर ज्ञापन भेजे गए। अकेले कानपुर से हण्टर कमीशन को दो सौ मेमोरियल भेजे गए जिन पर दो लाख लोगों ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में हस्ताक्षर किए थे। हिन्दी को गौरव प्रदान करने के लिए स्वामी दयानन्द द्वारा किया गया यह कार्य भी इतिहास में अन्यतम घटना है।

२. पाठक कल्पना करें एक सदी से अधिक पूर्व के जमाने की जब भारत की जन-संख्या आज की अपेक्षा बहुत कम थी और आने-जाने के साधन तथा संचार-माध्यम अत्यन्त सीमित थे। एक अहिन्दीभाषी राष्ट्र-निष्ठ संन्यासी द्वारा हिन्दी को राजभाषा बनवाने के लिए लाखों हस्ताक्षर कराकर भिजवाने का यह काम कितना कठिन और सूझ-बूझ- पूर्ण था। इसे राजभाषा के रूप में हिन्दी की यात्रा का प्रथम संगठित आन्दोलन कहा जा सकता है।

३. पाठकों से अनुरोध है कि महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर जब-जब भी वे केन्द्रीय अथवा राज्य-सरकारों, स्थानीय निकायों, नगरपालिकाओं, पंचायतों आदि के कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग के बारे में अवहेलना होती देखें अथवा उनके कुछ सुझाव हों, तो सम्बन्धित कार्यालय के प्रमुखों या मन्त्रियों को निश्चित उदाहरण देते हुए शिष्ट भाषा में पत्र लिखते और लिखाते रहेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। निरन्तर रूप से लिखना और निश्चित अन्तराल के बाद अनुस्मारक देते रहना सफलता की आवश्यक शर्त है। सभी सांसदों, विधायकों, शासन अधिकारियों, कर्मचारियों, प्रोफेसरो-अध्यापकों, वकीलों, डाक्टरों, इंजीनियरों, उद्योगपतियों और व्यापारियों आदि से भी अनुरोध है कि राष्ट्रभाषा के व्यवहार-पक्ष को सबल बनाने में जुट जाएं और इस प्रकार स्वतन्त्र राष्ट्र के स्वाभिमानी नागरिक होने का सबूत दें। इसके लिए एक-दूसरे की पहल की प्रतीक्षा न करके स्वयं पहल करें। अकेले चलें। साथी अपने-आप मिलते जाएंगे।

(जगन्नाथ)
राजभाषा कार्य
केन्द्रिय सचिवालय, दिल्ली

धर्मरक्षा महाभियान में सहयोग दें।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से धर्मरक्षा आन्दोलन चल रहा है। अभी फार्म भरे जा रहें हैं। आगामी अक्टूबर से पुनर्मिलन कार्यक्रम चालु होंगे। इधर गत वर्ष से ईसाई मिशनरी पुनः सक्रिय हैं। एक-२ ग्राम को परिवर्तन के लिए लाखों रूपये खर्च कर रहें हैं। इस वर्ष अभी तक अकाल की स्थित बनी हुई है। इसका वे विशेष लाभ उठाते हैं ऐसे समय में आप सब का हार्दिक आशीर्वाद एवं सहयोग ही हमारा सम्बल है। आशा है देश भक्त सज्जन इधर ध्यान देंगे। वैदिक धर्म का प्रचार, धार्मिक परीक्षाएं तथा शिविर भी निरन्तर चल रहें है। यह सब आर्यजनों के सहयोग स्वरूप हो रहा है। आशा है इस यज्ञ को निरन्तर चलाए रखेंगे।

निवेदक

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
आचार्य गुरूकुल आश्रम, आमसेना

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती
प्रधान, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु

सार्वदेशिक आर्यवीर दल

के तत्वावधान में

प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय

आर्यवीर महासम्मेलन

क्रान्तिकारी आर्ययुवकों का अभूतपूर्व समारोह

एवं

क्षात्रशक्ति का विराट प्रदर्शन

2-3-4 अक्टूबर, 1998 ई.

आश्विन शुक्ल द्वादशी, त्र्योदशी, चतुर्दशी

2055 विक्रमी सम्वत्

स्थान - बुराड़ी रोड, निरंकारी सरोवर के सामने,

आउटर रिंग रोड, निकट किंग्जैवे कैम्प, दिल्ली-110009

सम्मेलन कार्यालय : 119, गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली-110049

इसमें आर्यजगत के साधु, संत, सन्यासी विद्वान पधार रहे हैं।
भोजन और आवास की व्यवस्था सम्मेलन की ओर से की गई है।

भारत के महापुरुषों की दृष्टि में गाय

१. 'एक गाय के मांस से ८० मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं, जब कि २५७४० मनुष्य, एक गाय के जन्म भर के दूध से तृप्त हो सकते हैं।'

'सुनो बन्धुओं!' तुम्हारा तन, मन, धन गाय आदि की रक्षारूप परोपकार में न लगे तो किस काम का है?' 'हे राजपुरुषों! जिन गौ आदि से दूध-घी आदि उत्तम पदार्थ होते हैं, जिनके दूध आदि से सब प्रजा की रक्षा होती है उनको कभी मत मारो और जो उन पशुओं को मारें उनको राजादि न्यायाधीश दण्ड देवें।'

(महर्षि दयानन्द)

२. 'गोधन अर्थ और धर्म दोनों का प्रबल पोषक है। अर्थ से ही काम (कामनाओं) की सिद्धि होती है और धर्म से ही मोक्ष की। अत: एवं गोधन से ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-चारों की प्राप्ति होती है।'

'जो हिन्दू धर्मशास्त्र पर विश्वास करते हैं उन्हें चाहिए कि चतुर्वर्ग फल सिद्ध्यर्थ शास्त्रविधान के अनुसार गो सेवा करते हुए गोधन की वृद्धि करें और जो धर्मशास्त्र पर आस्था नहीं रखते, उन्हें चाहिए कि अर्थ और काम की सिद्धि के लिए अर्थशास्त्र के नियमों के अनुसार गोपालन करते हुए गोवंश की वृद्धि करने का प्रयत्न करें।'

(जगद्गुरु शंकराचार्य श्री ब्रह्मानन्दजी सरस्वती)

३. 'बूढ़ी, लूली, लंगड़ी, रोगिणी, दूध न देने वाली चाहे किसी भी प्रकार की गौ हो उसकी उपेक्षा करना महापाप है। हर तरह से आदरपूर्वक उनकी रक्षा-सेवा-पूजा कुटुम्ब समाज तथा राष्ट्र का मंगल करने वाली होती है।'

(स्वामी श्री करपात्रीजी महाराज)

४. 'यदि हम संसार में हिन्दू कहलाकर जीवित रहना चाहते हैं तो हमें प्राणपण से सर्वप्रथम गोरक्षा करनी पड़ेगी।'

(प्रसिद्ध सन्त श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी)

५. 'मुझे ले लो, मेरे प्राण ले लो, पर गाय को छोड़ दो उसने आपके एक बालक को भी धक्का नहीं पहुँचाया।'

'यदि हम गौओं की रक्षा करेंगे तो गौएँ भी हमारी रक्षा करेंगी।'

(महामना पं. मदन मोहन मालवीय)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुश्मन को ललकार

❑ रच.सुमन सेठ ''सुमन''
वानप्रस्थी अशोक नगर

हम डरते नहीं है,लडने से
दबने की जरूरत क्या होगी
ऐ मॉ तेरे चरणो की कसम
दुश्मन की हिम्मत क्या होगी

हम जलते हुये अंगारे हैं।
दुश्मन को जला डालेंगे
अपनी धरती माता पर
हम सिर को कटा डालेंगे

हम कदम वढाते जायेंगे
रूकने की जरूरत न होगी-ए माँ

पंजाव हमारा है। प्यारा
इस पर जो नजर डालेंगे
सिर काट-काट करके हम
मिट्टि में मिला डालेंगे

हम आन-बान पर मिट जायें
किसी और की जुरते क्या होगी-ए माँ

है काश्मीर ये निराला
इसको जो छीनना चाहे
सोने की चिडिया है।यह
रहते हैं। नांग यहीं काले

जो पल भर में डस जायेंगे
बचने की जरूरत न होगी

चाहे बम्ब चले चाहे गोली
खेलेंगे रण में होली
हम वीरों का यह कहना
हम सह नहीं सकते बोली
हम मातृ भूमि पर मिट जाये
इससे शुभ मौत कहां होगी
ऐ माँ तेरे चरणो की कसम
दुश्मन की हिम्मत क्या होगी ॥

सौभाग्य के लिये आगे बढें

उच्चतिष्ठ महते सौभगाय (अथर्व २/६/२)

श्रेष्ठ बनना हमारे जीवन का एक मुख्य उद्देश्य है श्रेष्ठ बनना ही महान् सौभाग्य है।जो महापुरूष बनने के लिये प्रयत्नशील हैं वे धन्य हैं।

रूहो रूरोह रोहित: (अथर्ववेद १३/३/२६)

उन्नति उसकी होती है,जो प्रयत्नशील है। जो व्यक्ति प्रयत्न नहीं करते केवल भाग्य के भरोसे में बैठे रहते हैं वे सदा दीनहीन ही रहेंगे। संसार में अनेक ऐसे महापुरूष हुए हैं जो विषम परिस्थियों में भी कभी न घबराते हुए वे सदा आगे बढते और ऊचें उठते हुए रहें हैं। संकटों से जो कभी हतोत्साह नहीं हुए आप को भी ऐसा ही उन्नतिशील बनना है और अपने कार्यक्रम में आगे ही बढते रहना है।

ऋकवेद की एक सुक्ति है-

जैष्ठयाय वृद्धो अजायथा:। (१/२/५/)

अर्थात मानव जीवन श्रेष्ठ और बडा बनने के लिए है।यह मनुष्य का जीवन दिनों को व्यर्थ नष्ट करने के लिए नहीं,वरं कुछ महान् कार्य करने के लिए दिया गया है।यह मनुष्य जीवन हमें ऐसे ही प्राप्त नही हुआ है,कुछ अच्छा कार्य करने के लिए ईश्वर ने हमे यह शरीर दिया है।हमें चाहिये कि सदा उन्नति और प्रगति की ओर कदम रखें,सदा ऊंचे उठते रहें।कहा गया है कि

आप्नोहि श्रेयं सममभि संक्रामं। (अथर्ववेद २/११/१/)

हे मनुष्यों। जो तुम्हारे बराबर वाले हैं उनसे आगे बढो। श्रेष्ठ तक पहुंचो। मुर्खो से अपनी तुलना न करो। बुद्धिमानों का आदर्श ग्रहण करो।और अपनी बुद्धि को श्रेष्ठ कार्य में लगाओ

गुरूकुल भूमि में श्रावणी पर्व सोल्लास संपन्न

गुरूकुल आश्रम आमसेना में श्रावणी पर्व दिनांक:८-८-९८ को सोल्लास संपन्न हुआ। प्रात:काल गुरूकुल के आचार्य पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के आचार्यत्व में ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार एवं वेदारम्भ संस्कार किया गया। आचार्य जी ने यज्ञोपवीत व वेदारम्भ संस्कार की महत्ता बताई। बाहर से आए हुए आर्य सज्जनों ने श्रद्धा पूर्वक यज्ञोपवीत परिवर्तन किया। सायंकाल आर्य कुमार सभा की ओर भाषण प्रतियोगिता रखा गया था। इसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय आने वाले क्षात्रों को मुख्यअतिथी श्री लेंका मुख्य चिकित्साधिकारी नुआपडा ने प्रमाण पत्र वितरण किया। वे ब्रह्मचारियों के वक्तृत्व कला से बहुत प्रभावित हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलभूमि समाचार

चुनाव सम्पन्न
आर्य समाज कोटा

प्रधान - श्री शान्तिस्वरूप सक्सैना
मंत्री- श्री बनवारी लाल सिंघल
कोषाध्यक्ष- श्री प्रभुलाल शर्मा
पुष्तकाध्यक्ष- श्री वृजनन्दन मठसींगला

आर्य कुमार सभा
गुरूकुल आश्रम, आमसेना

प्रधान - ब्र.विनय कुमार आर्य
उपप्रधान- ब्र.सत्यप्रिय आर्य
मन्त्री - ब्र.मनोज कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- ब्र.महीपाल आर्य
पुस्तकाध्यक्ष - ब्र.दिलीप कुमार आर्य

आवश्यकता

''क वर्गीय'' आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय सिरसागंज हेतु एक सुयोग्य छात्रावास अधीक्षक की आवश्यकता है। जिसे वैदिक शिक्षा प्रणाली का जानकारी हो। संपर्क करें - **प्राचार्य**

आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय
सिरसा गंज, फिरोजाबाद (उ.प्र)

आर्य समाज को लोअर परेल का कार्यक्रम सम्पन्न

विगत दिनांक १९-७-९८ रविवार को आर्य समाज लोअर परेल मुंबई द्वारा नोटबुक वितरण समारोह एवं सत्कार सभारम्भ सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता श्री नन्द कुमार साटम नगरपिता मुबंई की रहे । मुख्यातिथि ओंकारनाथ जी, श्री मिठाई लाल जी, कै.देवरत्न जी रहे। सर्वप्रथम स्मरणिका उद्घाटन, उत्तीर्ण छात्रों को पारितोषिक तथा तीन सौ विद्यार्थीयों को नोटबुक दिये गये। ओंकार नाथ जी ने डी.ए.वी.कालेज तथा १२ शैक्षणिक संस्थाओं तथा १९ शाखाओं का परिचय दिया। मिठाई लाल जी ने गुरूकुल शिक्षा-प्रणाली पर जोर दिया। कै.देवरत्न जी ने विश्वभर के चार हजार आर्य समाजों का व्यौरा दिया तथा मारिशस की चर्चा करते हुए इन्होने ३७० समाजों की बातें बताई। भारत वर्ष में स्थित ३०० तकनीकी महाविद्यालयों तथा ऋषि दयानन्द के नाम बने रोहतक, अजमेर तथा पंजाब के तीन विश्वविद्यालयों की चर्चा की साथ में ४००गुरूकुलों को भी बताया। सभापति महोदय ने गौवध प्रतिबन्ध की जोरदार मांग कीं सभापति महोदय ने देश की आजादी प्रति छापी गयी नोटबुक्स की बहुत सराहना की क्योंकि संस्कृत, संस्कृति, संस्था, पूवर्जों की संस्मृति आदि बातों का स्मरणिका में समावेश किया गया है जो आज के युवकों में प्रेरणा प्रद बनेगी। साथ ही आर्य-समाज के भवन का जीर्णोधार हेतु सहयोग देने का भी वचन दिया।

मंत्री
मधुकर वि.यादव

श्री जगन्नाथ को हिन्दी-अकादमी सम्मान

प्रतिष्ठित 'संस्था' केन्द्रीय सचिवालय हिन्दीपरिषद्' के आजीवन सदस्य और वर्षों से उसके संयोजक (राजभाषा-कार्य) श्री जगन्नाथ को २८ मई १९९८ को दिल्ली-सरकार की हिन्दी अकादमी द्वारा, राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान के लिए, नई दिल्ली के मावलंकर हाल में सम्मानित किया गया। साहित्यकार सम्मान (राष्ट्रभाषा प्रचार-प्रसार सेवा) स्वरूप माननीय डा.मुरली मनोहर जोशी, मन्त्री, मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार ने प्रशस्ति-पत्र, स्मृति-प्रतीत एवं २१,००० रूपये की राशि समर्पित की।

मनु-प्रोक्त मध्य देश के हृदय, हिन्दी-भाषी राज्य हरियाणा की पावन पृथिवी के सुपुत्र ७४-वर्षीय श्री जगन्नाथ बाल्यावस्था से ही हिन्दी-प्रेमी, विद्या-व्यसनी और भारतीय संस्कृति के प्रबल आग्रही रहे हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर केन्द्रीय सरकार की सेवा में लगभग ३८ वर्ष रहकर उसे भी उन्होने अपनी हिन्दी-सेवा का ही क्षेत्र बना लिया; और राजभाषा-सम्बन्धी किसी पद पर न रहते हुए भी राजभाषा-कार्यान्वयन के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण छाप छोडकर १९८२ में सम्मान सेवा-निवृत्ति ग्रहण की। अभी भी वे राजभाषा हिन्दी के व्यवहार-पक्ष को सबल बनाने में प्राण-पण से जुटे हैं, जिसके प्रमाण-स्वरूप उनके द्वारा समय-समय पर भेजे हुए हजारों रचनात्मक सुझाव भारत-सरकार के विभिन्न मन्त्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों और राज्य-सरकारों आदि की हजारों फाइलों में मौजूद है और गम्भीर विचार- विमर्श के पश्चात् बहुत-से स्वीकृत भी हुए हैं। उनकी निष्ठापूर्ण और प्रभावी सेवा से हिन्दी-जगत् भली भांति परिचित है

श्रावणी पर्व वेद प्रचार कार्यक्रम संपन्न
आर्य समाज मठ पारा दुर्ग

दिनांक:२८-०७-९८ से १६-०८-९८ तक २० दिवसीय वेद प्रचार श्रावणी पर्व कृष्ण जन्माष्टमी सामवेद पारायण यज्ञ एवं तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव आर्य समाज मठपारा दुर्ग में धुम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर पं.नेत्रपाल जी शास्त्री ब्रिगेडियर श्री चितरंजन जी सावंत श्री विजय सिंग जी आदि विद्वानों ने नगर की विभिन्न परिवारों , बस्तियों, स्कूल कालेजों में भजन एवं प्रवचन किया। सामवेद परायण महायज्ञ के अवसर पर स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, पं. शिवधर जी, श्री पं.सेवक राम जी आदि विद्वानों का सार गर्भित भजन प्रवचन हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुलभूमि के सम्बन्ध में पाठकों की सम्मति

पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी की आचार्या बहिन मेधा देवी लिखती है –

कुलभूमि पत्रिकाया: अनुदिनमुन्नति वीक्ष्य भवतां श्रमं च विचार्य सम्मानवृद्धिमनुभवामि।
एवम्भूते अज्ञान परिपूर्णे स्थाने सुधार कार्य महत् कठिनं विद्यते तत् भवद्भि: पूर्यते इति महतो महन्त: साधुवादा: अर्प्यन्ते।

कोतवा जिला रायगढ से **अशोक कुमार श्रीवास** लिखते हैं

कुलभूमि एक ऐसी पत्रिका है जिसे पढकर बरबस अध्यात्म की ओर झुकाव हो जाता है पर कुछ जिज्ञासायें भी उत्पन्न होती है। ऐसी ही एक जिज्ञासा का समाधान आप से अपेक्षित है।

मृदुल आर्य आमला से लिखते हैं–

कुलभूमि पत्रिका आप के गुरुकुल से प्रकाशित होती है जो स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी के लिए बहुत अच्छी है एवं इसमें सभी जानकारियां एवं लेख बहुत अच्छे लगते हैं। पत्रिका में आपके (धर्मानन्द जी) द्वारा प्रकाशित लेख बहुत रोचकता से मैं पढता हूँ। सही मायने में विज्ञानशोध पत्रिका है। ऋषि के वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित एक आदर्श पत्रिका है। किन्तु पत्रिका छोटी है। पत्रिका में ज्यादा एवं अन्य जानकारियां बृहत रूप से छपने चाहिये। जिससे पाठक लाभ उठा सकें।

कुलभूमि के सहृदय पाठकों से नम्र निवेदन-

कुलभूमि के मान्य सदस्यों एवं सहृदय पाठकों से निवेदन है, कृपया आप अपना सुझाव व विचारों से हमे अवगत कराते रहें। आपका सुझाव ही हमारा संबल है। उन सभी सदस्य महानुभावों से भी प्रार्थना है, जिन्होने अपना शुल्क न भेजा हो कृपया शीघ्र भिजवायें। बार-बार के झन्झटों से बचने के लिए ३०० रू. भेजकर आजीवन सदस्य बनें।

शरच्चन्द्र आर्य
व्यवस्थापक, कुलभूमि

उत्कल प्रान्तीय आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

स्थान गुरूकुल आश्रम, आमसेना

दिनांक: ३ अक्टुबर से ९ अक्टुबर पर्यन्त

आप यह बात भलीभांति जानते हैं कि युवाओं को शक्तिशाली, चरित्रवान, अनुशासित और समाज के प्रति समर्पित बनाने के साथ ही शारीरिक आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति हेतु प्रेरित कर सुयोग्य नागरिक निर्माण करना, तथा संकट काल में राष्ट्र, धर्म एवं संस्कृति के लिए रक्त का एक –एक बूंद बैहाकर देश के वर्चस्व को अक्षुण्ण बनाये रखना आदि महत्वपूर्ण कार्य आर्यवीर दल, प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से अपना जन्म से ही करता आ रहा है। वर्तमान काल में विघटनकारी विदेशी शक्ति तथा भारत के तथाकथित धर्मनिरपेक्षतावादी संगठन एवं धर्म का व्यवसायीकरण करने वाले दलों की सामूहिक गडबडी से भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय अखण्डता को बहुत खतरा हो गया है। इस प्रतिकूल दशा में समय की पुकार के अनुसार अपने उद्देश्य की श्रृखंला में उत्कल प्रान्तीय आर्यवीर दल की ओर से गुरुकुल आश्रम की पुण्य भूमि में आगामी ३ अक्टुबर से लेकर ९ अक्टुबर पर्यन्त सप्तदिवसीय आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें प्रशिक्षित योग्य प्रशिक्षकों के द्वारा लाठी, भाला, छुरी, योगासन, जूडोकराटे, सन्ध्या हवन आदि विविध उपयोगी आत्मरक्षक उपायों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। अत: समस्त राष्ट्रभक्त सज्जनों से अनुरोध है कि इस शिविर में अपनी भावी आशाओं को प्रवेश कराके राष्ट्र धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में अपना अमूल्य योगदान दें।

निर्देश––शिविरार्थी नित्योपयोगी वस्तु चादर, बिछौना, थाली कटोरी, कापी, कलम, लाठी इत्यादि साथ लेकर आवें, कोई मूल्यवान वस्तु साथ न लावें।

हाफ पैंट (खाकी) सफेद बनियान अत्यावश्यक है, सफेद शर्ट, जूता, सफेद मोजा आदि ला सकें तो उत्तम है।

शिविरार्थियों की आयुसीमा १२ से ३५ वर्ष है।

ता: २/१०/९८ सायं गुरूकुल पहुंचना होगा।

प्रथम वर्ष शिक्षा प्राप्त किये योग्य शिविरार्थी को द्वितीय वर्ष की शिक्षा दी जायेगी।

संचालक — आर्यवीर दल
आचार्य — गुरुकुल आश्रम, आमसेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Kulabhoomi September 1998 Regd No. 0-596
Gurukul Ashram Amsena Khariar Road Nuapada 766109 Ph. (06678) 22349

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध एवं ताजी जड़ी बूटियों से निर्मित गुरुकुल आश्रम आमसेना की कुछ विशिष्ट दवाईयां

१. ब्राह्मी आंवला तेल

ब्राह्मी एवं आवंला के स्वरस से तैयार यह तेल बालों का सफेद होना एवं झड़ने को रोककर घने एवं लम्बे करता है। सिर दर्द, मस्तिष्क की कमजोरी, पागलपन में भी उपयोगी है।

२. आयुर्वेदिक चाय

दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, काली मिर्च, पीप्पल सौंफ, तुलसी आदि के योग से निर्मित हानिरहित यह मधुर पेय इसके निरन्तर प्रयोग से गैस, कब्जी, भूख की कमी, सर्दी, जुकाम नष्ट हो जाते हैं।

३. संजीवनी तेल

संजीवनी आदि बूटी से बना यह तेल हर प्रकार के जले, घावादि में अत्यंत उपयोगी है। बहते खून को तुरन्त रोक देता है।

४. सर्पविषामृत

कैसा भी सांप काट दे इसके एक दो खुराक देंने से ही जहर समाप्त हो जाता है।

५. महिलामृत पेय

स्त्रियों की कमजोरी तथा हर प्रकार के रोगों को दूर करने में रामबाण है।

६. अशोकारिष्ट

यह महिलाओं का प्राकृतिक मित्र है। स्त्रियों के सभी रोगों में विशेषकर प्रदर एवं कमजोरी में उपयोगी है।

७. बलदामृत

अंगूर आदि फलों से तैयार यह टॉनिक सभी प्रकार की कमजोरी बुद्धि की थकावट आदि में अमृत है।

८. धातु पौष्टिक चूर्ण

वीर्य संवंधी सभी प्रकार के रोगों एवं कमजोरी को दूर कर शरीर को ओज तेज से भर देता है। इसके साथ वीर्य बंधिनी बटी या वसन्त कुसुमाकर रस लेने से तुरन्त लाभ मिलता है।

९. शिशु सुधा

यह सुमधुर पेय छोटे बच्चों के सभी रोगों में अत्यंत उपयोगी है। इसके निरन्तर सेवन से बच्चे हृष्ट-पुष्ट एवं निरोग रहते हैं। सुखा रोग, अपचन, दस्तों का होना, दांत निकलते समय होने वाले कष्ट इसके सेवन कराने से नहीं होते।

१०. सौन्दर्य रसायन (कैप्सूल)

यह कैप्सूल सभी प्रकार के चर्म रोगों में विशेष उपयोगी है। रक्त शुद्ध करने में रामबाण है। चेहरे के दाग, झाई आदि को दूर कर मुख की आकृति को सुन्दर बना देती है। केश के रोगों में भी अत्यंत उपयोगी है। बालों का झड़ना, सफेद होना, इस के प्रयोग से तुरन्त रुक जाता है। यदि युवावस्था में इसका लम्बे समय तक उपयोग किया जाये तो प्र... ...ाले हो जाते हैं। एक बार प्रयोग कर परीक्ष...

व्यवस्थापक
आयुर्वेदिक फार्मेसी
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, जि.-नवापारा (उड़ीसा)

सेवा में,

३०४९: श्री सम्पादक जी
'गुरुकुल पत्रिका' गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ.प्र.)

ग्राहक संख्या

गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये भारत आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र

कुलभूमि

दीपावली के पावन पर्व और महर्षि निर्वाण दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनायें -

LIBRARY
Gurukul Kangri Vishwavidyalaya
HARDWAR

ब्रह्मचारी ब्रह्म विद्या का विशद विश्राम था।
धर्मधारी धीर योगी, सर्व सद्गुण धाम था॥
कर्मवीरों में प्रतापी, पर निरा निष्काम था।
श्री दयानन्दर्षि स्वामी, सिद्ध जिसका नाम था॥
बीज विद्या के उसी का पुण्य पौरुष बो गया।
देख लो लोगों दुबारा, भारतोदय हो गया॥

(आर्य पर्व पद्धति)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरजानन्द संस्कृति परिषद् द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं में भाग लें

छात्रों एवं नवयुवकों को वैदिक धर्म का ज्ञान देने के लिए धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन नवम्बर के अन्तिम रविवार को होगा। आर्य सज्जनों तथा आर्य विद्यालय के अध्यापकों से निवेदन है कि अपने सुपुत्र एवं छात्रों को अधिक से अधिक संख्या में परीक्षा में बैठने की प्रेरणा दें। प्रथम परीक्षा **''सिद्धान्त कुसुम''** है। इसके लिए वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी १०० अंक निर्धारित है। इसका शुल्क पुस्तक सहित १०/-रू. अन्यथा ५/- रू. है। गतवर्ष जिन परीक्षार्थियों ने **''सिद्धान्त कुसुम''** परीक्षा दी थी। उनके लिये इस वर्ष **''सिद्धान्त प्राज्ञ''** निश्चित हुई है। इसकी परीक्षा फीस ६ रू. है। विशेष जानकारी के लिये सम्पर्क करें।

श्री परीक्षा मंत्री
विरजानंद सं.परिषद्
गुरूकुल आश्रम,आमसेना
खरियार रोड,नवापारा उड़ीसा- ७६६१०९

आयुर्वेदिक एवं हिन्दी परीक्षायें

गुरुकुल में हिन्दी विश्वविद्यालय हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद की परीक्षाओं का केन्द्र है। ये परीक्षाएं शासन से मान्यता प्राप्त है। यहां पर प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, शिक्षा विशारद (B.ED)आयुर्वेद रत्न आदि की परीक्षाएं होती है। इच्छुक सज्जन शीघ्र सम्पर्क करें। फार्म भरे जा रहे हैं।

कुलभूमि के सहृदय पाठकों से नम्र निवेदन-

कुलभूमि में मान्य सदस्यों एवं सहृदय पाठकों से निवेदन है,कृपया आप अपना सुझाव व विचार से हमें अवगत कराते रहें। आपका सुझाव ही हमारा संबल है।उन सभी सदस्य महानुभावों से भी प्रार्थना है,जिन्होंने अपना शुल्क न भेजा हो कृपया शीघ्र भिजवायें। बार-बार के झन्झटों से बचने के लिए ३०० रू. भेजकर आजीवन सदस्य बनें।

व्यवस्थापक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के बारे में चुनाव सूचना

अधोहस्ताक्षरित को दिल्ली हाई कोर्ट के माननीय **श्री जस्टिस अरुण कुमार** एवं माननीय **श्री जस्टिस मनमोहन सरीन** के खण्ड पीठ ने २२.९.१९९८ के आदेशानुसार मतदाता सूची तैयार करने तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के पदाधिकारियों तथा सदस्यों का चुनाव, नवम्बर १९९८ में या तत्पश्चात् जितना शीघ्र सम्भव हो दिल्ली में कराने के लिये नियुक्त किया है।

माननीय कोर्ट ने आदेश दिया है कि उन पार्टियों को जिनके पास आवश्यक रिकार्ड हैं, उन्हे वह अधोहस्ताक्षरित को दे देने चाहिये।

माननीय कोर्ट ने यह स्पष्ट किया है कि चुनाव कराने के सम्बंध में कोई भी वाद-विवाद, इसी कोर्ट के अधिकार क्षेत्र में होगा। अधोहस्ताक्षरित ने यह कार्य दोनों पार्टियों की इच्छानुसार माननीय कोर्ट के कहने पर निशुल्क करना स्वीकार किया है। चूंकि यह चुनाव अधोहस्ताक्षरित के निरक्षण निर्देशों एवं नियंत्रण के अधीन कराया जाना है,इसलिये स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव कराने हेतु सूचित किया जाता है:-

ए) इसअधिसूचना से पूर्व किसी व्यक्ति या ग्रुप की ओर से निर्धारित कोई भी चुनाव तिथी रद्द की जाती है।

वी) कोई भी व्यक्ति या ग्रुप,प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, इस चुनाव प्रक्रिया के सम्बंध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा या किसी आर्य समाज संगठन या उस से सम्बंध अन्य संगठन के अन्तर्गत किसी पत्रिका या समाचार पत्र आदि में विज्ञापन व साधन या सम्पत्ति आदि का प्रयोग नहीं करेगा।

सी) सभी सम्बंध व्यक्ति,चुनाव प्रक्रिया के सम्बंध में अपने अधोहस्ताक्षरित को १०.१०.१९९८ या उससे पूर्व निम्नलिखित पते पर भेज सकते हैं।

डी) चुनाव कार्यक्रम इसके बाद प्रस्तुत होगा।

हस्ताक्षर
(आर.पी. बंसल) वरिष्ठ अधिवक्ता
चुनाव अधिकारी
२३५, लायर्स चेंबर्स
दिल्ली हाईकोर्ट कम्पाउण्ड, शेरशाह रोड, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख्य पत्र

वर्ष	-	२०
अंक	-	१०
माह	-	अक्टूबर
सृष्टि संवत्	-	
१,९६,०८,५३,०९९		
विक्रमी संवत	-	२०७५
दयानंदाब्द	-	१७४

प्रतिष्ठाता:
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक:
स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

सह सम्पादक:
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक:
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता:

गुरूकुल आश्रम आमसेना
व्हाया-खरियार रोड
जिला-नवापारा(उडीसा)
पिन-७६६१०९
फोन-(०६६७८)२२३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-

आजीवन -३००/-

एक प्रति - २.५०

सम्पादकीय

दीपावली का पावन संदेश

जब-२ संसार में मनुष्य का नैतिक पतन होता है संसार में किसी प्रकार का अज्ञान एवं भ्रम अधिक बढ जाता है ऐसे विपरीत समय में भगवान् किसी पवित्र एवं महान् आत्मा को सन्मार्ग दिखाने के लिये संसार में भेजते हैं। सृष्टि के प्रारम्भ से आजतक ऐसे महामानव इस धरा पर आये और अपना दिव्य संदेश देकर चले गये,यह अवस्था महाभारत के पीछे विशेष रूप से देखने को मिलती है। परन्तु उन महापुरूषों ने अपने-अपने समय में मनुष्य के किसी एक विशेष कष्ट का ही निवारण करने का यत्न किया अर्थात् वे एक दिशा को लेकर ही चले परन्तु १९वी शताब्दी में गुजरात की उर्वरा भूमि में जन्म लेने वाले महान्योगी वेदोद्धारक प्रात: स्मरणीय महर्षि दयानन्द जी महाराज ऐसी विभूति हुए हैं ,जिन्होंने मानव ही नहीं प्राणी मात्र के उद्धार का यत्न किया। प्रत्येक प्राणी को सुरक्षा एवं स्वतन्त्रता दिलाने का यत्न किया। वेदों के नाम पर फैले हुए अनेक भ्रमजालों को हटाया। निराकार ईश्वर की उपासना बताकर जड पूजा से मानवमन को ऊपर उठाया। स्त्रियों की चित्कार से विह्वल होकर उनकी रक्षा,शिक्षा एवं महत्ता बतलायी। उनको गृहलक्ष्मी एवं देवता का पद दिया। गौ का आर्थिक पक्ष सुझाया अर्थात् गौ को माता इसलिये कहते हैं कि वह मनुष्य से अधिक उपयोगी है। इसलिये उसकी रक्षा करना अनिवार्य बतलाया। वहीं पर उस समय के पराधीन देशवासियों को स्वतन्त्रता एवं स्वराज्य का सन्देश दिया। इन सवके बदले उस समय के मनुष्य ने ऋषि को विष के प्याले पिलाये। ऋषि वह भी हंसते-हंसते पी गये। और इसी पावन दिपावली के दिन आर्य समाज रूपी दीप जलाकर सदा के लिये अपनी ज्योति को ईश्वर की ज्योति में अर्पित कर गये। वैदिक धर्म के प्रचार के लिये ऋषि ने जो कष्ट सहे उसे पढकर ही मन काँप उठता है। वे परमास्तिक, श्रद्धालु और उदार थे। इसलिये सब मनुष्यों को अपनी ही भावना से देखते थे। वे अपने प्रत्येक अनुयायी को एक आदर्श एवं श्रेष्ठ सत्य के लिये न्यौछावर करने वाला मानते थे। इसलिये उन्होने आर्य समाज को आदर्श प्रजातन्त्र प्रणाली दी कि यदि मैं एक को अपना उत्तराधिकारी बनाऊंगा तो वह अकेला ही काम करेगा। परन्तु प्रजातन्त्र प्रणाली में सभी आर्य अपने को मेरा उत्तराधिकारी मानकर मेरी ही तरह सत्य के पथिक बनकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में अपना जीवन अर्पित करेंगे। यदि उन्हें आज के मरवाहों की कल्पना होती तो वे कदापि प्रजातन्त्र प्रणाली को न मानते। आर्यसज्जनों! आईये उनकी इस बलिदान वेला पर हम अपने अन्दर की ओर झांके। क्या हम अपने तुच्छ स्वार्थ एवं मानसम्मान के लिये महर्षि के आर्यसमाज के संगठन का दुरूपयोग कर महापाप के भागी तो नहीं बन रहे हैं। थोडी सी पद प्रतिष्ठा एवं लोभ के लिये आत्म हनन तो नहीं कर रहे हैं? इसका उत्तर कोई दूसरा नहीं देगा अपनी ही आत्मा देगी। एकान्त में शान्त चित्त बैठकर प्रभु को साक्षी मानकर थोडा गम्भीरता से सोंचे और उन मिथ्या भ्रमों एवं दोषों से ऊपर उठने का यत्न करें। दयालु प्रभु एवं महर्षि का त्याग आपको शान्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करें।

व्रतानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य और असत्य के असमंजस में हम

ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत, वी.एस.एम.

गुरूकुल में राजपुत्र और रंकपुत्र एक साथ शिक्षा पा रहे थे। एक दिन गुरू जी ने एक सरल वाक्य याद करने को दिया, 'सत्यं वद धर्म चर' – सत्य बोलो और धर्म पथ पर चलो। अगले दिन गुरू जी ने फिर पूछा'' पाठ याद हो गया ?'' सभी ने एक स्वर में उत्तर दिया ''जी गुरू जी''। केवल एक के मुंह से स्वर न निकला; युधिष्ठिर मौन थे। पुन: प्रश्न किए जाने पर भोलेपन से युधिष्ठिर ने कहा''गुरू जी, वाक्य कंठस्थ करने में कोई कठिनाई नहीं है किंतु आंचरण में अडंचने हैं।''सत्य पथ पर प्रयास के लिए गुरू जी ने युधिष्ठिर की सराहना की। जीवन में अनुशासन लाने का प्रथम सोपान है। सदैव सत्य बोलो, सत्य आचरण करो; असत्य को परे करो – ऐसे वचन बचपन से सुनाए और सिखाए जाते हैं। बडे समझाते हैं छोटों को कि सत्य की विजय होती है, असत्य की नहीं। भारत के राजचिन्ह का आदर्श वाक्यांश है''सत्यमेव जयते'' – सत्य की ही विजय होती है। संविधान रचयिता अकारण ही एक शब्द ''नानृतम्''उस आदर्श वाक्य को छोड गए; 'असत्य को नही' – यह क्यों छुट गया और क्या इस छुट की भूल ने समाज पर प्रतिकूल प्रभाव डाला ? अब यह केवल अनुसंधान का विषय बन कर रह गया है। आधुनिक भारत में हिंदी की कक्षा में अध्यापिका सत्य की महिमा का मंडन कर रही थीं। संदर्भ सहित दोहा पढा गया। 'सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप; जाके हिरदय(हृदय)सांच है ताके हिरदय आप।'सुनते ही पिछली पंक्ति का एक विद्यार्थी बोला – 'मैडम, यदि किसी ने इस दोहे पर अमल किया तो भूखों मर जाएगा।'कक्षा खिलखिलाकर हंस पडी। उस विद्यार्थी की टिप्पणी में संभवत: आज के जीवन का सत्य सार था। न जानते हुए भी वह युधिष्ठिर की भूमिका में आ रहा था। बस परिस्थितियां बदल गई थीं। बदली हुई परिस्थियों में क्या हमारी सामाजिक भूमिकाएं भी बदल गई हैं ?कदापि नहीं। हां, यह बात है कि अपनी – अपनी भूमिकाओं को निभाने में न्यूनताएं हैं। समाज से सत्य का लोप नहीं हुआ है किंतु ह्रास स्पष्ट है। सत्य का ह्रास सामाजिक पतन का द्वार खोल देता है, और फिर अनार्य मान्यताएं आर्य धर्म के धव[ल] रूप को धूमिल करने लगती हैं। सत्य के पक्षधर धर्म के रक्षक हैं; असत्य के पथ पर चलते ही पहले रक्षक और फि[र] जिसकी रक्षा की जा रही है, दोनों नष्ट हो जाते हैं।'धर्म रक्षति रक्षित:', आज के संदर्भ में उतना ही सत्य है जित[ना] पहले था। सत्य और असत्य के असमंजस में अनेक बा[र] पडते हैं हम। कभी – कभी तो एक ही दिन में कई बार। यदि फोन की घंटी बजने पर, पिता अपने पुत्र से कहता है कि फोन पर कह दो कि मैं घर पर नहीं हूं और अबोध बालक कह देता है – 'पिताजी कह रहे हैं कि वह घर पर नहीं हैं'; तो सत्य बोलने के लिए उसकी ताडना की जाती है। जब पिता कई बार अपने पुत्र से इस प्रकार झूठ बोलने को कहता है तो क्या उसे फिर कभी वह सत्य बोलने की प्रेरणा दे सकता है ? उत्तर स्पष्ट है। घर में ही झूठ की नींव पर सत्य का महल नहीं बनाया जा सकता है।

सत्य पर अधिक बल देने से पारिवारिक संबंध सुदृढ होते हैं क्योंकि सत्यनिष्ठ परिवार प्रमुख अन्य सदस्यों को कभी भी भ्रम में नहीं रखेगा; न ही अपने हित के लिए उनका अहित करेगा। जब मन में कपट आ जाए तो पारिवारिक ढांचा चरमरा कर बैठ जाता है। यही बात गुरू शिष्य के संबंध पर भी लागु होती है। जब दोनों एक दूसरे से झूठ बोल कर अपना – अपना उल्लू सीधा करने में लगे रहते हैं तो एक दूसरे की जान लेने पर उद्यत हो जाते हैं। झूठ जन्म देता है लोभ लालच को, और ऐसा पाखंडी अपने आप तिलांजलि दे देता है सत्य को। किंतु असत्य से अर्जित किया गया धन सुख शान्ति दे सकता है ? जब गुरू ही चेले – चेलियों को झूठा विश्वास दिलाते हैं कि उनके पापों को परमात्मा क्षमा कर देगा, यदि वे गुरू(धूर्तजन) की तन – मन धन से सेवा करें तो यह झूठ एवं अधर्म की पराकाष्ठा होती है। मध्य युग में पोप और उनके मंडलेश्वर, धन के बदले अपने श्रद्धालुओं को 'स्वर्ग प्रवेश पत्र' दिया करते थे। कर्मो के आधार पर नहीं अपितु धन बल से भ्रमित मनुष्य सुख की खोज का प्रयास करते हुए भूल भुलैया में भटका करता है। ऐसे ही गुरु – शिष्यों पर यह दोहा चरितार्थ होता है –

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'गुरू लोभी, चेला लालची, दोनों खेले दांव
भव सागर में डूबते बैठ पत्थर की नाव।

(सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास से उद्धृत) किसी कठिन समस्या का समाधान पाने के लिए सत्य को त्यागने और असत्य को अपनाने का लाभ निर्बल मानव के मन मेंरहता है। नैतिक बल के आधार पर हम सत्य मार्ग पर सरलता से चल सकते हैं। सत्य मार्ग पर चलने से हमें और अधिक नैतिक बल मिलता है। यों कहिए कि सत्य मार्ग और नैतिक बल एक दूसरे के पूरक हैं। नैतिक बल की कमी से सत्य पथ संकुचित हो जाता है और संकुचित सत्य से नैतिक बल क्षीण होता है। जब महाभारत के युद्ध में, युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य से कहा-'अश्वत्थामा हतो नरो वा कुंजरो वा' तो उन्होंने नैतिक बल की कमी से ही सत्य का साथ छोड दिया था। आज भी न्यायालय में एक गवाह अपनी गवाही देने से पूर्व यह शपथ लेता है, 'जो कुछ कहूंगा, पूरा सच कहूंगा और सिवाय सच के कुछ नहीं कहूंगा', किंतु कोर्ट कचहरी में पल-पल असत्य का ही बोलबाला रहता है। कायदे कानून कुछ ऐसे बने हैं कि सत्य की हत्या नित्य होती है। नया गवाह तो सत्य और असत्य के असमंजस में रहता है किंतु पुराना ढीठ गवाह तो सत्य को परे कर कानूनी सच (झूठ का उपनाम) का चक्रव्यूह बनाने में वकील के भी कान काटता है। यह ध्रुव सत्य है कि 'कानूनी सच' के मर्म को जानते हुए भी, शासन तंत्र उसमें सुधार लाने में असमर्थ है; अपने को शक्तिहीन महसूस करता है। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका-तीनों ही अपने संवैधानिक अधिकारों का प्रयोग करते हुए सत्य की खोज में संलग्न है किन्तु सत्य अभी भी मृग मरीचिका समान है। एक सामान्य नागरिक सत्य और असत्य के बीच झूलता रहता है-किंकर्तव्यविमूढ। आज के युग में क्या 'सत्य' बंबइया फिल्म के नायक समान है जो खलनायक (अर्थात असत्य) से फिल्म में पूरे तीन घंटे तो पिटता रहता है किंतु अंतिम दृश्य से तनिक पहले मुष्टिका प्रहार के बल पर उसे धराशायी कर देता है और नायिका (अर्थात समाज) पर उसका वर्चस्व छा जाता है। बंबइया फिल्म का निर्माता सुखांत दृश्य से दर्शकों का मन बहलाता है और पैसे बटोरता है, वह भी दोनों हाथों से किंतु वास्तविक जगत् में सारे समय सत्य को पिटता देख कर किशोर का कोमल मन स्वत: असत्य के सांसारिक ऐश्वर्य की ओर झुकने लगता है। असत्यप्रधान समाज की चकाचौंध अल्प समय के लिए ही होती है और फिर वह पतन की ओर बढते-बढते विनाश के कगार पर जा पहुंचता है। इतिहास साक्षी है ऐसे अनेक पतित राष्ट्रों का और उनकी चर्चा अब पुस्तकों के पन्नों में ही होती है। राजा से रंक बनने में विलंब कहां? असत्य पथ पर तेज ढलान है और यहां पर अवनति की गति असीमित है। रोमन साम्राज्य का उत्थान, अवनति और पतन सत्य और असत्य की गाथा है। आरंभ में सत्य और श्रेय मार्ग की कठिन चढाई पर चढ कर रोम निवासी कुलश्रेष्ठ बने। फिर, असत्य और प्रेय मार्ग के ढलान पर फिसलते हुए पूरा विशाल रोमन साम्राज्य अतीत के अंधकार में आंखों से ओझल हो गया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम सत्य मार्ग का सदैव अनुसरण करते रहे और हजारों वर्षो से हमारे आदर्श हैं। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र हमारे समाज के लिए आज भी एक ज्वलंत आदर्श है। गांधी जी ने बचपन में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के जीवन पर आधारित नाटक देखा था और आजीवन सत्य पथ पर चलने का संकल्प किया था। आजकल ऐसे नाटक का मंचन प्रगतिशील जीवन का अंग नहीं है। आज का युवा वर्ग सत्य मार्ग पर कैसे चल सकता है जब वह अपने सत्यवादी पूर्वजों से प्रभावित नहीं है। आशा की किरण अभी कहीं-कहीं दिखाई देती है। प्रगतिशील संस्था आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्यों के मार्गदर्शन के लिए १८७७ ईस्वी में लाहौर में दस नियम बनाए थे। उनमें से एक है-'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोडने में सर्वदा में उद्यत रहना चाहिए। उद्यत तो रह सकते हैं। सत्य दिशा में आज एक कदम लेंगे, कल दो कदम लेंगे और फिर सत्य मार्ग के पथिक बन जाएंगे। मार्ग कंटकमय अवश्य है, किंतु गंतव्य है-आकर्षक उद्यान, फल फूल से परिपूर्ण।

पता: ब्रिगेडियर चितरंजन सावंत, विशिष्ट सेवा मेडल
६०९ सेक्टर २९, नोयडा-२०१ ३०३
फोन: (०११८)-५४६७७३; ५५१०५२; ५४२८२७
(दिल्ली से कोड के स्थान पर केवल ९१ लगाएं)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गा रहस्य

ले.कुञ्जदेव मनीषी
गु.आ.आमसेना

नवरात्री,वर्ष में दो बार आती है और बडे धूम-धाम से मनाई जाती है। लोग बडे उत्साह से अपना समय और धन खर्च करते हैं। परन्तु दु:ख की बात यह है कि दशहरे के समय दुर्गा के लिए भैंसा काटा जाता है। लाखों बकरे कटते हैं। यह हमारे समाज की मूर्खता और अशिक्षा का प्रबल प्रमाण है। आइए हम सब इन भयानक कुरीतियों से लडें।

दुर्गा वास्तव में संगठन शक्ति का प्रतीक है। यह तथ्य दुर्गा की कथा से स्पष्ट होगा। दुर्गा का जन्म देवताओं की सम्मिलित शक्ति से हुआ है। अंकुरों से **संगस्त्र** होकर देवता इकठ्ठे हुए और उन्होंने अपनी-अपनी दिव्य शक्तियों को एकत्रित करके एक सम्मिलित केन्द्रीय शक्ति को उत्पन्न किया जो दुर्गा कहलाई और उस दुर्गा ने असुरों का संहार किया देवता पृथक-२ रहकर असुरों को परास्त नहीं कर सकते थे इसिलिए उन्होंने अपनी शक्ति को केन्द्रित किया। मनुष्य भी अकेला अपनी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त नहीं करता। उसे दुसरों के सहयोग से एक केन्द्रीय शक्ति उत्पन्न करनी होती है। जिसके पास जितना बडा संगठन है,जितनी प्रबल जनशक्ति है,वह उतना ही सक्षम है,समर्थ है। प्रजातंत्र के राज्यों में से केवल बोट पर ही सारी राज्यसत्ता केन्द्रित है,राजनीति के अतिरिक्त सामाजिक,आर्थिक,धार्मिक,आध्यात्मिक क्षेत्रों में भी संघशक्ति की अतुलित महिमा है। कलियुग में तो शास्त्रकारों ने विशेष रूप से ''संघशक्ति'' को ही प्रधानता दी है। दुर्गा उसे कहते हैं जो कठिनाई को दूर करे। देवताओं को श्रेष्ट पुरुषों की सम्मिलित शक्ति ही दुर्गा है। वह मनुष्यों की व्यक्तिगत और सामूहिक कठिनाइयों को दूर करती है। असुरों की सामूहिक शक्ति तो संसार में विपत्तियों को बढाती है। पर देवताओं का संगठन सदा कठिनता का निवारण करने वाला होता है। अपने स्वभाव के लोगों का अच्छे उद्देश्य की पूर्ति के लिए जितना मजबूत और जितना बडा संगठन बन जाय उतना अच्छा। तिनका-तिनका मिलकर हाथी को बांधने वाला रस्सा बन जाता है। देवी बलि से प्रसन्न होती है,बलि का अर्थ है त्याग। त्याग से ताजगी,चैतन्यता,स्फूर्ति और क्रियाशीलता आती है। ऐश, आराम रूपी बकरे और आलस्य रूपी भेंसे को बलि देवी के आगे चढानी होती है। प्रयत्न,परिश्रम,त्याग,साहस और कष्ट सहिष्णुता के बल पर विजयश्री प्राप्त करना होता है।देवताओं में और दो देवियाँ प्रसिद्ध है। सरस्वती और लक्ष्मी।सरस्वती का एक आलंकारिक चित्र देखने को मिलता है। जिसमें सरस्वती के एक हाथ में अक्षमाला, दुसरे में वेद, दो हाथों में वीणा होती है श्वेत कमल आसन,और मयूर यह सब वाणी का समग्र चित्र है। इसकी व्याख्या ऐसे की जा सकती है।

सरस्वती = ज्ञान वाली वाणी।

अक्षमाला= वर्णमाला। वर्णों का उच्चारण वाणी ही करती है। वीणा-नियमितता,सरसत,भावसिक्त।

श्वेतकमल= सात्विक श्रद्धा ज्ञानमयी वाणी की आधार भूमि श्रद्धा है। इसीलिए गीता में कहा है

''श्रद्धावान् लभते ज्ञानम् ''।

मयूर ='मह्यां रौति इति मयूर:। पृथ्वी में शब्द करने वाला वेद का संदेश,उपदेश,और प्रवचन करने वाला ही मयूर है। ऐतरेय ब्राह्मण में वाणी को सरस्वती कहा गया है।

बागवेन सरस्वती = यह ज्ञानमयी वेदवाणी ही सरस्वती है। यही विद्या,बुद्धि दायिनी है। इसकी पूजा आराधना करने वाला गडरिया से कालिदास बन जाता है।

महर्षि दयानन्द जी ने सरस्वती शब्द को ईश्वर का नाम बताया है और व्याख्या इस प्रकार की है।

''सरो विविधं ज्ञानं विद्यते यस्यां चितौ सासरस्वती''।

जिसको विविध विज्ञान अर्थात् शब्द अर्थ सम्बन्ध प्रयोग का ज्ञान यथावत् होवे,इससे उस परमेश्वर का नाम सरस्वती है। इससे यह भी अनुमान लगता है कि ईश्वर के अलग-अलग शक्तियों के अलग-अलग नाम है।

विशेष जिन्हे लक्ष्मी का रहस्य जानने की इच्छा हो वे पत्र लिखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाण दिवस पर विशेष

दीपमालिका

□ पं.कर्मवीर शास्त्री विद्यावाग्मी

भारत वर्ष आरम्भ से एक पर्वप्रिय देश रहा है। यहां पर साल भर एक के बाद एक पर्व आते हैं और भारतीय जनमानस को एकता भाईचारा आनन्द एवं उत्साह पूर्वक अपने कार्य संलग्न रहने की सत्प्रेरणा प्रदान कर चले जाते हैं। व्याकरण के पृपालनपूरणयो: धातु से पर्व शब्द की सिद्धि होती है जिसका अर्थ जनान् आनन्देन पूरयति इति पर्व: अर्थात् जो लोगों को आनन्द से भर दे वह पर्व है।

भारत के चार मुख्य पर्वों में **'श्रावणी उपाकर्म-विजयादशमी-दीपमालिका है ।** हो**लकोत्सव ''** दीपमालिका का अपना एक अलग महत्व है। दीपावली का शब्द कर्णविवर में प्रवेश करते ही हमें अनायात चमचमाता प्रकाशपुन्ज दिखाई पडता है। मानसमुकुर में स्वत: प्रसन्नता का तरंग बह जाता है। वास्तव में यह प्रकाश का पर्व है जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर असत्य से सत्य की ओर सतत चलने की प्रेरणा प्रदान करता है। यह पर्व आदिकाल में नवशरस्येष्टि रूप में पालन किया जाता था। कालान्तर में इस पर्व के दिन लोग नवशरस्यागमन की खुशी में रात को दीप प्रज्वलित करने लगे और शनै:-शनै: इसका नाम दीपमालिका अर्थात् दीपावली में परिवर्तित हो गया। पहले गांव-२ में इस अवसर पर नवान्न से प्रथम यज्ञ करते थे पश्चात खाना आरम्भ करते थे।

भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं--

यज्ञ शिष्टाशिन: सन्तोमूच्यन्ते सर्व क्लिविषै :
मुञ्जते ते त्वघं पापं ये पचन्त्यात्मकारणात् ॥

अर्थात् जो व्यक्ति नवान्न को सर्वप्रथम यज्ञ में आहुतियाँ द्वारा देवताओं को खिलाते हैं उसके पश्चात् स्वयं खाते हैं वे सर्वाधिक पापों से विमुक्त हो जाते हैं। वे व्यक्ति पाप ही केवल खाते हैं जो अपने लिए ही पकाते हैं। कहने का अभिप्राय यह है नवान्न होने के पश्चात् यह यज्ञ की प्रक्रिया पूर्वकाल से चली आ रही है। दो बार वर्ष में फसल होने वाले हमारे देश में यह नवशरस्येष्टि का पर्व दीपावली एवं होली में दो बार मनाया जाता था। आजकल दीपावली के दिन केवल दीप जलाकर इसकी रस्म अदा की जाती है। यज्ञ की बात तो बहुत दूर इस पवित्र क्रिया के स्थान पर फटाखे आदि फोडकर और वायुमण्डल को दूषित किया जाता है। दीपावली के दिन द्युतक्रीडा करना भी शुभ माना जाता है जिसे कि वेद भगवान ने दिव्य कहकर घोर निन्दनीय कर्म वतलाया है। इसका भयंकर दुष्परिणाम महाभारत का महासंग्राम जाज्वल्यमान उदाहरण है। इस तरह की तमाम अनैतिकतायें इस पर्व के गौरव एवं शालिनता को धुलिसात् करने के लिए पर्याप्त है। कुछ लोग दीपावली का संबन्ध श्री राम जी के लंकाविजय कर अयोध्या आगमन की खुशी में अयोध्यावासियों द्वारा दीप जलाने को मानते हैं जो कि यथार्थ के धरातल में ठीक नहीं वैठता। जरा गौर करिये रामचन्द्र जी ने विजयादशमी के दिन युद्धयात्रा की थी। वानरराज सुग्रीव आदि से मित्रता कर वानरों की सहायता से सेतुवंध वांधकर लंका में चढाई की और चैत्र कृष्ण चतुर्दशी के दिन रावण का वध किया। अमावस्या के दिन उसकी अन्त्येष्टि कर विभीषण को राजा बनाया उसके पश्चात् सीता सहित प्रस्थान कर चैत्रशुक्ल पञ्चमी के दिन अयोध्या पहुंचे। इसका अर्थ हुआ ग्रीष्मऋतु और वह भी शुक्लपक्ष की रात को अयोध्यावासियों द्वारा दीप जलाया जाना तर्क संगत नहीं लगता। अत्यन्त प्रसन्नता जाहिर करने के कारण उनका दीप जलाना हम मान भी लें तो इस बात को कदापि नहीं मान सकते कि इसी दिन दीपावली का उपाकर्म हुआ। आइये देखें अन्य पर्वों की अपेक्षा इस पर्व का अपना एक अलग महत्व क्यों है ? इस पर्व के साथ हमारे अनेक महापुरूषों का अटूट संबध है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं एक प्रकाशस्तम्भ बनकर अज्ञान अंधकार में पडे देशवासियों को प्रकाश के राह पर दीपावली की रात को लोग जब मिट्टी के दीप जला रहे थे उस समय यह धर्म और खडा किया और कला संस्कृति का महादीपक सदा के लिए बुझ गया। जैनियों के चौवीसवें तीर्थकर महावीर स्वामी भी इसी दीपावली की रात निर्वाण पद को प्राप्त किये थे। परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी का भी इसी दिन निर्वाण हुआ था। इस प्रकार इस पर्व का बहुत ही महत्व है। इस अवसर पर हम दीप जलाते हैं क्या हमने इन दीपों से कुछ शिक्षा ग्रहण किया है ? प्रत्येक दीप स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देते हैं। हमारे युगजन्मा महापुरूषों ने भी यही किया। मर्यादा पुरूषोत्तम राम से लेकर ऋषि दयानन्द तक जितने भी महात्मा हुए हैं वे सभी अपने आप को तप-त्याग की भट्ठी में जलाकर दूसरों को प्रकाश देते आए हैं। स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देना यह दीपावली का अमर संदेश है जो कि प्रत्येक नर-नारी को आत्मसात् करना चाहिये। तभी इस पर्व की सार्थकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस्लाम का वैदिक रंग-४

लेखक:-प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन अबोहर-१५२११६

डाक विभाग की कृपा से अथवा 'कुलभूमि' के कार्यालय से किसी के प्रमाद से मुझे कई मास तक 'कुलभूमि के अंक देखने को ही न मिले। इस कारण मैंने इस लेखमाला की चौथी मणि भेजनी उचित न समझी। पहले की भेजी सामग्री प्रकाशित हो तो आगे और भेजूँ भी। श्री स्वामी धर्मानन्द जी के पत्र से पता चला कि वहाँ मेरे लेख की प्रतीक्षा हो रही है। इतने में मई का अंक भी गुरूकुल से प्राप्त हो गया। मैंने अप्रैल १९९८ के अंक में पृष्ठ आठ पर एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक चर्चा छेडी थी। पाठकों को एक वचन भी दिया था कि यह चर्चा अगले अंकों में चलाई जायेगी। सब मुसलमान भाईयों में इस बात पर मतैक्य है कि काफिर जन्नत में नहीं जा सकता। स्वयं को धर्म निर्पेक्षता के ध्वजवाहक मानने वाले मौलाना आजाद हों अथवा डा.जाकिर हुसैन या अली बंधु सबका यही मत है कि मुसलमान ही स्वर्ग में जा सकता है। काफिर नरक में ही जायेगा। महात्मा गांधी होंगे भले-जायेंगे वह भी दोजख में। कारण वह कलमा गो नहीं हैं। यह मेरा मत नहीं। अली बंधुओं में से एक ने गांधीजी से अपनी मित्रता निभाते हुए कभी ऐसा ही कहा था।इस्लाम की इस मान्यता के विपरीत एक सहज विद्रोह करते हुए एक मौलाना ने कभी यह लिखने का दु:स्साहस किया था कि

काफिर भी जन्नत में प्रवेश पा सकेंगे। उस मौलाना के कथन का किसी जाने-माने मौलाना ने आज तक खण्डन भी नहीं किया। यह मौलाना कोई साधारण या गुमनाम नहीं थे यह के कुरान के एक विख्यात भाष्यकार और इस्लाम के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी मौलाना सनाउल्ला जी। मैंने अपनी पुस्तकों,लेखों व व्याख्यानों में कई बार इस तथ्य का प्रकाश किया है कि सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू अनुवाद छपने से पहले ही देवनागरी में सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने वाले यही एकमेव इस्लामी विद्वान् थे। सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास: के खण्डन में मुसलमानों ने कब कब और क्या-२ लिखा-आज इसे जानने व बताने वाला आर्य समाज है कौन ? आर्य समाज में किसी को इस ओर ध्यान देने की क्या आवश्यकता ? तथापि स्वाध्यायशील आर्यजनों को बतादें कि मौलाना सनाउल्लाजी पहले दो नामी मुस्लिम विद्वानों में से एक थे जिन्होने सत्यार्थ प्रकाश: के चौदहवें समुल्लास के खण्डन में एक पुस्तक लिखी थी।इस पुस्तक में मौलाना महर्षि दयानन्द जी के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए काफिरों को 'जन्नती' बनने का अधिकार देते हैं। ऋषि का प्रश्न है बहिशत में भौतिक सुख सामग्री होगी। खाने-पीने के सब सामान होंगे। श्रम वहाँ होगा नहीं। परिणाम स्वरूप रोग होंगे। मल-मूत्र से सडाँध भी होगी।गंदगी भी होगी। वहाँ झाडु कौन लगायेगा ? सफाई कौन करेगा? भंगी की सेवा किन से ली जायेगी ?तपाक से मौलाना उत्तर देते हैं यह बेगार काफिरों से ली जायेगी। यहाँ मौलाना एक वाक्य में दो बातें कहते हैं:-१. काफिरों को इस्लाम के बहिश्त की गंदगी दूर करनी होगी। बहिश्त में गंदगी होगी तो यह दोजख (नरक)बन जायेगा।२. काफिरों को इस सेवा (झाडू लगाने के लिए)के बदले कोई वेतन नहीं मिलेगा। वह बेगार होगी। Bounded labour बंधुआ मजदूर रखना लौकिक विधान में अवैध होगा। बहिश्त में अल्लाह की इच्छा के अनुसार होता है।इस्लाम को वैदिक धर्म से दूर करते-करते घने बुद्धिमान् मौलाना ऋषि के प्रश्न का उत्तर देते देते-सत्यार्थ प्रकाश का खण्डन करते-करते इस्लाम को पवित्र कुरान को वेद की ठण्डी छाओं में खींचे लाए।हमें भी मौलाना की यह बात खूब जँचती हैं। आज का कोर्टकर्मी, मुकदमाबाज,नामधारी आर्य समाजी तो ऋषि के आशय को क्या समझेगा? मौलाना सनाउल्ला ने ऋषि की Spirit स्पिरिट को ठीक-ठीक पहचाना। आर्य समाज को ऋषि जी ने यही काम तो सोचा था ! क्या ? आर्यो ! तुम्हें संसार से अज्ञान,अविद्या,अंध विश्वास का कूडा कचरा दूर करके सफाई करती है।संसार को नरकधाम बनने से बचाना है।एक बार एक आर्यवीर ने मुझसे पूछा,''स्वामी श्रद्धानन्द जी व अन्य भी कई पूजनीय महात्मा वेदप्रचार के लिए फिर से आने की कह गये थे। वे आए नहीं। गए कहाँ ?इस प्रकार मुझे मौलाना सनाउल्ला की पुस्तक का स्मरण हो आया। मैंने कहा वे सब तो आने का पक्का प्रोग्राम बना चुके थे इतने में कुरान के बहिशतियों का करूण क्रन्दन उनके कानों में सुनाई पडा ''बचाओ !बचाओ ! सडांध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से, दुर्गंधि से, गंदगी से मर गए'' । पं. लेखराम यह सुनकर रह न सके । उनके लिए शुद्धि व शास्त्रार्थ सर्वोपरि थे। वे इस्लामी स्वर्ग को नरक बनने से बचावें ,वहाँ की शुद्धि के लिए सफाई के लिए चल पडे ।जब पं. लेखराम जी ने वहाँ जाने के लिए बिस्तर बाँधा तो उनके सखा स्वामी दर्शनानन्द भी साथ हो लिए। पं. लेखराम का संदेश पाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज भी आर्यों की एक विशाल सेना लेकर गंदगी दूर करते, सबको सुख पहुंचाते, कष्ट निवारण करने और अपने इस्लामी भाईयों को छाती लगाते उधर को चल पडे । वहाँ का प्रदूषण दूर करके ही वे लोग इस लोक में लौटेंगे और यहाँ आकर नये सिरे से ऋषि के समाज की स्थापना करेंगे ।कुछ भी हो, मौलाना के ये विचार स्वागत योग्य है । यह इस्लाम का वैदिक रंग है ! आओ ! मित्रों खोजें ऋषि का यह समाज कहाँ है जिसकी इतनी धाक व धूम थी। नरक को स्वर्ग बनाने वालो निकलो ! तुम हो कहाँ? कभी तुम्हारे अरमानों व पुरूषार्थ, परमार्थ व बलिदान के कारण उर्दू के एक प्रामाणिक शब्दकोश 'फरोज-उल-लुगात' में मुसलमान कोशकार विद्वान् ने 'महाशय' शब्द का भी अर्थ दिया ।आर्य समाजी हिन्दू को महाशय कहते हैं ।आज दैनिक पत्रों में न तुम्हारे समाचार छपते हैं, न तुम्हारी चर्चा कोई करता है । तुम स्वयं स्वाध्याय, मनन, चिन्तन से भागते हो । मैंने कई समाजों को 'कुरान वेद की ठण्डी छाओं में' के प्रकाशित होने पर इसके प्रसार व इसे प्रबुद्ध मुसलमानों तक पहुंचाने के लिए लिखा था तो उत्तर चुप्पी में मिला। कुछ ने कहा, क्या करें कोई पढता नहीं। पं. लेखराम जी का मिशन जीवन माँगता है। पीडा है तो निकलो। संसार तो सुनना चाहता है।

हृदय रोग (Heart Diseases)

दूषयित्वा रसं दोषा: विगुण: हृदयं गता: ।
हृदि बाधां प्रकुर्वन्ति, हृद्रोगं तं प्रचक्षते ॥

सम्प्राप्ति:-अधिक व्यायाम, परिश्रम, अध्ययन, चिन्तन, भय उष्ण, गुरू व कटु पदार्थों का सेवन, वेग धारण, आघात, आदि कारणों से प्रकुपित वातादि दोष हृदय में अवस्थित होकर रसधातु को दूषित करके हृद्रोग उत्पन्न करते है।

सामान्य लक्षण:-पाण्डुता, मूर्च्छा, ज्वर, कास, हिक्का, तृष्णा, वक्ष की पीडा, अनिद्रा अरुचि आदि अनेक लक्षण हृद्रोगी में देखे जाते हैं।

हृद्रोग के भेद:- आयुर्वेद में हृद्रोग में निम्न पाँच प्रकार के माने गये हैं:-१.वातिक हृद्रोग २.पैत्तिक हृद्रोग ३.कफ्ज हृद्रोग ४.त्रिदोषज हृद्रोग ५. क्रिमिज हृद्रोग।

पाश्चात्य एलोपैथिक में हृद्रोग आधुनिक चिकित्सा शास्त्र में हृदय की विकृति के विषय में विस्तार पूर्वक विचार किया गया है। यद्यपि सभी प्रकार के हृद्रोगों में लक्षण वही मिले।

हृद्रोगों की चिकित्सां:-

१. अर्जून चूर्ण १० ग्रा. २. मृगश्रृंगभस्म १० ग्रा. नागार्जुनाभ्र ५. ग्रा., मुक्ताशुक्ति भस्म २० ग्रा .१/२ (प्रात: सायं गो दुग्ध से। १/३ मधु से चटावें। एवं रात्रि में ३. अर्जुनारिष्ट: १५ मि.लि.समान भाग पानी के साथ दें । ४. आबाना टेबलेट - १ फाइल रात्रि में जल से१/२ जल में ।

ब्र. ज्ञानमित्र शास्त्री, शेखपुरा मुंगेर

[illegible]

जमनीपाली:-आर्य जगत् के युवा भजनोपदेशक ओम कुमार आर्य की इस समय ये पाँच आडियो कैसेट्स आर्य जगत् में प्रसिद्धि पा रही है। जो आर्य सज्जन मंगवाना चाहते हैं कृपया निम्न पतों पर संम्पर्क करें।

इन कैसेट्स के नाम है :-१.गीत स्रोत २.भक्ति संगीत ३.स्वेदेशी ४.नजरें करम ५.खुशबू

आपकी नई कैसेट्स **''पीर पराई''** जल्दी ही रिलीज होने वाली है।

कैसेट्स प्राप्ति स्थान :-१.गुरुकुल आश्रम, आमसेना २.ओम कुमार आर्य 'भजनोपदेशक'

B.-१२१९ कृष्ण विहार, मु.पो.जमनीपाली

जिला. कोरबा (म.प्र.)पिन-४९५४५०, फोन नं.३४३७६, स्र. .न.-०७७५९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक सभ्यता और ईसाईमत

धर्म मजहब ही मनुष्य को अपने सांचे में ढाल लेता है। जैसा ज्ञान वैसा ध्यान,व्यक्ति जिसे श्रद्धा से देखता-मानता है विशेषकर छोटी अवस्था में,वही उसके जीवन में ढल जाता है;बडा होकर उसी के अनुसार सोचता-व्यवहार करता है। ईसाई देश,बाईबल को मानते हैं,वह उनका मजहबी पाक किताब है। ऐसा नहीं है कि बाईबल आदेश देता है कि व्यभिचार करो अथवा व्यभिचारी बनो,किन्तु व्यभिचारी की कहानियाँ तो उसमें स्थान-स्थान पर आती है,जो नहीं आनी चाहिये थी। फिर ऐसे दुराचार करने वालों की कहीं निन्दा भी नहीं की गई है। स्पष्ट है कि वह बाईबल का व्यभिचार बाईवल में प्रतिपादित है तथा उसके पढने-मानने वालों में''वह नीच- पाप कार्य नहीं है''ऐसा विश्वास दृढ कर देता है। तो जो बुरा नहीं है वह अच्छा क्यों नहीं ? जब कि उस पाप-कार्य को करते वे स्त्री-पुरूष सुख अनुभव करते हैं। बस,यही है जड इस व्यभिचार-पाप के फैलने की ! ईसाई देश व्यभिचार को पाप नहीं मानते। बडे स्वयं व्यभिचार खुले-आम करते रहते हैं तो छोटे तो उन्हीं से शिक्षित **(Trained)** होकर इस पाप-क्रीडा के कीड़े बन जाते हैं। इस के क्या दुष्परिणाम निकलते हैं,यह देखने कीउनको आवश्यकता नहीं ,इसलिए कि उनका मजहव स्वयं इसे बुरा-पाप नहीं मानता,क्योकि वह मजहव स्वयं इस दुराचार में लिप्त है। सत्य बोलना,चोरी नहीं करना,व्यभिचार नहीं करना चाहिए आदि सब बातें बचपन से ही सिखाई जाती है और सिखा वह सकता है जो स्वयं ऐसा आचरण करता हो। चोर अपने बेटे को चोरी करने से कैसे रोक सकता है ? 'हाँ सत्य बोलना चाहिए 'के साथ झूठ नहीं बोलना चाहिए'यह सिखाना भी आवश्यक है,नहीं तो बच्चा सच्च तो सिखेगा,साथ में झूठ भी बोलेगा,इसलिए की यह नहीं सिखाया गया था।जो नहीं कहा गया है वह अवश्य करेगा। मनुष्य एक पशु है,उसमें बुद्धि है,इसलिए सिखाने से ही सीखता-समझता है,और पशु से मनुष्य बनता है। कुछ भी सिखाओ,बस वही करेगा,जब तक वह अपनी बुद्धि से काम लेना सीख जाए,जिसमें भी अधिक समय नहीं लगता।

भारत का प्रत्येक व्यक्ति किसी भी स्त्री को केवल मां-बहिन ही समझता और संवोधन करता है इसलिए कि उसे बचपन से ही ऐसी शिक्षा मिलती है,अथवा सामूहिक जीवन में वह इस प्रकार सीख जाता है,पग-पग पर उसे धर्म के नाम से डर से,सत्य बोलना,झूठ न बोलना,चोरी न करना,पराए धन को धूल समझना,पर स्त्री को माता तुल्य समझना,अन्य लडके-लडकी को भाई-बहन समझना,झगडा न करना इत्यादि। अब जब उसके मन में ही संस्कार मां-बहिन समझने का है तो उसकी कुदृष्टि क्यों हो सकती है ? आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि भारत का मुसलमान जो भारतीय हिन्दू वच्ची(लडकी)को ''अम्मा''(माता) करके संबोधित करता था। यदि वह किसी हिन्दू जमींदार के पास खेती पर किसानी करता था,और उस सेठ की लडकी के विवाह कर जाने के बाद जब वह मैके घुमने को आती थी तो वह किसान खुंशी के मारे फूला नहीं समाता था(परन्तु वही लडकी जिसको अपने बचपन में पाला-घुमाया और लाड किया हो)अम्माँ-अम्माँ करके उस के सिर पर हाथ फेरता,खेत में कोई अच्छी खाने जैसी चीज तैयार होती तो उसके लिए विशेष कर ले आता। लडकियाँ उनके घरों में जातीं और प्यार पाती थी। सिंध का डाकू जो केवल मुसलमान होता था, हिन्दू जमींदार-साहूकार के घरों में डाका डालेगा लेकिन कोई स्त्री को छुएगा तक नहीं,उसके शरीर पर के जेवर ,गहने तक को हाथ नहीं लगायेगा,बाकी सब ले जाएगा। स्त्रियों ने शोर मचाया तो उनको कहा जाता अम्माँ माता) आप एक तरफ हो जाएं। सिंध का एक बडा डाकू अब्दुल रहमान था,पुलिस तक उससे काँपती थी,लेकिन अंग्रेजी राज था। अंत में पकडा गया। जेल से छूटने पर वह श्री.जी.एम.सैय्यद से उनके गांव सन् **(Sann)** में मिलने को आया,क्योंकि सैय्यद साहिब एक देवता पुरूष थे तो बातों-बातों में सैय्यद जी ने उससे पूछा,जीवन में कितनी हत्याएं की हैं ? डाकू ने उत्तर दिया ''केवल एक,वह भी अपने ही साथी की''। सैय्यद साहब ने आश्चर्य से पूछा'यह किस तरह ?'अब्दुल रहमान ने उत्तर दिया;मालिक हम एक हिन्दु साहूकार के घर में डाका डाल रहे थे,साथी अंदर माल बटोर रहे थे,मैं बाहर खडा था। मेरे जीवन का आदर्श रहा कि मैं किसी भी स्त्री को हाथ नहीं लगाता,उसके शरीर के गहने तक उसके पास रहने देता हूं। तो साथी जब बाहर आए,लगा माल कुछ मिला था,तो एक मेरे विश्वासी ने आकर सूचना दी कि सरदार फलां साथी ने एक स्त्री के शरीर से जेवर भी उतार लिए। यह सुनते ही मैं आवेश में आ गया क्यों कि यह आदर्श नियम का भंग और चोट थी,बस,उसी दम उसे गोली मार दी।''यह है हिन्दू-भारतीय संस्कृति में पला एक डाकू ! और योरोप,अमेरिका में कितने शरीफ डाकू हैं जो प्रतिदिन असहाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्याओं के सतीत्व पर दिन-दहाडे मारते हैं ?है न ?कितने ऐसे डाकूओं को गोली मारकर समाप्त किया जाता है।कारण सरल-सीधा है। भारत का प्रत्येक नागरिक स्त्री को सम्मान की दृष्टि से देखता है। क्योंकि मनुस्मृति में लिखा है कि पर-स्त्री को माता समान समझो और जिस घर में स्त्रियों का सम्मान होता है उस घर में देवताओं का निवास होता है,अर्थात् वह घर सुख समृद्धि भरा रहता है। ''आज जो भारत में सदाचार की गिरावट आई है,व्यभिचार की प्रवृत्ति बढ रही है,वह सब इसी पश्चिमी सभ्यता का अभिशाप है;जो अजदह (**Dragon**) की तरह हमें निगलता जा रहा है। वरना भारत का नागरिक जहाँ कहीं भी किसी स्त्री के सामने आएगा,बिना किसी भेद-भाव के उसे सीधा 'बहिन जी' कहकर ही संबोधित करेगा' चाहे वह हिन्दू हो अथवा मुसलमान। हमारे गुजरात में आकर देखे, कोई भी हिन्दू स्त्री किसी मुसलमान के दुकान पर चढेगी तो वह फौरन उसे 'आओ बहिन' कहकर स्वागत करेगा। भारत का कोई अगवा जब स्टेज पर जनता कोसम्बोधन करेगा तो पहले ही बोलेगा''बहिनो और भाइयों''। और पश्चिम में ''**Ledies and Gentlemen**''। तात्पर्य यह है कि सदाचार बचपन से ही संस्कारी-शिक्षा से आता है। यद्यपि बाईबल में कुछ ऐसी शिक्षाएँ हैं कि ''फलां से व्यभिचार न करना'' ''फलां को नंगा नहीं करना'' किन्तु वह शिक्षा का ढंग स्वयं व्यभिचारिक है। आप जरा **Leviticus** का अध्याय १८ वां(आयत १ से ३० तक पूरा) पढ जांईये तो यह सब मालूम हो जाएगा कि वह शिक्षा है या कुछ और। फिर वहाँ यह प्रश्न होता है कि व्यभिचार क्यों नहीं करना,क्या बुराई है उसमें ?ऐसा कोई शिक्षण अथवा तुक नहीं है वहां,तो कौन मानेगा,और क्यों कर? वास्तव में **Leviticus** की ये शिक्षाएँ नहीं है वे तो केवल उन सब प्रचलित बातों का निषेध मात्र है जो पाप-कार्य उस काल में प्रचलित था। वहाँ स्पष्ट लिखा है कि 'ये सब पाप मत करना जो तुम्हारे पूर्व (उस समय तक भी) प्रचलित थे। **Wich Were committed before you**''। लिखना कुछ,व्यवहार कुछ,यह धोखा है। और ये निषेध लिखा गया है,वे सब पाप-कार्य व्यवहार रूप में ही बाईबल में वर्णित है जैसा कि हमने ऊपर दिखाया है,तो इन निषेध आज्ञाओं का प्रभाव किसी पर किस प्रकार पड सकता है ? व्यभिचारी,व्यभिचार न करने का आदेश दे रहा है,ऐसा हुआ न ? हम व्यभिचार करते हैं क्योंकि ***God*** हूँ और तुम व्यभिचार नहीं करना क्यों कि यह **Lord** की आज्ञा है ! तो ये सब निरर्थक बातें हैं। सत्य यह है कि संसार की प्रत्येक नारी-स्त्री हमारी माँ-बहिन के तुल्य है,पर नारी गमन महापाप है सदाचार धर्म है, मनुष्यता है। वरना इस प्रकार से व्यभिचार तो पशु भी करते हैं; उनमें और मनुष्यता में क्या फर्क रहता है। (भयंकर साजिश से साभार)

दुखडे भागें दूर-आवे मुखड़े पै नूर

वीरो करिये व्यायाम,बनिये निर्भय बलवान्।
काँपें पापी शैतान,होवे ऐसी पहचान॥
हरिये जग के सन्ताप,बनिये दीनों की आस।
काया होवे सुकुठोर, पालो ऐसे अरमान॥

हँसते बसते सब रहिये,करिये सेवा निष्काम।
आलस तजकर ऐ प्यारो,निकलो छाती को तान॥
दुखडे भागें सब दूर, आवे मुखड़े पै नूर।
प्रात: खटिया को छोडो,करिये आसन अस्नान॥
करिये दिनचर्या ठीक, होवे पत्थर सी गात।
आवे तन में फिर फूर्त्ति,होवे सबका कल्याण॥

रोगी होना इक पाप,समझो ऋषियों की बात।
आवे सुख से फिर नींद, झूमें ज्ञानी अज्ञान॥
सुधरे व्यक्ति परिवार, बिगडे फिर क्यों संसार।
होवे मन में सुविचार,गायें मिलकर यह गान॥

सिर को पीडा क्यों होवे, भागें नजला जुकाम।
शाकाहारी बनकर, करिये जीवन - निर्माण॥
होवे मन में सुप्रीत , गांवे भक्ति के गीत।
होवें हम शक्तिमान् ,वर यह देगा भगवान्॥

ऐसी लेना अंगडाई , देखे दुनिया तरूणाई।
आओ मिलकर 'जिज्ञासु' छेडो ऐसी सुरतान॥

रचयिता
राजेन्द्र'जिज्ञासु 'वेद सदन
अबोहर -१५२११६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौन यज्ञीय नौका में नहीं चढ़ते

❑ब्र. सचीन कुमार आर्य

पृथक प्रायन्प्रथमा देवहूतयोऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा।
न ये शेकु यज्ञियां नावमारूहमीमैर्व ते न्यविशन्त केपय:।।

(शब्दार्थ)(प्रथमा) प्रथम कोटि के विस्तृत ज्ञानी (देव हूतय:)दिव्य गुणों का आव्हान करने वाले (पृथक्) अलग (प्रायन्)जाते हैं। वे (दुष्टरा) बडे दुस्तर(श्रवस्यानि) श्रवणीय यशों को (अकृण्वत)प्राप्त कर लेते हैं। किन्तु ये जो (यज्ञिमाम्)इस यज्ञ रूपी (नाव में)नाव पर (आरूहम्)चढने में (न शेकु:) समर्थ नही होते (ते)वे(केपय:) कुत्सित शास्त्र विरूद्ध कर्म करने वाले (ईर्म एव) यही इसी लोक में (दलदल में)(न्यविशन्त) नीचे-नीचे धंसते जाते हैं।

व्याख्या-मन्त्र में चार बातें मुख्य रूप से कही गई है। पहली दिव्य शक्तियों को आमन्त्रित कर अपने पास जमा करने वाले महापुरूष प्रथम कोटि के मनुष्य होते हैं और संसार के साधारण व्यक्तियों से पृथक् चलते हैं। दूसरे वे संसार में ऐसे अदभूत कार्य करते हैं जो बहुत ही कठिन होते हैं-तीसरी-वे यज्ञ रूपी नौका पर चढकर ही प्रथम कोटि के बनते हैं और इसी कारण अदभूत काम करने की शक्ति उनके पास आती है। चौथी बात-जो इस यज्ञ रूपी नाव पर नहीं चढ पाते वे सांसारिक दलदल में फंसे हुए हैं ,उसी में अधिकाधिक फंसते चले जाते हैं। वेद में मन सहित हमारी इन्द्रियों को देव कहा गया है। इन इन्द्रियों का वेदोक्त मर्यादित मार्ग में उपयोग इन्द्र=आत्मा को दिव्य शक्ति सम्पन्न बनाकर उसे प्रथम कोटि का महामानव बना देता है। ये ही इन्द्रियाँ जब विषयासक्त होकर अमर्यादित भोग में प्रवृत्त होती है तो इनकी सब दिव्यता नष्ट हो जाती है। और उस समय मनुष्य मानवता के स्तर से भी गिरकर पशु दानव बन जाता है।

प्रथम कोटि के मनुष्य साधारण जन से पृथक् चलते हैं। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि उनके यातायात के लिए संसार में कोई विशेष प्रकार का मार्ग सुरक्षित हो जाता है अपितु इसका आशय यह है कि सामान्य आदमियों की प्रवृति भोग की होती है और महापुरूषों की त्याग। संसार के साधारण व्यक्तियों कि भेड चाल होती है।

एकस्य कर्म संवीक्ष्य करोत्यन्योपि गर्हितम्।
गतानुगतिको लोको न लोक: पार पारमार्थिक :।।

एक को बुरे काम में प्रवृत्त देखकर दूसरा भी उस बुराई में लिप्त हो जाता है। संसार में प्राय:(गतिनुगतिक) (भेडचाल) रहती है।

दिव्य शक्ति कब संचित होती है और कब अदभूत काम करने की क्षमता आती है ? तो मन्त्र के उत्तरार्द्ध में-नये **शेकुर्यज्ञियाँ नावमारूहम्**-जो यज्ञ रूपी नाव पर चढने में सफल होते हैं। उन्हीं में दिव्य गुण आते हैं और वे ही महान् कार्य करते हैं। जिनकी योग्यता और क्षमता पर दु:ख निवारण में लगती है वे इस यज्ञ कि नाव से उपकारमय जीवन से भवसागर को तर जाते हैं। जो इस नाव पर नहीं चढ पाते अर्थात् संसार के विषय विकारों में लिप्त रहते हैं, वे ''केपय:''शास्त्र-विरूद्ध निन्दित कर्म करने वाले शतपथ ब्राह्मण के शब्दों में -**''कस्मिन्नु वयं जुहुयाम स्वेष्वेवास्येषु जुहुतश्चेरू:''**किसका उपकार करें ?अपने ही भोगों में लिप्त होकर जीते हैं। ऐसे लोग ''ईर्मा एव न्यविशन्त''-जिस भोग की दलदल में फंसे हुए हैं उसमें से वे निकलने के लिए जितना बल लगाते हैं उनके पैर उसमें और फंसते जाते हैं। अर्थात् वे मनुष्य-जीवन के अनधिकारी बनकर पशु-पक्षियों की योनि में जा गिरते हैं। इस मन्त्र में **''ईर्मा''**-दलदल की बात बहुत अर्थपूर्ण है। दलदल में फंसे व्यक्ति का उसमें से निकलने के लिए बल लगाना उसे उत्तरोत्तर फंसा सकता है,निकाल नहीं सकता। इसी प्रकार भोगासक्त मनुष्य भोग से तृप्त और सन्तुष्ट होना चाहे तो वह कभी नहीं हो सकता,क्यों कि मनु ने बहुत मनोविज्ञान-सम्मत बात कही है-

न जातुकाम: कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवंर्धते ।।

कामियों की इच्छाएँ कभी भी भोग से शान्त नहीं होती अपितु जैसे घी डालने से आग और भडकती है वैसे भोगेच्छा और भी प्रबल होती जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमर हुतात्मा भक्त फूलसिंह जी

❑ ब्र.सत्यप्रिय (आर्य समाज के बलिदान से)

महर्षि दयानन्द जी महाराज के निर्वाण के बाद उनके द्वारा प्रज्वलित सत्य की ज्योति को जिन महापुरूषों ने संसार में फैलाने का यत्न किया, उन्हीं में से अन्यतम हरियाणा प्रान्त के ख्यातनामा स्वनामधन्य महात्मा फूलसिंह जी वानप्रस्थ भी हैं। इनका जन्म रोहतक मण्डलान्तर्गत ग्राम माहरा (जूआं) में स०१९४२ विक्रमी सन् (१८८५) में हुआ। इनके पिताजी जाट कुल के साधारण जमींदार थे। आठ वर्ष की अवस्था में इनको पिता ने समीपस्थ गांव जूआं के स्कुल में भेजा। प्राइमरी शिक्षा के बाद ग्राम महरौली के मिड्लि स्कूल में प्रविष्ट करा दिए गये। इनमें बाल्यकाल से ही सेवा भाव, निर्भयता, सरलता, मधुर भाषिता, सदाचार, सुशीलता आदि गुण विद्यमान थे। अपने गुरूजनों के सेवादि कार्य स्वेच्छा से प्राय: वे ही किया करते थे। अतिथियों के सत्कार करने में भी वे अच्छे निपुण थे। अतिथि सत्कार में भी दूसरों को खाने-पिलाने में उन जैसा मिलना कठिन है। आरम्भ में जब वे पौराणिक विचार के थे तो श्राद्धादि में प्रात: से सायंकाल तक ब्राह्मणों को जिमाने के लिए लगे ही रहते थे। आर्य समाजी होने पर भी जब कभी कोई महानुभाव इनके पास किसी काम से आता था तब कुछ न कुछ दुधादि खिलाना-पिलाना अपना कर्त्तव्य समझते थे। अधिक महानुभाव होने पर पडौसियों तक के दूध का भी सफ ाया करवा दिया करते थे। चौधरी परीतसिंह जी पटवाग्री (इसराना निवासी) के सत्संग से इनकी वैदिक धर्म व ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा पैदा हुई और वे सन् १९०८ में पानीपत के आर्य समाज में नियमपूर्वक यज्ञोपवित धारण करके दृढ आर्यसमाजी बन गये। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों व जीवनी का नियमपूर्वक स्वाध्याय करते थे तथा नित्य नियम में सन्ध्या हवन भी करते थे। भक्त फूलसिंह जी वैदिक धर्म के प्रचार कार्य में सदैव लगे ही रहते थे। वैदिक धर्म के प्रचारार्थ इन्होंने विचार किया कि जिस प्रकार बौद्ध भिक्षुओं ने बुद्धमत को समस्त संसार में फैला दिया उसी प्रकार आर्य मिश्नरी पैदा किये जायें जो सारे संसार में वैदिक धर्म को फैला दें, दिग् दिगन्तर में ऋषि दयानन्द के सन्देश को सुना दें। अपने इस विचार को उन्होंने पं. ब्रह्मानन्द जी (बाद में स्वामी ब्रह्मानन्द) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक के आगे प्रस्तुत किया। उन्होने इनको गुरूकुल खोलने की सम्मति दी तब इनके मन में गुरूकुल खोलने का विचार दृढ हुआ। उपयुक्त वातावरण पैदा करके ग्राम भैंसवाल कलां सन् १९२० में गुरूकुल की विधिवत् स्थापना की जो अद्यावधि यथाशक्ति आर्य समाज व वैदिक धर्म की सेवा कर रहा है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की आज्ञानुसार आपने मुसलमान राजों व राजपूतों की शुद्धि के लिये कठोर परिश्रम किया। इस कार्य में कई स्थानों पर उपवास भी करना पडा। कतिपय स्थानों पर मुसलमानों द्वारा अपहृत हिन्दू देवियों को भी छुडवाया। इन कारणों से इलाके के सब मुसलमान आपके शत्रु हो गये। भक्त जी के कार्यों में ग्राम सुधार भी एक विशिष्ट कार्य रहा है इसके लिए भी इनकी आयु का अधिक भाग व सामर्थ्य व्यय हुआ है। ग्रामों के सुधार के लिए वे पुरानी-पंचायती प्रथा को उपयुक्त समझकर उसका सब जगह प्रचार करते थे। पंचायत के द्वारा परस्पर विवादों को शान्त करते करवाते थे। लोहारू रियासत का नवाब अपने यहाँ वैदिक धर्म के प्रचार में बाधाएं डालता था तथा वहां के आर्य बन्धुओं को तरह-तरह से पीडित करता था। भक्त जी महाराज ने नवाब से तथा पंजाब के उच्च सरकारी अधिकारियों से मिलकर प्रचार की सब बाधायें दूर करवाई तथा वहां के आर्य बन्धुओं को तन-मन-धन से सहायता पहुंचाई। ऐसा करते हुए वे नवाब की गुण्डाशाही के शिकार भी हुए और मृत्यु के मुख से बाल-बाल बचे। हैदराबाद के रियासत के आर्य सत्याग्रह में हरयाणा प्रान्त ने जो भाग लिया वह भारत के सब प्रान्तों से बढकर था उसका विशेष श्रेय श्री पूज्य भक्त जी महाराज की कार्यकुशलता व प्रभाव को ही समझना चाहिये। इसी लिए सत्याग्रह की समाप्ति पर महाशय कृष्ण ने विनोद में कहा था कि, ''जब भक्त फूलसिंह जैसे फरिश्ते आर्य समाज में विद्यमान हैं तब हमको जेल में कौन बंद कर सकता है। भक्त जी महाराज ने छल कपट रहित सरल ओर सीधी साधी भाषा में महात्मा गांधी जी को उत्तर दिया कि मैं आपकी सब आज्ञाओं को मानने के लिए तैयार हूँ परन्तु आर्य समाज को नहीं छोड सकता क्योंकि ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज तो मेरे रोम रोम में रम चुके हैं वे इस जन्म में तो निकाले से भी नहीं निकल सकते'' जिस महात्मा जी को लोग जादूगर कहते थे उनका जादू दयानन्द के शिष्य पर असफल रहा। भक्त जी का दृढ विश्वास था कि ''संसार का भला भगवान् दयानन्द के बताये हुये रास्ते पर चलने से ही हो सकता है। ''दुनियाँ मे अगर सुख-शान्ति की वर्षा हो सकती है तो महर्षि दयानन्द के द्वारा दिखाये हुए सत्य मार्ग पर चलने पर ही हो सकती है। उनके सर्वतोमुखी कार्यों में स्त्री -जाति की उन्नति भी एक कार्य था। इसके लिए उन्होने कन्या गुरूकुल खानपुर की स्थापना की थी। इन सब कार्यों को करते हुए ही सन् १९४२ में श्रावण सुदि द्वितीया को रात के साढे नौ बजे चार मुसलमानों की गोली से वीरगति को प्राप्त हुए। इस प्रकार के त्यागी, कर्मनिष्ठ, तपोधन आर्य समाज में भगवान् फिर से पैदा करें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मा का आधार

स्व.महात्मा आनन्द स्वामी जी

सर न्यूटन हुए हैं न ? बहुत बडे वैज्ञानिक थे वे। 'पृथिवी में आकर्षण शक्ति है, वह प्रत्येक वस्तु को अपनी ओर खींचती है'। -यह सिद्धान्त सब से पूर्व उन्होंने वृक्ष से सेव को गिरते हुए देखकर निकाला। सिद्धान्त तो पहले भी था। उन्होंने इसे जानकर संसार को बताया। एक दिन उन्हें गरमी लगी तो एक पंखा बनाया। पंखा बन गया तो प्रश्न उत्पन्न हुआ इसे हिलाये कौन ? न्यूटन महोदय ने एक दन्दानेदार चक्र बनाया। ऐसा प्रबन्ध किया कि चक्र चले तो पंखा भी चले, हवा देने लगे। परन्तु फिर प्रश्न उत्पन्न हुआ कि चक्र कैसे चले ? न्यूटन ने चक्र के साथ तनिक ऊपर करके गेहूँ के कुछ दाने रख दिये। चक्र में दो चूहे रख दिये। चूहों ने गेहूँ के दाने को देखा तो उछलकर चक्र की ऊपरीवाली सिढी पर पहूँचे कि दानों तक पहूँच जायें; परन्तु वे तो दानों तक पहूँच नहीं पाये, उनके वजन से चक्र हिल गया। वह सीढी नीचे आ गई। चूहे फिर कुदे, चक्र फिर हिला। सीढी फिर नीचे। इस प्रकार वे चूहे बार-बार छलांग लगाते कि अब मिल जाये गेहूँ के दाने, अब मिल जाये। उनकी इस उछल-कूद से पहिया चलने लगा। न्यूटन को हवा मिलने लगी। चूहों को एक भी दाना नहीं मिला।

अरे ओ मानव ! सोचकर देख, तू उन चूहों कि भांति छलांग के पश्चात् छलांग लगाता है कि आनन्द के दाने तुझे मिल जायें परन्तु इस संसार के चक्र में ऐसा फंस गया है तू, कि ये दाने कभी मिलते नहीं।

मकान नहीं है। एक व्यक्ति दूसरे के मकान को देखता है। बडी-बडी कोठियां देखता है। सोचता है कि मेरी भी कोठी बन जाये तो मुझे आनन्द मिल जायेगा। प्रयत्न किया, कोठी बन गई। परन्तु आनन्द तो नहीं मिला। फिर सोचा, कोठी में बिजली आ जाये तो सुख मिलेगा। प्रयत्न किया, बिजली आ गई। परन्तु आनन्द तो अब भी नहीं मिला। फिर सोचा पानी आ जाये तो आनन्द हो जायेगा। की भागदौड कमेटी का नल आ गया। एक ट्यूबवैल भी लग गया। तालाब भी बन गया। परन्तु सुख तो अब भी नहीं मिला। सोचा और एक छलांग लगाऊँगा, विवाह कर लूंगा तो सुख के दाने मिल जायेंगे। हो गया विवाह, परन्तु सुख तो मिला नहीं। सैकडों अन्य समस्याएँ अवश्य खडी हो गई।

जिन दानों की इच्छा तेरे हृदय में है, ते इस प्रकार कभी मिलेंगे नहीं। तू प्रकृति के चक्र में फंस गया है। गेहूँ के दाने इससे बाहर हैं। छलांग के पश्चात् छलांग लगाता चला जा, आनन्द के दाने कभी मिलेंगे नहीं। इन्हें प्राप्त करना है तो ऊपर की ओर छलांग लगा। संसार में प्रत्येक पदार्थ का कोई-न-कोई आधार होता है, कोई आहार होता है। इस पदार्थ को पृथक् कर दीजिये तो बचेगा नहीं।

हम लोग हैं न ! हमारा हवा है आधार। हम अन्न के बिना कई दिन तक जी सकते है। पानी के बिना भी कुछ दिन जी सकते हैं, परन्तु वायु न मिले तो कुछ क्षण में हमारा जीवन समाप्त हो जाता है।

मछली का आधार जल है। उसे पानी से बाहर निकालिये। शुष्क भूमि पर रखकर देखिये कि किस प्रकार तडपती है, छटपटाती है; और यदि उसे शीघ्र पानी में न डाल दें तो कुछ ही क्षणों में मर जाती है।

इसी प्रकार आत्मा का आधार है परमात्मा। उसके साथ यदि हम रहेंगे तो बचे रहेंगे, नहीं तो तडपते रहेंगे, बेचैन होते रहेंगे। पानी का छलावा मिलेगा हर ओर, पानी नहीं मिलेगा। इसे जलते हुए, झुलसते हुए मरूस्थल में सुख की छाया मिलेगी, हर ओर सुख नहीं मिलेगा।

ऋषि वचनामृत

तस्यवाचक: प्रणव इत्यादि प्रमाणों से ज्ञात होता है कि परमेश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है इसी का जप श्रद्धा पूर्वक अर्थ सहित करना चाहिएं हे मनुष्यों ! जो परमेश्वर ने नियत किया कि धर्म का आचरण करना और अधर्म का आचरण छोडना चाहिए-इस मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते, अन्याय से दूसरे के पदार्थों को नहीं लेते वे निरोग होकर सौ वर्ष तक जी सकते हैं। यजु ३५/१५

धार्मिक मनुष्य ही परमात्मा के कृपापात्र होकर सदा विजय को प्राप्त होते हैं, दुष्ट नहीं। ऋ.१/३९/२

मनुष्यों को चाहिए कि सत्पुरूषों की ही सेवा ओर सुपात्रों को ही दान दिया करें। यजु १२/३०

देना प्रसन्नता करने वाला है। ऋ.१/१०२/५

उसी के कुल से धन नाश नहीं होता। जो सुपात्रों के लिए संसार का उपकार करने के लिये देता है। ऋ.२/९/५

चित्त की वृतियों को सब बुराईयों से हटा के शुभ गुणों में स्थिर करके परमेश्वर के समीप मोक्ष को प्राप्त करने को योग कहते हैं। ऋ.भा.उपासना.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदज्ञान का स्वरूप पुस्तक होगा या मूर्त्ति ?

❑ *सुश्री सूर्या कुमारी जी व्याकरणाचार्य*
पाणिनि कन्या महाविद्यालय, वाराणसी-१०

विगत अगस्त मास के पाञ्चजन्य साप्ताहिक पत्रिका के किसी अंक में युवर फैमिली फ्रेण्ड कार्यालय, १४२ जमरूदपुर (लेडी श्री राम कॉलेज के सामने) संस्था का 'श्रेष्ठदान' विषयक एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ है। उस विज्ञापन में 'वेदों के प्रचार और प्रसार की दिशा में हमने नई दिल्ली में एक वेद विद्या गुरूकुलम् की स्थापना की है जिसमें विद्यार्थियों को वेद विहित ढंग से शिक्षा दी जा रही है। ऐसे विद्यार्थी सामान्य आर्थिक स्थिति के होंगे, और उनका पोषण के प्रति आपका सहयोग उपयोगी होगा। अपने माता-पिता के पुण्यतिथि के दिन आप इन विद्यार्थियों को भोजन करा सकते हैं'------आदि-आदि वाक्य लिखें हैं। जिनको पढकर आकर्षण हुआ, प्रसन्नता हुई, कि चलो आज के इस भौतिकता प्रधान युग में वेद पठनार्थी बालकों का भरण-पोषण तथा वेदों की उच्च शिक्षा से उन्हें युक्त किया जायेगा। पर खेद है कि इस विज्ञापन में यह भी लिखा देखा कि 'इस समय एक साल के लिये पाठशाला के विद्यार्थियों का अन्नदान के इच्छुंक व्यक्तियों को दर्ज करते हैं और इनको प्रसाद के रूप में चारों वेदों की मूर्त्तियों का फोटो भेजे जायेंगे, जो अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ। काशी कामकोटि शंकराचार्य के करकमलों द्वारा उनके दिल्ली आगमन के समय प्रकाशित हुआ था। हम भले वेदों का अध्ययन नहीं कर पाते, परन्तु इन वेद मूर्त्तियों की फोटो अपने पूजा कक्ष में रखकर उनकी पूजा तो कर सकते हैं .इसमें हमें वेद माता का आशीर्वाद पूर्ण रूप से प्राप्त होगा' इन पंक्तियों ने तो हमें चौका दिया।

विज्ञापन दाता महानुभाव! किञ्चित् विचार कीजिये, कि जो वेद नित्य हैं, शाश्वत हैं उनकी मूर्त्ति! वाह रे विडम्बना !! मूर्त्ति की कल्पना हम दो प्रकार से ही तो करेंगे, एक-जड, दूसरी-चेतन। तो वेद की जड मूर्त्ति तो पुस्तक का आकार है, क्योंकि ज्ञान की जड मूर्त्ति पुस्तक ही होगी अन्य नहीं, यह सर्वविदित तथ्य है। जिसे महर्षियों ने बहुत पहले ही पुस्तक रूप में वेदों को हमें प्रदान कर दिया था, जिसमें यास्क महर्षि के वचन प्रमाण हैं-

साक्षातकृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्ते अवरेभ्योऽसाक्षात् कृत धर्मेभ्य उपदेशेन मन्त्रान् संप्रादुः।

उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्वग्रहणायेमं ग्रन्थ समाम्नासिषु र्वेदंच वेदांगानि च ॥(निरू.१/१९।।)

अर्थात् साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने दूसरे असाक्षात् कृतधर्मा मनुष्यों को आदेश द्वारा मन्त्रों को ग्रहण करने में असमर्थ होने पर दूसरों के लिये विस्तार से ग्रहण करने के लिये यह निघण्टु ग्रन्थ और वेदों का ग्रंथन किया, और वेदांगों का ग्रंथन किया। महर्षि यास्क के इस वचन से सुस्पष्ट है कि ज्ञान का कोई भी स्थूल रूप सम्भव है तो मात्र पुस्तक ही, अन्यथा ज्ञान की मूर्त्तियों का ही प्रचलन होता। ऋषि महर्षि कम बुद्धि वाले नहीं थे, अत: उन्होंने पुस्तक बनाई। यदि ज्ञान की मूर्त्तियां बनाना सम्भव था, तो वे भी आपकी मूर्त्तियों से सुन्दर और आकर्षक वेदों की मूर्त्तियाँ प्रस्तुत कर सकते थे। ज्ञान की दूसरी चेतन मूर्त्ति उसके अध्येता होते हैं, जैसा कि हम जानते हैं कि वेदों को पुस्तकाकार रूप देने से पूर्व सृष्टि के आदि में होने वाले वे ऋषि-महर्षि ही वेदमूर्त्ति रूप थे। तभी तो आज वेद वेत्ताओं के विशेषणों में वेदमूर्त्ति भी शब्द है। थोडा गम्भीरता से विचार करें। हम कैसी वञ्चना कर रहे हैं। वेदों की गर्दभ, अश्व, अज तथा अन्य किसी वन्य प्राणी की आकृति में वेदों की मूर्त्ति बनाने का ढोंग रच रहे हैं। क्या पता है-हमें आने वाले समय में कोई हम से भी अधिक विशिष्ट बुद्धि वाला, कलाकारी दिखाने वाला हो सकता है, वह भी अपने रूचिकर पशुओं की आकृति को ज्ञान का इतना बडा बखेडा खडा होगा कि जिसे सुलझाना इस सृष्टि में तो सम्भव न हो सकेगा।

अरे! यदि वेदों का प्रचार करना ही है, तो जो एक-एक वेद आज कागज की महार्घता के कारण २५०/-, ३००/- रू. के प्राप्त हो रहे हैं, उन्हें कम मूल्य में छपवाकर जन-जन तक पहुँचाईये, उन्हें सुलभ कराईये। करोडों ऐसे जन हैं जिन्होंने चारों वेदों की पुस्तकें तक नहीं देखी हैं। आप के प्रचार का मार्ग मूर्त्तियाँ ही हैं तो आप अपने वेद पठनार्थियों के फोटो या मूर्त्तियाँ बनवाइये, जिससे वे विद्यार्थी सम्मानित हों, उत्साहित हों, गौरवान्वित हों वेद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढने में। स्मरण हो, आज वेद विद्या के लोप का कारण वेद पठनार्थियों का तिरस्कार, असम्मान दृष्टि, उपेक्षा तथा पठन-पाठन का अभाव और पढने वालों का आलस्य ही है, अन्य नहीं। वेद की मूर्त्तियों का फोटो भेजकर धन मंगवाना मात्र धन राशि एकत्रित करने का साधन है जिसे आप अपना रहे हैं। श्रीमान्! आपसे अनुरोध है कि वेदों की मुर्त्तियों का फोटो भेजे जायेंगे' इस वाक्य को निरस्त कर' वेद के ग्रन्थ, वेद की पुस्तकें, वेद के आदर्श मन्त्र, वेद के व्याख्यान भेजें जायेंगे, यह विज्ञापन देने का शीघ्र प्रयत्न करें, जिससे जन मानस में वेदों के प्रति भ्रान्ति न फैले, गुमराह न हों, और वेद का प्रचार भली-भाँति हो सके। आज मेरे देश में जहां कहीं भी विवेकशीलता, मानवता, आदर्श आदि अवशिष्ट हैं वह वेदों की ही देन है। यदि वेदों की मूर्त्तियां, फोटो वितरित हो जायेंगे, उस दिन देश की मनीषा मर चुंकि होगी। जिस प्रकार परमेश्वर की मूर्त्तियों ने मनुष्य को सत्यता से दूर कर असत्यता से आबद्ध कर दिया है और वे मूर्त्तियाँ देश को टुकडे-टुकडे करने में सहायक बनी हुई हैं, वैसे ही वेद की मूर्त्तियाँ मानव को जो उसका विशिष्ट अस्तित्व है उससे दूर कर देंगी और वह मानव पशुरूप हो जायेगा, तथा वेद विद्या घर-घर **भिक्षुंकवत् 'गोपाय मा शेवधिष्टेऽहमस्मि** =मेरी रक्षा कर, मैं तेरे सुख का खजाना हूँ, की गुहार लगाती फिरेगी। अत: सावधान बन्धुओं! चेतो! ढोंग का बखेडा खडा न करो।

आर्य समाज मन्दिर धिरनी पोखर मुजफ्फरपुर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

प्रधान:- श्री पन्नालाल आर्य
उप प्रधान:- श्री यमुना प्रसाद
मन्त्री :- श्री इन्द्रदेव साह
कोषाध्यक्ष:- श्री जगदीश प्रसाद
प्रकाशन मन्त्री:-ब्रह्मानन्द जिज्ञासु
प्रचार मन्त्री:- श्री भरत उपाध्याय

विगत दिनांक २० सितम्बर को बरपाली शहर में पश्चिम उडीसा के बरगड, सम्बलपुर, सुन्दरगड जिले के कार्यकर्त्ताओं द्वारा विशाल सम्मेलन आयोजन किया गया था। प्रात: काल प्रभात फेरी के पश्चात् शुद्ध वातावरण युक्त स्थलगंगाधर मेहेर क्लब में यज्ञ का आयोजन किया गया। पताकोत्तोलन पूज्य स्वामी परमानन्द जी ने किया। पं. विशिकेसन जी के पौरोहित्य में यह कार्य सम्पन्न हुआ। यजमान बसन्त कुमार विशि सपत्निक रहे। यह सभी कार्यक्रम **पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी** की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। चार सौ लोगों के इस विशाल समारोह में सायंकाल प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया था। जिसके अध्यक्ष श्री राजीव लोचन होता(पूर्व विधायक)थे। आर्य समाज के संगठन को दृढ करने के लिए पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने सभी आर्य सज्जनों से आग्रह व्यक्त किया। स्वामी परमानन्द जी, स्वामी गोरक्षा नंद शुकदेव जी परिव्राजक ने भी सांगठनिक दृष्टि पर बल दिया। कार्यक्रम के संयोजक **पं. विशिकेसन जी शास्त्री** रहे। स्थानीय कार्यकर्त्ता श्री चतुर्भुज सा, श्री महादेव बरिहा, श्री गुनु थापा, सत्या पटेल, डगर मेहेर ध्रुवानन्द जी, मुक्तानंद जी, विशुद्धानन्द जी, वसन्त कुमार विशि आदि आर्य सज्जनों का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम प्रात: काल से लेकर सांयकाल तक व्यवस्था आदि के साथ सानन्द सोल्लास सम्पन्न हुआ।

छेपापाली सुवर्णपुर में आर्य सम्मेलन सम्पन्न

सुवर्णपुर, बलांगीर जिलों के कार्यकर्त्ताओं द्वारा दिनांक २२ सितम्बर को यज्ञ के साथ अन्तरंग बैठक बुलायी गयी थी। याता-यात बन्द होने के बावजूद भी सायकल मोटर सायकल आदि से डेढ सौ के लगभग आर्य सज्जनों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। पताकोत्तोलन पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी ने किया। यज्ञ का कार्य पं. विशिकेशन जी के पौरोहित्य में हुआ। यजमान भागीरथी साहू सपत्निक तथा वितन्जन साहू सपत्निक रहे। सायंकाल प्रवचन का कार्यक्रम तथा पारस्परिक संगठन को मजबूत बनाने के लिए कार्यक्रम रखा गया था। जिसके अध्यक्ष पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी गुरुकुल आमसेना थे। यह कार्यक्रम स्थानीय कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से सानन्द सम्पन्न हुआ। कार्यकर्त्ताओं को नयी प्रेरणा एवं दिशा मिली। इस अवसर पर अनेक साधु महात्मा भी उपस्थित थे।

संवाददाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेद परायण का विरोध क्यों ?

❑ महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ आर्य कुटिया, धूरी,१४८०२४.(पंजाब)

परम पिता परमात्मा की कल्याणी वाणी ''वेद वाणी'' अमृत वाणी के उच्चारण से शरीर,मन,और बुद्धि पर ऐसा प्रभाव होता है मानो सब अंग स्वस्थ हो जाते हैं। इसीलिए महर्षि जी ने प्रात: उठने के मन्त्र खाने के स्नान के,सोने के मन्त्रों का चयन किया और यज्ञ में बोलने वाले मन्त्रों का भी ! तथा अपने ग्रन्थो में दैनिक मन्त्रों का चयन किया और यज्ञ में बोलने वाले मन्त्रों का भी !अपने ग्रन्थों में दैनिक मन्त्रों का तथा विशेष संस्कारों में बोलने वाले मन्त्रों का भी चयन किया ! फिर भी नियम बनाया ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है,वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। ताकि मन और मष्तिक पवित्र रहें। और अपने पत्रों में (५०२ पत्रांक,एवं पृष्ठ संख्या ४१३) दो अनुच्छेद हैं,जिसमें अद्‌भुत कमाल का आदेश है।(१) आरोग्य और अधिक वर्षा होने के लिये एक वर्ष में दस हजार रू.का घृतादि से जिस रीति से होम हुआ था,उसी रीति से प्रति वर्ष होम कराईये ! परन्तु इनमें से ५००० (पाँच हजार) रू. के सुगन्धित फृत मोहन भोग का होम वर्षा में ही कि जिस दिन वर्षा का आर्द्रा नक्षत्र लगे (आषाढ में) उस दिन से लेकर विजया दशमी तक चारों वेदों के ब्राह्मणों का वरण कराके एक सुपरिचित धार्मिक पुरूष उनपर रखकर होम करवाईयेगा,सब से मेरा आशीर्वाद कहियेगा और इस लेख को यथावत् सफल कीजियेगा ! ''(२) ''इस देश में वर्षा प्राय: न्यून होती है,इसके लिये यदि मेरे कहे अनुसार एक-२ वर्ष में दश हजार रू. का घृतादि का नित्य प्रति वर्ष काल में चार महीने तक होम कर लें,यदि ऐसा होता रहे तो सम्भव है कि देश में रोग न्यून और वर्षा अधिक हुआ करे। '' आश्चर्य और दु:ख से लिखना पडता है कि किसी भी विद्वान ने मेरे लेख का उत्तर नहीं दिया,और यह वेदों के पारायण नहीं तो किन मन्त्रों से दस हजार का घी जो वर्तमान में १४ लाख रू. का घी होगा,कैसे और किन मन्त्रों से होम करें और दो लाख आहुतियों का शिष्टम क्या हो ? यदि दैनिक मन्त्रों से ही होम करना था तो चारों वेदों के विद्वानों का वरण और ५० क्विंटल घी की क्या आवश्यकता थी ? कुछ हृदय पर हाथ रखकर विचार करके निर्णय करना चाहिये। कुछ गलत लोगों ने वेद पारायण के नाम पर लूट-खसूट का जिक्र किया है,उन्हें मालूम है कि भारत के सभी गुरूकुलों में वेदों के परायण होते हैं,जिससे ब्रह्मचारी वेद का पढना-पढाना और सुनाने-सुनने का लक्ष्य पूरा करते हैं, वहाँ दक्षिणा लेने-देने वाला कोई नहीं होता ! महर्षि जी ने यज्ञ में उद्‌गाता की पोस्ट निश्चित की है,वह वेद मन्त्रों को उंचे स्तर से गांन करें, क्योंकि उंचे स्तर से वेद मन्त्रों के गान से यज्ञाग्नि वेद मन्त्रों को पकडती है और फिर यह अग्नि (अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनम् यजु १-१५)उद्‌गाता का चित्र और वेद मन्त्रों को आकाश में फैला देती है ! इसलिए महर्षि भारद्वाज लिखते हैं कि जिस प्रकार से यज्ञ की सुगन्धि से गन्दी वायु का छेदन और भेदन होता है उसी प्रकार से वेद मन्त्रों से गन्दे शब्दों का छेदन और भेदन होता हैं अत: ऋषि जी का चारों वेदों के विद्वानों से चारों वेदों का पारायण का संकेत है। ठीक भी है चार महीनों में २०४०० मन्त्र वेदों के,लगभग ५००० मन्त्र दैनिक मन्त्रों के हो जायेंगे। कुल २५००० मन्त्र से ४ लोग घी की चार सामग्री की अर्थात् चार यजमान चारों ओर बैठकर ,दो लाख आहुतियाँ हो जायेंगी ! ऋषि का आदेश पूरा हो जायेगा।

वेद परायण के कारण ही मैं ने आर्य समाज को कितने परिवार दिये हैं,यह प्रों. राजेन्द्र जी जिज्ञासु अबोहर से पूछिये ! मैं जो दक्षिणा लेता हूँ वह क्या है ? और उससे कितनी छात्र वृतियाँ और काम करता हूं यह भी प्रो.राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर से पूछिये ! मैंने केरल,उडीसा और बंगाल में क्या करके दिखाया है यह भी उनसे पूछिये ! आज हजारों परिवारों में वेद पहुंच गये हैं और दो सिख परिवार भी सामवेद,यजुर्वेद पररायण पटियाला में करवा चुके हैं।यह ''वेद पारायण'' प्रचार का सही ढंग है तथा ऋषि जी के आदेशानुसार कुछ तोबडा यज्ञ से हो ही जाता है। घर-२ में इन वेद पारायणों के कारण ही लोगों के घरों में वेद पहुंचे रहा हैं। कुछ लोग यह कहते रहते हैं,कि यह मन्त्र विवाह के हैं यह मृत्यु के हैं !मैं स्वागत करता हूं ! ऐसे विद्वानों का,परन्तु कुछ करके तो दिखायें,मन्त्रों का चयन करें ! केवल यह न करो,वह न करो,यह कार्य समाधान नहीं है ,कुछ करके दिखाना चाहिये। कुछ विद्वानों ने कहा कि सत्संग के बाद शान्ति पाठ नहीं होना चाहिये ,यज्ञ प्रार्थना नहीं होनी चाहिये, क्योंकि ऋषि जी ने नहीं लिखा है परन्तु ऋषि जी ने विद्याओं को विचारने की खुली छूट दी है,अत: ही हमारे विद्वानों ने नियम बनाये हैं ! मैं विद्वानों से प्रार्थना करता हूं कि आर्य समाज में वेदों के प्रति जो श्रद्धा है, उसे बढाने में सहयोग करें ! हमारी छोटी सी भूल से साधारण जनता भ्रम में पड जाती है। अत:वेद का चिन्तन मनन श्रवण और आर्य समाज के तीसरे नियम अनुसार हम वेद को ''परम धर्म'' समझ कर उसके अनुसार आचरण करें और ऋषि जी की आज्ञानुसार बडे-२ यज्ञों का आयोजन करें। बहुत-२ धन्यवाद

धर्म रक्षा महाभियान में सहयोग दें।

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से धर्मरक्षा आन्दोलन चल रहा है। अभी फार्म भरे जा रहे हैं ,अक्टूवर से पूनर्मिलन कार्यक्रम चालु हो रहे हैं। इधर गतवर्ष से ईसाई मिशनरी पुन: सक्रिय हैं। एक-२ ग्राम को परिवर्तन करने के लिए लाखों रूपये खर्च कर रहे हैं। इस वर्ष अभी तक अकाल की स्थिति बनी हुई है। इसका विशेष लाभ उठाते हैं। ऐसे समय में आप सब का हार्दिक आशीर्वाद एवं सहयोग ही हमार सम्बल है।यह सब आर्यसज्जनों के सहयोग स्वरूप से हो रहा है। आशा है इस यज्ञ को निरन्तर चलाए रखेंगे। स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

प्रधान, उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी किसको प्राप्त होती है

मानव सदा से ही लक्ष्मी का उपासक रहा है इस धन को प्राप्त करने के लिए मनुष्य क्या-२ नहीं करता। दीपावली को तो लक्ष्मी का पर्व माना जाता है। इस अवसर पर अनेक कुकृत्य करके भी मनुष्य लक्ष्मी को पाना चाहता है। परन्तु लक्ष्मी मिलती कैसे है आईये उसी के शब्द में देखें।

वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे दक्षे नरे कर्मणि वर्त्तमाने।
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्णसत्वे॥

मैं मिठा बोलने वाले चतुर, अपने कर्तव्य में तत्पर क्रोधरहित ईश्वर भक्त, कृतज्ञ, जितेन्द्रिय और बलवान् पुरूष के पास रहती हूँ। इसी प्रकार जो धर्म का पालन करते हैं वृद्धों की सेवा, जितेन्द्रिय, सहनशील और समर्थ पुरूष तथा जितेन्द्रिय एवं पवित्र आचरण वाली स्त्रियां है उनके पास भी मैं निवास करती हूँ।

गुरूकुल में प्रचारक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुरूकुल आश्रम आमसेना में दिनांक १.९.९८ से २५.९.९८ तक प्रचारक प्रशिक्षण शिविर आचार्य अमृत लाल जी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। जिसमें उडीसा एवं मध्य प्रदेश के लगभग ५० शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द जी, श्री पं. विशिकेसन जी शास्त्री, स्वामी सुधानन्द जी आदि के मार्ग दर्शन में शिविर हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। गुरूकुल में यह शिविर तीसरी बार है, इसका व्यापक प्रभाव पड रहा है। सभी शिविरार्थियों में अध्यात्म की भावना जगी है और प्रचार-प्रसार एवं देश सेवा करने का संकल्प लिया है।

सार्वदेशिक आर्यवीर दल के तत्वाधान में प्रथम आर्यवीर महासम्मेलन सम्पन्न

दिल्ली में दिनांक २ से ४ अक्टूवर तक आर्यवीर महासम्मेलन अत्यन्त उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुआ जिसमें देश-विदेश से लगभग ३० हजार आर्यवीरों एवं सज्जनों ने भाग लिया। जहां अनेक साधु महात्माओं का जमावाडा देखते ही बनता था। इस अवसर पर पू. स्वामी ओमानन्द जी, पू. स्वामी धर्मानन्द, पू. स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री कैप्टन देवरत्न जी आर्य, श्री वन्दे मातरम् जी, श्री सूर्यदेव जी, महात्मा प्रेमप्रकाश जी आदि का ओजस्वी भाषण हुआ। आचार्य कुञ्जदेव के नेतृत्व में उडीसा से लगभग ११० आर्यवीरों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

भगवान् की सीमा से कोई बाहर नहीं जा सकता

उत यो द्यामतिसर्पात् परस्तान्न
स मुच्यातै वरूणस्य राज्ञ:।
दिव स्पश: प्रचरन्तीदमस्य
सहस्राज्ञ अति पश्यन्ति भूमिम्॥
(अथर्व ४/१६/२)

चाहे कोई आकाश को भी पार करके दूर से दूर निकल जाये, चाहे समुद्र में डुबकी लगाकर जितनी ही गहराई में चला जाय, अथवा पृथिवी की किसी गुफा में छिप जाये परन्तु वह ईश्वरीय शासन से बाहर नहीं जा सकता। ईश्वर सर्वत्र कण-कण में व्याप्त होकर प्रत्येक को देख रहा है और सबको नियम में चला रहा है। यह तो ऐसा है मानो उस प्रभु के दिव्य सिपाही सर्वत्र ही सावधानी से अच्छे और बुरे व्यवहार को, पाप और पुण्य को हजारों नेत्रों से देख रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध एवं ताजी जड़ी बूटियों से निर्मित गुरुकुल आश्रम आमसेना की कुछ विशिष्ट दवाईयां

१. ब्राह्मी आंवला तेल

ब्राह्मी एवं आंवला के स्वरस से तैयार यह तेल बालों का सफेद होना एवं झड़ने को रोककर घने एवं लम्बे करता है। सिर दर्द, मस्तिष्क की कमजोरी, पागलपन में भी उपयोगी है।

२. आयुर्वेदिक चाय

दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, काली मिर्च, पीप्पल, सौंफ, तुलसी आदि के योग से निर्मित हानिरहित यह मधुर पेय इसके निरन्तर प्रयोग से गैस, कब्जी, भूख की कमी, सर्दी, जुकाम नष्ट हो जाते हैं।

३. संजीवनी तेल

संजीवनी आदि बूटी से बना यह तेल हर प्रकार के जले, घावादि में अत्यंत उपयोगी है। बहते खून को तुरन्त रोक देता है।

४. सर्पविषामृत

कैसा भी सांप काट दे इसके एक दो खुराक देने से ही जहर समाप्त हो जाता है।

५. महिलामृत पेय

स्त्रियों की कमजोरी तथा हर प्रकार के रोगों को दूर करने में रामबाण है।

६. अशोकारिष्ट

यह महिलाओं का प्राकृतिक मित्र है। स्त्रियों के सभी रोगों में विशेषकर प्रदर एवं कमजोरी में उपयोगी है।

७. बलदामृत

अंगूर आदि फलों से तैयार यह टॉनिक सभी प्रकार की कमजोरी बुद्धि की थकावट आदि में अमृत है।

८. धातु पौष्टिक चूर्ण

वीर्य सम्बन्धी सभी प्रकार के रोगों एवं कमजोरी को दूर कर शरीर को ओज तेज से भर देता है। इसके साथ वीर्य बर्धिनी बटी या वसन्त कुसुमाकर लेने से तुरन्त लाभ मिलता है।

९. शिशु सुधा

यह सुमधुर पेय छोटे बच्चों के सभी रोगों में अत्यंत उपयोगी है। इसके निरन्तर सेवन से बच्चे हुष्ट-पुष्ट एवं निरोग रहते हैं। सुखा रोग, अपचन, दस्तों का होना, दांत निकलते समय होने वाले कष्ट इसके सेवन कराने से नहीं होते।

१०. सौन्दर्य रसायन (कैप्सूल)

यह कैप्सूल सभी प्रकार के चर्म रोगों में विशेष उपयोगी है। रक्त शुद्ध करने में रामबाण है। चेहरे के दाग, झाई आदि को दूर कर मुख की अकृति को सुन्दर बना देती है। केश के रोगों में भी अत्यंत उपयोगी है। बालों का झड़ना, सफेद होना, इस के प्रयोग से तुरन्त रूक जाता है। यदि युवावस्था में इसका लम्बे समय तक उपयोग किया जाये तो सफेद बाल पुनः काले हो जाते हैं। एक बार प्रयोग कर परीक्षा अवश्य करें।

व्यवस्थापक
आयुर्वेदिक फार्मेसी
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, जि.- नवापारा (उड़ीसा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ निर्मित विशुद्ध औषधियाँ

१.	च्यवनप्राश स्पे. १ कि.	१००.००
२.	च्यवनप्राश ,,	८०.००
३.	ब्राह्मी आंवला तेल	२०.००
४.	ब्राह्मी आंवला तेल स्पे.	४३.००
५.	वातराज तेल ५० मि.	२५.००
६.	महानारायण तेल ,,	२३.००
७.	विषगर्भ तेल ,,	१५.००
८.	संजीवनी तेल ,,	१५.००
९.	आयुर्वैदिक चाय	८.००
१०.	बलदापाक	४०.००
११.	सुपारीपाक २०० ग्राम	४०.००
१२.	आश्रम वाम	८.००
१३.	आश्रम दन्तमुक्ता १०० ग्राम	१५.००
१४.	गैसान्तक रस १०० ग्राम	२४.००
१५.	त्रिफला चूर्ण १ पाव	१५.००
१६.	लवणभाष्कर चूर्ण	१२.००
१७.	पौष्टिक चूर्ण	१०.००
१८.	सर्पविषहरी चूर्ण-	१०.००
१९.	एक्जिमा मल्हम	२०.००
२०.	सितोपलादि चूर्ण	२०.००
२१.	नेत्रामृत विशेष	८.००
२२.	शक्तिदा ५०० मि.लि.	३०.००
२३.	बलदामृत ,,	४०.००
२४.	कुमार्यासव ,,	२८.००
२५.	लोहासव ,,	२५.००
२६.	अरविन्दासव ५०० मि.ली.	३५.००
२७.	अशोकारिष्ट ,,	२५.००
२८.	अश्वगन्धारिष्ट ,,	३२.००
२९.	दशमूलारिष्ट ,,	३५.००
३०.	अभयारिष्ट ,,	३०.००
३१.	खदिरारिष्ट ,,	३०.००
३२.	अर्जुनारिष्ट ,,	२८.००
३३.	चन्द्रप्रभावटी १० ग्राम	१२.००
३४.	इन्द्रयण वटी ,,	१८.००
३५.	महाशंख बटी ,,	१०.००
३६.	आरोग्यवर्धनी वटी ,,	१५.००
३७.	संजीवनी वटी ,,	१२.००
३८.	कुष्ठकुठार रस ,,	१५.००
३९.	कृमिमुदगर रस ,,	१५.००
४०.	लक्ष्मी विलास रस ,,	१८.००
४१.	आन्दभैरव ,,	१५.००
४२.	धात्रीलोह	१५.००
४३.	सुतशेखर रस	२५.००
४४.	शशि शेखर रस	३५.००
४५.	महायोगराज गुगुल	१६.००
४६.	अर्श रोगामृत	१०.००
४७.	चन्दनादि वटी	२१.००
४८.	लंवगादि वटी	१५.००
४९.	मृत्युञ्जय रस	१२.००
५०.	अष्ठिलारिपु	१५.००

हमारे हिन्दी के प्रकाशन

१.	सत्यार्थ प्रकाश	२०/-
२.	खिलते फूल	४/-
३.	छात्र जीवन योग और स्वास्थ्य	५/-
४.	योगासन	८/-
५.	आश्रम गीताजंली	२/-
६.	फिटकरी	५/-
७.	त्रिफला भाग -१	५/-
८.	त्रिफला भाग -२	६/-
९.	तुलसी	५/-
१०.	शांतिकामार्ग ईश्वर भक्ति	३/-
११.	वैदिक लोरियां	१६/-
१२.	दैनिक उपासना	२/-
१३.	युवा और राष्ट्र	२/-
१४.	प्यारा ऋषि	८/-
१५.	मैं ईसाई क्यों नहीं?	१/-
१६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	४०/-
१७.	पौराणिक गप्प दीपका	७/-
१८.	विचित्र ब्रह्मचारी	३/-
१९.	गप्प शिरोमणि श्री राम शर्मा आचार्य	५/-
२०.	ईश्वर कहां है ?	४/-
२१.	गप्प शिरोमणि श्रीराम आचार्य (द्वितीय भाग)	६/-

सेवा में,

३०४९: श्री सम्पादक जी
'गुरुकुल पत्रिका' गुरुकुल कांगडी
विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उ.प्र.)

ग्राहक संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ ३ म् ॥

Dec 98

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र

Exchange

कुलभूमि

२३ दिसम्बर को जिनका बलिदान दिवस है

LIBRARY Gurukul Kangri Vishwavidyalaya HARIDWAR

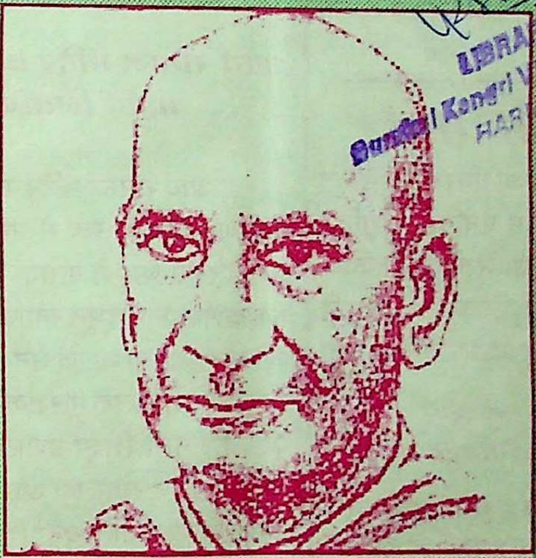

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

महर्षि दयानंद जी महाराज के योग्य उत्तराधिकारी, गुरूकुल शिक्षा प्रणाली शुद्धि आन्दोलन, स्त्री शिक्षा, वैदिक धर्म का उद्धार आदि महर्षि दयानंद के स्वप्नों को साकार करने एवं मूर्त्त रूप देने वाले स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान २३ दिसम्बर को मनाया जा रहा है। आईये इस अमर बलिदान से प्रेरणा लेकर हम भी वैदिक धर्म के लिए जीवन की आहुति देने का संकल्प लें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार्मिक परीक्षाओं में सहयोग दें

गुरुकुल आश्रम आमसेना की ओर से वैदिक संस्कृति परिषद् की माध्यम से हिन्दी एवं उडीया भाषा के छात्रों को वैदिक संस्कृति एवं धर्म का ज्ञान देने के लिये सिद्धान्त कुसुम आदि तीन परीक्षाओं का संचालन गत वर्षों से किया जा रहा है। इन परीक्षाओं में छात्रों की संख्या उत्तरोत्तर बढती जा रही हे। इस वर्ष उडीया भाषा के माध्यम से ही लगभग २५०० छात्र परीक्षा दे रहे हैं। इन परीक्षाओं के व्यवस्था में बहुत बडी राशि खर्च हो जाती हे। क्योंकि हम छात्रों से परीक्षा फीस नाम का लेते हैं जबकि प्रत्येक केन्द्र में प्रथम आने वाली छात्र को पुरस्कृत किया जाता है। विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले छात्रों को गुरुकुल में बुलाकर एक सप्ताह तक शिविर में रखा जाता है तथा उन्हें किसी विशेष स्थान पर घुमाया जाता है। जिससे छात्रों की रुचि इधर बढें। आशा है कि वैदिक धर्म प्रेमी सज्जन इस कार्य की महत्ता समझेंगे और इस आयोजन में अपना अधिक से अधिक सहयोग भेजेंगे।

धर्मरक्षा अभियान

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का धर्मरक्षा अभियान निरन्तर चल रहा है। आगामी महीनों में पुनर्मिलन (शुद्धि) के कई कार्यक्रम होंगे। ये कार्यक्रम उदारतापूर्ण, सात्विक सहयोग से ही चल रहे हैं। याद रखें शुद्धि का अर्थ देश की रक्षा। अपना सात्विक सहयोग उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से भेजें।

भवदीय

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आर्य समाज मन्दिर कोरबा का चुनाव सम्पन्न

विगत दिनों आर्य समाज कोरबा के सभासदों की बैठक हुई, जिसमें सर्व सम्मति से पदाधिकारी चुने गये।

संरक्षक –	१. श्री सतपाल वासन
	२. श्री प्रेम भुटानी
प्रधान–	श्री रवि कोहली
उपप्रधान–	श्री गुलशन वासन
मंत्री	श्री जयप्रकाश वासन
उपमंत्री–	श्री नगेन्द्र नेगी
कोषाध्यक्ष–	श्री नारायण प्रसाद साहू
पुस्तकाध्यक्ष–	श्री मनोहर सचदेव

यज्ञशाला के लिये सहयोग दें

गुरुकुल आश्रम आमसेना की बृहद् यज्ञशाला श्री वजीर सिंह जी सिहाग गांव सिसाय(हिसार)के महत्वपूर्ण सहयोग से बनकर तैयार हो गई है उसके १६ खंभो में लेख.वेद मन्त्र खुदे हुए ३२ संगमरमर के पत्थर ४ फुट लम्बे एवं १६''इंच'' चौडे लगाये जा रहे हैं। १-१ पत्थर का खर्च लगभग २१०० (इक्कीस सौ रूपए) पड रहा है जो सज्जन अपने किसी प्रिय की स्मृति में २१०० (इक्कीस सौ रूपये) देंगे उनका नाम एक पत्थर पर लिख दिया जायेगा। अभी तक बीस पत्थरों के लिये नाम आ चुके हैं, जो श्रद्धालु सज्जन इस कार्य में सहयोग देना चाहें वे शीघ्र सम्पर्क करें।

निवेदक

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

आचार्य, गुरुकुल आश्रम आमसेना

आर्य समाज मंदिर कोरबा(बिलासपुर) में महर्षि निर्वाण दिवस मना

आर्य समाज मंदिर कोरबा में दीपोत्सव पर्व महर्षि निर्वाण दिवस के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर पुरोहित एम.साह ने बताया कि स्वामी दयानंद सरस्वती एक दार्शनिक, अद्भूत समाज सुधारक, योगी और साधक थे। कौन जानता था कि सन् १८२४ में गुजरात के टंकारा ग्राम में जन्मा बालक मूलशंकर एक दिन अपने वैदिक ज्ञान के प्रचार, नारी शिक्षा प्रणाली, विधवा विवाह व्यवस्था, पाखंड खंडन संचालक और आर्य समाज जैसी आदर्श संस्था का जन्मदाता बनेगा। इस अवसर पर भारी संख्या में आर्यबंधु उपस्थित थे।

निर्वाचन

महिला आर्य-समाज जवाहरलाल रोड(घिरनी पोखर), मुजफ्फरपुर-बिहार

प्रधान: श्रीमती रामदेई देवी आर्या **उपप्रधान:** श्रीमती कौशल्यादेवी आर्या, श्रीमती धर्म शीला देवी आर्या, श्रीमती मानकी देवी आर्या, श्रीमती जयसवाला सिंह, **मन्त्री**-मायादेवी आर्या, **सहमन्त्री:** नीलम चौधरी, **प्रचार मन्त्री**-[illegible] शकुन्तला देवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

कुलभूमि

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा का मासिक मुख पत्र

वर्ष - २०

अंक - १२

माह - दिसम्बर

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,०९९

विक्रमी संवत - २०७५

दयानंदाब्द - १७४

प्रतिष्ठाता:
पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती

सम्पादक:
स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती

सह सम्पादक:
कुञ्जदेव मनीषी

व्यवस्थापक:
शरच्चन्द्र आर्य
पीताम्बर प्रसाद आर्य

पत्र व्यवहार का पता:

गुरुकुल आश्रम आमसेना
व्हाया-खरियार रोड
जिला-नवापारा(उडीसा)
पिन-७६६१०९
फोन-(०६६७८)२२३४९

वार्षिक शुल्क - २५/-

आजीवन -३००/-

एक प्रति - २.५०

सम्पादकीय

आओ आर्य समाज का नया इतिहास लिखें

यद्यपि गत १०-१५ वर्षों से आर्य समाज के प्रचार कार्य में शिथिलता आ रही थी और संगठन में फूट बढ़ रही थी परन्तु फिर भी स्व.आनन्द बोध जी उसको सीमा के अन्दर रखने का यत्न कर रहे थे परन्तु उनके स्वर्गवास होते ही कार्यालय कुछ अतिपद लोलुप लोगों के हाथ आ गया,उन्हें अपने पद को छोड़ के कुछ नहीं दिखा,फलस्वरूप प्रचार एवं संगठन सर्वथा समाप्त हो गया। आर्यसमाज के हितैषी जनों से यह सहन नहीं हुआ जब उन्हें आर्य समाज का भविष्य अन्धकारमय प्रतीत हुआ तो उसकी रक्षा के लिये **पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में श्री स्वामी धर्मानन्द जी,श्री स्वामी सुमेधानन्द जी** आदि ने योग्य व्यक्तियों को संगठन की बागडोर सौंपने के लिये लगभग साढ़े तीन वर्ष कठोर संघर्ष किया,लोगों की निराशा को उत्साह में वदला। फलस्वरूप न्यायालय ने निष्पक्ष निर्वाचन का आदेश दिया। उसी का परिणाम हुआ कि सारा अन्धकार छट गया नये उत्साह का वातावरण बना और एक कर्मठ सन्यासी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का नेतृत्व एवं मार्ग दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। श्री स्वामी ओमानन्द जी, श्री स्वामी धर्मानन्द जी,श्री स्वामी सुमेधानन्द जी,श्री प्रो.शेरसिंह जी आदि ने बहुत उदारता का परिचय देते हुए निरन्तर गाली देने एवं अपशब्द लिखने वाले श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को भी अपने साथ मिला लिया। और एक उत्साह का वातावरण बनाया। परन्तु यह एकता जनतापार्टी या जनतादल की तरह शीघ्र टूट-फूट कर नष्ट न हो जाय इसका ध्यान सभी पक्षों को रखना चाहियें आशा है सभी सज्जन पुरानी कटु स्मृतियों को भूल जायेंगे पुराने मतभेदों को छोडकर मिलजुलकर आर्य समाज के इतिहास में नया अध्याय लिखेंगे। अपने झूठे मान प्रतिष्ठा एवं क्षणिक स्वार्थ के लिये महर्षि दयानन्द के अद्वितीय त्याग एवं स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को भूलायेंगे नहीं।

मेरा अपने पूज्य सन्यासी एवं अनुभवी अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि वे अपना एवं समाज का स्थायीहित तथा भविष्य का चिन्तन करें,ये पद एवं सम्पत्ति किसी के साथ गयी नहीं और न ही जायगी,हाँ इसके लिये किया गया छलकपट,पाप अवश्य जायेगा जो दु:ख एवं बंधन का कारण होगा। इस पदादि की प्राप्ति के क्षुद्र चिन्तन से जो दोष एवं पाप साथ लग जायेगा वह इस मनुष्य जीवन को निष्फल कर देगा। उसका पाप एवं तामसिक संस्कार पुन: नीच योनि एवं नरक की ओर ले जाने वाली होंगे इसमें संशय नहीं है। अत: मेरा आर्यजनों एवं अपने अधिकारियों से निवेदन है कि मेरी बातों को एकान्त में बैठकर शान्ति से सोचें। एक व्यक्ति एक जिम्मेदारी (पद) को ही अच्छी प्रकार नहीं सम्भाल सकता फिर कई-२ पद लेकर हम अपना एवं समाज का अहित ही कर रहे हैं। याद रखें

अरब-खरब लों द्रव्य है, उदय अस्त लों राज।
तुलसी जो निज मरण है तो आवे केहि काज॥

और भी

डरते रहो यह जिन्दगी बेकार न हो जाय।
सुपने में किसी जीव का अपकार न हो जाय॥

क्यों कि

बडे भाग मानुष तन पावा। सुर दुर्लभ सब ग्रंथन्हि गावा॥

व्रतानन्द सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२३ दिसम्बर को जिनका बलिदान दिवस है

❑ ब्र.सुदर्शन देवार्य
गु.आ.आमसेना

श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज धुन के धनी दृढ़ प्रतिज्ञ, सत्यनिष्ठ, आर्य जाति के सपूत, राजनीति के कुशल प्रयोक्ता, क्रान्ति और शान्ति के प्राण, दु:खित-त्रस्त पीडित मानव के सहायक महामना, उदार, धीर-वीर, गम्भीर, पराक्रमी, मानवता, के पुजारी, स्वतन्त्रता के उन्नेती, महामनीषी, विशाल हृदय, उन्नत ललाट, मिस्टर से महात्मा और महात्मा से स्वामी, वैदिक सिद्धान्तों से ओत-प्रोत, स्वराज्य मन्त्र के प्रचुर गायक, निर्भीकमना, महाशय मोहनदास कर्मचन्द गांधी को महात्मा बनाने वाले, गुरूकुल प्रणाली के पुनरूद्धारक, शिक्षा क्षेत्र में हिन्दी के समर्थक, महर्षि दयानन्द के गुणों पर मुग्ध होने वाले, अपने पुत्र द्वय को गुरूकुल के वातावरण में ढालने के प्रबल इच्छुक, अमर सेनानी, शुद्धि का विजयश्री शंख फूंकने वाले मैं उस अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के बलिदान पर हृदय से कोटिश: श्रद्धांजलियाँ उनकी स्मृति में समर्पित करता हूं ।।

आर्य समाज स्वामी जी का बलिदान दिवस सदा से मनाता आ रहा है। यह दिवस मनाने का एक मात्र उद्देश्य उनके छोड़े हुए कार्यों, हिन्दू समाज की रक्षा, वैदिक धर्म की स्थापना, वैदिक युग का पुनर्निर्माण, भारतीय राष्ट्र की एकता, अखण्डता की रक्षा आदि अनेक गतिविधियां है जिन्हें आर्य समाज पूरा करने में कृत संकल्प है । अमर शहीद स्वामीश्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व अद्भुत व चमत्कारिक था, भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में इतनी वीरता व लोक प्रियता उन्होंने दिखाई थी कि ब्रिटिश शासन कांप उठा था । कैसे एक शराबी, मांसाहारी, वैश्यागामी, मनुष्य न केवल इन बुराइयों पर विजय प्राप्त कर सका, बल्कि इन बुराइयों के विरूद्ध लोहा लेने के लिए महात्मा और तदन्तर उच्चकोटि के मूर्धन्य सन्यासी के रूप में प्रकट हुए । भारत मां की आजादी की लडाई में बढ-चढ कर हिस्सा लिया और इन्होंने ही उस समय भयावह हिन्दु-समाज को जागृत करके उसमें नये जीवन का संचार किया । ''ओ३म् और कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' के महान् उद्देश्य को साकार करने के लिए अपने जीवन को राष्ट्रीय-होम-अग्नि में समर्पित कर दिया । स्वामी जी ने अपने आजस्वी दृढ-चरित्र, महान आदर्शों एवं आर्य-संस्कृति के सिद्धान्तों का प्रतिपादन कर भारत की क्षुब्ध और निराश जनता में प्राण--संसार कर उसे गतिशील बनाया । स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक बार पुन: भगवान राम और कृष्ण के पवित्र भगवाध्वज को फहराकर आर्य-धर्म और संस्कृति को भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक फैलाकर राष्ट्र का जीवन को नवीन चेतना, नवीन दृष्टि और साहस प्रदान किया । इन्होंने प्राचीन भारत की वास्तविक सभ्यता और संस्कृति को सही अर्थों में समझकर एवं प्राचीन ऋषियों और मुनियों की पवित्र आध्यात्मिक वाणी का सही अर्थ लेकर भारत में धर्म-जागरण की दुन्दु भि बजाई । दासता से पीडित भारत को उसके प्राचीन गौरव और महिमा का स्मरण दिलाया । भारत की महान प्राचीन वैदिक संस्कृति को वर्तमान के संदर्भ में जनता के सामने उपस्थित किया और इस प्रकार अनेक कार्यों को करते हुये अपने जीवन में सत्य, राष्ट्रीय प्रेम, वैदिक धर्म और स्वतन्त्रता को अक्षरश: ग्रहण किया और इन्हीं आदर्शों के पालन में वे शहीद हो गये ।२३ दिसम्बर के दिन एक धर्मान्ध यवन ने इनके शुद्धि कार्य से चिढ़कर इनकी जीवन लीला को समाप्त कर दिया अत: प्रत्येक वर्ष २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस हम मनाते हैं तो हमारा परमपवित्र कर्तव्य है कि हम उनके अनुभूत प्रौढ़ विचारों से भी लाभान्वित होकर उनके बताए सन्मार्ग राष्ट्र कल्याण का पथ परास्त करें ।

हे प्रभु तुम शक्तिशाली हमें भी शक्ति दीजिए ।
श्रद्धानन्द के अपूर्ण कार्य को हमसे पूर्ण कराइये ।।
श्रद्धानन्दो विजयताम् ।।

भोगे रोग भयम्

भोग के साथ रोग भी लगा हुआ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्वानो से नम्र निवेदन-३

इस लेख से पहले दो लेख ''विद्वानो से नम्र निवेदन'' और एक लेख वेद पारायण का विरोध क्यों ? लिख चुका हँ,जिनमें सभी मन्त्रों के साथ ओम् लगाना ही चाहिये और वेद पारायण होने ही चाहिये लिखा था तथा अपने विचारों के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के अनेक मन्त्र प्रस्तुत करके,जिससे सिद्ध होता है कि सभी मन्त्रों के आगे ओम् बोलना चाहिये ! परन्तु चाहे श्री इन्द्रजितदेव जी यमुनानगर हों चाहे भवानी लाल जी भारतीय हों,सभी ने बात को उलझाया और शब्द जाल फैलाया है। भारतीय जी ने तो एक मेरी सूक्ति का अर्थ ही गलत दिया और यह भी नहीं हुआ उसका अर्थ लिख देते,बन्धुओं ! आप यजुर्वेद का भाष्य ऋषिकृत २.२५ का अर्थ पढें आपको पता लगेगा कि यज्ञ और वेद मन्त्रों से क्या वातावरण पर प्रभाव होता है। मैं अब कुछ नये प्रमाण लिख रहा हूं-और दो पुराने भी-पहले लेखों में लिखा था,कि उपस्थान मन्त्र उद्वयम् के साथ पंच महायज्ञ विधि मेओम् है,परन्तु संस्कार विधि में नहीं है, क्या करें ?

२. नमस्कार मन्त्र में पंच महायज्ञ विधि और संस्कार विधि में ओम् है,परन्तु आर्याभिनय में नहीं है।

३. अग्नेव्रतपते मन्त्र में, और यां मेद्याम् देव गणा'' मन्त्रों में संस्कार विधि में ओम् है,परन्तु आर्याभिविनय में नहीं है,क्या करें ?

४. सन्ध्या के मनसा परिक्रमा के मन्त्रों में पहले में ओम् है फिर ५ मन्त्रों में ओं. नहीं छपा है,परन्तु पंच महायज्ञ विधि में,इन मन्त्रों के नीचे नोट है कि आगामी पाँचो मन्त्रों में प्लुत ओ३म् का नहीं,दीर्घ ओम् का उच्चारण करना है,मेरे पास वैदिक यन्त्रालय अजमेर,विक्रमी २०४० की पंच महायज्ञ विधि है, तथा सार्वदेशिक सभा की पंच महायज्ञ विधि है, इन दोनों में,आगामी पाँचो मन्त्रों के साथ ओम् बोलना है ,लिखा हुआ है।

५. फिर ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के अग्नि होत्र विषय में प्रातःकाल के चारों मन्त्रों के साथ ओम् नहीं छपा है,जैसे '' सूर्य ज्योति'' के मन्त्रों में और सायंकाल के ''अग्नि ज्योति'' के चारों मन्त्रों में भी ओं नहीं है, जबकि पँच महायज्ञ विधि और संस्कार विधि में इन ८ मन्त्रों के आगे ओम् छुपा हुआ है। क्या करें ?

६. कुछ विद्वान् कहते हैं,कि सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में लिखा है कि यज्ञ के बाद और जितनी आहुतियां देनीं हों,गायत्री मन्त्र और विश्वानि देव.......से देवें परन्तु वहां गायत्री के साथ ओम् छपा है परन्तु ''विश्वानि देव''.......मन्त्र के साथ ओं.नहीं है,और आश्चर्य की वात यह है कि विश्वानि देव मन्त्र से पूर्व ओम् भूरग्नये स्वाहा के बाद तीन मन्त्रों के आगे ओम् नहीं है,(मुद्रित सत्यार्थ प्रकाश ४३वां संस्करण मई १९९५ आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट देहली) जबकि इन चारों मन्त्रों के आगे पंच महायज्ञ विधि में ,संस्कार विधि में,और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में ओम् छपा हुआ है,क्या करें ?कुछ विद्वान् दूसरों को ऋषि भक्त नही समझते !स्वयं ऋषि भक्त होने का अभिमान दिखाते हुए यही प्रश्न का उत्तर देते हैं कि जहां ऋषि जी ने ओं लिखा है,वहीं ओम् बोलो ! मैनें ऊपर सारे ऋषि जी के प्रमाण प्रस्तुत किये हैं,विषय वही है,परन्तु किन्हीं स्थानों पर ओम् छपना रह गया है,जिससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि सभी मन्त्रों के साथ ओम् बोलना चाहिये महर्षि जी तो जब पुरोहित घर पहुंचे तब भी 'ओमावसो सदने' सीद' यजमान बोले,लिखा है और पुरोहित जी भी ओम् सीदर्गम बोलकर बैठें, कितने स्पष्ट ढंग से ओम् लगाने का संकेत करते हैं। फिर बिना ओं लगाये,तो मेरे जैसे को यह भी पता नहीं चलता कि दूसरा मन्त्र प्रारम्भ हो गया है। मन्त्र के आगे ओम् बोलने से श्रद्धा एवं शोभा भी बढती है। हृदय पर हाथ रखकर विचार कीजियेगा।

८. मैं वेदों के पारायण को ऋषि के दो अनुच्छेद पहले लेखों में दे चुका हूँ जिनमें **५००० रू.** के घी से चार महीने तक यज्ञ का आदेश है। उस समय घी का एक रू.सेर से भी कम भाव था। उस हिसाब से लगभग **५० कुण्टल घी** बनता है और चारों वेदों के विद्वानों के विद्वानों के वरण का आदेश भी करते हैं,यदि वेद से यज्ञ नहीं करना है तो ऋषि जी विद्वानों के वरण का आदेश न करते और न ही ५० कुण्टल घी लिखते,हां यह बात हो सकती है कि वे विद्वान् मन्त्रों का चयन कर लें,परन्तु वेदों से होने वाले यज्ञ का विरोध न करें,तो बहुत अच्छा है। मेरी हर बात को आत्मीयता से पढें ! ९. ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभा के श्री आर्य मुनि जी ने वेद पारायण करने वालों को चूलू भर पानी में डूब मरो,लिखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। लगभग सभी गुरूकुलों के आचार्य भी इसी में आ जायेंगे, क्योंकि ९०% प्रतिशत गुरूकुलों में वेद पारायण होते हैं, परन्तु आर्य मुनि जी के समर्थक जितने विद्वान थे उनके नाम भी छपे हैं। उनमें श्री वेद प्रकाश जी श्रोत्रिय और प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु अवोहर का नाम भी था ! जब मुझे २-९-९८ को श्रोत्रिय जी करनाल मिले तो मैनें पूछा आप जून की गोष्ठी में देहली गये थे। उन्होंने कहा कि मैं तो गया ही नहीं ! प्रो. जिज्ञासु जी को अबोहर लिखा उन्होंने उत्तर में लिखा कि मैं तो बैठक में नहीं गया अपितु मैं तो सब मन्त्रों के आगे ओम् लगाने के पक्ष में हूँ-तथा वेद पारायणों में भाग लेता हूँ। आप अनुमान लगायें, कितने भद्दे शब्द और झूठ ! ऋषि सिद्धान्त रक्षिणी सभा की आड में हो रहा है। यह है ऋषि का काम, जहां सत्य और प्रेम नाम की कोई बात ही नहीं हैं ! परन्तु मेरा ऋषि तो जहर देनेवाले से भी प्यार कर रहा है।

१०. हमारे लगभग सभी गुरूकुलों में वेद पारायण होते हैं, मैंने एक आचार्य जी से पूछा कि वेद पारायण से क्या-२ लाभ है, उन्होंने कहा कि वेद पढना-पढाना गुरूकुलों का ही विषय है। हम वेद पारायण से शुद्ध उच्चारण का अभ्यास सिखलाते हैं तथा बडा यज्ञ भी हो जाता है। मुझे बोले, आप क्यों चक्र में पडे हैं, मैंने सोचा बात तो सही हैं, ''जिसका काम उसी को साजे और करे तो लाठी बाजे ''। अत: वेद पारायण आवश्यक है। जो विद्वान् मन्त्रों का चयन कर सकते हों, करें, मैं उनका स्वागत करता हूँ !

११. आज के विद्वान् जिन्होंने लगभग १५ वर्ष से झगडे खडे किये हैं, वे पहले के विद्वानों को जिन्होंने आर्य समाज के निर्माण के कार्य किये हैं, लाखों को आर्य समाजी बनाया था, गुरूकुल खोले थे, निर्माण करने वाला साहित्य दिया था। वे सभी सभी मन्त्रों के साथ ओं बोलते थे, उन्हें आज के विद्वान तुच्छ समझते हैं ! परन्तु ओम् सभी मन्त्रों के आगे लगाने की प्रथा ऋषि के समय से ही है। अत: यही प्रथा यहां तक पहुंची है ! अत: पुन: प्रार्थना है कि सब मन्त्रों के आगे आम् लगाओ, एकता बनाओ और आनन्द पाओ ! बहुत बहुत धन्यवाद। वेदों वाले महर्षि दयानन्द की जय !❑

पता:
महात्मा प्रेम प्रकाश वानप्रस्थ
आर्य कुटिया, धूरी, १४८०२४ (पंजाब)

वेद-वेदांग पुरस्कार

आर्य समाज सान्ताक्रुज वर्ष-१९९९ में निम्न लिखित पुरस्कारों से आर्य विद्वानों को सम्मानित करेगा

०१. वेद-वदांग पुरस्कार:- जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद-वेदांग पर अनुसंधान किया हो एवं ग्रन्थ लिखे हों उन्हें '' वेद-वेदांग पुरस्कार'' से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि २५,००१/-रूपये दी जाएगी।

०२. वेदोपदेशक पुरस्कार:- वेद-वेदांग के के अनुसंधान कर्त्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त आर्य समाज के उपदेशक, भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्त्ता के रूप में सेवा की हो उन्हें''वेदोपदेशक पुरस्कार'' से सम्मानित किया जायेगा। पुरस्कार राशि १५,००१/-रूपये दी जायेगी।

०३:-श्रीमती लीलावती महाशय''आर्य महिला पुरस्कार' उपरोक्त पुरस्कार के अतिरिक्त एक महिला विद्वान/कार्यकर्त्ता को रूपये ११००१/-, शाल एवं रजत ट्राफी से सम्मानित किया जाएगा।

जो आर्य बन्धु किसी विद्वान के नाम उपरोक्त पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं, वे विद्वान के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रन्थों की सूची एवं प्रति सहित विस्तृत पत्र दिनांक-३०/११/१९९८ तक भेजने की कृपा करें।

जो विद्वान अपने नाम का स्वयं प्रस्ताव करेंगे वे अयोग्य माने जाएंगे। जिन विद्वानों के नाम पूर्व में प्रस्तावित किये गये हैं उनके नामों को पुन: प्रस्तावित करने की आवश्यकता नहीं है।

आपके द्वारा प्रस्तावित नामों के आधार पर निर्णायक मण्डल वर्ष-१९९९ के लिये वेद-वेदांग, वेदोपदेशक एवं श्रीमती लीलावती महाशय''आर्य साहित्य पुरस्कार'' के लिये विद्वान का चयन करेगा। पुरस्कार के अन्तिम निर्णय का अधिकार आर्य समाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा के पास सुरक्षित होगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैदिक धर्म का आशावाद

देश विभाजन से कुछ समय पूर्व एक मुसलमान ने पंजाब में एक पुस्तक लिखी थी जो लाहौर से छपी थी। अंग्रेजी की इस पुस्तक को मैनें अपने विद्यार्थी जीवन में पढ़ा था कि कोई १५० पृष्ठों की इस पुस्तक में लेखक ने गीता की धज्जियाँ उड़ाने की डींग मारी। आश्चर्य का विषय तो यह है कि गीता की आरती बनाने व गाने वालों ने और गीता की दुहाई देने वाले पौराणिक हिन्दुओं ने इस पुस्तक के प्रतिवाद में एक भी पंक्ति न लिखी। महर्षि दयानन्द जी के मन्तव्यों व जीवन पर पौराणिक ने क्या-२नहीं लिखा ? क्या जैनी, क्या राधा स्वामी, क्या देव समाजी और क्या मायावादी व अन्य मूर्तिपूजक सब में ऋषि दयानन्द के मिशन पर वार करने की होड़ सी लगी रही परन्तु जब हरे कृष्णा, हरे कृष्णा का मन्त्र रटने वालों को एक विधर्मी ने ललकारा तो सबने चुप्पी साध ली।

यही प्रवृत्ति आज के हिन्दुओं की है। मुसलमानों ने पुनर्जन्म के खण्डन में एक पुस्तक लिखकर गीता के मानने वालों को चुनौती दी है। विश्व हिन्दू परिषद् के लोग बड़ी-बड़ी बातें बनाते हैं परन्तु श्री कृष्ण के आत्मा की अमरता व पुनर्जन्म के सिद्धान्तों पर वार हुआ है तो न जाने परिषद् क्यों चुप है ? श्री कृष्ण व स्वामी विवेकानन्द का नाम लेकर मुसलमान लेखक गो मांस भक्षण पर पुस्तक लिखकर प्रचारित करते हैं तो हिन्दू चुप हैं। पहले सनातन धर्म सभायें होती थीं। हम धर्म रक्षा में प्रमाद के लिए उन्हें दोष देते थे। अब वे तो रही नहीं। उनका स्थान विश्व हिन्दू परिषद् ने लिया है इसलिए इन्हीं लोगों से कह सकते हैं।

जिस पुस्तक की हमने आरम्भ में चर्चा की है उसका एक तर्क यह था कि गीता का दर्शन मनुष्य को निराशावादी बनाता है। यह कैसे ? उसका तर्क यह था कि गीता को मानने वाले हिन्दू के मन में यह भय बैठा रहता है कि पता नहीं अगले जन्म में मैं किस योनि में जाऊंगा। कीट, पतंग, पशु, पक्षी आदि की योनि में जाने के भय से उसकी सोच निराशवादी हो जाती है। आज भी पुनर्जन्म के खण्डन में लगे विधर्मी लेखक यही कुछ लिखते हैं। इनकी एक युक्ति यह भी है कि न जाने पूर्वजन्म में जो हमारी माता, बहिन, पिता व भाई थे-वे इस जन्म में हमारे क्या है ? मैं उन लोगों की भाषा का तो यहाँ प्रयोग नहीं कर सकता। भाव यह है कि माता, बहिन आदि से इस जन्म में कोई और सम्बन्ध होना अनैतिकता व लज्जा की बात है। ऐसी ही बातें वे अगले जन्म के बारे में भी लिखते व कहते रहे हैं। ऐसे आक्षेप करने वालों को हमारे विद्वान् उत्तर देते रहे कि संसार में एक दूसरे से हमारे सम्वंध भौतिक शरीर के कारण हैं। मौत के साथ जब शरीर छूट जाता है तो सम्वंध भी छूट जाते हैं। आत्मा का किसी से माता, भाई, बहिन का नाता नहीं होता। मरने के बाद जन्नत जाने वालों का अपने धन, माल, सामान, घर घाट से क्या सम्वंध होता है ? ऋषि दयानन्द जी शिष्य परम्परा के लोग ऐसे सब आक्षेपों का उत्तर देते रहे हैं। अब जिन लोगों के हाथ में आर्य समाज है उनके बारे में ऐसी बात नहीं कह सकते। श्री पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार कहा करते थे:-

जरा छेड़े से मिलते हैं
मिसाले ताले तम्बूरा
बजाले जिसका जी चाहे
मिलाले जिसका जी चाहे

यह था तेजस्वी स्वरूप आर्य समाज का। पुनर्जन्म वैदिक धर्म का एक मूल सिद्धान्त है इसलिए आज इस बार प्रतिकार करने के लिए यहाँ कुछ लिखा जायेगा महर्षि दयानन्द जी से इसी प्रश्न पर ब्रह्म समाजी बिगड गये थे। धर्मवीर पं. लेखराम के पुनर्जन्म मीमांसा ग्रन्थ ने लाखों को सन्मार्ग दिखाया और मतपंथों में हडकम्प मचाया था। श्री पं गंगा प्रसाद जी उपाध्याय ने वैदिक धर्म की एक विशेषता यह लिखी है कि इसमें

No Eternal Heaven-No Eternal Hell.

अर्थात् यहाँ न तो सदा का स्वर्ग है और न सदा का नरक है। पुनर्जन्म को न मानने वालों को निराशा चिपकती है कि एक बार नरक में गए तो सदा वहीं जलते सडते रहेंगे। कोई स्वयं जन्नत में चला गया तो बीवी दोजख में जा सकती है और यदि बीवी बहिश्त में चली भी गई और उसका मियां नरक में चला गया तो बीवी का स्वर्ग भी नरक समान ही होगा। हर मुस्लिम पुरुष को तो स्वर्ग में सत्तर हूरें व गिलमान मिलेंगे। उसको तो बीवी के नरक में जाने पर भी कोई कमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न रहेगी परन्तु बेचारी बीवी की स्थिति में स्वयं रखकर कोई मौलाना सोचे तो !यह हमारा कथन नही है। उर्दू के एक सिरमौर लेखक व जाने माने मौलाना जनाब न्याज फतहपुरी ने बडे विस्तार से यह प्रश्न मौलाना लोगों के सामने रखा था। न्याज जी के प्रश्न का उत्तर फरिश्ते भी न दे सके। मौलाना लोग तो क्या देंगे। न्याज की चिन्ता यथार्थ है। यह जीवन-दर्शन मनुष्य को आशावादी **OPTIMISTIC** दयानन्द का शंखनाद फूँकते हुए संसार के लोगों से कहा:-

'' **The door of fliss is always open**''यहाँ परमेश्वर की दया का द्वार सदा खुला है। मरकर यदि अधम योनि कर्मानुसार मिली तो घबराने की क्या बात ?

फिर मानव चोला मिलेगा। सीमित कर्मों का फल असीम नहीं,ससीम ही होगा। निराशा का प्रश्न ही नहीं उठता। किसी ने लम्बे समय तक खोटे कर्म किए फिर सन्मार्ग पर आ गया। जो दुष्कर्म किए उनका फल तो भोगना ही होगा अब जो आगे शुभ कर्म करेगा प्रभु उनका फल भी देंगे ।वैदिक धर्मानुसार जीव को उन्नति के लिये सदा नये, नये अवसर मिलते रहेंगे। हमारे स्वामी श्रद्धानंद वीर मदन लाल धींगडा आदि बलिदान देते हुए यही सुरीली तान सुनाकर गये कि फिर जन्म लेंगे। अधूरे काज पूरे करेंगे निराशा उसके लिए है जो पाँच वर्षों की आयु में मरकर फिर जन्म नहीं लेंगे। **डां० राधा कृष्णन्** ने इसी वैदिक दृष्टिकोण के लिए लिखा है '' **Every saint has a past and every sinner has a future**'' अर्थात् प्रत्येक सन्त का एक अतीत है और प्रत्येक पापी का भविष्य भी है। स्वामी श्रद्धानंद जी व महात्मा फूलसिंह जी का जीवन इसके प्रमाण हैं। एक वैदिक ऋषि ने सहस्त्रों वर्ष पूर्व एक घोष किया था। ऋषि दयानन्द जी ने पुन: वह घोषणा की:- **''स्वतन्त्र कर्त्ता''** ।कर्त्ता वही है जो स्वतन्त्र हो। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है तभी तो किसी को पुण्यात्मा या भला बुरा मानते हैं। पुनर्जन्म का सिद्धान्त और जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता-ये दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।जो मत पंथ जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता का सिद्धान्त नहीं मानते और जो मत पंथ कर्म फल का सिद्धान्त नहीं मानते निराशावाद तो उनको चिपटा ही रहेगा ।कारण उनका भगवान् स्वेच्छाचारी है। क्या पता किसको स्वर्ग में भेजे और किसको नरक में। और यह भी याद रखें ऋषि दयानन्द ने एक बडा मार्मिक वाक्य लिखा है कि सदा सुख भी तो दु:ख ही होता है।

पुनर्जन्म का दर्शन निराशावादी सोच नहीं यह तो वीरोचित दर्शन (**Bold Philosophy**) है। यहाँ कर्मक्षेत्र में आने के जीव को अनादि काल में अवसर मिलते चले आए हैं और आगे भी ये अवसर बन्द नहीं होंगे। पुनर्जन्म का आशावादी और तर्क संगत सिद्धान्त ऐसा है कि हजरत मुहम्मद जी ने भी यह इच्छा प्रकट की थी कि मैं शहीद हो जाऊँ। फिर जन्म लूँ फिर बलिदान दूँ और पुन: जन्म पाऊ । एक पुस्तक में लिखा है कि हुतात्मा महाशय राजपाल जी के हत्यारे का लाहौर में पुनर्जन्म हुआ। इस पर मुस्लिम लोग भी हर्षोल्लास प्रकट करते हैं। हमने अपनी पुस्तक'' कुरान वेद की ठण्डी छांव में '' इन सब विषयों पर सप्रमाण सविस्तार प्रकाश डाला है। प्रबुद्ध पाठक इन दोनों पुस्तकों को पढें व पढावें।

महर्षि दयानन्द जी तो मुक्ति से भी पुन: लौटना मानते हैं। जिसका आदि है उसका अन्त होगा ही। सीमित कर्म का फल असीम नहीं हो सकता। मुक्तजीव भी कर्म क्षेत्र में लौटेगा। यह आशावादी वैदिक दृष्टिकोण संसार को सुखधाम बना सकता है। पुनर्जन्म पर वार करने वाले तो यही नहीं बता सकते कि अल्लाह ने जीव को पैदा ही क्यों किया ? हम तो आत्मा को अनादि मानते हैं जैसे परमात्मा अनादि हैं। ❑

लेखक:- प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
वेद सदन अबोहर-१५२११६

अब तो केवल तेरी आश ।

तुमसे लगन लगी निशिवासर, तेरा ही विश्वास ॥
सूर्य चन्द्र से दीप जलाता, तेरा भृकुटी विलास ।
तेरी परम पावनी सत्ता, में है सबका वास ॥
पीर न जाने कोई मन की,करत सभी उपहास ।
करूणा धन तुम बिन चातक की,कौन बुझाए प्यास ॥
कैसा शोक कलेश भय किसका,जब तू मेरे पास ।
तज कर तेरी चरण-शरण अब,जाये कहां 'प्रकाश' ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन-२

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

मैंने गत अंक में भोजन के सम्बन्ध में कुछ चर्चा की थी। यद्यपि यह विषय बहुत लम्बा है।भोजन के विषय में अनेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। और लिखे हुए उपलब्ध भी हैं। परन्तु हम इस लेख में संक्षेप में ही भोजन के विषय में कुछ मुख्य-२ बातों की चर्चा करेंगे।

इसे आप सब जानते हैं कि उचित आहार(भोजन) एवं विहार (दिनचर्या)ही शरीर को बलवान् एवं दृढ रख सकते हैं। इसलिये पिछले लेख में हितभुक्, मितभुक्, और ऋतभुक् की चर्चा की थी, पुराने स्वास्थ्य सम्बन्धी ग्रन्थों में इन तीन बातों को विशेष महत्व दिया गया और बताया गया है कि जो व्यक्ति इन तीन बातों को ध्यान नहीं रखता वह कभी स्वस्थ नहीं रह सकता। मनुष्य से भिन्न-योनि-पशु-पक्षियों को भगवान् ने स्वाभाविक रूप से बांध रखा है। वे न तो भूख से अधिक खायेंगे और न ही अपनी प्रकृति के प्रतिकूल भोजन करेंगे। गाय, बैल आदि भले ही भूखे मर जायें परन्तु वे स्वभाव के विरुद्ध मांसादि को नहीं खायेंगे। परन्तु भगवान् ने इस मनुष्य योनि को पूर्ण स्वतन्त्रता एवं अधिकार इसीलिये दिया है कि यह संसार में खुल कर उन्नति कर सके शनैः शनैः मन इन्द्रियों को वश में करके मुक्ति के परमपद को प्राप्त कर सके। मन और जिव्हादि इन्द्रियों को वही वश में कर सकता है जिसने भोजन की महत्ता एवं आवश्यकता को समझा है, जो जीने के लिये भोजन करता है, भोजन के लिये नहीं जीता, इसी का नाम हितभुक् और मितभुक् है। अर्थात् भोजन का उद्देश्य शरीर और मन को स्वस्थ और बलवान् बनाना है अधिकतर मनुष्य भोजन करने का उद्देश्य केवल शरीर को स्वस्थ रखना सोचते हैं, परन्तु भोजन का सीधा प्रभाव मन पर पडता है, जैसा पिछले लेख में लिखा था, कि ''जैसा अन्न वैसा मन'' और यह भी पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि स्वस्थ एवं शान्त मन ही शरीर को निरोग रख सकता है इसी प्रकार यह भी जान लेना चाहिये कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के सहारे से स्वस्थ रहते हैं। इसके लिये जहां भोजन स्वच्छ तथा ताजा हो, सात्विक हो, वहाँ यह भी देखना चाहिये कि इस अन्न की प्राप्ति का साधन क्या है क्योंकि चोरी, छलकपट, विश्वासघात, हिंसा आदि साधनों से प्राप्त सात्विक भोजन भी तामसिक बन जाता है। ध्यान रहे जैसे मनुष्य की प्रकृति सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण के भेद से तीन प्रकार की होती है उसी प्रकार भोजन, व्यवहार आदि के भी सात्विक राजसिक और तामसिक ये तीन भेद हैं। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रकृति के अनुसार भी भोजन को चाहता है।यही बात गीता में **''आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः''** अर्थात् सभी मनुष्य अपने स्वभाव के अनुसार इन तीन गुणों युक्त भोजन में से अपने-२ स्वभाव वाला भोजन चाहते हैं। मनुस्मृति गीता आदि में भोजन के तीन भेद इस प्रकार है-

सात्विक भोजनः-

आयुः सत्वबलारोग्य-सुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्विकप्रियाः
(गीता १७/८)

आयु, बल, आरोग्य सुख और प्रीति को बढाने वाले तथा रसीले, स्थिर (देर तक ठहरने वाले) एवं हृदय के हितकारी भोजन सत्वगुणी मनुष्यों को प्रिय होता है। अर्थात् जिस भोजन के सेवन से आयु, बल वीर्य आदि की वृद्धि हो, जो सरस चिकना (घृतादियुक्त)चिरस्थायी और हृदय के लिये हितकारी हो वह भोजन सात्विक है।

सात्विक-पदार्थः-

गाय का घी, दूध, गेहूं, जौ, चावल, मूंग, उत्तम फल, पत्तों के शाक, काली तोरई, घीया (कद्दू) आदि मधुर, शीतल, स्निग्ध, सरस शुद्ध पवित्र और शीघ्र पचनेवाले तथा ओज एवं क्रान्तिपद पदार्थ हैं वे सात्विक हैं।

राजसिक भोजनः-

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्ष विदाहिनः।
आहार राजसस्येष्टा दुःख शोकामयप्रदाः॥
(गीता १७/९)

कड़वे, खट्टे, नमकीन, अत्युष्ण, तीक्ष्ण, रूक्ष, दाह-जलन पैदा करने वाले तथा दुःख, शोक और रोगों को बढानेवाले भोजन रजोगुणी व्यक्तियों को प्रिय होते हैं। कड़वे, खट्टे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमकीन, अत्युष्ण, तीखे, रूखे और दाहकारक नमक, मिर्च, इमली मसाले आदि से युक्त भोजन राजसिक हैं और इसके सेवन से मनुष्य की वृत्ति चंचल होती जाती है। नाना रोगों से ग्रस्त होकर व्यक्ति विविध दु:खों का उपयोग करता है और शोक सागर में डूब जाता हैं।

राजसिक पदार्थ:-

नमक, मिर्च, मसाला, हींग, गाजर, चना, उडद, करेला, सरसों, तैल में पके हुए पदार्थ, मांस, मछली, कछुआ, अण्डा, शराब, चरस चण्डू, कोकीन आदि मादक-द्रव्य तथा उष्ण रूक्ष, गृष्ठ, भारी देर में पचने वाले सभी पदार्थ राजसिक हैं।

तामसिक भोजन:-

यातयांम गतरसं पूति पर्यूषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम्॥

(गीता १७/१०)

बहुत देर के बने हुए, नीरस, शुष्क, दुर्गन्धयुक्त, वासी, उच्छिष्ट, झूठे और वृद्धि को नष्ट करने वाले भोजन तम: प्रधान व्यक्ति को प्रिय होते हैं। जो अन्न गला, सड़ा, बहुत विलम्ब से पकाया हुआ दुर्गन्धित उच्छिष्ट और कृमि कीटों से अपवित्र किया हुआ तथा रसहीन हो वह तामसिक है।

तामसिक पदार्थ:-

गले, सड़े दूषित वासी अन्न फल आदि, भैंस का दूध और घी, भिण्डी, काशीफल, लहसुन, प्याज बुद्धि को भ्रष्ट करने वाले दुर्गन्धयुक्त और भारी पदार्थ हैं। वे सब तामसिक है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द जी अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं:- जितना हिंसा और चोरी, विश्वासघात, छल, कपट आदि से पदार्थों को प्राप्त होकर भोग करना है वह अभक्ष्य और अहिंसा धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजन आदि करना भक्ष्य है। जिन पदार्थों से स्वास्थ्य, रोगनाश, बुद्धि, बल, पराक्रमवृद्धि होवे और आयुवृद्धि होवे उन तण्डुलादि (चावलादि), गोधूम (गेहूं), फल, कन्द, दूध, घी, मिष्टादि पदार्थों का सेवन यथायोग्य पाकमेल करके यथोचित समय पर मिताहार भोजन करना सब भक्ष्य कहाता है। जितने पदार्थ अपने प्रकृति से विरूद्ध विकार करने वालें हैं, उनका सर्वथा त्याग करना और जो जो जिसके लिये विहिंत हैं उन उन पदार्थों का ग्रहण करना यह भी भक्ष्य है।

कुछ लाभप्रद जानकारी

आचार्य शंकर ने प्रश्नोत्तर के रूप में हमें बहुत उपयोगी ज्ञान का उपदेश दिया है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं।

स्वच्छता क्या है ? स्वच्छ मन ।
विद्वान् कौन है ? बुद्धिमान ।
सबसे आवश्यक क्या है ?अपने लिए तथा दूसरों के लिए कल्याणकारी कार्य करना।
महान शत्रु कौन है ? आलस्य।
वीर कौन है ?जिसका अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण हो।
महान् सम्मान क्या है ? किसी वस्तु की याचना न करना।
निद्रा क्या है ? अज्ञान।
नरक क्या है ? दासता।
सत्य क्या है ? प्राणियों के प्रति सत्कर्म।
मृत्यु से बढ़कर क्या है ? गुप्त रूप से पाप करना।
संसार पर किसने विजय पा ली है ? जो सच्चा है।
सौन्दर्य क्या है ? सदाचार ।
चार दुर्लभ वस्तुएं क्या हैं ?
१. माधुर्य के साथ उदारता २. गर्वरहित ज्ञान ३. सहिष्णुता युक्त वीरता ४. त्याग सहित धन।
किस प्रकार की संगति में नहीं रहना चाहिए
जिसमें गुरूजन न हों ।
रक्षणीय क्या है ? कीर्ति ।
हमारी मां कौन हैं ? गाय ।
महान शास्त्र क्या है ? तर्क ।
उन्नति कौन करता है ? विनम्र
सज्जन कौन है ? जो संतुष्ट है।
भाग्य क्या है ? स्वास्थ्य।
परिणाम किसको मिलता है ? जो भूमि को जोतता है।
प्रत्यक्ष देवता कौन हैं ? मां।

आरती साहू
ग्रा.पो.कोर्दा
(सेवानिवृत्त उपस्नातक शिक्षा)

जगत् जीव और परमात्मा-ये तीनों एक ही हैं, पर अहंता के कारण ये तीन दिखते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिकूलता में अनुकूलता बनायें

❑ सत्यप्रिय आर्य

मनुष्य के गुप्त मन में निवास करनेवाली एक गुप्त शक्ति है, जिसे मानसिक स्वावलम्बन कह सकते हैं। यदि मनुष्य गुप्त मन में यह धारणा कर ले कि मैं हर परिस्थितियों से लड़ूंगा और ढल जाऊंगा, तो निश्चय ही उसमें गुप्त सामर्थ्य प्रकट हो जायेगी। जो उस विषमता से युद्ध करने की शक्ति प्रदान करेगी। तात्पर्य यह है कि भगवान् ने मनुष्य के चरित्र में एक ऐसा गुण भर दिया है कि यदि वह न होता, तो वह अधिक स्थायी आनन्द प्राप्त न कर पाता और उसकी अनायास ही अकाल मृत्यु हो जाती। यह गुण है परिस्थितियों के अनुसार लचक। यदि उसमें यह लचक न होती, वह समय और नयी परिस्थितियों के अनुकूल न ढल पाता, तो शायद संसार में इतना विकास न कर पाता, जितना आज विकसित हुआ है और हो रहा है। इस लचक के उदाहरण आपको जीवन के हर क्षेत्र में प्राप्त हो जायेंगे। क्या आपने कुएँ की ईटों में उगे हुए पीपल के पेड़ को देखा है? उसके पास पर्याप्त मिट्टी नहीं है। जड़ों को फैलाने के लिये कोई गुंजाईश नहीं है। पर्याप्त प्रकाश और वायु भी नहीं है। फिर भी वह बढ़ता ही जाता है। बढ़कर मजबूत बन जाता है। उसकी जडें टेढी-तिरछी होकर उन्हीं विषम परिस्थितियों में अपने भोजन के उपकरण एकत्रित कर लेती है। पहाडों की चट्टानों पर वृक्ष उगते हैं, बड़े होते जाते हैं, दृढ़ बनते रहते हैं और इस प्रकार पर्वतों पर वन-के-वन हो जाते हैं। उन्हें देखकर आश्चर्य होता है कि वे कैसी मिट्टी, जल, प्रकाश, धूप और वायु पा लेते हैं। हर प्रकार की विषमताओं से लडने, जूझने जैसी स्थिति में पड़कर उसी में पनपने-ढलने के ये वृक्ष प्रत्यक्ष उदाहरण है।

भारत में जब राजाओं के राज और जमींदारों की जमीन-जायदादें गयीं तो वे सोचते थे कि आगे का जीवन अब आखिर किस प्रकार चलेगा। ऐसे-ऐसे राजा जो बाजे का मधुर स्वर सुनकर ही जागते थे, अनेक व्यक्ति जिनकी जी हुजूरी और स्वागत में लगे रहते थे, जिन्होंने व्यापार या अन्य कोई व्यवसाय कभी न किया था, वे अब नयी परिस्थितियों के अनुकूल ढल गये हैं। साधारण व्यक्ति के जीवन से उन्होंने समझौता कर लिया है। वे व्यापार आदि की योजनाएँ बना रहे हैं। अनेक जागीरदार ठेकेदार बन चुके हैं। नयी परिस्थितियों में पूरी तरह ढल चुके हैं और पूरी तरह प्रसन्न हैं। यह चरित्र की लचकता ही अद्‌भुत प्रताप है।

प्राचीन काल में विद्यार्थियों के सर्वतोन्मुखी विकास के लिये गुरूकुल का कठोर अभावग्रस्त जीवन आवश्यक समझा जाता था। राजा से लेकर साधारण नागरिक भी अपने बच्चों को असुविधा और कष्टों का जीवन बिताने के लिये आश्रमों में भेजा करते थे। कष्ट एक प्रकार के शिक्षक थे, जिनकी कठोर परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के उपरान्त विद्यार्थी को समग्र जीवन के कष्ट कर्त्तव्य-पथ से विचलित नहीं कर सकते थे। वह शिक्षा एक प्रकार से कठोर परिस्थितियों के अनुसार जीवन ढालने की शास्त्रीय पद्धति थी।

निष्कर्ष यह है कि इस देव-दुर्लभ मानव शरीर का निर्माण कुछ इस प्रकार किया गया है और ऐसी-२ गुप्त शक्तियाँ अणु-२ में भर दी गयी है कि प्रत्येक आदमी विषम-से-विषम और नयी-से-नयी परिस्थितियों के अनुकूल थोड़े से परिश्रम और दृढता से ढल सकता है। ऐसी कोई विषम परिस्थितिनिहीं जिसे आप न जीत सकें आपकी शक्ति, सैकड़ों इन्द्रवज्रों से अधिक है। हर स्थिति पर पूर्ण विजय प्राप्त करने की गुप्त सामर्थ्य आप में भरी पड़ी है। भयभीत होने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। साहस करें और आगे बढ़ें, सफलता आपका मार्ग देख रही है।

त्याग

पूर्ण त्याग तभी होता है, जब त्याग का किञ्चित् भी अभिमान न आये। अभिमान तभी आता हो, जब अन्त: करण में त्याज्य वस्तु का महत्व अंकित हो। अत: वस्तु के त्याग की अपेक्षा वस्तु के महत्व का त्याग श्रेष्ठ है॥

प्रेम

भगवान् के प्रेम के लिये उनमें दृढ़ अपनापन की जरूरत है और उनके दर्शन के लिए उत्कट अभिलाषा की जरूरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मदर टेरेसा कैसे सेवा करती थी

मदर टेरेसा नर्क का फरिश्ता:- क्रिस्टोफर हिर्चेस द्वारा 'नर्क का फरिश्ता' नामक फिल्म का निर्माण कर बी.बी.सी. लन्दन के माध्यम से प्रदर्शन किया गया। इस फिल्म में गरीबों की मसीहा, करूणा और मातृत्व की साक्षात् मूर्ति कहलाने वाली मदर टेरेसा का यह बीभत्स दृश्य देखकर दर्शक अचंभित हो गये। फिल्म में दिखाया गया कि मदर टेरेसा के सेवा-केन्द्र में रोगियों को स्ट्रेचर पर लिटा कर ही रखा जाता है। इन रोगियों को बीमारी ठीक होने की दवा नहीं दी जाती है। बल्कि ऐसी दवाई दी जाती है, जिससे रोगियों के शरीर में ऐसी पीड़ा होती है, जो सहनशक्ति से बाहर होती है, देखने वाले यह समझें की रोगियों को बहुत कष्ट हो रहा है और इन दु:खी रोगियों का मदर टेरेसा के सेवा केन्द्र में भर्ती होने वाले रोगियों को इलाज करवाने के लिए अस्पताल नहीं भेजा जाता। यह प्रतिक्षा की जाती है कि रोगी जल्दी से जल्दी मर जाएँ।

फिल्म-निर्माता क्रिस्टोफर हिर्चेस ने लन्दन के **'गार्जियन'** साप्ताहिक समाचार पत्र, १३ नवम्बर के अंक में लेख लिखा कि मदर टेरेसा सेवा नहीं, सेवा के नाम पर व्यापार करती है और अमेरिका में अनेक समाचार पत्रों के मालिक राबर्ट मेक्सवेल से सेवा के लिए धन प्राप्त करती है। वह धन कहाँ है ? जबकि धन रोगियों के लिए मिलता है। इस सेवा केन्द्र पर सेवा तो नहीं की जाती है। केवल यह बताया जाता है कि रोगियों का इलाज किया जाता है।

समाचारपत्र **'दि लॉसेट'** के सम्पादक ने लिखा है कि मदर टेरेसा सेवा के नाम पर व्यापार करती है। रोगियों का इलाज करने के बजाय उनकी लाशों पर प्रार्थना करती है। मदर टेरेसा सेवा के नाम पर हिन्दू को ईसाई बनाने का कार्य करती है। **नागालैंड, मिजोरम, अरूणाचल, मेघालय, सिक्किम, त्रिपुरा, मणिपुर** आदि प्रान्तों में मदर टेरेसा की नकली सेवा से ९० प्रतिशत हिन्दू ईसाई बनाये जा चुके हैं। ये सब ईसाई ही नहीं बन गये हैं, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं राष्ट्र के विरोधी बन गये हैं। जगदीशप्रसाद वैदिक,

'वैदिक सदन' झँवरकुँआ, इन्दौर-४५२००१

वचनामृत

ईश्वर आज्ञा पालन:- प्यारे मित्रों ! उस परमपिता की अनुकूलता और उसकी आज्ञा का पालन क्या ही आनन्द दायक है ? आओ, हम सब मिलकर उस बलपति के द्वार पर चलें जिस से उस से बल प्राप्त करके हम योग्य हो जायें कि संसार मात्र की बुरी वासनाओं का मुकाबला करते हुये उस सबसे महा तेजस्वी और परमपिता की नित्य स्तुति कर सकें और हमारे लिये सृष्टि के सब पदार्थ सुखदायी हो जायें।

सत्य पालन:- प्यारे भ्रातृगण ! आओ दोनों समय नित्य प्रति सन्ध्या करते हुये ईश्वर से प्रार्थना करें और उसकी सत्ता से इस योग्य बनने का यत्न करें कि हमारे मन, वाणी और कर्म सब सत्य ही हों सर्वदा सत्य का चिंतन करें। वाणी द्वारा सत्य ही प्रकाशित करें और कर्मों में भी सत्य का ही पालन करें।

अविद्यानाश और विद्यावृद्धि:- आओ! सुख की अभिलाषा करने वालो ! परमात्मा की आज्ञा मानते हुए शुभ कर्मों में प्रवृत्त होओ। सदा भले पुरूषों की संगति करते हुए ईश्वरीय प्रेरणा से प्रवृत्त होकर अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करो ताकि परमानन्द की प्राप्ति हो।

ईश्वर की सर्वव्यापकता और निष्पापता:- क्या तुम सचमुच परमात्मा को प्रत्येक स्थान पर उपस्थित होने की स्वीकार करते हुए भी तुम्हारा मन अशुद्ध है, मगर उसमें लोभ, क्रोध, मोह, अहंकार के बुरे भाव तक उत्पन्न होते हैं, यदि तुम अपनी वाणी से निन्दा, छल और व्यभिचार के शब्द निकाल सकते हो, अगर तुम अपने शरीर से बुरे कार्य कर सकते हो तो निश्चय जानो कि तुमने अब तक उसकी सर्वव्यापकता को अनुभव नहीं किया।

उपासना का आनन्द:- आंख बन्द करो ! ज्ञाननेत्रों को बल-पूर्वक खोलो और देखो उस अनन्त शक्ति को जिसने तुम्हारी रक्षा के लिए हाथ पसार रखे हैं। चले जाओ पूर्ण विश्वास के साथ उसकी गोद में और फिर तुम उस अवस्था को प्राप्त हो सकोगे जहाँ पर बुढापे और मृत्यु का भय नहीं रहता।

आर्य कुमारों के लिये सन्देश:- सेवक बनने का प्रयत्न करो, क्योंकि आर्य जाति को लीडरों की अपेक्षा सेवकों की अधिक आवश्यकता है। जब कभी आपका पैर डगमगाने लगे तो राम के सेवक हनुमान् का स्मरण कर लिया करो। नवयुवकों से मैं पूछता हूं क्या तुम से कोई दयानन्द रूपी राम का सेवक हनुमान् बनने का यत्न न करेगा? महावीर के बिना दयानन्द का नाम अधूरा पडा है। मुझे पूरी आशा है कि दयानन्द के काम को पूरा करने के लिए, पाप की लंका का विध्वंस करने के लिए तुम्ही में से महावीर निकलेंगे। ❑

स्वामी श्रद्धानन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य -समाज में योगाभ्यासी का व्यवहार

स्वामी सत्यपति परिव्राजक

मनुष्य समाज में योगाभ्यास का व्यवहार किस प्रकार का हो, यह जानना अत्यन्त आवश्यक है। योगाभ्यासी का मन सदा प्रसन्न रहना चाहिए, क्योंकि प्रसन्न मन शीघ्र ही एकाग्र हो जाता है। जब साधक के मन में क्षोभ रहता है तो मन एकाग्र नहीं होता। मनुष्य को समाज में रहते हुए कभी अनुकूलता होती है और कभी प्रतिकूलता। अनुकूलता में प्रसन्नता और प्रतिकूलता में अप्रसन्नता होती है। मनुष्य समाज को चार विभागों में विभाजित किया जा सकता है। समाज में मनुष्यों का एक वर्ग ऐसा है कि जो सुख और सुख साधनों से सम्पन्न है उस वर्ग का आचरण अधिक निम्न आचरणवाले लोगों से अपेक्षाकृत है अच्छा है। दूसरा वर्ग ऐसा है कि जोकि साधनहीन है और बहुत दु:खी है। तीसरा वर्ग ऐसा कि जो अधर्माचरण अर्थात् असत्य आचरण और चोरी आदि बुरे कर्म करने वाला है। योगाभ्यासी व्यक्ति इन चार प्रकार के मनुष्यों के साथ चार प्रकार का व्यवहार करे तो उसका मन प्रसन्न हो जाता है और प्रसन्न हुआ मन शीघ्र ही एकाग्र हो जाता है। समाज में जो मनुष्य सुख और सुख साधन -सम्पन्न हैं, उनके साथ मित्रता का व्यवहार न करें। मित्रता का व्यवहार करने से मन प्रसन्न होता है और सुखसाधन-सम्पन्न मनुष्यों के प्रति द्वेष नहीं होता यदि साधक उनके साथ मित्रता का व्यवहार न करें तो ईर्ष्या-द्वेष हो सकता है। ईर्ष्या-द्वेष करने से मन में क्षोभ उतपन्न होता है और क्षोभ युक्त मन एकाग्र नहीं होता। इसलिए सुख साधन-सम्पन्न मनुष्यों के साथ मित्रता का व्यवहार न करना चाहिए। दूसरे दु:खी और साधनहीन मनुष्यों के साथ दया का व्यवहार करने से परोपकार की भावना उत्पन्न होती है। दु:खी मनुष्यों के दु:खों को दूर करने से और उनको सुख पहुँचाने से आनन्द की अनुभूति होती है तथा परोपकार करनेवाले मनुष्य का मन निर्मल हो जाता है। जब मनुष्य दु:खियों कि सहायता नहीं करता, तब उसका मन अति कठोर और घृणायुक्त हो जाता है। ऐसा मन एकाग्रता की स्थिति में नहीं आ पाता। इसलिए दु:खियों पर दया की भावना करनी चाहिए। तीसरे वर्ग में मनुष्यों के साथ हर्ष भावना का व्यवहार करना चाहिए। जो विद्वान् धार्मिक महात्मा है उन्हें देखकर हर्ष का व्यवहार न किया जाए तो उनसे द्वेष हो सकता है और द्वेष से दु:ख, दु:ख से अप्रसन्नता उत्पन्न होती है। अप्रसन्न मन एकाग्र नहीं होता। इसलिए महात्माओं को देखकर आनन्द व हर्ष की भावना उत्पन्न करनी चाहिए। चौथे वर्ग मनुष्यों के साथ उपेक्षा का व्यवहार करना चाहिए उनके प्रति न राग करना चाहिए और न द्वेष। मनुष्य समाज में इस प्रकार से रहने पर योगाभ्यास में सफलता मिलती है।

नया जोश दिखा रहे

स्वामी धर्मानन्द जी के शिष्य

अरूणाचल और आसाम सीमा के बीच में स्थित नवनिर्मित अरूणोदय गुरूकुल अपने नव पल्लवों से सुविकसित हो रहा है अरूणभूमि में स्थित यह गुरूकुल पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी के प्रेरणा एवं छत्रछाया में चल रहा है। इसके संचालक श्री तेजनारायण आर्य, आचार्य ब्र.राजेन्द्र शास्त्री हैं। श्री तेजनारायण जी के कठोर परिश्रम एवं त्याग द्वारा यह नवीन गुरूकुल सुचारू रूप से संचालित हो रहा है। यह एक पिछडा एवं वनवासी क्षेत्र है जहां हिन्दी का प्रचार प्रसार नगण्य है। इस क्षेत्र में सभी आर्य समाज रूपी सूर्य का उदय-सिद्धान्तों को पहुंचाने हेतू पू.स्वामी धर्मानन्द जी ने अपने शिष्य प्रशांत आर्य को भी भेजा हैं जो कि ब्र.राजेन्द्र आर्य के साथ मिलकर गुरूकुल में छोटे-२ ग्यारह(११)छात्रों के निर्माण करने के साथ साथ आर्य समाज के प्रचार प्रसार में प्रयत्नशील हैं। राजेन्द्र जी आसपास के ग्रामीणों के साथ संपर्क कर उन्हें वैदिक शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। प्रशांत जी उच्च विद्यालयों में जाकर योगासन आदि का प्रदर्शन कर छात्रोपयोगी, वैदिक सिद्धान्तों के अनुकुल व्याख्यान देकर नवयुवकों को आध्यात्मिकता एवं आर्य समाज के प्रति आकर्षित करने में प्रयासरत्त हैं। अरूणोदय गुरूकुल को सफल बनाने हेतु पू.स्वामी जी गुरूकुल आमसेना (उडीसा) से एक शिष्ट मण्डल भी भेज रहे हैं। आशा है इन सब के कठिन तप एवं त्यागपूर्ण जीवन से अरूणोदय गुरूकुल प्रगतिशील होकर इस क्षेत्र में वैदिक सिद्धान्त का प्रचार कर जनता को शान्ति प्रिय बनाते हुए आर्य समाज से जोडे रखने में सफल होगा।

व्यवस्थापक
अरूणोदय गुरूकुल, आसाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्ल का दिवालिया ब्रह्मा कुमारी मत

पंद्रहवीं किश्त

स्वामी परमानन्द सरस्वती

प्रिय पाठकों,

ब्रह्मा कुमारी मत तो पाखण्ड रूपी प्याज है इसके जितने छिलके उतारते जाओ सभी में पाखण्ड नजर आयेगा। इंस प्याज के मैंने १४ छिलके उतार कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर चुका हूँ।अब पन्द्रहवा छिलका उतार कर अपने श्रम को विराम दे रहा हूँ। और आशा करता हूँ कि विज्ञ पाठक इन छिलकों को देखकर प्याज के स्वरूप को समझ जायेंगे।

इस पन्द्रहवी किश्त में मैं शठे शाठ्यम् समाचरेत की नीति को अपना कर ही अपनी कलम को गति दे रहा हूँ। इनके मत की जितनी पुस्तके मैंने पढ़ी है वह सभी जगदीश की ही लिखी हुई है। महाभारत और गीता का सच्चा स्वरूप और सार नामक पुस्तक मन गढन्त और निराधार कल्पना करके लिखी गई है। ठीक उसी तरह की कल्पना का सहारा लेकर इनको परम पिता शिव और प्रजापति ब्रह्मा का सच्चा स्वरूप और सार पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ अवलोकन करें।

बम्बई महानगर में एक शिव नाम के अन्तर्राष्ट्रीय तस्कर और सट्टे बाज व्यक्ति ने काफी धन अर्जित कर एक **शिवकुमारी बाई** नाम की महिला जो कि देह व्यापार में संलग्न महिलाओं की नायिका थी उससे अपनी घनिष्टता स्थापित कर ली और दोनों ने मिलकर अपनी योजनानुसार एक विशाल कोठी जो सात मन्जिल की थी उसे खरीद कर उसका आधुनिकीकरण कराकर रखा। हर मन्जिल का अलग-२ नाम रखा गया और नाम के अनुरूप उस मालिक को सजाया गया हर मन्जिल वातानुकूल कर दी गई। पहली मन्जिल का नाम **सत्संग भवन** रखा गया इसमें प्रात: से रात्री ९ बजे तक कीर्तन भजन होते रहते थे। दूसरी मन्जिल का नाम **साधना भवन** रखा गया इसमें शिव कुमारियों को प्रशिक्षण दिया जाने लगा,तीसरी मन्जिल का नाम **रास मण्डल** रखा गया इसमें नृत्यकला आलिंगन आदि का कार्यक्रम होने लगा,चौथी मन्जिल का नाम **राज योग** और योग रखा गया,पाँचवी मन्जिल का नाम **जन्नत या स्वर्ग** रखा गया यहां पर हुरों और अप्सराओं की उसी प्रकार व्यवस्था रखी गई जिस तरह से कुरान और पुराणों में वर्णित है। छठवी मन्जिल का नाम **वैकुण्ठ** रखा गया जहां नारायण और लक्ष्मी के सादृष्य रहने की व्यवस्था की गई और सातवी मन्जिल का नाम **परमधाम** रखा गया वहां केवल परमपिता शिव ही रहते थे। पहली मन्जिल के सत्संग भवन में स्त्री पुरूष सभी जा सकते थे। वहां की शिक्षित परिचारिकायें सभी आगन्तुओं का आदर सत्कार बड़ी ही शालिनता से करती थी। इस व्यवहार के कारण सत्संग में बहुत भीड़ होती थी। दूसरी मन्जिल में केवल समर्पित महिलायें ही जा सकती थी। तीसरी मन्जिल में वे पुरूष जाते थे जिन्होंने एक दिन के लिये **५०० रू.**का अनुदान दिया हो,राजयोग की अनुदान राशि **१००० रू.**प्रतिदिन थी और जन्नत या स्वर्ग में जाने की अनुदान राशि **५००० रू.** प्रतिदिन थी और वैकुण्ठ का आनन्द लेने के लिये प्रतिमाह एक लाख रूपया थी। परम धाम में केवल अक्षत योनि शिवकुमारी ही आ सकती थी वहां परमपिता उनके तन में प्रविष्ट होकर गीता ज्ञान देते थे। गीता ज्ञान प्राप्त शिवकुमारी सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी और जगत माता जगदम्बा कहलाती थी। राजयोग और जन्नत में कार्यरत शिवकुमारियां प्रचार कार्य करती थी। हर एक के पास कीमती कारें थी जिनमें बैठकर वो लोग एयरपोर्ट रेल्वे स्टेशन बड़े होटलों एवं दूतावासों में जाकर अपना जाल बिछाती थी और रास मण्डल की शिवकुमारियां शहर के विविध प्रतिष्ठानों में प्रचार करती थी यह है इनके परमपिता परमात्मा शिव का सच्चा स्वरूप और सार। अब इनके प्रजापिता ब्रह्मा के सच्चे स्वरूप का अवलोकन करें।

सिन्ध हैदराबाद में कृपलानी परिवार में उत्पन्न **खूबचन्द** नाम का एक व्यक्ति जो गावों से गेहूँ खरीद कर शहर में फुटकर बेचता था वह गेहूँ के व्यापार के लिये बम्बई गया। वहां उसकी मुलाकात किशन बुधवानी के साथ हुई। किशन तस्कर शिवदादा के गेंग का प्रमुख कार्यकर्ता था। जब शिवदादा ने शिवकुमारी बाई के साथ मिलकर एक धार्मिक संस्था आनन्द भवन में खोल ली तब किशन को तस्करी की कमाई से २० प्रतिशत देने को कहकर उसे गेंग का दादा बना दिया था। किशन को एक ऐसे आदमी की जरूरत थी जो उसकी शर्तों के अनुसार करांची बन्दरगाह से डिलेभरी कुशलता पूर्वक ले सके। खूबचन्द से मुलाकात होते ही किशन की तेज निगाहों ने उसके अन्दर छिपी प्रतिभा को पहिचान लिया और खूब चन्द से प्रतिज्ञा पत्र भरवाकर अपने गुट में मिलाकर हैदराबाद में एक दुकान रत्नो की खोल दी नाम रखा लखीराम एण्ड सन्स फिर दुसरी दूकान करांची में खोल दी उसका नाम लेखराज एण्ड सन्स रखा और दूसरे जौहरियों से कम कीमत में रत्नों को बेचने से इनकी दूकान ज्यादा चलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी। लेखराज की कार्य कुशलता को देखकर किशन ने कारांची गिरोह का दादा बना दिया तब से ये दादा लेखराज कहलाने लगे। और किशन को अपना गुरू मान लिया। जब कभी किशन हैदराबाद या करांची आता तो लेखराज उसके स्वागत में हजारों रूपया खर्च कर देता, गुरूभक्ति का ऐसा प्रदर्शन करता की देखने वाले दंग रह जाते। किशन ने अपने प्रति लेखराज की निष्ठा को देखकर कहा कि तुम मेरे साथ बम्बई चलो मैं तुम्हें परमपिता परमात्मा शिव के वैभव का दिव्य दर्शन कराऊंगा। किशन ने लेखराज को आनन्द भवन की शिवकुमार संस्था के छयो मन्जिलों की विलांशिता का भरपूर आनन्द प्राप्त करा दिया। लेखराज ने कहा गुरूजी मेरे मन में एक प्रबल शंका उत्पन्न हो गई है कि शिवकुमारियां रति क्रीडा में निमग्न होते हुये भी गर्भवती क्यों नही होती है। किशन ने कहा परमपिता परमात्मा शिव द्वारा दिये गये ज्ञान का पालन करने से वे लोग गर्भवती नहीं होती हैं। शिव ने इन्हें ज्ञान दिया है कि रजोदर्शन के अन्तिम दिन से सोलह दिनों तक रति क्रीडा न करें इस नियम को बडी सख्ती से पालन कराया जाता है। जिसने नियम का उल्लंघन किया उसे कठोर दण्ड दिया जाता है। इस लिये कोई भी शिवकुमारी गर्भवती नहीं होती है। लेखराज ने किशन के पैर पकडकर कहा गुरूदेव मैनें इस आनन्द की कल्पना कभी स्वप्न में भी नहीं की थी कि इस धरती पर भी ऐसा स्वर्गीय आनन्द प्राप्त हो सकता है जो आपकी कृपा से मुझे प्राप्त हुआ है। अब दयाकर इस दास को परमपिता परमात्मा शिव के दर्शन और करा दो तो मेरा जीवन सफल हो जाय, किशन ने कहा कि मैं तुम्हारे सत्कार से इतना प्रभावित हूँ कि तुम्हे सब कुछ बता दूंगा। परन्तु शिव से मुलाखात करवा देना मेरे अधिकार क्षेत्र से बाहर है, क्योंकि शिव को हम लोगों निराकार लिंग स्वरूप तथा ज्योति स्वरूप घोषित कर चुके हैं। तब कि वे पहिले हमारे गेंग के दादा थे। परमधाम में रहने वाला परमात्मा शिव कौन है इस रहस्य को केवल मैं और शिवकुमारी बाई ही जानती है, या फिर वह शिवकुमारी जानती है जिन्हे जगत्माता जगदम्बा का पद प्राप्त होता है और यह हमेशा परमधाम में ही रहती है माह में केवल एक दिन पूर्णमासी को सत्संग भवन में आती है। पूर्णमासी के दिन जगदम्बा को विशेष रूप से अलंकृत किया जाता है। जगदम्बा सभा गृह में प्रवेश करती है तब एक विशेष प्रकार की धुनि का संगीत बनता है। जिस आसन पर वह बैठती है उसके १० फीट ऊपर शिवलिंग की मूर्त्ति रखी है जगदम्बा अपने आसन में बैठकर १५ मिनट तक आँखबन्द कर ध्यान करती है तभी शिवलिंग शनैः शनैः चमकने लगता है ठीक १५ मिनट पर उस शिवलिंग से एक नीला प्रकाश जगदम्बा के शरीर में पड़ता है प्रकाश पड़ते ही जगदम्बा आंख खोल देती है तभी माइक सेघोषणा होती है कि परमपिता परमात्मा शिव जगदम्बा के तन में प्रविष्ट हो गये हैं अब परमात्मा के अमृत बचनों को जगदम्बा के मुख से श्रवम करो। तब जगदम्बा मधुर स्वरों से रटा रटाया उदबोधन करने लगती है। उस वक्त पूरे सभागृह की लाइट बन्द हो जाती है केवल एक प्रकाश का फोक्श जगदम्बा के चेहरे पर पड़ता है उस प्रकाश से रत्नों से जडा मुकुट चमकने लगता है। उद्बोधन समाप्त होते ही सभागृह में पुनः प्रकाश हो जाता है और मुकुट का चमकना बन्द हो जाता है। फिर जगदम्बा सभी को आशीर्वाद देती है और लोग श्रद्धा से धन अर्पण करते हैं, यह पूरा कार्यक्रम केवल एक घण्टे का होता है, यह सब सुनकर लेखराज वहुत प्रभावित हुआ और निश्चय किया कि मैं भीऐसा कुछ करूंगा। हैदराबाद में आकर लेखराज ने ओम् मण्डली नाम की एक संस्था खोली और उसमें भजन कीर्तन के बाद रासलीला शुरू कर दी। तब हैदराबाद के लोगों ने इसका विरोध किया और उस भवन में आग लगा दी। उधर बम्बई में इनके गुरू किशन को उसकी गेंग के सहित पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। यह खबर जब शिवदादा को लगी तो वह तुरन्त भारत छोडने का निश्चय कर शिवकुमारी बाई को सारा कारोबार सौंपकर विदेश चला गया किशन के ब्यान के आधार पर पुलिस ने आनन्द भवन पर छापा मारा शिवदादा के न मिलने पर शिवकुमारी वाई को ले गई। और उस भवन को अपने आधीन कर लिया। तब वहां रहने वाली शिवकुमारियों ने नगर में जाकर अपने अपने कोठे चालू कर लिये। इस तरह से परमपिता परमात्मा शिव की लीला का पटाक्षेप हो गया यह खबर जब लेखराज को मिली तो उसने भी तस्करी के धन्धे से अलग होकर अपनी जौहरी की दूकान भी बन्द कर दी। उसी समय इनके सौभाग्य से देश का बंटवारा हो गया ए कराची से भागकर भारत आ गये और राजस्थान के आबू पर्वत पर एक कोठी खरीद कर वहां डेरा डाला। यहां की धर्मनिरपेक्ष नीति इन्हें वरदान सिद्ध हुई क्यों कि धर्म के नाम पर किसी को भी गुमराह कर लूटने की खुली छूट थी। यहां सत्य कहने वाले को दण्ड दिया जाता था कि उसने सत्य कहकर अमूक सम्प्रदाय की भावना को ठेस पहुचाई है। इस लिये सत्यान्वेशी लोग सत्य को कहने में हिचकिचाते थे इस धर्म निरपेक्षता का लाभ उठाकर दादा लेखराज ने यह घोषणा कर दी कि परमपिता परमात्मा शिव मेरे तन में प्रविष्ठ होकर गीता का सच्चा ज्ञान और राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं और मुझे प्रजापिता ब्रह्मा की उपाधि दी है इसलिये शिक्षा को ग्रहण करने वाली सभी ब्रह्माकुमारी कहलायेगी। इसी धर्मनिरपेक्षता का लाभ श्रीराम शर्मा ने उठाकर पहले अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप को देवदूत कहकर देवकन्याओं का एक गिरोह तैयार किया भारत की भोली जनता ब्रह्माकुमारी और देव कन्याओं के मायाजाल में फंसती चली गई। नारीजाती के स्वभाविक आकर्षण का लाभ इन दोनों ने खूब उठाया। प्यारे जगदीश तुमने एक अद्‌भुत जीवन कहानी पुस्तक के पृष्ठ १६ पर लिखा है कि एक बार गुरू अपनी बहुत बडी शिष्य मण्डली लेकर उनके यहां आये। उनके स्वागत में दादा लेखराज ने हजारों रूपया खर्च किये और पृष्ठ १८ में लिखा कि गुरू ने बुलाया और ये गये, सट्टे में घाटा लग जाने से दसहजार रूपया मांगा और इन्होंने दे दिया। परन्तु जगदीश तुमने यह नहीं लिखा की गुरू ने कहाँ किस शहर गांव में बुलाया था और उस गुरू का नाम क्या था ? वह रहता कहां था ? अब मैं जगदीश जी के ज्ञानवर्धन के लिये उस गुरू का पूरा पता बता देना चाहता हूँ कि तुम्हारे प्रजापिता ब्रह्मा का गुरू कौन था ? उसका नाम क्या था ? प्रजापिता ब्रह्मा (लेखराज कृपलानी) के गुरू का नाम किशन बुधवानी और वह बम्बई में पारस रोड गोल पीठा के पास रहता था। उसका गुरू परमपिता परमात्मा शिव (शिवदादा तस्कर) था जो शिवकुमारी बाई के साथ आनन्द भवन के सातवीं मन्जिल परमधाम में रहता और शिवकुमारियों के तन में प्रविष्ट हुआ करता था।

शठे शाठ्यं समाचरेत् के सिद्धान्तानुसार ही मैंने ब्रह्माकुमारी मत की समीक्षा की है। यद्यपि इनका अविद्या का भण्डार इतना विशाल है कि उसकी पूरी समीक्षा करना सम्भव नहीं है। जैसे चावंल की पकती हुई हण्डी के कुछ चावल निकालकर देखने से पूरी हण्डी के चावलों का पता लग जाता है ठीक इसी नियमानुसार मैंने पाठकों को इनकी अविद्या रूपी हण्डी के कुछ नमूने १५ किश्तों में प्रस्तुत किये हैं। अब इन १५ किश्तों को संग्रहित कर पुस्तक का रूप दिया जा रहा है

जिन पाठकों के मन में धर्म रक्षा और पाखण्ड उन्मूलन की तडप है वे अभी से पत्र लिखकर अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लें और लोगों को वितरित करें ताकि इस पाखण्ड पर अंकुश लगाया जा सके। इस पाखण्ड में लिप्त लोगों का सुधारना तो सम्भव नही दिखता, नये लोगों को इनके चक्कर में फंसने से रोका जा सकता है।

किसी कवि ने कहा है-

जो हल्दी जर्दी तजे, तजे खटाई आम।
जो सुशील सीलहि तजे, तो अवगुण तजे गुलाम॥

जीवन को भोग-विलासों में न खोयें

जीवं रूदन्ति विनयन्त्यध्वरं दीर्धामनु प्रसितिं दीध्युर्नरः।
वामं पितृभ्यो य इदं समीरिरे भयः पतिभ्यो जनये परिण्वजे॥

शब्दार्थः-(ये) जिन्होंने (इदम्) यह सिद्धान्त (समीरिरे) प्रेरित किया है कि (पतिभ्यः) पतियों के लिये तथा (जनये) जननी अर्थात् पत्नियों के लिए (परिण्वजे) परस्पर आलिंगन में ही (मयः) आनन्द और सुख है, (ते) वे (नरः) नर-नारियां (जीवम्) यावज्जीवन (रूदन्ति) रोते हैं, (अध्वरम्) और हिंसारहित गृहस्थ यज्ञ को (वि नयन्ति) धर्म विरूद्ध मार्ग में ले जाते हैं, (दीर्धाम्) दीर्घ अर्थात् लम्बे (प्रसितिम्) प्रबन्धों का (अनु) निरन्तर (दीध्युः) ध्यान अर्थात् चिन्तन करते रहते हैं, तथा (पितृभ्य) बुजुर्गों के प्रति (वामम्) वामाचर अर्थात् उल्टे आचार-व्यवहार (समीरिरे) प्रेरित करते हैं।

व्याख्याः-प्रस्तुत मन्त्र अथर्ववेद के १४वें काण्ड का ४६वां मन्त्र है। इस मन्त्र में परमात्मा नें मनुष्य को बहुत सुन्दर उपदेश दिया है कि गृहस्थ जीवन को केवल भोग स्थली मत समझो बल्कि यह सब आश्रमों का आधार है। मनुस्मृति ३,७७ में कहा गया है कि जैसे सब प्राणधारी वायु के सहारे चलते हैं वैसे ही सब आश्रम गृहस्थ का आश्रय लेकर चलते हैं अतः जो व्यक्ति गृहस्थ जीवन को केवल भोग- विलास और मौज-मस्ती वाला समझते हैं उनकी अवस्था निम्नलिखित होती है:-

१. ऐसे व्यक्ति आरम्भ में क्षणिक आनन्द में मस्ताने तो हो जाते हैं परन्तु परिणाम में जीवन भर रोते रहते हैं।
२. वे गृहस्थ धर्म के यज्ञियांश को हटाकर गृहस्थ को धर्म विरूद्ध दिशा में ले जाते हैं और उसे अयज्ञमय बना देते हैं।
३. वे दीर्ध प्रबन्धों की चिन्ता ही करते हैं परन्तु धैर्य और साहस के अभाव के कारण सफलता उन्हें प्राप्त नहीं होती।
४. वे माता-पिता और अन्य वृद्धों के प्रति ऐसे व्यवहार करते रहते हैं जो कि शिष्टाचार के विरूद्ध होते हैं।

अतः जो गृहस्थ आश्रम लोक-परलोक दोनों को सुधारने का एक बहुत बडा साधन है। इस साधन को मानव ने अपने स्वार्थ, आलस्य, प्रमाद आदि अतिक्रान्त, वासना लोभ आदि से नरकीय बना रखा है। ❑

मंजीत कुमार आर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110277

कन्या गुरुकुल आमसेना में -
आर्य वीरांगना शिविर

कन्याओं को योगासन, लाठी, कुम्फू, कराटे, आदि प्रशिक्षण

दिनांक २५ से ३१ दिसम्बर ९८ तक

प्रिय सज्जनों, कहने को आज स्त्री पहले से स्वतन्त्र है। परन्तु ज्यों-ज्यों पाश्चात्य संस्कृति का प्रचार बढता जा रहा है, त्यों-त्यों नारियों पर अत्याचार, उनका शोषण एवं असुरक्षा बढती जा रही है। इस भयावह वातावरण में आज नारी घर में अकेली रहने में भी भय करती है। हां जो पानी के साथ तिनके की तरह बहकर अपने को नष्ट-भ्रष्ट करना स्वीकार करती है तो बात अलग है जब कि ऋषियों ने नारी को पूज्या, देवता और भूमि से भी भारी बताया है। आर्यसमाज मातृशक्ति को वही पूज्य स्थान दिलाना चाहता है। इसका उपाय है कि वे अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ हों। इस भावना को लेकर गुरुकुल आश्रम आमसेना में २५ दिसम्बर ९८ से ३१ दिसम्बर ९८ तक एक संक्षिप्त आर्य वीरांगना शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इसमें उनकी चरित्र रक्षा, आत्मशक्ति की महत्ता, अपनी प्राचीन संस्कृति के ज्ञान के साथ योगासन, प्राणायाम, लाठी एवं भाला संचालन, जूडो कराटे कुम्फू आदि व्यायामों का क्रियात्मक शिक्षण कन्या गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रांगण में योग शिक्षिकाओं के द्वारा दिया जाएगा। कन्याओं की पूरी सुरक्षा की व्यवस्था यहाँ है। जो सज्जन अपनी कन्याओं को भेजना चाहते हैं वे शीघ्र सूचित करें। आवश्यक होने पर अभिभावकों के रहने की व्यवस्था अलग से होगी।

निर्देश:-

✧ सभी कन्याओं की सफेद सलवार कुर्ती, आकाशी रंग की चुन्नी कम से कम एक ड्रेस हो। सफेद जूता मोजा भी साथ लावें।

✧ थाली, लोटा, गिलास, कटोरी, कापी, पेन, और ऋतु अनुकूल वस्त्र साथ लावें।

✧ आयु सीमा १२ से २० वर्ष होनी चाहिए।

✧ शिविर शुल्क २५/रु प्रति शिविरार्थी रखा गया है।

::निवेदिका::
आचार्या
कन्या गुरुकुल आमसेना

शीतकालीन आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर
२५ दिसम्बर ९८ से ३१ दिसम्बर ९८ तक

उत्कल प्रान्तीय आर्यवीर दल की ओर से गुरुकुल आश्रम की पुण्यभूमि में आगामी २५ दिसम्बर ९८ से ३१ दिसम्बर ९८ पर्यन्त सप्तदिवसीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है जिस में प्रशिक्षित योग्य प्रशिक्षकों द्वारा लाठी, भाला, छुरी, योगासन, जूडोकराटे, संध्या हवन आदि विविध उपयोगी आत्मरक्षक उपायों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। अत: समस्त राष्ट्रभक्त सज्जनों से अनुरोध है कि इस शिविर में अपनी भावी आशाओं को प्रवेश कराके राष्ट्र धर्म एवं संस्कृति की रक्षा में अपने अमूल्य योगदान दें।

निर्देश:-

✧ शिविरार्थी नित्योपयोगी वस्तु चादर, बिछौना, थाली, कटोरी, कापी कलम लाठी इत्यादि साथ लेकर आवें, कोई मूल्यवान वस्तु साथ न लावें।

✧ हाफपेंट (खाकी) सफेद बनियान अत्यावश्यक है।

✧ सफेद सर्ट, जूता, सफेद मोजा आदि ला सकें तो उत्तम है।

✧ शिविरार्थियों की आयु सीमा १२ से ३० वर्ष है।

✧ ता:२४/१२/९८ तक सायंकाल गुरुकुल पहुंचना होगा।

✧ प्रथम वर्ष शिक्षा प्राप्त किये योग्य शिविरार्थी को तितीय वर्ष की शिक्षा दी जायेगी।

✧ शिविर शुल्क मात्र २५ रु. है।

::निवेदक::

संचालक
आर्यवीर दल उडीसा

आचार्य
गुरुकुल आमसेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निर्वाचन सम्पन्न

दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा नियुक्त निर्वाचन अधिकारी श्री वेद प्रकाश धवन की देखरेख में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन दयानन्द भवन नई दिल्ली में ८ नवम्बर को सम्पन्न हुआ। इसमें आर्य समाज की विभूति प्रकाण्ड विद्वान पूज्य **स्वामी ओमानन्द जी** बहुमत से प्रधान निर्वाचित हुए। यद्यपि अधिकतर प्रतिनिधि **श्री स्वामी धर्मानन्द जी** को प्रधान बनाना चाहते थे। लोगों ने उन्हीं का नाम प्रस्तावित किया था परन्तु श्री स्वामी धर्मानन्द जी ने अपने गुरू श्री स्वामी ओमानन्द जी का नाम प्रधान पद के लिए रख दिया और अपना नाम वापस ले लिया। इसके पीछे सूर्यदेव जी को मन्त्री एवं श्री सच्चिदानन्द जी को कोषाध्यक्ष चुना गया। इन्हीं के साथ छः उपप्रधान **१. श्री स्वामी धर्मानन्द जी(उडीसा) २. श्री स्वामी सुमेधानन्द जी (राजस्थान) ३. प्रो शेरसिंह जी (हरयाणा) ४. श्री कै.देवरत्न जी (मुम्बई) ५. श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव जी (म.प्र.)६. श्री हरवंशलाल जी शर्मा (पंजाब)** चुने गये।

यद्यपि प्रारम्भ में वातावरण तनावपूर्ण था परन्तु श्री ओमानन्द जी आदि के पक्ष की नम्रता तथा सबको साथ में लेकर चलने की भावना नें वातावरण अत्यन्त मधुर एवं उत्साहपूर्ण बना दिया। इस सामञ्जस्य पूर्ण निर्वाचन से सभी प्रतिनिधि अत्यन्त प्रसन्न हुए एवं उत्साह से भर गये। निर्वाचन के पश्चात् पूज्य स्वामी ओमानन्द जी ने घोषणा की, कि आगे से कोई किसी को आर्य समाज से निकालेगा नहीं और न ही समाचार पत्रों में व्यक्तिगत आक्षेप किये जाएं। जहाँ-जहाँ प्रान्तीय सभाओं एवं समाजों में लडाई झगडे हैं उन्हें शीघ्र समाप्त किया जाय।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

वर्तमान समय में घरों में, समाज में जो अशान्ति, कलह, संघर्ष देखने में आ रहा है उसमें मूल कारण यही है कि लोग अपने अधिकार की मांग तो करते हैं पर अपने कर्तव्य का पालन नहीं करते।

आर्यजगत के समाचार-

मुजफ्फरपुर ११ नवम्बर १९९८

८ नवम्बर ९८ को सार्वदेशिक में हुए चुनाव पर उत्तर बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान "आर्यरत्न" श्री पन्नालाल आर्य की अध्यक्षता में आर्य कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक में मुजफ्फरपुर आर्य समाज में अपार हर्ष एवं प्रसन्नता व्यक्त की गई। श्री पन्नालाल आर्य ने खुशी व्यक्त करते हुए आशा व्यक्त किया है कि पूज्य स्वामी ओमानंद सरस्वती, श्री स्वामी धर्मानंद सरस्वती श्री स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, श्री कैप्टन देवरत्न आर्य जी, श्री सूर्यदेव जी, श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी, श्री प्रो.शेरसिंह जी आदि की यह कार्यकारिणी समिति क्रान्तिकारी काम कर महर्षि दयानंद सरसवती के सपनों को साकार करेगी। जिससे भारत सचमुच आर्य-राष्ट्र बनकर जगत गुरू की गरिमामयी अवस्था को प्राप्त करेगा।

महोपदेशक श्री कमलेश दिव्यदर्शी तथा ब्रह्मानंद जिज्ञासु **'आर्यकवि'** ने भी अपनी प्रसन्ता व्यक्त करते हुए कहा है कि स्वामी ओमानंद सरस्वती के नेतृत्व में स्थायित्व तथा भ्रष्टाचार को समाप्तकर राज्य स्तरीय सभी प्रतिनिधि सभाओं को शुद्ध करने की दिशा में शीघ्र पहल किया जायेगा

पन्नालाल आर्य
प्रधान
आर्य-समाज मुजफ्फरपुर

ज्यों-ज्यों कामनायें नष्ट होती हैं त्यों-त्यों साधुता आती है और ज्यों-ज्यों कामनायें बढ़ती हैं त्यों-त्यों साधुता लुप्त होती है कारण कि असाधुता का मूल हेतु कामना ही है।

दुःख, चिन्ता का कारण वस्तुओं का अभाव नहीं है प्रत्युत मूर्खता है। यह मूर्खता सत्संग से मिटती है।

अभी जो धन मिल रहा है वह वर्तमान कर्म का फल नहीं है, प्रत्युत प्रारब्ध का फल है वर्तमान में धन प्राप्ति के लिये जो झूठ, कपट, बेईमानी, चोरी आदि करते हैं उसका फल (दण्ड) तो आगे मिलेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्ध एवं ताजी जड़ी बूटियों से निर्मित गुरुकुल आश्रम आमसेना की कुछ विशिष्ट दवाईयां

१. ब्राह्मी आंवला तेल

ब्राह्मी एवं आंवला के स्वरस से तैयार यह तेल बालों का सफेद होना एवं झड़ने को रोककर घने एवं लम्बे करता है। सिर दर्द, मस्तिष्क की कमजोरी, पागलपन में भी उपयोगी है।

२. आयुर्वेदिक चाय

दालचीनी, इलायची, तेजपात, सोंठ, काली मिर्च, पीप्पल, सौंफ, तुलसी आदि के योग से निर्मित हानिरहित यह मधुर पेय इसके निरन्तर प्रयोग से गैस, कब्जी, भूख की कमी, सर्दी, जुकाम नष्ट हो जाते हैं।

३. संजीवनी तेल

संजीवनी आदि बूटी से बना यह तेल हर प्रकार के जले, घावादि में अत्यंत उपयोगी है। बहते खून को तुरन्त रोक देता है।

४. सर्पविषामृत

कैसा भी सांप काट दे इसके एक दो खुराक देने से ही जहर समाप्त हो जाता है।

५. महिलामृत पेय

स्त्रियों की कमजोरी तथा हर प्रकार के रोगों को दूर करने में रामबाण है।

६. अशोकारिष्ट

यह महिलाओं का प्राकृतिक मित्र है। स्त्रियों के सभी रोगों में विशेषकर प्रदर एवं कमजोरी में उपयोगी है।

७. बलदामृत

अंगूर आदि फलों से तैयार यह टॉनिक सभी प्रकार की कमजोरी बुद्धि की थकावट आदि में अमृत है।

८. धातु पौष्टिक चूर्ण

वीर्य सम्बन्धी सभी प्रकार के रोगों एवं कमजोरी को दूर कर शरीर को ओज तेज से भर देता है। इसके साथ वीर्य बर्धिनी बटी या वसन्त कुसुमाकर लेने से तुरन्त लाभ मिलता है।

९. शिशु सुधा

यह सुमधुर पेय छोटे बच्चों के सभी रोगों में अत्यंत उपयोगी है। इसके निरन्तर सेवन से बच्चे हृष्ट-पुष्ट एवं निरोग रहते हैं। सुखा रोग, अपचन, दस्तों का होना, दांत निकलते समय होने वाले कष्ट इसके सेवन कराने से नहीं होते।

१०. सौन्दर्य रसायन (कैप्सूल)

यह कैप्सूल सभी प्रकार के चर्म रोगों में विशेष उपयोगी है। रक्त शुद्ध करने में रामबाण है। चेहरे के दाग, झाई आदि को दूर कर मुख की अकृति को सुन्दर बना देती है। केश के रोगों में भी अत्यंत उपयोगी है। बालों का झड़ना, सफेद होना, इस के प्रयोग से तुरन्त रुक जाता है। यदि युवावस्था में इसका लम्बे समय तक उपयोग किया जाये तो सफेद बाल पुनः काले हो जाते हैं। एक बार प्रयोग कर परीक्षा अवश्य करें।

व्यवस्थापक
आयुर्वेदिक फार्मेसी
गुरुकुल आश्रम आमसेना
खरियार रोड, जि.- नवापारा (उड़ीसा)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Gurukul Ashram.Amsena.Nuapada Pin-766109 Phone :(06678)22349
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ निर्मित विशुद्ध औषधियाँ

१.	च्यवनप्राश स्पे. १ कि	१००.००
२.	च्यवनप्राश ,,	८०.००
३.	ब्राह्मी आंवला तेल	२०.००
४.	ब्राह्मी आंवला तेल स्पे.	४३.००
५.	वातराज तेल ५० मि.	२५.००
६.	महानारायण तेल ,,	२३.००
७.	विषगर्भ तेल ,,	१५.००
८.	संजीवनी तेल ,,	१५.००
९.	आयुर्वैदिक चाय	८.००
१०.	बलदापाक	४०.००
११.	सुपारीपाक २०० ग्राम	४०.००
१२.	आश्रम वाम	८.००
१३.	आश्रम दन्तमुक्ता १०० ग्राम	१५.००
१४.	गैसान्तक रस १०० ग्राम	२४.००
१५.	त्रिफला चूर्ण १ पाव	१५.००
१६.	लवणभाष्कर चूर्ण	१२.००
१७.	पौष्टिक चूर्ण	१०.००
१८.	सर्पविषहरी चूर्ण	१०.००
१९.	एक्जिमा मल्हम	२०.००
२०.	सितोपलादि चूर्ण	२०.००
२१.	नेत्रामृत विशेष	८.००
२२.	शक्तिदा ५०० मि.लि.	३०.००
२३.	बलदामृत ,,	४०.००
२४.	कुमार्यासव ,,	२८.००
२५.	लोहासव ,,	२५.००
२६.	अरविन्दासव ५०० मि.ली.	३५.००
२७.	अशोकारिष्ट ,,	२५.००
२८.	अश्वगन्धारिष्ट ,,	३२.००
२९.	दशमूलारिष्ट ,,	३५.००
३०.	अभयारिष्ट ,,	३०.००
३१.	खदिरारिष्ट ,,	३०.००
३२.	अर्जुनारिष्ट ,,	२८.००
३३.	चन्द्रप्रभावटी १० ग्राम	१२.००
३४.	इन्द्रयण वटी ,,	१८.००
३५.	महाशंख बटी ,,	१०.००
३६.	आरोग्यवर्धनी वटी ,,	१५.००
३७.	संजीवनी वटी ,,	१२.००
३८.	कुष्ठकुठार रस ,,	१५.००
३९.	कृमिमुदगर रस ,,	१५.००
४०.	लक्ष्मी विलास रस ,,	१८.००
४१.	आन्दभैरव ,,	१५.००
४२.	धात्रीलौह	१५.००
४३.	सुतशेखर रस	२५.००
४४.	शशि शेखर रस	३५.००
४५.	महायोगराज गुगुल	१६.००
४६.	अर्श रोगामृत	१०.००
४७.	चन्दनादि वटी	२१.००
४८.	लंवगादि वटी	१५.००
४९.	मृत्युन्जय रस	१२.००
५०.	अष्ठिलारिपु	१५.००

हमारे हिन्दी के प्रकाशन

१.	सत्यार्थ प्रकाश	२०/-
२.	खिलते फूल	४/-
३.	छात्र जीवन योग और स्वास्थ्य	५/-
४.	योगासन	८/-
५.	आश्रम गीताञ्जली	२/-
६.	फिटकरी	५/-
७.	त्रिफला भाग -१	५/-
८.	त्रिफला भाग -२	६/-
९.	तुलसी	५/-
१०.	शांतिकामार्ग ईश्वर भक्ति	३/-
११.	वैदिक लोरियां	१६/-
१२.	दैनिक उपासना	२/-
१३.	युवा और राष्ट्र	२/-
१४.	प्यारा ऋषि	८/-
१५.	मैं ईसाई क्यों नहीं?	१/-
१६.	ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका	४०/-
१७.	पौराणिक गप्प दीपका	७/-
१८.	विचित्र ब्रह्मचारी	३/-
१९.	गप्प शिरोमणि श्री राम शर्मा आचार्य	५/-
२०.	ईश्वर कहां है ?	४/-
२१.	गप्प शिरोमणि श्रीराम आचार्य (द्वितीय भाग)	६/-

सेवा में,

३०१२. श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय
हरिद्वार (उ.प्र.)

ग्राहक संख्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल आश्रम मुद्रणालय के लिये शारदा आफसेट प्रेस रायपुर से मुद्रित एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना से प्रकाशित

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Compiled
1999-2000

110277

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri